हिट रोमांटिक थ्रिलर
उपन्यासों की दुनिया के बेस्ट सेलर
अमित खान
गरम हूरी

गरम छुरी–यानि बंगलौर शहर की एक मशहूर कॉलगर्ल। असली नाम–पूजा कोठारी। बेहद हसीन-तरीन लड़की। पूजा कोठारी को बदला लेना था, चार खूनी दरिन्दों से। ऐसे दरिन्दों से–जिन्होंने उसके हंसते-खेलते परिवार को उसी के सामने बेरहमी से मार डाला था।

फिर प्रतिशोध की भट्टी में धधकती 'गरम छुरी' ने उन चारों की एक के बाद एक हत्या की ऐसी 'मास्टर पीस योजना' बनायी कि कानून के बड़े-बड़े महारथी भी चक्कर काट गये।

गरम छुरी

अमित खान

मर्डर की 4 ऐसी फुलप्रुफ योजनाएं–जो आपने गारण्टी से पहले कभी नहीं पढ़ी होंगी।

अमित खान–वह नाम, जिनकी पहली कहानी मात्र 12 वर्ष की आयु में और पहला उपन्यास मात्र 15 वर्ष की आयु में प्रकाशित हो चुका था–जो सम्भवत: विश्व रिकॉर्ड भी है।

'गरम छुरी' अब आपके हाथों में है

प्रिय पाठकों,

मेरा सुपरहिट रोमांटिक थ्रिलर 'गरम छुरी' अब आपकी सेवा में हाजिर है।

गरम छुरी !

निःसन्देह यह एक दिलचस्प नाम है।

'गरम छुरी' एक ऐसी कॉल गर्ल की कहानी है—जिसका वास्तविक नाम पूजा कोठारी था, लेकिन वो बंगलौर शहर में 'गरम छुरी' के नाम से विख्यात थी। 'गरम छुरी' की जिन्दगी का एकमात्र मकसद चार ऐसे खूनी दरिन्दों की हत्याएं करना था—जिन्होंने उसके हंसते-खेलते परिवार की उसी के सामने हत्या कर डाली थी।

निःसंदेह यह प्रतिशोध की भट्टी में धधकता एक बेजोड़ थ्रिलर उपन्यास हैं—जो आपको कदम-कदम पर रोमांचित करेगा।

यह उपन्यास ऐसे धनी नौजवानों के लिए भी एक सबक है—जो दौलत के नशे में अंधे होकर मासूम लड़कियों की इज्जत से खेलना अपना शौक समझ लेते हैं।

यह उपन्यास ऐसे नौजवानों के दिलो-दिमाग पर बिजली बनकर गिरेगा और उन्हें अहसास होगा कि कभी-कभी किसी की इज्जत के साथ खिलवाड़ करना कितना महंगा साबित होता है।

चूंकि यह कथानक बलात्कार की एक भयानक विभीषिका से जन्म लेता है—इसलिए कहीं-कहीं सैक्स का वर्णन कथानक की आवश्यकता बन गया है—यह बात उपन्यास पढ़ते समय आप भी महसूस करेंगे।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता चार हत्याएं हैं।

चार हत्याएं—जो विश्व के अलग-अलग देशों में होती

हैं। इतना ही नहीं–हत्या करने का स्टाइल भी बिल्कुल नया है, जो आपने पहले कभी किसी उपन्यास में नहीं पढ़ा होगा।

मैं समझता हूं कि 'गरम छुरी' आपको पसंद आएगा। फिर भी आपकी राय की मुझे बेसब्री से प्रतीक्षा रहेगी। क्योंकि पाठकों के पत्र ही लेखक के वास्तविक मार्ग-दर्शक होते हैं।

प्राइम मिनिस्टर का मर्डर

यह 'कमाण्डर करण सक्सेना सीरीज' के मेरे आगामी नये उपन्यास का नाम है–जो 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित होगा।

मैं इन दिनों इसी कथानक पर पूरे जोर-शोर के साथ काम करने में जुटा हूं और हमेशा की तरह इस बार भी मेरा यही प्रयास है कि मैं आपको 'कमाण्डर करण सक्सेना सीरीज' का एक अविस्मरणीय उपन्यास दूं।

अब आज्ञा चाहूंगा।

धन्यवाद।

आपका अपना

अमित खान

डी-603, स्काई पार्क,
अजीत ग्लास गार्डन के नजदीक,
ऑफ एस.वी. रोड,
गोरेगाँव (वेस्ट), मुम्बई–400104
फोन : 09821163955
(सिर्फ रविवार को)

गरम छुरी

पहला भाग : बंगलौर (इण्डिया)

यह बेपनाह गुस्से और जुनून में भरी एक ऐसी लड़की की कहानी है—जिसकी जिन्दगी का एक ही मकसद था—चार हत्यायें।

चार ऐसे बेहद खौफनाक दरिन्दों की हत्याएं—जिनके बारे में सोचते ही वह गुस्से से भर जाती थी—उसका शरीर उत्तेजना से थर-थर कांपने लगता था—वह अक्सर उन दरिन्दों के बारे में सोचकर गहरी नींद से भी चीखती हुई जाग जाती और फिर आक्रोश की आंधी बनी सामान इधर-से-उधर फैंकने लगती।

पूजा कोठारी।

हां—यही नाम था उस लड़की का।

वो बहुत खूबसूरत थी।

वो हुस्न की मलिका थी।

वो देवताओं का भी ईमान खराब कर देने वाली अप्सरा थी।

पूजा कोठारी में वो सब कुछ था—जो किसी भी मर्द को पागल बना दे। उसे देखने के बाद मर्द को उसमें बस एक ही खराबी नजर आएगी कि वो इतने खूबसूरत और आलीशान बदन को कपड़ों के अंदर ढके हुए क्यों है।

लेकिन वो भी कोई भयंकर प्रॉब्लम नहीं थी।

पूजा कोठारी एक कॉलगर्ल थी—उसे कोई भी पुरुष रुपयों के बलबूते पर एक रात के लिए खरीद सकता था और फिर उसके शरीर को पूरे बारह घण्टे तक जैसे चाहे हैण्डिल करने के लिए आजाद था।

शायद इसीलिए पूजा कोठारी बंगलौर की सबसे महंगी कॉलगर्ल के रूप में प्रसिद्ध थी।

उसकी कीमत इतनी ज्यादा थी कि सिर्फ बंगलौर के बड़े-बड़े

रईसजादे या फिर मोटी तौंद वाले धन्ना सेठ ही उसे अपने बेडरूम तक लाने की हिम्मत कर पाते थे।

सैक्स पूजा कोठारी की जिन्दगी का सबसे मनपसंद खेल था।

जब वह किसी पुरुष के संसर्ग में होती—तो उसका शरीर ज्वार-भाटा बन जाता था और जिस पल पुरुष के होठ उसके निर्वस्त्र कोमल अंगों पर फिसलते तथा उनका चुम्बन लेते—तो वह गरम मोम की तरह पिघलने लगती।

सममुच—सैक्स से ज्यादा शानदार कोई दूसरा खेल नहीं हो सकता—यह पूजा कोठारी का अपना निजी अनुभव था।

जहां ज्यादातर लड़कियां वेश्यावृत्ति के इस धंधे में किसी मजबूरी के कारण आती हैं—वहीं पूजा कोठारी ने समाज में बुरी तरह बदनाम इस पेशे को अपनी इच्छा से चुना था।

इस पेशे को चुनने के पीछे दो वजह थीं।

पहली वजह—पूजा कोठारी ज्यादा-से-ज्यादा दौलत कमाना चाहती थी।

दूसरी वजह—जो शायद पहली वजह से भी कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी—पूजा कोठारी को पूरी-पूरी उम्मीद थी कि जिन चार दरिन्दों की हत्या करना उसकी जिन्दगी का एकमात्र लक्ष्य है और जिनके नाम या पते भी वो आज की तारीख में नहीं जानती—उनके बारे में कोई-न-कोई महत्त्वपूर्ण जानकारी उसे कभी-न-कभी उसी पेशे में रहते मिलेगी।

कुल मिलाकर पूजा कोठारी खुश थी।

उसे कॉलगर्ल के उस धंधे से कैसा भी कोई ऐतराज न था।

●●●

आधी रात का समय—आज तेरह मार्च है।

तेरह का अंक—जो सदा 'अशुभ अंक' के रूप में प्रसिद्ध रहा है—और पूजा कोठारी के जीवन में तो उस अंक की मनहूसियत कुछ ज्यादा ही थी।

तेरह के उस अंक ने उसकी पूरी दुनिया की उजाड़ डाली थी।

इस समय पूजा कोठारी अपने बेडरूम में गहरी नींद सो रही है। परन्तु अगर कोई इस वक्त उसका चेहरा देखता—तो उसके चेहरे पर उसे बिल्कुल साफ-साफ जलजले जैसे भाव नजर आते—उसका

पूरा बदन पत्ते की तरह थर-थर कांप रहा था—माथे पर पसीने की असंख्य बूंदें—होठों से थोड़ा-रुक-रुककर नागिन की तरह फुंफकार निकल रही थीं।

इतना ही नहीं—गहरी नींद में ही वह बेहद बेचैनीपूर्वक कभी बायें करवट लेती—कभी दायें।

साफ जाहिर था कि वह कोई बुरा सपना देख रही है—बुरा भी और डरावना भी।

फिर सपना देखते-देखते एक क्षण वो भी आया—जब वो एकदम चीखती हुई झटके से उठ बैठी—इतना ही नहीं, फिर उसकी आँखें भक्के से खुली।

उफ्—दहकता अंगारा बनी हुई थी पूजा कोठारी की दोनों आँखें। ऐसा लग रहा था—मानों उसकी आँखें की जगह दो जलते हुए कोयले रख दिये गये हों।

उसी क्षण पूजा कोठारी की आँखें सामने दीवार पर टंगे एक कैलेण्डर पर जाकर फिक्स् हो गयीं—कैलेण्डर पर भी उस जगह—जहाँ तेरह का अंक बना था।

तेरह का अंक—।

उस मनहूस अंक को देखते-देखते पूजा कोठारी के दिमाग में रेल के इंजन के दौड़ने की आवाज गूंजने लगी।

हाँ—वो मनहूस घटना रेल के ही एक डिब्बे में घटी थी।

फिर इंजन के धड़ाधड़ दौड़ने की वो आवाज पूजा कोठारी के दिमाग में तेज होती चली गयी। तेज—और तेज—फिर और तेज—।

पागल-सी हो उठी पूजा कोठारी—उसने अपना सिर कसकर पकड़ लिया—यही वो पल था, जब पूजा कोठारी के दिमाग ने अतीत की तरफ छलांग लगा दी।

आठ साल पुराने अतीत की तरफ—हाँ, उस घटना को आज आठ साल गुजर चुके हैं—पूरे आठ साल—।

●●●

वो तेरह मार्च की ही एक मनहूस रात थी।

उस रात अरविन्द कोठारी का एक हँसता-खेलता परिवार आगरा के पर्यटन स्थलों से घूमकर बंगलौर वापस लौट रहा था।

वह सब उस समय एक एक्सप्रेस ट्रेन में सवार थे—ट्रेन बेहद सुपर फास्ट स्पीड में धड़ाधड़ पटरियों पर दौड़ी जा रही थी।

अरविन्द कोठारी बंगलौर की सेशन कोर्ट में जज था।

लगभग पैंतालीस वर्ष की उम्र—पौने छः फुट लम्बा कद और तंदरूस्त शरीर। हर लिहाज से अरविन्द कोठारी एक आदर्श पुरुष था।

अरविन्द कोठारी के अलावा उसके परिवार में उसकी बीवी थी—कान्ता कोठारी। वह भी उसी की तरह खुशमिजाज और तंदरुस्त जिस्म की मालिक थी। उसके दो सुंदर बेटियां थीं।

बड़ी बेटी—सविता कोठारी।

छोटी बेटी—पूजा कोठारी।

सविता कोठारी की आयु बाइस वर्ष थी और चार महीने बाद ही उसकी बंगलौर के ही एक वकील से शादी होने वाली थी—जो अरविन्द कोठारी का काफी देखा-भाला और हैण्डसम युवक था। सबसे बड़ी बात यह कि सविता को भी वह नौजवान पसंद था।

और पूजा कोठारी—उस नीली-नीली आँखों वाली खूबसूरत-सी ड़की की उम्र तब सिर्फ पंद्रह वर्ष थी।

इसे इत्तेफाक ही कहा जायेगा कि एक्सप्रेस ट्रेन के डिब्बे के अंदर उस समय वह कोठारी परिवार बिल्कुल अकेला था।

जब उन्होंने इस सुंदर यात्रा का आरम्भ किया—तब उनके स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं थी कि उनके साथ कोई भयंकर विभीषिका घटित होने जा रही थी।

●●●

लेकिन जैसे-जैसे बंगलौर नजदीक आने लगा—कान्ता कोठारी के चेहरे पर परेशानी की लकीरें पैदा होने लगीं।

"अरविन्द !" कान्ता कोठारी डिब्बे के सांय सांय करते सन्नाटे को देखकर थोड़ी चिन्तित मुद्रा में अपने पति से बोली—"हमें आगरा से बंगलौर पहुंचने के लिये कोई दूसरी ट्रेन चुननी चाहिये थी—जो हमें दिन के उजाले में ही बंगलौर पहुंचा देती।"

"लेकिन अब भी कौन-सी परेशानी आ गयी।" अरविन्द कोठारी ने टाइम पास करने के लिए एक सिगरेट सुलगा ली—"अभी सिर्फ रात के ग्यारह ही तो बजे हैं—एक घण्टे बाद ही बंगलौर आ जायेगा और फिर हम अपने घर पर जाकर आराम करेंगे।"

"प···परन्तु न जाने क्यों मुझे बहुत डर लग रहा है अरविन्द !" कान्ता कुछ सहमें-सहमें स्वर में बोली—"म···मुझे ऐसे शब्द अपनी जबान से तो नहीं निकालने चाहियें—म···मगर मुझे महसूस हो रहा है कि हम आज सही-सलामत अपने घर तक नहीं पहुंच पायेंगे।"

"तुमसे भी कमाल है कान्ता।" इस बार झुंझला उठा था अरविन्द

कोठारी—इतना ही नहीं, उसने सिगरेट की राख भी नीचे फर्श पर झाड़ी—"हमेशा उल्टा-सीधा सोचती रहती हो।"

सविता—जो उस समय सीट पर बैठी एक जासूसी उपन्यास पढ़ रही थी—उसने भी थोड़ी नाराजगी भरी आँखों से कान्ता कोठारी को देखा—"इतना डरना भी अच्छा नहीं होता मम्मी—आखिर ऐसी भी क्या आफत आ गयी है, जो आप इस तरह दहला देने वाली बातें सोच रही हो।"

"तू चुप रह।" कान्ता कोठारी ने फौरन सविता को डाँट दिया था—"चार दिन से जासूसी उपन्यास क्या पढ़ने लगी है कि खुद को जेम्स बॉण्ड या करण सक्सेना ही समझती है। देख नहीं रही—पूरे डिब्बे में हम चारों के अलावा कोई नहीं है। फिर रात का समय है और हर तरफ अंधेरा-ही-अंधेरा है।"

"लेकिन अगर ट्रेन के बाहर अंधेरा है।" सविता बोली—"तो इससे हमारी सेहत पर क्या फर्क पड़ता है—ट्रेन किसी जंगल में थोड़े ही खड़ी है—वह अपनी फुल स्पीड से दौड़ रही है।"

"तु···तुम लोग शायद 'फोर स्कवायर' दल को बिल्कुल भूल गये हो।" वह शब्द कहते हुए कान्ता कोठारी की आवाज कांप गयी थी—उस क्षण उसके चेहरे पर आतंक के भाव और बढ़ गये—"व···वो 'फोर स्कवायर' दल—जो अक्सर रात के ऐसे सन्नाटे में ही ट्रेन के अंदर सफर कर रहे यात्रियों पर हमले करता है।"

●●●

फोर स्कवायर—फोर स्कवायर—फोर स्कवायर—।

उस नाम को सुनकर अरविन्द कोठारी के साथ-साथ सविता के दिमाग में भी बम-पटाखे से छूटते चले गये—एक क्षण के लिये वह दोनों भी 'फोर स्कवायर' का नाम सुनकर थर्रा उठे।

जबकि पंद्रह वर्षीय पूजा कोठारी तब 'फोर स्कवायर' का कोई मतलब न समझ सकी थी। पूजा उस समय अपनी मम्मी की गोद में सिर रखे इत्मीनान से लेटी थी और सबकी तरह वह भी बड़ी बेसब्री से बंगलौर स्टेशन आने का इंतजार कर रही थी।

दरअसल 'फोर स्कवायर' दल का उन दिनों बंगलौर में बड़ा आतंक था। वह चार नौजवान और बहुत हैण्डसम लड़कों का एक दल था—जो मूलरूप से बलात्कारी थे। वह रात के अंधेरे में ट्रेन के किसी ऐसे डिब्बे में चढ़ जाते थे—जिसमें कोई नौजवान लड़की अकेले सफर कर रही हो। फिर वो वहीं चलती ट्रेन में उस नौजवान लड़की

के साथ बलात्कार करते और उसके बाद उस लड़की की हत्या करके भाग खड़े होते—पिछले दो महीनों में अलग-अलग ट्रेनों के अंदर ऐसी तीन वारदातें हो चुकी थीं।

उस क्षण 'फोर स्कवायर' दल का जिक्र छिड़ते ही अरविन्द कोठारी भी थोड़ा डर गया।

"सचमुच कान्ता—रात के इस समय इन चार खतरनाक लड़कों का जिक्र करके तुमने मुझे भी चिन्तित कर दिया है।" अरविन्द कोठारी की उंगलियों के बीच फंसी सिगरेट उसके होठों तक जाते-जाते ठिठक गयी थी—"वह वाकई बहुत दुर्दान्त किस्म के अपराधी हैं।"

"मेरे तो यही समझ नहीं आता।" कान्ता बोली—"कि पुलिस उन चारों को पकड़ती क्यों नहीं। एक के बाद एक वह तीन वारदातें कर चुके हैं—और बंगलौर की पुलिस अभी तक हाथ-पर-हाथ रखे बैठी है।"

"ऐसा नहीं है—जैसा तुम सोच रही हो।" सेशन जज की कुर्सी को सुशोभित करने वाले अरविन्द कोठारी ने फौरन जवाब दिया—"बंगलौर की पुलिस हाथ-पर-हाथ रखे नहीं बैठी बल्कि वह उन चारों को गिरफ्तार करने के लिये कई बार जाल फैला चुकी है। कई बार उन्हें पकड़ने का प्रयास किया गया—लेकिन वह चारों इतने ज्यादा चालाक हैं कि कभी भी पुलिस के फंदे में नहीं फंसते। या तो पुलिस के एक्शन की उन चारों को पहले से ही इन्फॉर्मेशन मिल जाती है—या फिर खतरे को सूंघने की उन चारों में गजब की क्षमता है। बहरहाल वजह चाहे जो भी है—लेकिन इस घटता से यह साफ साबित होता है कि वो बहुत खेले-खाये अपराधी हैं और पुलिस को किस प्रकार धोखा दिया जाता है—यह बात उन्हें अच्छी तरह मालूम है।"

सविता भी 'फोर स्कवायर' दल के नाम अब कुछ डरी-डरी नजर आने लगी थी—और उसने उपन्यास बंद करके एक तरफ रख दिया था।

"अब तो उन चारों लड़कों की बंगलौर में जगह-जगह चर्चा होने लगी है।" सविता भी थोड़े शुष्क स्वर में बोली—"कुछ दिन पहले ही हमारे कॉलिज में भी उनकी चर्चा थी।"

"क्या चर्चा थी ?" अरविम्द कोठारी ने उत्सुकता पूर्वक पूछा।

"कुछ लड़कियां जिक्र कर रही थी।" सविता बोली—"कि वह बंगलौर के किसी कॉलिज के ही लड़के हैं और अच्छे खाते-पीते परिवारों से सम्बंधित हैं।"

"उन्हें यह बात कैसे पता चली ?"

"उन्होंने भी कहीं से सुनी ही होगी।" सविता बोली—"तभी तो आपस में चर्चा कर रही थीं।"

"अब तो अपराध के भी नये-नये रूप सामने आने लगे हैं।" वह शब्द कान्ता कोठारी ने कहे—"पहले इस तरह के अपराध सड़क छाप मवाली किया करते थे—लेकिन अब तो किसी का कोई धरम रहा ही नहीं। ऐसे-ऐसे कार्पोरेट के लोग अपराध करने लगे हैं—जिन पर कोई व्यक्ति आसानी से शक भी न कर सके और पुलिस भी उन पर हाथ डालते हुए हिचकिचाये। अभी कुछ दिन पहले अखबार में पढ़ा नहीं था कि दिल्ली के एक बड़े मिनिस्टर का बेटा शौकिया तौर पर कारें चुराया करता था—जबकि खुद उसके पास अपनी पर्सनल दो कारें थीं। इसी तरह एक बड़े उद्योगपति के लड़के ने शौकिया तौर पर एक वेश्यालय खोल रखा था—क्योंकि उसे उस धंधे में थ्रिल महसूस होता था। अब तो आए दिन इस तरह के बड़े-बड़े अजीबो-गरीब अपराध सामने आने लगे हैं—दरअसल कानून का तो किसी भारतीय नागरिक के दिमाग में डर-खौफ रहा नहीं है। आज की तारीख में हर पैसे वाला आदमी यही सोचता है कि अपराध करके भी उसका क्या बिगड़ेगा क्योंकि कानून की हर कड़ी बिकती है—हर बड़े से बड़े आफिसर बिकता है।"

"लेकिन पापा तो ऐसे नहीं हैं।" सविता ने फौरन अरविन्द कोठारी की हिमायत ली—"सेशन जज होने के बावजूद इन्होंने आज तक कभी कोई एक पैसा तक रिश्वत का नहीं लिया।"

"इसमें कोई शक नहीं बेटी।" अरविन्द कोठारी गहरी सांस लेकर बोला—"कि मैंने आज तक कभी कोई एक पैसा भी रिश्वत का नहीं लिया। लेकिन इतने बड़े सिस्टम में सिर्फ एक व्यक्ति के ही अच्छा होने से क्या होता है।" अरविन्द कोठारी ने बेहद निराश मुद्रा में सिगरेट का एक कश लगाया था—"तुम्हारी मम्मी ठीक कहती हैं—आज हिन्दुस्तान में पूरा सिस्टम भ्रष्ट हो गया है—रिश्वतखोरी बहुत बढ़ गयी है—इसीलिये यहाँ अपराध भी काफी तेजी से बढ़ रहा है।"

कुछ देर वह तीनों इसी प्रकार उस सब्जैक्ट पर बहस करते रहे—बीच-बीच में 'फोर स्कवायर' दल का नाम भी उनकी जबान पर आ जाता था।

पूजा इस दौरान बिल्कुल चुप थी और बस ध्यान से उनकी बातें सुन रही थी।

ट्रेन पहले की तरह ही अंधेरे को चीरती और पटरियों पर धड़ाधड़ दौड़ती तूफानी गति से बंगलौर की तरफ बढ़ रही थी।

तभी एकाएक कान्ता कोठारी की गोद में सिर रखकर लेटी पूजा उठ बैठी और अपने सैण्डिल पहनने लगी।

"तू कहाँ जा रही है ?" कान्ता कोठारी ने पूछा।

"टॉयलेट।" पूजा ने मुस्कुराते हुए अपनी एक उंगली उठा दी।

"तुझे टॉयलेट जाने के अलावा कुछ और काम भी है।" कान्ता कोठारी गुर्रा उठी—"जब से ट्रेन आगरा से चली है—तब से कम-से-कम चार बार टॉयलेट जा चुकी है।"

"अब जाने भी दो कान्ता—क्या हर किसी पर हिटलर की तरह हुकुम चलाती रहती हो।" अरविन्द कोठारी ने मुस्कुराते हुए कहा—"टॉयलेट में कोई कलर टी० वी० तो लगा हुआ नहीं है—जहाँ यह बेचारी बार-बार अपना मनपसंद प्रोग्राम देखने जाती होगी।"

अरविन्द कोठारी की बात सुनकर सब हंस पड़े—यहाँ तक कि कान्ता कोठारी भी।

जबकि पूजा हंसते हुए अपना सैंडिल ठकठकाती हुई टॉयलेट की तरफ बढ़ गयी।

यही वो पल था—जब पटरियों पर तूफानी स्पीड से दौड़ती एक्सप्रेस ट्रेन की गति भी धीरे-धीरे कम होने लगी। शायद बंगलौर से पहले कोई स्टेशन आ गया था—जहाँ ट्रेन रुक रही थी।

●●●

जल्द ही वह ट्रेन उस स्टेशन पर रुक गयी।

वह कोई बहुत बड़ा स्टेशन नहीं था—और चूंकि रात्रि का समय था, इसलिये वैसे भी उस स्टेशन पर गहन सन्नाटा था।

मुश्किल से पाँच-छः सवारियां उस ट्रेन में चढ़ीं—परन्तु उससे कहीं ज्यादा सवारियां उस ट्रेन से उतर गयीं।

दो बहुत हैण्डसम किस्म के नौजवान उसी डिब्बे में चढ़े जिसमें कोठारी परिवार सफर कर रहा था। कोठारी परिवार के तीनों सदस्यों ने एक सरसरी-सी निगाह उन नौजवानों पर डाली—वह डेनिम की टाइट जीन, स्पोर्टस शूज और अपने कसरती जिस्म से चिपकी टी-शर्ट पहने थे। उन्होंने कोई बहुत महंगा परफ्यूम भी लगा रखा था—जिसके कारण उनके अंदर आते ही वह पूरा डिब्बा तीखी सुगन्ध से भर गया।

वह चूंकि दो थे—इसलिये कोठारी परिवार के दिमाग में कैसा भी कोई खतरे का बल्ब न जला।

तभी वह एक्सप्रेस ट्रेन भी धीरे-धीरे प्लेटफार्म से सरकने लगी—जिस समय ट्रेन दोबारा से स्पीड पकड़ चुकी थी और वह

प्लेटफार्म छोड़ने ही जा रही थी—ठीक उसी पल तेज बिजली की तरह लपककर उसी डिब्बे में दो नौजवान और चढ़े। वह भी डेनिम की टाइट जीन, स्पोर्टस शूज और टी-शर्ट पहने थे और उन्होंने भी तीखी सुगन्ध वाला परफ्यूम लगा रखा था।

अंदर आते ही उन्होंने होठों को सिकोड़कर सीटी बजाते हुए डिब्बे के सभी दरवाजे अंदर से लॉक्ड करने शुरू कर दिये।

अब कोठारी परिवार चौंका।

"यह क्या कर रहे हो ?" अरविन्द कोठारी लगभग चीखता हुआ अपनी सीट से उठा।

"ले बिरादर।" उनमें जो सबसे ज्यादा लम्बी-चौड़ी कद-काठी वाला नौजवान था, उसने मुस्कुराते हुए अपने दूसरे साथी की तरफ देखा—"बुड्ढा पूछता है कि हम क्या कर रहे हैं।"

"बात ये है ससुर जी।" उनमें से एक 'अक्षय कुमार' स्टाइल में बड़ी अदा से चलता हुआ अरविन्द कोठारी की तरफ बढ़ा—"हम आज तुम्हारी इस प्यारी-प्यारी और सुंदर-सी बिटिया के साथ वही करने जा रहे हैं—जो तुम्हारे दामाद को इसके साथ करना चाहिये।"

"बकवास मत करो।" चिंघाड़ उठा अरविन्द कोठारी—।

उसका चेहरा लाल-भभूका होता चला गया और वह एकाएक चीते की तरह उस नौजवान के ऊपर झपटा।

लेकिन अरविन्द कोठारी उस नौजवान का कुछ बिगाड़ पाता—उससे पहले ही उस नौजवान के हाथों में एक साइलैंसर युक्त रिवॉल्वर दिखाई देने लगी। उसने एकदम आगे बढ़कर अरविन्द कोठारी का गला पकड़ लिया और रिवॉल्वर की नाल उसकी पसलियों में घुसा दी।

दहशत से थर्रा उठा अरविन्द कोठारी—"त···तुम जरूर 'फोर स्कवायर' हो ?"

"बिल्कुल सही अंदाजा लगाया तुमने।" जोर से कहकहा उबला था उस नौजवान के कण्ठ से—"हम फोर स्कवायर हैं—'फोर स्कवायर'—और अब यहाँ सैक्स का कौन-सा खेल खेला जाने वाला है—इसका अंदाजा तुम आसानी से लगा सकते हो अधेड़ आदमी।"

"न···नहीं।" अरविन्द कोठारी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया—"म···मेरी बेटी को छोड़ दो—"उ···उसकी चार महीने बाद ही शादी होने वाली है—उ···उसकी सगाई भी हो चुकी है—।"

तब तक बाकी तीने दरिन्दों के हाथ में भी एक-एक रिवॉल्वर नजर आने लगी थी।

"तो इसमें चिन्ता की क्या बात है।" अरविन्द कोठारी के पीछे खड़ा एक लम्बा नौजवान हंसकर बोला—"अभी तुम्हारी बेटी की शादी को चार महीने हैं—जबकि हम अभी से इसे सुहागरात के मामले में ट्रेण्ड कर देते हैं। क्यों भाई लोगों ?"

"बिल्कुल-बिल्कुल।" उसके सभी नौजवान साथी हंसे।

"दुष्ट-पाजियों।" अरविन्द कोठारी ने आक्रोश में एक प्रचण्ड घूंसा अपने सामने खड़े नौजवान के चेहरे पर जड़ दिया था। और उसके बाद तो ट्रेन के डिब्बे में मानों भूचाल-सा आ गया। वहाँ दरिन्दगी और पैशाचिकता की आँधी-सी चल पड़ी।

पिट्-पिट्—।

सबसे पहले साइलैंसर युक्त रिवॉल्वर से दो गोलियां चली थीं—और वह दोनों ही गोलियां अरविन्द कोठारी के सीने में जाकर घुस गयी। हृदयविदारक ढंग से चिंघाड़ा अरविन्द कोठारी। उसके सीने से खून के दो फव्वारे छूटे—वह लहराकर नीचे गिरा और गिरते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

उस खौफनाक मंजर को देखकर कान्ता कोठारी और सविता के कण्ठ से भी हृदयविदारक चीखें उबल पड़ी थीं।

जबकि दरिन्दों की आँखें अब उन दोनों की तरफ उठीं और वह इस तरह खिलखिलाकर हंसे—जैसे चार शैतान बच्चे कोई 'क्रिकेट मैच' जीतने पर खुश हो रहे हों।

"कैसा लगा ?" उनमें से एक दरिन्दा जोर-जोर से हंसता हुआ खतरनाक इरादों के साथ सविता की तरफ बढ़ा—"पसंद आयी हमारी स्टाइल बेबी ?"

"सविता भाग—।" कान्ता कोठारी ने शीघ्रता पूर्वक सविता का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचा और दरवाजे की तरफ झपटती हुई चिल्लाई—"जल्दी यहाँ से भाग मेरी बच्ची—जल्दी—।"

वह दोनों उस समय इतनी ज्यादा दहशतजदा थीं कि भागते समय उन्हें पूजा का जरा भी ख्याल न आया—जो उस समय टॉयलेट में थी।

लेकिन वह दोनों भागकर भी कहाँ जाती ?

'फोर स्कवायर' दल ने उन्हें पूरी तरह घेर लिया था। वह दोनों अभी दरवाजे तक ही पहुंची थी और कान्ता कोठारी का थर-थर कांपता हाथ दरवाजे का बोल्ट खोलने के लिये आगे बढ़ा ही था—तभी—।

पिट्-पिट्—।

साइलैंसर युक्त रिवॉल्वर से आग के दो शोले और निकले और उन शोलों ने कान्ता कोठारी की खोपड़ी की धज्जियाँ उड़ा दीं।

कान्ता कोठारी को चिल्लाने तक का मौका भी न मिला।

लेकिन हाँ—चीख फिर भी गूंजी थी—हृदयविदारक और दहशतनाक चीख—वो चीख सविता की थी।

गोलियां चलाते ही वह चारों दरिन्दे सविता के ऊपर चील की तरह झपट पड़े और उसे बेदर्दी से घसीटते हुए दरवाज़े से पीछे ले आये।

सविता चीखती रही।

चिल्लाती रही।

अपने हाथ-पैर पटकती रही।

परन्तु रात के अंधेरे में उस निर्जन डिब्बे के अंदर उसकी सुनने वाला अब वहाँ बचा ही कौन था—कोई नहीं—कोई नहीं—।

एक्सप्रेस ट्रेन अभी भी लोहे की पटरियों पर धड़ाधड़ दौड़ती हुई अपना फासला तय कर रही थी।

●●●

ऐसा नहीं है कि टॉयलेट में मौजूद पूजा के कानों तक वो हृदयविदारक चीखें पहुँची ही नहीं थी।

पूजा ने वो चीखें सुनीं—और चीखें सुनते ही वो झटके के साथ टॉयलेट से बाहर निकली। परन्तु अगले ही पल उसने जो दृश्य देखा—उस दृश्य को देखकर उस मासूम के कण्ठ से भी तेज चीख निकलते-निकलते बची—पूजा के नेत्र दहशत से उबल पड़े।

पूजा की नजरें सबसे पहले अपने मम्मी-पापा की लाशों पर पड़ीं—फिर उसने अपनी बहन सविता को देखा—जिसे इस समय चार दरिंदे घेरे खड़े थे। उन्होंने उसके शरीर से तमाम कपड़े गिद्ध की तरह नोंच-नोंचकर उतार डाले थे।

इस समय वो नग्न थी—बिल्कुल नग्न—जिस्म पर कपड़े की एक धज्जी तक नहीं थी।

वह बेचारी चीख भी नहीं सकती थी—क्योंकि उनमें से एक दरिन्दा उसके मुँह पर चौड़ा टेप चिपका चुका था।

वह अपने हाथ-पैर बुरी तरह पटक रही थी—लेकिन जल्द ही उसके हाथ-पैर भी पटकने बंद हो गये।

एक दरिंदे ने लपककर उसकी दोनों टांगें कसकर पकड़ लीं—जबकि दूसरे ने फुर्ती के साथ उसके दोनों हाथ कब्जा लिये।

पूजा उस दृश्य को देखकर इतना डर गयी कि उसके मुंह से एक शब्द तक न निकला—वह आतंकित अवस्था में वापस टॉयलेट के अंदर घुस गयी और दरवाजे की झिर्री में से सैक्स के उस खौफनाक खेल को देखने लगी।

पूजा के देखते-ही-देखते उन चारों में से एक नौजवान बिल्कुल निर्वस्त्र हो गया और फिर वह सविता के ऊपर लेट गया।

पूजा ने देखा—सविता के ऊपर लेटते ही वह नौजवान बिल्कुल बच्चा बन गया था—नन्हा-सा बच्चा।

फिर उसने सविता के साथ सहवास किया—जोश और उन्माद से भरा सहवास।

इस बीच पूजा ने उन चारों में से एक नौजवान की बड़ी अजीबो-गरीब हरकत देखी। वह अपने साथी को सविता के साथ सहवास करते देख बुरी तरह उत्तेजित हो रहा था और उत्तेजना में ही चिल्लाते हुए अपने साथी को सहवास की नई-नई तरकीबें बता रहा था।

'फोर स्क्वायर' दल का वह एक मैम्बर सविता के साथ सहवास करके निपट गया—तो दूसरे नौजवान की बारी आयी।

निःसंदेह एक्सप्रेस ट्रेन के उस डिब्बे में सैक्स का बेहद घिनौना खेल खेला जा रहा था। ऐसा घिनौना खेल—जिसे देखकर मानवता बारम्बार कराह उठती।

पूजा ने एक खास बात और नोट की—उन दरिन्दों के गले में एक-एक चेन झूल रही थी—सोने की चेन—जिनमें दिल के आकार का एक-एक लॉकिट पड़ा था और उन लॉकिटों के अंदर काफी बड़े-बड़े हीरे फिट थे—उस वीभत्स माहौल में भी वो मूल्यवान हीरे अलग ही अपनी आभा बिखेर रहे थे।

इस बीच 'फोर स्क्वायर' दल का वो नौजवान जो अपने साथियों को सहवास करते देख बुरी तरह उत्तेजित हो रहा था—और लगभग चिल्लाते हुए उन्हें सहवास की नई-नई क्रियायें बता रहा था—वह वह अब उत्तेजित हो उठा और उत्तेजना के उसी माहौल में उसने भी अपने कपड़े उतार डाले।

फौरन रहस्य खुला।

दरअसल वह नौजवान नपुंसक था।

'फोर स्कवायर' दल के दूसरे मैम्बर के बाद उसे तीसरे नौजवान ने सविता के साथ बलात्कार किया—जो उन चारों से सबसे ज्यादा लम्बे-चौड़े और बलशाली जिस्म का मालिक था। वह अपने बॉडी बिल्डर जैसे बदन के कारण कोई पहलवान ही ज्यादा नजर आता था।

बहरहाल उस समय वह भी काफी उत्तेजित था।

अपने दूसरे साथी के सविता के ऊपर से हटते ही उसने आनन-फानन सारे कपड़े उतार डाले।

सविता के कोमल जिस्म पर वह नौजवान एकाएक आंधी की तरह टूटकर गिरा और जिस क्षण वह उत्तेजना की चरम सीमा पर था—उस पल वह एकाएक जोर-जोर से 'मेटाडोर—मेटाडोर' बुदबुदाने लगा।

पूजा तब 'मेटाडोर' शब्द का रहस्य न समझ सकी।

लेकिन रहस्य खुला—और बहुत बाद में जाकर खुला। एक्सप्रेस ट्रेन अभी भी धुंआधार स्पीड में लोहे की पटरियों पर दौड़ी जा रही थी।

●●●

थोड़ी ही देर बाद बंगलौर स्टेशन आ गया।

बंगलौर का स्टेशन आते ही 'फोर स्कवायर' दल के नपुंसक नौजवान ने अपनी साइलेंसर युक्त रिवॉल्वर से सविता के गुप्तांग में गोली मार दी—बुरी तरह छटपटाई सविता और फिर अपने मम्मी-पापा की तरह वो भी हमेशा-हमेशा के लिये शान्त हो गयी।

तब तक एक्सप्रेस ट्रेन धीरे-धीरे रेंगती हुई स्टेशन पर रुक चुकी थी।

ट्रेन के पूरी तरह रुकने से पहले ही 'फोर स्कवायर' दल के वह चारों मैम्बर सीटी बजाते हुए ट्रेन से कूदकर इस तरह चले गये—जैसे उन्होंने कुछ किया ही न हो।

लेकिन वो नहीं जानते थे कि आज दो नन्हीं-नन्हीं नीली-नीली आँखों ने उनके सारे शैतानी कुकृत्य को देखा है।

वो नीली-नीली आँखें—जो उन चारों के जाते ही टॉयलेट से बाहर निकल आयी थीं।

उन नीली-नीली आँखों ने देखा था—अपने मम्मी-पापा की खून से लिथड़ी लाश को।

उन आँखों ने देखा था—अपनी बहन के गुप्तांग से बहते खून को।

और उन आँखों ने देखा था—बलात्कार के उस निर्मम दृश्य को, जिसे वो आँखें फिर तमाम उम्र नहीं भुला सकीं।

इस समय अगर उन नीली-नीली आँखों में कुछ था—तो सिर्फ प्रतिशोध की भावना थी।

अंगारे की तरह धधक रही थी वो आँखें।

दरिन्दे भाग चुके थे।

परन्तु उनकी एक चीज, आज वहीं रह गयी थी—और वो चीज थी सोने की वो चैन, जिसमें मूल्यवान हीरे का लॉकेट झूल रहा था।

नीचे झुकी पूजा—फिर उसने उस चैन को उठाकर अपनी मुट्ठी में इस तरह कस लिया—मानों अपना सारा आक्रोश, सारी भड़ास उसी चैन पर निकाल देना चाहती हो।

इस प्रकार एक बेहद खतरनाक और खून से लिथड़ी कहानी का जन्म हुआ।

एक ऐसी कहानी का जन्म—जिसने आने वाले वर्षों में दुनिया के बड़े-बड़े मस्तिष्कों को झंझोड़कर रख दिया।

●●●

उस थर्रा देने वाले हादसे के बाद तीन वर्ष तक पूजा कोठारी अपने 'नारंग अंकल' के साथ रही थी।

नारंग अंकल।

जो उनके पड़ौस में रहते थे और जिनसे उसके पापा की गहरी दोस्ती थी।

यूं तो पूजा कोठारी बचपन में ही तय कर चुकी थी कि वो 'फोर स्कवायर' दल के उन चारों मैम्बरों से अपने परिवार की मौत का बदला लेगी।

लेकिन सैक्स का पहला ज्ञान उसे 'नारंग अंकल' से ही मिला।

पूजा को आज भी वो रात याद है—आण्टी कहीं गयी हुई थी और पूरे घर में नारंग अंकल तथा वो अकेले थे।

पूजा की उम्र यूं तो मात्र पंद्रह वर्ष थी—लेकिन उस अल्प आयु में ही उसके यौवन कलश काफी भरे-भरे नजर आने लगे थे। उसकी छातियाँ सत्रह-अट्ठारह वर्षीय लड़की की तरह फूल गयी थीं और बचपन से ही कद भी काफी निकलता हुआ था।

पूजा उस रात सो भी जल्दी गयी थी।

लेकिन [illegible] एक [illegible] भक्क से आँख

खुल गयी। यह देखकर वो बुरी तरह चौंक पड़ी कि नारंग अंकल उसके बिस्तर पर ही थे और बिल्कुल निर्वस्त्र थे। इतना ही नहीं वह उसकी अधपकी छातियों को भी बुरी तरह सहला रहे थे।

पूजा ने झटके से उठना चाहा—तो नारंग अंकल ने उसे और कसकर दबोच लिया तथा उसके गाल के चुम्बन लेने लगे—उसके बालों को सहलाने लगे—उसकी जांघों को रगड़ने लगे।

पूजा का एकाएक 'फोर स्कवायर' दल के वही मैम्बर याद आ गये—जिन्होंने उसकी बहन के साथ बलात्कार किया था। उस रात पूजा ने नारंग अंकल से बचने का बहुत प्रयास किया—लेकिन वो असफल रही। उनके ऊपर वासना का भूत बुरी तरह सवार था—बिस्तर पर बेपनाह छीना-झपटी के बावजूद वो अखिरकार अपने मकसद में सफल हो ही गये थे।

पूजा कोठारी के जीवन का वो पहला अनुभव था—जब किसी पुरुष ने उसके साथ सहवास किया था।

उसी रात पूजा को यह अनुभव भी हुआ कि औरत का जिस्म उसकी सबसे शानदार दौलत होता है—क्योंकि उस घटना के बाद नारंग अंकल उससे डरे-डरे रहने लगे थे। इतना ही नहीं—नारंग अंकल ने उसी रात उसे सौ का एक नोट भी दिया और लगभग दबी जबान में कहा कि वो उस बारे में कुछ भी अपनी आण्टी को न बताये।

पूजा ने सौ का वह नोट ले लिया—इस तरह उसने अपने जिस्म की पहली कीमत वसूल की।

फिर तो मानों सिलसिला चल पड़ा था—नारंग अंकल मौका मिलते ही उसे अकेले में दबोच लेते और फिर उसके गुप्तांगों के साथ छेड़छाड़ करते—उसके चुम्बन लेते—उसके नितम्बों को भींचते। पूजा को भी नारंग अंकल की वो हरकतें अब अच्छी लगने लगी थीं और वो खुद बेसब्री से इंतजार करती थी अकि कब नारंग अंकल उसे अकेले में दबोचें।

तीन साल—सैक्स का गरमा-गरम वो खेल पूरे तीन साल तक चतक चला।

नारंग अंकल सैक्स के मामले में खूब खेले खाये व्यक्ति थे—इसलिये उन तीन सालों में पूजा का सैक्स ज्ञान काफी बढ़ गया था और वो ऐसे कई आसन जान गयी थी—जिनकी साधारण औरतों ने तो कल्पना भी नहीं की होती।

इसे इत्तेफाक ही कहा जायेगा कि 'फोर स्कवायर' दल की तरफ से

भी फिर कोई और घटना न घटी। इसकी मुख्य वजह ये भी हो सकती है कि 'कोठारी परिवार' हत्याकाण्ड के बाद बंगलौर की पुलिस कुछ ज्यादा ही अलर्ट हो गयी थी। रात के समय बंगलौर आने वाली गाड़ियों में पुलिस का पहरा बढ़ा दिया गया था और कुछ गाड़ियां तो कैंसिल भी कर दी गयी थीं। बहरहाल वजह चाहे जो रही हो—लेकिन फिर 'फोर स्कवायर' दल का आतंक बंगलौर से हमेशा-हमेशा के लिये खत्म हो गया।

परन्तु पूजा कोठारी 'फोर स्कवायर' दल के उन चार दरिन्दों को कभी नहीं भूला सकी।

उन चारों की तस्वीर उसकी आँखों में इस तरह बस गयी थी—जैसे नागिन की आँखों में अपने नाग के हत्यारों की तस्वीर आंकर बस जाती है और फिर वह तब तक छटपटाती रहती है—जब तक अपने नाग के हत्यारों को डंस नहीं लेती।

कुछ ऐसी ही छटपटाहट इस समय पूजा कोठारी के अंदर थी—उसकी जिंदगी का एक ही मकसद बन चुका था—उन चारों दरिंदों से बदला लेना—वह उन्हें नागिन की तरह डंसना चाहती थी—मौत के घाट उतारना चाहती थी।

पूजा कोठारी को इस बात का पूरा यकीन था कि वह चारों दरिन्दे आज चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हों—मगर एक-न-एक दिन उसे उन चारों का पता जरूर लगेगा।

और वही उन दरिन्दों की जिंदगी का आखिरी दिन होगा।

पूजा कोठारी के दिल-दिमाग में बदले का कैसा भीषण ज्वालामुखी धधक रहा था—इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने वह चार हत्यायें करने के लिये बाकायदा शुरू से ही तमाम तैयारियां कीं।

जैसे—पूजा कोठारी ने अट्ठारह वर्ष की आयु में ही नारंग अंकल का घर छोड़ दिया और वो देखते-ही-देखते बंगलौर शहर की सबसे महंगी कॉलगर्ल बन गयी।

इतना ही नहीं—उसकी खूबसूरती और सैक्स आसनों के चर्चे भी अब बंगलौर शहर में हर तरफ होने लगे थे। नौजवानों ने उसे एक नया नाम दिया—गरम छुरी।

गरम छुरी।

यह वो नाम था—जिसके कारण पूजा कोठारी की ख्याति और ज्यादा बढ़ गयी। बंगलौर शहर का हर नौजवान पूजा कोठारी के साथ सोना चाहता था—उसकी संगमरमरी देह को भोगना चाहता था।

लेकिन पूजा कोठारी का एक ही मकसद था—ज्यादा-से-ज्यादा दौलत इकट्ठी करना। उसके पास दौलत का अम्बार लगता जा रहा था—और यह भी हैरत की बात थी कि वो उस दौलत को अपने ऊपर खर्च नहीं कर रही थी बल्कि उसे इकट्ठा कर रही थी—खासतौर से उस दिन के लिये, जिस दिन उसे उन चार दरिंदों का पता मिलना था।

पूजा कोठारी ने जूडो, कराटे और कुंगफू की भी विशेष ट्रेनिंग ली—ताकि उन दरिन्दों का वह पूरी दृढ़ता के साथ मुकाबला कर सके।

अपने एक ग्राहक से उसने हिप्नोटिज्म की कला भी सीखी।

इतना ही नहीं—उसने कानून की किताबों का भी अध्ययन किया—हत्या के ऐसे बेशुमार, अनोखे केस पढ़े, जिसमें अपराधियों ने बड़े नायाब तरीकों से अपने-अपने शिकार को मौत के घाट उतारा था। पूजा कोठारी भी उन दरिन्दों की इसी प्रकार हत्या करना चाहती थी—जो कानून की किसी भी धारा के अन्तर्गत उसे अपराधी साबित न किया जा सके। उन चारों ने भी तो चालाकी का ऐसा ही खेल खेला था—वह अपराध करके फरार हो जाते थे और अन्त तक पुलिस को उनका पता नहीं चला कि वो कहाँ गायब हो गये।

कुल मिलाकर पूजा कोठारी मौत का एक खौफनाक खेल खेलने के लिए पूरी तरह तैयार थी।

अब उसे उन चारों के विषय में सिर्फ किसी सूत्र के मिलने का इंतजार था।

ताकि वो उन दरिन्दों तक पहुँच सके।

इस दुनिया से उनकी हस्ती मिटा सके।

●●●

पूजा कोठारी एकाएक उस अतीत से बाहर निकल आयी।

इस समय भी वो बिस्तर पर बैठी थी—आँखें दहककर अंगारा बनी हुई।

होठ क्रोध से फड़फड़ा रहे थे।

और आँखें—जलती हुई आँखें—वो इस समय भी कैलेण्डर पर फिक्स थीं— तेरह के अंक पर—।

उफ्—अगर कोई उस समय उन आँखों को देख लेता—तो दहशत से चिल्ला उठता। क्योंकि गुस्से से इस कदर जलती हुई आँखें कम-से-कम किसी इंसान की नहीं हो सकती थीं।

पूजा कोठारी के गले में लॉकेट झूल रहा था—हीरे का वही लॉकेट—जो ट्रेन में किसी दरिन्दे से छूट गया था और जिसे पूजा कोठारी इसलिये [illegible] साथ चिपकाये घूमती थी कि शायद उसी से किसी दरिन्दे का पता चल जाये।

पूजा कोठारी की [illegible] लेण्डर [illegible]—तो अपने गले में झूलते उस लॉकेट पर जाकर [illegible]। गुस्से से चिल्ला उठी पूजा कोठारी—उसने निर्ममतापूर्वक उस लॉकेट को अपने गले से उतारकर फेंक दिया और फिर आवेश में जोर-दार से दीवार पर घूंसे बरसाने लगी—साथ ही वो चिल्लाती भी जा रही थी—किसी नागिन की तरह फुंफकारती भी जा रही थी।

उसकी दीवानगी का अजब आलम था।

जल्द ही पूजा कोठारी के दोनों हाथ लहू-लुहान हो गये। फिर वो उठी—तीर की तरह बाथरूम की तरफ भागी—वहाँ पानी से भरा एक टब रखा था।

फौरन—बिना एक भी सैकिण्ड गंवाये पूजा कोठारी ने अपना सिर पानी के उस टब में डाल दिया।

एक घण्टे तक—पूरे एक घण्टे तक वो अपने सिर को पानी के उस टब में डाले पड़ी रही। धीरे-धीरे उसका गुस्सा कम होने लगा और वो जल्द ही नॉर्मल पोजीशन में आ गयी थी।

पूजा कोठारी वापस अपने बिस्तर पर आकर लेट गयी—सिर उसने तकिये पर रख लिया।

आज उस घटना को आठ साल गुजर चुके हैं—आठ साल—लेकिन एक्सप्रेस ट्रेन में घटा वो हादसा आज भी उसकी आँखों के सामने तरो-ताजा है।

बिल्कुल इस तरह—जैसे कल की ही घटना हो।

फिर पूजा कोठारी सो गयी। लेकिन उसे देखकर साफ लग रहा था—मानों कोई नागिन सो रही है।

ऐसी नागिन—जिसके अंदर जहर-ही-जहर भरा है।

जो सचमुच कोई खौफनाक खेल खेलने वाली है।

●●●

बहरहाल नागिन का खेल शुरू हुआ।

एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद आखिरकार वो दिन आ ही गया था—जब पूजा कोठारी को अपने पहले शिकार के बारे में जानकारी मिली।

वह सोमवार की रात थी—उस रात वो मुम्बई के एक प्रसिद्ध फिल्म प्रोड्यूसर के लिए बुक थी। उसने बारह घण्टे के लिए पूजा कोठारी को एक लाख रुपये दिये थे— इतना ही नहीं, पूजा कोठारी ने उसके साथ वह बारह घण्टे बंगलौर के सबसे शानदार होटल के सबसे शानदार सुइट में गुजारने थे।

रात के ठीक दस बजे पूजा कोठारी उसके कमरे में पहुंच गयी।

यह देखकर पूजा कोठारी को अच्छा लगा कि वह प्रोड्यूसर एक सुंदर और स्वस्थ शरीर का मालिक था।

उसका सीना चौड़ा था और आँखों में चमक विद्यमान थी।

पूजा कोठारी को हमेशा ऐसे ही मर्द पसंद थे—जो अपनी पर्सनेलिटी के रख-रखाव पर काफी ध्यान देते हैं। बहरहाल पूजा कोठारी को देखते ही उसे प्रोड्यूसर ने उसे अपनी शक्तिशाली बांहों में भर लिया और उसके गालों पर एक प्यारा-सा चुम्बन जड़ा।

"इस 'गरम छुरी' के चर्चे मुम्बई में भी काफी सुने थे।" प्रोड्यूसर उसके बालों की लटों से खेलता हुआ बोला—"इसलिये रोक न सका अपने आपको—तुम्हारी सुन्दरता के रेशमी धागे में बंधा बंगलौर तक खिंचा चला आया। अब तो सिर्फ यह देखने की तमन्ना है कि इस खूबसूरत और संगमरमरी जिस्म के अंदर और कौन-कौन से धमाके छिपे हुए हैं।

हँसी थी पूजा कोठारी—बड़े ही कातिलाना और व्यवसाय सुलभ अंदाज में—"यानि मुम्बई से बंगलौर तक का यह सफर जनाब ने केवल 'गरम छुरी' के लिये ही तय किया है।"

"बिल्कुल। और माई हनी डार्लिंग।" प्रोड्यूसर ने बड़े दीवानावार अंदाज में उसके गुलाब की पंखुड़ियों जैसे होठों पर होठ रखे—"यह कोई कम बड़ी वजह तो नहीं।"

फिर हंस पड़ी पूजा कोठारी—वह हंसी तो उसके मोतियों जैसे दाँतों की दोनों पंक्तियाँ चमक उठीं—जिससे उसकी सुंदरता और बढ़ गयी।

"काफी दिलचस्प आदमी हो।" पूजा कोठारी ने भी उसके गाल का चुम्बन लिया औरा फिर उसके हाथ प्रोड्यूसर के सीने पर सरसराते हुए उसकी पीठ पर जाकर कस गये।

"सिर्फ दिलचस्प ही नहीं हूँ।" प्रोड्यूसर ने हँसते हुए पूजा कोठारी को अपनी गोद में उठा लिया—"बल्कि थोड़ा-थोड़ा खतरनाक भी हूँ।"

"यह तो और अच्छी बात है। क्योंकि मर्द जब तक खतरनाक नहीं होता—तब तक भरपूर मजा भी नहीं आता।"

प्रोड्यूसर अब पूजा कोठारी को लेकर बिस्तर की तरफ बढ़ गया था—साफ ज़ाहिर था कि उसके ऊपर वासना का नशा चढ़ने लगा था।

बिस्तर के नजदीक पहुँचते ही उसने पूजा कोठारी को बिस्तर पर पटक दिया।

पूजा कोठारी ने उठने का प्रयास किया—तो उसने फौरन उसे गिद्ध की तरह दबोच लिया और एक ही झटके में उसकी स्कर्ट उतारकर फैंक दी। इतना ही नहीं—उसने अपने होठ भी बड़ी फुर्ती से पूजा कोठारी की जांघ पर काफी ऊपर रख दिये।

अजीब-सी सनसनाहट दौड़ती चली गयी पूजा कोठारी के शरीर में—प्रोड्यूसर के गरम होठों ने उसकी जांघ की चिकनी और नग्न त्वचा में हलचल-सी पैदा कर दी थी।

"अब तो सिर्फ यह देखना है डार्लिंग।" प्रोड्यूसर बेहद उत्तेजित होता हुआ बोला—"कि तुम्हारे इस जिस्म में आखिर ऐसी क्या खास बात है—जिसके कारण पूरा बंगलौर शहर तुम्हारा दीवाना हो उठा है।"

"चिन्ता मत करो डियर।" पूजा कोठारी उसे तेजी से अपने जिस्म पर चढ़ते देखकर हँसी—"आज के बाद तुम भी 'गरम छुरी' के जिस्म के दीवाने होओगे।"

तब तक प्रोड्यूसर ने अपनी टॉप को भी बेदर्दी से उतारकर फैंक दिया था।

पूजा कोठारी ने उसकी हरकतों से प्रसन्न होकर अपनी नीली-नीली आँखें उसकी आँखों में डाल दीं और फिर मुस्कुरा उठी।

प्रोड्यूसर भी मुस्कुराया।

अब प्रोड्यूसर के हाथ उसकी पेण्टी के अंदर-ही-अंदर रेंगते हुए उसके नितम्बों तक जा पहुंचे थे और वह उन्हें अहिस्ता-आहिस्ता दबा रहा था।

पूजा कोठारी की साँसें भी भभकने लगीं।

उसी पल प्रोड्यूसर ने उसकी पेण्टी भी उतारकर दूर फैंक दी।

पूजा कोठारी नग्न हो गयी।

बिल्कुल नग्न।

तब तक प्रोड्यूसर की उत्तेजना के मारे बुरी हालत होने लगी थी और साफ लग रहा था कि अगर उसने जल्द ही सहवास की चरम ऊँचाइयों को न छुआ—तो वह अपना संयम गंवाकर 'सब-कुछ' लुटा बैठेगा।

आनन-फानन प्रोड्यूसर ने अपने सारे कपड़े उतार डाले।

प्रोड्यूसर की बेसब्री देखकर पूजा मन-ही-मन हँसी।

बहरहाल फिर तूफान आ गया—साँसों का तूफान—जिसमें उन दोनों की दबी-दबी मीठी सिसकारियाँ भी शामिल थीं।

हर गुजरते हुए पल के साथ वह दोनों अपनी आखिरी मंजिल की तरफ बढ़ते जा रहे थे।

फिर वह दोनों निढाल हो गये।

●●●

तभी 'बम' फट गया।

वो बम—जिस पर प्रतिशोध के अग्निकुण्ड में धधकते एक खौफनाक खेल की आधारशिला रखी गयी।

उस समय वह दोनों ही एक-दूसरे की बाँहों में लिपटे बुरी तरह हाँफ रहे थे।

जब प्रोड्यूसर की बुरी तरह अनियंत्रित साँसें थोड़ी काबू में आयीं—तो उसने एक बार फिर गौर से पूजा कोठारी के पूरे संगमरमरी जिस्म पर दृष्टिपात किया।

और—एकाएक चौंक पड़ा प्रोड्यूसर।

उसकी आँखें अकस्मात् पूजा कोठारी के गले में पड़े लॉकिट पर इस तरह 'फ्रीज' होकर रह गयी थीं—जैसे उसने वहाँ कोई बिच्छू देख लिया हो।

"क्या बात है डियर।" पूजा कोठारी के दिमाग में भी यकायक ढेरों सर्प रेंगते चले गये—"तुम इस लॉकेट को देखकर चौंक क्यों पड़े हो ?"

"य''यह लॉकेट तुम्हारे पास कहाँ से आया ?" प्रोड्यूसर ने छूटते ही पूछा।

"यू ही—यह मेरी जिंदगी में घटे एक हादसे की ख़ास निशानी है। लेकिन तुम्हारा इस लॉकेट से क्या वास्ता है ?"

"क''कुछ नहीं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो डियर।" पूजा कोठारी के दिल-दिमाग से अब वासना का सारा नशा हिरन हो चुका था—वह उससे और कसकर लिपट गयी—"सच-सच बताओ—तुम इस लॉकेट के बारे में क्या जानते हो ?"

"ज''जानता तो कुछ नहीं।" प्रोड्यूसर थोड़ा हिचकिचाता हुआ बोला—"ले''लेकिन मैं ऐसा ही एक लॉकेट पहले भी किसी के पास देख चुका हूँ।"

"किसके पास ?" पूजा कोठारी की उत्सुकता अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी।

"दरअसल एक विश्व प्रसिद्ध भारतीय संगीतकार है—जो इन दिनों थाईलैण्ड में रहता है—मैंने आज से छः महीने पहले एक शो के दौरान उसी विश्व प्रसिद्ध संगीतकार के गले में बिल्कुल ऐसा ही एक लॉकेट देखा था। वह भारतीय संगीतकार एक बड़ा अच्छा ड्रम वादक भी है—सच्चाई ये है कि ड्रम वादक के तौर पर ही उसे पूरी दुनिया में ख्याति मिली है। वह जब शो के दौरान बुरी तरह उत्तेजित होकर ड्रम बजा रहा था—तभी उसके गले में पड़ा हीरे का ऐसा ही एक लॉकेट भी बार-बार उछल रहा था।"

"उ" उस देश का क्या नाम बताया तुमने।" पूजा कोठारी ने बेहद व्यग्रतापूर्वक पूछा—"जहाँ वो भारतीय संगीतकार रहता है ?"

"थाईलैण्ड ।"

"और उस संगीतकार का क्या नाम है ?"

"विजू आनन्द।"

एकदम झटके से उठकर खड़ी हो गयी पूजा कोठारी।

उसकी आँखें अकस्मात् उस शिकारी कुत्ते की तरह चमकने लगीं—जो अपने शिकार को बिल्कुल सामने देख रहा हो।

आठ साल—जिस खबर का उसे पिछले आठ साल से इंतजार था—वो आखिरकार आज मिल ही गयी थी।

बिस्तर से खड़े होते ही पूजा आनन-फानन कपड़े पहनने लगी।

"ल" लेकिन तुम कहाँ जा रही हो ?" प्रोड्यूसर भी उसे कपड़े पहनते देखकर बुरी तरह चौंका—और बिस्तर से उठ खड़ा हुआ।

"मैं जा रही हूँ—मुझे फौरन एक जरूरी काम करना है।"

"मगर अभी तो आधी रात भी नहीं गुजरी।" चिल्ला उठा था प्रोड्यूसर—उसके सारे तेवर एकदम से बदल गये—"मत भूलो—मैंने तुम्हें पूरी रात के लिए बुक किया है। तुम इतनी जल्दी यहाँ से नहीं जा सकती—आखिर एक लाख रुपये की रकम कम तो नहीं होती।"

"एक लाख।" नागिन की तरह फुफकार उठी पूजा कोठारी—उसकी आँखें दहकता अंगारा बनती चली गयीं—"मैं इस समय जिस मकसद के लिये जा रही हूँ सेठ—उसके सामने एक लाख तो क्या एक करोड़ की रकम भी बहुत छोटी है।"

"ल" लेकिन"।"

"और अब अपनी जबान बंद रखो।" चिंघाड़ उठी पूजा कोठारी—"यह लो अपने एक लाख—यह लो—।"

पूजा कोठारी ने कपड़े पहनने के बाद धड़ाक् से अपना वेनिटी

बैग खोला तथा फिर उसमें से सौ-सौ की गड्डियां निकालकर धड़ाधड़ प्रोड्यूसर के मुँह पर मारने लगी।

"मुझे नहीं चाहिये तुम्हारी दौलत—नहीं चाहिये—।" प्रोड्यूसर के मुँह पर नोटों की गड्डियाँ मारते हुए वह आक्रोश में चिल्लाती जा रही थी—"पूजा कोठारी ने आज तक कभी किसी की गुलामी नहीं की—किसी की भी नहीं।"

जल्द ही एक लाख के नोट प्रोड्यूसर के इर्द-गिर्द पड़े थे। जबकि नोटों की वह गड्डियाँ उछालते ही पूजा कोठारी ने आँधी की तरह दरवाजा खोला और फिर फर्श रौंदती हुई किसी जबरदस्त तूफान की तरह वहाँ से गुजर गयी।

पीछे प्रोड्यूसर अभी भी अपनी जगह हक्का-बक्का सा खड़ा था—वह समझ नहीं पा रहा था कि एकाएक उस लड़की को हुआ क्या है।

●●●

विजू आनन्द—विजू आनन्द—विजू आनन्द—।

यह नाम अब पूजा कोठारी के दिमाग में जहरीले नाग की तरह जोर-जोर से फुंफकार भर रहा था—उसके अंदर की नागिन अंगड़ाई लेकर जाग चुकी थी और उसकी आँखों में प्रतिशोध-ही-प्रतिशोध था।

रात के समय ही पूजा कोठारी एक ऐसे व्यक्ति से मिली—जो पिछले कई वर्षों से उसके जिस्म का परमानेन्ट ग्राहक था और जो बंगलौर में एक बड़ा सरकारी अधिकारी भी था।

पूजा कोठारी ने उससे कहा कि उसे जल्द-से-जल्द अपना एक इंटरनेशनल पासपोर्ट चाहिये।

इंटरनेशनल पासपोर्ट—वो भी जल्द-से-जल्द। हालांकि यह आसान काम नहीं था—लेकिन फिर भी सरकारी अधिकारी उस काम में जुट गया।

अधिकारी की सारी भागा-दौड़ी के बावजूद पासपोर्ट बनने में दो दिन लग गये और इस काम में काफी नोट भी खर्च हुए—मगर दौलत की पूजा कोठारी को बिल्कुल चिन्ता न थी। आखिर उसी दिन के लिये तो उसने वह सारी दौलत इकट्ठी की थी।

इंटरनेशनल [illegible] ते ही पूजा कोठारी को उस पर थाइलैण्ड का वीज़ा भी [illegible]

[illegible] और किया—अपनी सारी दौलत को ड[illegible] में बद[illegible] डाला—लाखों डॉलर में—।

उसके बाद उसने वो तमाम लाखों डॉलर एक काफी बड़ी अटैची के तल में बिछाये और उनके ऊपर एक फाल्स बॉटम (नकली तला) फिट कर दिया। अब कोई उस अटैची को खोलने के बाद भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि उस अटैची के तल में बेपनाह दौलत छिपी हुई है।

अपने उस काम से सन्तुष्ट हो गयी पूजा कोठारी।

फिर उसने एक और महत्त्वपूर्ण काम किया।

अपनी उंगली में एक ऐसी अंगूठी पहनी—जो नग वाली जगह से छोटी संदूकची की तरह खुल जाती थी और उसके अंदर 'पोटेशियम साइनाइड' का एक कैप्सूल रखा था।

वह खतरनाक अंगूठी पहनकर पूजा कोठारी ने एक प्रतिज्ञा ली।

उसने भभकते स्वर में कहा—"अगर मैं किसी एक 'फोर स्क्वायर' को भी न मार सकी—तो मैं उसी क्षण पोटेशियम साइनाइड का यह कैप्सूल खाकर आत्महत्या कर लूंगी।"

उस प्रतिज्ञा के बाद शुरू हुआ सफर—मौत का सफर—वह उसी दिन फ्लाइट पकड़कर थाइलैण्ड के लिए उड़ गयी थी।

●●●

दूसरा भाग : बैंकाक (थाइलैण्ड)

थाइलैण्ड—जिसकी राजधानी बैंकाक पूरी दुनिया में वेश्यावृत्ति के लिए मशहूर है।

यहां चंद नोटों के बदले लड़कियां मिल जाया करती हैं—लड़कियां भी एक-से-एक खूबसूरत। वैसे भी थाई सुंदरियां पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। उन लड़कियों के शरीर का आनन्द लेने के लिए ही बैंकाक में हमेशा विदेशी पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है—कुल मिलाकर वेश्यावृति के उस धंधे के कारण ही थाइलैण्ड सरकार को भी प्रतिवर्ष विदेशी मुद्रा की अच्छी-खासी आय हो जाती है।

शाम के उस समय छः बज रहे थे—जब इण्डियन एअरलाइन्स की एक फ्लाइट भयानक गर्जना करती हुई बैंकाक हवाई अड्डे पर उतरी।

आसमान तब तक साफ था—लेकिन कोई नहीं जानता था कि उस साफ-सुथरे आसमान पर न जाने किस पल खून के छींटे उड़ते नजर आने लगें।

पूजा कोठारी जीन्स-पेण्ट और चमड़े की जैकिट पहने अपनी अटैची लेकर हवाई अड्डे से बाहर निकली—अब उसे सबसे पहले विजू आनन्द के घर का एड्रेस पता लगाना था।

उसका शिकार आखिर बैंकाक में किस जगह रहता है?

●●●

पूजा कोठारी बैंकाक की एक काफी बड़ी म्यूजिक शॉप पर पहुँची। उस दुकान में चारों तरफ आडियो कैसिट और सी० डी० डिस्क की भरमार थी—पूजा कोठारी ने देखा कि उस दुकान में कुछ लोकप्रिय भारतीय गायकों के गानों की कैसिटें भी मौजूद थीं—जैसे लता मंगेशकर, मौहम्मद रफी और मुकेश आदि।

"कहिये मैडम।" फौरन उस दुकान का सेल्समेन लपककर उसके करीब आया—"आपको क्या चाहिये ?"

"मुझे विजू आनन्द के प्रोग्राम की कुछ कैसिटें लेनी हैं।"

"ओह—विजू आनन्द।" खुशी से चहका सेल्समेन—शायद वो खुद भी विजू आनन्द का बहुत बड़ा प्रशंसक था—"वाकई विजू आनन्द साहब के संगीत ने आजकल पूरी दुनिया में धूम मचा रखी है मैडम—उनके ड्रम बजाने की स्टाइल में तो कमाल है—कमाल।"

खुशी से चहकते हुए सेल्समेन काउण्टर से पीछे हट गया—फिर उसने शो-कैस में से विजू आनन्द के प्रोग्राम की ढेर सारी कैसिटें निकाली और उन सबको काउण्टर पर पूजा कोठारी के सामने फैला दिया।

"लीजिये मैडम—आप कोई भी कैसिट चुन सकती हैं और अगर इनमें से भी कोई पसंद न आये, तो मैं और दिखा दूंगा। हमारे पास विजू आनन्द साहब के संगीत का पूरा कलेक्शन है।"

"लगता है—तुम विजू आनन्द साहब के कुछ ज्यादा ही फैन हो।" पूजा कोठारी ने सेल्समेन की आंखों में झांकते हुए कहा।

"उनका संगीत ही ऐसा है मैडम !" सेल्समेन ने उत्साह के साथ जवाब दिया—"जो भी एक बार सुन ले—बस हमेशा-हमेशा के लिये उनका दीवाना हो जाये।"

उसी पल पूजा कोठारी की आंखें काउण्टर पर बिछी विजू आनन्द की कैसिटों के ऊपर जाकर जम गयीं। और—अगले पल उसके दिमाग में धमाका-सा हो गया। हर कैसिट के ऊपर विजू आनन्द की तस्वीर छपी थी—वो दुष्ट वही था—वही—जिसने उसकी दीदी के साथ सबसे पहले बलात्कार किया था और छातियां पी थीं।

'फोर स्क्वायर' दल का खतरनाक मैम्बर।

पूजा कोठारी की आंखें सुर्ख होती चली गयीं—उसने बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर गुस्से के दौरे को पड़ने से रोका और जल्दी-जल्दी उनमें से आठ-दस कैसिटें निकाल लीं।

"लगता है मैडम !" सेल्समेन मुस्कुराकर बोला—"आप भी विजू आनन्द साहब की कम बड़ी फैन नहीं हैं—तभी तो एक साथ उनकी इतनी कैसिटें खरीद रही हैं।"

"सही कहा तुमने।" जबरदस्ती मुस्कुराई थी पूजा कोठारी—"म···मैं वाकई विजू आनन्द साहब की बहुत बड़ी फैन हूं—आज तक उनकी काफी कैसिटें सुन चुकी हूं।"

"क्या आप कभी विजू आनन्द साहब से मिली भी हैं मैडम ?" सेल्समेन ने गरमजोशी के साथ पूछा।

"नहीं—मिली तो नहीं।" पूजा कोठारी बोली—"परन्तु उन जैसे महान कलाकार से मिलने की बड़ी तमन्ना है—पता नहीं उन जैसा विश्व प्रसिद्ध संगीतकार मेरे जैसी मामूली लड़की से मिलना भी पसंद करेगा या नहीं ?"

"नहीं—नहीं मैडम !" सेल्समेन जल्दी से बोला—"विजू आनन्द साहब ऐसे बिल्कुल नहीं हैं—जैसा आप सोच रही हैं। वह अपने प्रशंसकों से बड़े खुले दिल से मिलते हैं।"

"क्या तुम उनसे कभी मिले हो ?"

"बिल्कुल मिला हूं मैडम !" सेल्समेन ने फौरन खुशी-खुशी बताया—"एक बार मैं उनसे उनके बंगले पर ही जाकर मिला था। उनकी क्या शानो-शौकत है—वह बिल्कुल राजा-महाराजाओं की तरह रहते हैं। लेकिन फिर भी वो मेरे जैसे छोटे आदमी से इस तरह पेश आये—जैसे मुझे बरसों से जानते थे। मैं तो कहता हूं मैडम—आप भी उनसे एक बार जाकर मिल लो—तबीयत खुश हो जायेगी।"

"मगर उनका बंगला कहां है ?"

"कमाल है !" सेल्समेन ने घोर विस्मय से नेत्र फैलाये—"आप यह नहीं जानती कि विजू आनन्द साहब का बंगला कहां है—जबकि बैंकाक का बच्चा-बच्चा इस बात को जानता है।"

"द···दरअसल मुझे कभी इस बात की जरूरत ही महसूस नहीं हुई।" पूजा कोठारी शीघ्रतापूर्वक बात संभालती हुई बोली—"कि ऐसे महान संगीतकार के बंगले का एड्रेस पता लगाया जाये—क्योंकि मैं उनसे मिलते हुए घबराती थी। लेकिन आज तुमने मेरा सारा डर दूर कर दिया है।"

"ठीक है मैडम—मैं आपको उनके बंगले का एड्रेस बताता हूं।"

सेल्समेन ने एक कागज पर विजू आनन्द के बंगले का एड्रेस लिखकर पूजा कोठारी की तरफ बढ़ा दिया।

"गुड !" पूजा कोठारी की आंखें हजार-हजार वाट के बल्ब की तरह जगमगा उठीं—"मैं आज ही उनसे जाकर मिलती हूं।"

फिर पूजा कोठारी ने कैसिटों का बिल चुकाया और एड्रेस लेकर म्यूजिक शॉप से बाहर निकल गयी।

उसका काम बन गया था।

अब उसका अगला निशाना विजू आनन्द का बंगला ही था।

●●●

इसमें कोई शक नहीं—विजू आनन्द सचमुच बैंकाक में राजा महाराजाओं की तरह ही रहता था।

उसका चार एकड़ भूमि में फैला विशाल और आलीशान बंगला था—जहां वो अपने असंख्य नौकरों और बॉडीगार्डों के साथ शाही जिंदगी गुजारता था।

इस समय भी विजू आनन्द अपने बंगले के आलीशान बैडरूम में ही था—जहां उसके बराबर में उसी के बिस्तर पर एक बड़ी खूबसूरत लड़की निर्वस्त्र लेटी हुई थी। वह लड़की उसी के ग्रुप में बैले डांसर थी और अक्सर उसके दिल बहलाने का सामान भी बनती थी।

इस वक्त भी वो विजू आनन्द का दिल ही बहला रही थी। विजू आज विश्व प्रसिद्ध संगीतकार जरूर बन गया था—लेकिन उसकी हरकतें वही थीं— एक 'फोर स्क्वायर' दल के मैम्बर जैसी। कुछ देर वो बैले डाँसर के खूबसूरत बदन से खेलता रहा और फिर उसने अपने होठ उसकी एक छाती के निप्पल पर रख दिये।

फिर वो बच्चा बन गया—नन्हा-सा बच्चा।

बैले डांसर के शरीर में सनसनी-सी दौड़ने लगी।

उसके अंग-अंग में तेजाब भरता चला गया।

"क्या कर रहे हो डियर ?" वो मादक सिसकारी भरते हुए कसमसाई।

"क्यों ?" हंसा विजू आनन्द—"अच्छा नहीं लग रहा ?"

"यह बात नहीं।" शर्म से पलकें झुका लीं बैले डांसर ने।

"फिर ?"

"तुम हर बार सहवास से पहले इसी तरह बच्चे बन जाते हो डियर।" बैले डांसर के हाथ अब विजू आनन्द की कमर पर रेंग रहे थे और फिर धीरे-धीरे रेंगते हुए वो उसके नितम्बों तक पहुंच गये—"आखिर तुम ऐसा क्यों करते हो ?"

"हर पुरुष को औरत की कोई-न-कोई खास चीज पसंद होती

है।" विजू आनन्द ने पुनः हंसकर उसके बालों को सहलाया—"मुझे औरत के जिस्म में सबसे ज्यादा खूबसूरत उसकी छातियां लगती हैं—इसीलिये मैं हमेशा सहवास से पहला बच्चा बन जाता हूं।"

"तुमसे भी कमाल है डियर !"

खिलखिलाकर हंसी बैले डांसर—फिर वो विजू आनन्द से और कसकर लिपट गयी।

विजू आनन्द काफी देर तक उसके जिस्म से खेलता रहा।

दो दिलों में एक साथ संगीत की स्वर लहरियां छिड़ गयीं।

दोनों के जिस्म एक ही लय और ताल पर थिरकने लगे।

तूफान आता चला गया—ऐसा लगा, जैसे संगीत की स्वर लहरियां तेज होती जा रही हों। सारे राग एक साथ बजने लगे हों।

विजू आनन्द इस समय पूरी तरह बैले डांसर में खोया हुआ था—लेकिन वो नहीं जानता था कि सामने होटल के कमरे में से एक लड़की आज दूरबीन द्वारा उसकी प्रत्येक हरकत देख रही है।

वो पूजा कोठारी थी—बंगलौर की गरम छुरी—।

●●●

विजू आनन्द इस समय अपने बैडरूम में अकेला था।

बैले डांसर उसे शारीरिक सुख पहुंचाने के बाद अभी-अभी वहां से गयी थी।

उस क्षण तक विजू आनन्द अपने आपको दुनिया का सबसे सुखी आदमी अनुभव करता था—जिसके पास सब-कुछ था—सब-कुछ ! लेकिन उस क्षण के बाद उसके जीवन में ऐसी हृदयविदारक घटनाओं की शुरूआत हुई—जिसने उसके सारे सुख को हवा में उड़ा दिया।

सबसे पहले टेलीफोन की घण्टी बजी।

"हैलो !" विजू आनन्द ने बैड पर लेटे-लेटे रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो विजू आनन्द !" तुरन्त एक लड़की की ऐसी बेहद सर्द आवाज उसके कानों में पड़ी—जो किसी की भी रीढ़ की हड्डी तक में सिहरन दौड़ा दे।

"व···विजू आनन्द !" चौंक पड़ा विजू आनन्द !

यह पिछले कई वर्षों में ऐसा पहला मौका था—जब कोई इतनी बेबाकी से उसका नाम ले रहा था। वरना ज्यादातर लोग उसे 'साहब' या 'विजू साहब' ही कहते थे।

"कौन हो तुम ?" गुस्से में चिल्लाया विजू आनन्द—"बेवकूफ लड़की—तुम शायद जानती नहीं कि इस समय तुम किससे बात कर रही हो ?" चिल्लाता हुआ ही विजू आनन्द बैड पर बैठ गया था।

"जानती हूँ—अच्छी तरह जानती हूँ।" लड़की जहरीली नागिन की तरह फुंफकार कर बोली—"मैं इस समय एक ऐसे दुष्ट व्यक्ति से बात कर रही हूँ—जो कभी बंगलौर शहर में 'फोर स्कवायर' दल का मैम्बर रहा था। बंगलौर शहर को तुम अभी भूले तो नहीं होओगे महान संगीतकार !" लड़की मखौल उड़ाने वाले अंदाज में हँसी—"याद है—तुम और तुम्हारे बाकी तीन दोस्तों ने 'फोर स्कवायर' बनकर वहाँ कौन-सा खूनी खेल खेला था।"

"फ''''फोर स्कवायर !" काँप गया विजू आनन्द !

उसके जिस्म का दहशत से एक-एक रोआँ खड़ा होता चला गया।

"क्यों ?" लड़की ने हिकारत से दाँत किटकिटाये—"आज आठ साल बाद 'फोर स्कवायर' दल का नाम सुनकर चौंक पड़े विजू आनन्द ! लेकिन तुमने शायद एक कहावत नहीं सुनी—इंसान के गुनाह की कलई कभी-न-कभी जरूर खुलती है। यह बात अलग है कि उस कलई को खुलने में थोड़ा समय लग जाये। और देखो—तुम्हारे गुनाह की कलई भी आज पूरे आठ साल बाद खुल चुकी है।"

"ल''''लेकिन तुम यह सब कैसे जानती हो ?" विजू आनन्द ने फिर चिल्लाना चाहा था—मगर अपराध बोध उसके दिल-दिमाग पर इस कदर हावी हो चुका था कि लाख चिल्लाना चाहकर भी वो चिल्ला न सका—उसके मुँह से सिर्फ बकरी के बच्चे के मिमयाने जैसी आवाज निकली—"जवाब दो—क''''कैसे जानती हो तुम यह सब ?"

"क्योंकि तुम चारों के एक गुनाह का शिकार मैं खुद भी बनी हूँ विजू आनन्द !" पूजा कोठारी आंदोलित लहजे में बोली थी—ऐसा लगा, जैसे उसकी आवाज में नफरत का अथाह सागर उमड़ आया हो—"याद है—आज से आठ साल पहले की 13 मार्च ! मैं जानती हूँ कि तुम तारीख भूल गये होओगे—क्योंकि ऐसी तारीखें सिर्फ उन लोगों को याद रहती हैं, जिनके दिल में जख्म नश्तर बनकर चुभ जाया करते हैं। लेकिन तुम्हें इतना तो याद ही होगा कि आज से आठ साल पहले एक एक्सप्रेस ट्रेन आगरा से बंगलौर लौट रही थी—रात का समय था—उस ट्रेन में एक तन्हाँ डिब्बे में एक परिवार बैठा था—कोठारी परिवार। फिर वो ट्रेन बंगलौर से पहले एक छोटे से स्टेशन पर रुकी और उस स्टेशन से उस डिब्बे में चार दरिन्दे चढ़े—चार दरिन्दे—जो

उन दिनों बंगलौर में 'फोर स्कवायर' के नाम से प्रसिद्ध थे। और उस डिब्बे में चढ़कर उन चारों दरिन्दों ने अरविन्द कोठारी तथा उसकी पत्नी के गोली मार दी—इतना ही नहीं फिर उन्होंने अरविन्द कोठारी की बेटी सविता की इज्जत भी लूटी।"

विजू आनन्द की आँखों में मौत नाचने लगी।

आठ साल पुरानी वो वारदात अकस्मात् उसकी आँखों के सामने ताजा होती चली गयी—एक-एक चित्र उसकी आँखों के गिर्द घूमने लगा।

"त'''तुम कौन हो ?" कंपकंपाते स्वर में ही चिल्लाया विजू आनन्द—"ब'''बताओ—कौन हो ?"

"मैं बंगलौर के उसी सेशन जज अरविन्द कोठारी की सबसे छोटी बेटी हूँ।" पुनः नागिन की तरह फुंफकारी थी पूजा कोठारी—"उस रात जब तुम चार दरिन्दों ने ट्रेन के डिब्बे में वो विनाशलीला मचायी—उस समय मैं वहीं टॉयलेट के अंदर थी। और मैंने सब कुछ—सब कुछ अपनी आँखों से देखा था।" पूजा कोठारी चिंघाड़ती चली गयी—"मैंने देखा था कि तुम चारों ने किस तरह बेरहमी से मेरे पापा को मार डाला—मेरी मम्मी को मार डाला—और फिर मेरी फूल-सी दीदी के जिस्म को रौंदने के बाद उनकी भी हत्या कर दी। मैंने सब कुछ देखा था विजू आनन्द—सब-कुछ। सबसे पहले तुमने मेरी दीदी के साथ बलात्कार किया था—मैं गलत तो नहीं कह रही।"

थर्रा उठा विजू आनन्द !

उसके दिमाग में सांय-सांय आँधी चलने लगी।

"याद करो।" पूजा कोठारी गरजती हुई बोली—"तुम चार दोस्त अपने गले में एक जैसी सोने की चैन पहना करते थे—जिनके लॉकिटों में चार अलग-अलग हीरे जड़े थे। मगर उस रात तुममें से किसी एक की चैन वहीं डिब्बे में छूट गयी थी—वो चैन आज भी मेरे पास है। आठ साल !" पूजा कोठारी ने गहरी साँस ली—"मैं आठ साल प्रतिशोध की भीषण अग्नि में जली हूँ विजू आनन्द—लेकिन अब सभी 'फोर स्कवायर' की मौत का समय आ गया है—सबसे पहले तुम मरोगे—तुम। मैं तुम्हें छत्तीस घण्टे का अल्टीमेटम देती हूँ।" पूजा कोठारी की आवाज में चेतावनी का पुट आ गया—"छत्तीस घण्टे के अंदर-अंदर मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगी। इतना ही नहीं—दुनिया का कोई कानून, कोई पुलिस मुझे पकड़ नहीं पायेगी। तुम अपनी जान बचाने के लिये किसी भी देश में भाग सकते हो महान संगीतकार ! अमरीका जाकर

तुम सी० आई० ए० की मदद ले सकते हो—रूस जाकर के० जी० बी० की मदद ले सकते हो—चीन जाकर सी० ई० एल० डी० की मदद ले सकते हो। लेकिन मेरा दावा है कि दुनिया की कोई ताकत तुम्हें बचा नहीं पायेगी—छत्तीस घण्टे के अंदर-अंदर तुमने हर हालत में मर जाना है।"

और—उस खतरनाक चेतावनी के बाद पूजा कोठारी ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

●●●

विजू आनन्द के शरीर से अब पसीने की धारायें बहने लगीं।

उसने कंपकंपाते हाथों से टेलीफोन का रिसीवर क्रेडिल पर रखा। वो इस समय इस कदर आतंकित था—जितना शायद ही जीवन में पहले कभी हुआ हो।

चेहरा एकदम पीला जर्द पड़ गया था—और आँखों में सफेदी छा गयी थी।

विजू आनन्द बैड से उठकर अपने बैडरूम की खिड़की के नजदीक पहुँचा और वहाँ से उसने अपने बंगले के विशाल कम्पाउण्ड का दृश्य देखा—जहाँ उसके असंख्य हथियारबंद गार्ड बड़ी मुस्तैदी के साथ पहरा दे रहे थे। वह सबके सब थाइलैण्ड के अचूक निशानेबाज थे—उनमें से कई तो ऐसे भी थे, जो निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीत चुके थे।

इसके अलावा उसके बेहद वफादार ब्लड हाउण्ड और टेरियर जाति के कुत्ते भी जोर-जोर से भौंकते हुए कम्पाउण्ड में इधर-से-उधर घूम रहे थे।

लेकिन विजू आनन्द के दिल को फिर भी तसल्ली न मिली।

अंधेरा अब चारों तरफ फैल चुका था और आसमान में दूर चमकता हुआ दूधिया चाँद साफ नजर आ रहा था।

विजू आनन्द बेहद बेचैनीपूर्वक बैडरूम में इधर-से-उधर टहलने लगा।

विजू आनन्द की आयु इस समय पैंतीस-छत्तीस वर्ष के आसपास थी—बदन बाइस-तेइस साल के नौजवान की तरह ही काफी गठा हुआ था और शरीर की त्वचा आभामयी थी। साफ लग रहा था कि उस व्यक्ति ने जीवन में दुःखों का सामना काफी कम किया है। और अब—एकाएक इतना बड़ा संकट उसके सामने आकर खड़ा हो गया था—जिसने उसे हिलाकर रख दिया।

वह बेचैनीपूर्वक टहलता रहा।

पहले उसने सोचा—जरूर कोई सिरफिरी लड़की होगी—जो उसे हत्या की धमकी दे रही है।

न··· नहीं—फिर कुछ सोचकर वह खुद ही आतंकित हो उठा—···इतनी दृढ़ और पैनी आवाज किसी सिरफिरी लड़की की नहीं हो सकती।

विजू आनन्द बेपनाह आतंक के वशीभूत अपने प्राइवेट बार काउण्टर के सामने एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया और फिर गटागट स्कॉच के तीन-चार पैग बनाकर पी गया।

उसने आँखें बंद कर लीं।

आँखें बंद करते ही विजू आनन्द को बंगलौर के दिन याद आने लगे। वह चार दोस्त—जो कभी चार जिस्म लेकिन एक जान हुआ करते थे। जिनके पास कॉलिज लाइफ में ही सब कुछ था—सब कुछ। वह धनी माता-पिता की संतान थे। परन्तु दौलत और जवानी के उन्माद में भटककर वह चारों ही अपराध की एक ऐसी राह पर चल पड़े थे—जिसका अन्त तब उन्हें भी मालूम न था।

उस समय तो उन चारों के लिये वह सब एक खेल जैसा था—जिस तरह नौजवान क्रिकेट या फुटबॉल खेलते थे—उसी प्रकार वह चारों भी एक खेल ही खेल रहे थे, जिसमें उन्हें भरपूर आनन्द मिलता था। 13 मार्च की रात—विजू आनन्द को फिर उस रात की तमाम वारदातें याद आने लगीं। उस दिन उन चारों में से किसी को भी मालूम न था कि आज जिस परिवार को वह अपना शिकार बनाने जा रहे हैं—वह बंगलौर के मशहूर सेशन जज अरविन्द कोठारी का परिवार है। वारदात से पहले दिन जब उन्हें अखबारों के द्वारा यह रहस्य पता चला—और यह पता चला कि बंगलौर की पुलिस अब बड़ी सरगर्मी से उनकी तलाश में जुट गयी है—तो वह चारों ही घबरा उठे। उसी दिन से वह चारों 'फोर स्कवायर' एक-दूसरे से अलग हो गये—क्योंकि अब अलग होने में ही उनकी भलाई थी।

विजू आनन्द ने स्कॉच के तीन-चार पैग बनाकर और गटागट पीये।

लेकिन वह अपने आपको संतुलित नहीं कर पा रहा था।

चार फोर स्कवॉयर—विजू आनन्द ने स्कॉच का एक छोटा-सा घूँट भरा और उसे अपने दोस्तों की याद आयी—जो आज विश्व के अलग-अलग कोनों में हैं और चारों ही बड़े आदमी बन चुके हैं। एक

बहुत बड़ा इंजीनियर है, जो गर्वमेण्ट के बिल्डिंग प्लान बनाता है—एक विश्व प्रसिद्ध चित्रकार है—एक बहुत खतरनाक बुल फाइटर बन चुका है और उसे उस पेशे से करोड़ों की आय होती है। और वो खुद—वो खुद तो आज एक महान संगीतकार के रूप में ख्याति पा ही चुका है।

विजू आनन्द स्कॉच के पैग पर पैग पीता रहा।

जल्द ही पूरी बोतल खत्म हो गयी थी—लेकिन उसके दिल-दिमाग से दहशत कम न हुई।

●●●

उसी प्रकार कुर्सी पर बैठे-बैठे और अपने अतीत के बारे में सोचते-सोचते विजू आनन्द की कब आँख लग गयी—उसे पता न चला।

हाँ—फिर दिन निकलने पर ही उसकी आँख खुली। कोई जोर-जोर से उसके बैडरूम का दरवाजा थपथपा रहा था।

विजू आनन्द जल्दी से कुर्सी छोड़कर उठा और उसने दरवाजा खोला। सामने उसका पर्सनल सेक्रेटरी खड़ा था—जिसका नाम टोनी था और जो तेइस-चौबीस वर्ष का एक बड़ा सुंदर पढ़ा-लिखा नौजवान था।

"क्या बात है सर !" विजू आनन्द के दरवाजा खोलते ही टोनी आदर से गर्दन झुकाकर बोला—"सुबह के दस बज चुके हैं और आज आप अभी तक सो रहे हैं। जबकि रोजाना तो आप सात बजे उठकर ही संगीत का रियाज शुरू कर देते हैं।"

"ह''' हाँ।" रात वाली घटना याद आते ही विजू आनन्द फिर डरा-डरा नजर आने लगा था—"आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। मगर तुम बताओ—तुम क्यों आये हो ?"

"मैं तो आपको एक शुभ-सूचना देने आया था सर !" टोनी के चेहरे पर एकाएक चमक नजर आने लगी—"यह तो आपको मालूम ही है कि आज शाम बैंकाक के सबसे ज्यादा मशहूर 'हिलटॉप क्लब' में आपका प्रोग्राम है। आपको सुनकर प्रसन्नता होगी सर—उस प्रोग्राम की तमाम टिकटें भारी-भरकम दामों में ब्लैक हो चुकी हैं ! इतना ही नहीं—इस समय भी बैंकाक के नागरिक तिगनी और चौगुनी रकम देकर उस प्रोग्राम की टिकटें एक-दूसरे से खरीदने की कोशिश कर रहे हैं। पब्लिक के बीच आपका प्रोग्राम देखने का जबरदस्त जनून छाया हुआ है—हर कोई आपका संगीत सुनने को व्याकुल है—आपको एक नजर देखने के लिये व्याकुल है।"

निःसन्देह अगर कोई और समय होता तो—विजू आनन्द उस

सूचना को सुनकर खुश हो जाता। आखिर किसी भी सच्चे कलाकार को क्या चाहिये—पब्लिक का ऐसा ही बेपनाह प्यार तो चाहिये। परन्तु उस समय चाहते हुए भी विजू आनन्द के चेहरे पर कोई मुस्कान न आ सकी।

"स''''सर !" टोनी उसके मनोभावों को पढ़ने की कोशिश करता हुआ बोला—"लगता है कि आज आपकी तबीयत वाकई ठीक नहीं है।"

"न''''नहीं।" विजू आनन्द ने जल्दी से खुद को संभाला—"ऐसी कोई ज्यादा खराब तबीयत भी नहीं है—बस थोड़ा सिरदर्द है।"

"अगर आप कहें—तो मैं आज शाम को 'हिलटॉप क्लब' में होने वाले प्रोग्राम कैंसिल करा देता हूँ सर ?"

"नहीं।" विजू आनन्द बोला—"प्रोग्राम कैंसिल कराने की कोई जरूरत नहीं है।"

"ल''''लेकिन''''।"

"तुम चिन्ता मत करो—शाम तक मैं बिल्कुल सही हो जाऊँगा।"

"ओ० के० सर !" टोनी ने थोड़े ठिठककर कहा—"तो फिर मैं क्लब का दौरा करने जाता हूँ और देखता हूँ कि वहाँ प्रोग्राम की क्या-क्या तैयारियाँ हो रही हैं।"

"ठीक है तुम जाओ।"

टोनी वहाँ से चला गया।

●●●

विजू आनन्द पुनः बैडरूम में बंद होकर बैठ गया था—वो समझ नहीं पा रहा था कि उन परिस्थितियों में उसे क्या करना चाहिये।

दोपहर के समय पूजा कोठारी का उसके पास फिर धमकी भरा फोन आया।

"सोलह घण्टे गुजर चुके हैं विजू आनन्द !" पूजा कोठारी ने गरजते हुए ही कहा था—"अब बीस घण्टे बचे हैं—सिर्फ बीस घण्टे ! और इन बीस घण्टों में मौत किसी भी पल तुम्हारे ऊपर चमगादड़ की तरह झपट सकती है।"

"मेरी बात सुनो।" इस डर से कि कहीं वो लड़की फोन बंद न कर दे—विजू आनन्द चिल्ला उठा—"मेरी बात सुनो। मैं तुमसे कुछ बात [illegible] चाहता हूँ।"

पूजा कोठारी—जो सचमुच टेलीफोन का कनेक्शन काटने जा रही थी—एकाएक ठिठकी।

नागिन की भाँति फुफकारते हुए पूछा उसने—"क्या बात करना चाहते हो ?"

"म···मुझे सबसे पहले अपना नाम बताओ ?"

"क्यों ?" खतरनाक ढंग से हँसी पूजा कोठारी–"थाइलैण्ड पुलिस को मेरे पीछे लगाना चाहते हो।"

"न···नहीं–म···मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं।" विजू आनन्द काँपते स्वर में बोलता चला गया–"त···तुम मुझे गलत समझ रही हो।"

"अगर तुम्हारी ऐसी इच्छा भी हो विजू आनन्द !" पूजा कोठारी नफरत भरे लहजे में बोली–"तब भी मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता। जरा सोचो–जो लड़की सी० आई० ए०, के० जी० बी० और सी० ई० एल० डी० जैसी विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय जासूसी संस्थाओं से तुम्हें मदद लेने को कह चुकी है–वह भला सिर्फ थाइलैण्ड की पुलिस से क्या डरेगी। मेरा नाम अच्छी तरह सुन लो–मुझे पूजा कोठारी कहते हैं–लेकिन कुछ लोगों के लिये मैं 'गरम छुरी' भी हूँ।"

"प···पूजा !" विजू आनन्द हौलनाक स्वर में बोला–"म··· मेरी बात ध्यान से सुनो पूजा ! मैं कबूल करता हूँ कि मैं 'फोर स्कवायर' दल का मैम्बर हूँ। मैं यह भी कबूल करता हूँ कि तुम्हारे परिवार के साथ ट्रेन के डिब्बे में जो विनाश लीला हुई–वह भी हम दोस्तों का ही काम था। लेकिन जरा सोचो पूजा–आज इतने लम्बे अर्से बाद तुम्हें हमारी हत्यायें करके क्या मिलेगा–जबकि आज हमारा जीवन भी काफी बदल चुका है।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" गुर्राई थी पूजा कोठारी !

"म···मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ पूजा–हम चारों की हत्यायें करने से तुम्हारी बहन या मम्मी-पापा तो वापस नहीं लौट आयेंगे–फ···फिर तुम उस घटना को भूल क्यों नहीं जातीं। उ···उसके बदले में तुम्हें जितनी दौलत चाहिये–मैं देने के लिये तैयार हूँ।"

"दौलत !" इतनी जोर से खिलखिलाकर हँसी पूजा कोठारी–मानो उसे हँसी का दौरा पड़ गया हो–"सचमुच तुम काफी दौलतमंद हो गये हो विजू आनन्द !" घृणा का जहर भरता चला गया पूजा कोठारी की आवाज में–"लेकिन अभी तुम इतने भी दौलतमंद नहीं हुए–जो प्रतिशोध के बाजार में खड़े होकर अपनी मौत की कीमत अदा कर सको। आठ साल–मैं प्रतिशोध की प्रचण्ड अग्नि में आठ साल तक जली हूँ विजू आनन्द–और अब यह आग तुम चारों के खून से ही बुझ सकती है। अलविदा महान संगीतकार–अलविदा !"

और–उसके बाद पूजा कोठारी ने लाइन काट दी।

सन्न-सा खड़ा रह गया था विजू आनन्द !

उसके सम्पूर्ण शरीर से एक बार फिर पसीने की धारायें बह निकलीं।

●●●

समय गुजरता रहा।

सैकिण्ड, मिनट में—और मिनट, घण्टों में परिवर्तित होते रहे। उसके बाद पूजा कोठारी का कोई फोन नहीं आया था—परन्तु फिर भी विजू आनन्द का हर पल आतंक के साये में गुजरा—यह अहसास उसे लगातार सताता रहा कि लड़की जरूर कुछ-न-कुछ करेगी। शाम होते ही उसके सेक्रेटरी टोनी ने बैडरूम में कदम रखा।

"प्रोग्राम की सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं सर !" टोनी आते ही बोला—"इतना ही नहीं—'हिलटॉप क्लब' की सबसे शानदार रॉल्स रॉयस कार भी आपको लेने के लिये आ चुकी है और इस समय नीचे खड़ी है—अब आपका क्या आदेश है सर ?"

"तुम नीचे चलो।" विजू आनन्द बोला—"मैं अभी दस मिनट में तैयार होकर आता हूँ।"

"अब आपकी तबीयत तो ठीक है सर ?" टोनी ने पुनः आदरयुक्त लहजे में ही पूछा था।

"ह...हाँ—मैं अब काफी ठीक हूँ।"

"अगर आप जरा भी अस्वस्थ महसूस कर रहे हों सर !" टोनी बोला—"तो मुझे बता दें। मैं अभी भी प्रोग्राम कैंसिल करा दूंगा।"

"नहीं—मैं तैयार होकर आता हूँ।"

"ओ० के० सर !"

●●●

टोनी के जाते ही विजू आनन्द ने 'स्पेशल किंगडम' शराब के दो पटियाला पैग बनाकर पीये—वह थाइलैण्ड की सबसे महंगी शराबों में से एक थी।

फिर उसने अपने विशाल वार्डरोब में से नीले रंग का वो चमकदार सूट निकालकर पहना—जो खासतौर से उस प्रोग्राम के लिये ही सिलवाया गया था।

सूट पहनने के बाद विजू आनन्द ने अपनी कलाई पर दुनिया की सबसे महंगी 'राडो' घड़ी बांधी और बाल संवारे। जल्द ही विजू आनन्द सज-धजकर तैयार हो चुका था।

फिर विजू आनन्द ने वार्डरोब में से एक .38 कैलीबर की स्मिथ एण्ड वैसन रिवॉल्वर भी निकाली और उसे अपनी जेब में रखी।

उसने अपने गले में पड़ी सोने की उस चैन को देखा—जो दोस्तों की निशानी के तौर पर हमेशा उसके गले में पड़ी रहती थी। कुछ देर विजू आनन्द बड़े गौर से उस चैन को देखता रहा—वह हमेशा उस चैन को लॉकेट सहित अपने सूट से बाहर लटकाये रखता था—ताकि उसके दोस्त दुनिया के चाहे जिस देश में भी हों और अगर वो उसके प्रोग्राम को देखें—तो उन्हें अपनी दोस्ती पर गर्व हो सके। लेकिन आज विजू आनन्द ने उस चैन को लॉकेट सहित अपने सूट के अंदर छिपा लिया।

यह पहला मौका था—जब वो उस चैन को छिपा रहा था। जब उसे इस बात का पश्चाताप हो रहा था कि उन चार दोस्तों ने बंगलौर में वो खूनी ताण्डव खेला—तो क्यों खेला।

●●●

शाम के सात बज रहे थे—सुरमई अंधेरा चारों तरफ फैल चुका था और बैंकाक शहर रंग-बिरंगी आकर्षक लाइटों से जगमगाने लगा था।

यही वो क्षण था—जब विजू आनन्द शानदार रॉल्स रॉयस में सवार होकर 'हिलटॉप' क्लब पहुँचा। वहाँ उसे सिर्फ एक नजर देखने के लिये नौजवान लड़के-लड़कियों का अपार जनसमूह उमड़ा हुआ था।

अपने प्रिय हीरो को देखते ही लड़के-लड़कियों ने फूलों के गुलदस्ते हवा में उछालने शुरू कर दिये।

विजू आनन्द—विजू आनन्द—विजू आनन्द—।

चारों तरफ उस नाम का भयानक शोर-सा उमड़ने लगा।

लड़कियों के एक बड़े ग्रुप ने विजू आनन्द की कार को चारों तरफ से घेर लिया और वह उससे ऑटोग्राफ मांगने लगीं।

कार से बाहर निकला विजू आनन्द—कुछ देर तक उसने ऑटोग्राफ दिये और फिर वह सिक्योरिटी के लोगों से घिरा हुआ पाँच मंजिलें 'हिलटॉप' क्लब के अंदर पहुँच गया।

अभी प्रोग्राम शुरू होने में एक घण्टा बाकी था।

विजू आनन्द हमेशा इसी तरह प्रोग्राम शुरू होने से एक घण्टा पहले प्रोग्राम स्थल पर पहुँच जाता था। वहाँ पहुँचकर वो पहले खुद सारी तैयारियाँ देखता—अपने म्यूजिक ग्रुप के मैम्बरों से उस दिन होने वाले प्रोग्राम के बारे में बातचीत करता और अगर उन्हें कोई जरूरी निर्देश देने होते-तो वह भी देता।

●●●

लेकिन आज विजू आनन्द अपने ग्रुप के मैम्बरों से बातचीत

करने की बजाय 'हिलटॉप' क्लब में अपने लिये बने स्पेशल रूम में जाकर बंद हो गया और बिना किसी उद्देश्य के बेचैनीपूर्वक इधर-से-उधर टहलने लगा।

वह पूजा कोठारी की धमकी को भुला नहीं पा रहा था।

तभी उसके दिमाग में विचार आया—उसे अपने बाकी तीन दोस्तों को भी उस घटना के बारे में बताना चाहिये। उन दोस्तों को जिनसे अब बस कभी-कभार ही उसकी मुलाकात होती है—वरना ज्यादातर उनके बीच आपस में पत्र-व्यवहार ही होता है।

विजू आनन्द ने उन्हें उस खतरे से आगाह करने के लिये अपनी जेब से सेल्युलर फोन निकाला और उसे ऑन किया।

"हैलो विजू आनन्द !" तुरन्त एक लड़की की जानी-पहचानी आवाज सेल्युलर फोन से निकलकर उसके कानों में पड़ी।

काँप गया विजू आनन्द !

यह वही थी—वही आवाज—जिसे सुनकर दो मर्तबा उसकी रीढ़ की हड्डी तक में सिहरन दौड़ गयी थी।

"क''''कौन हो तुम ?" चिल्लाया विजू आनन्द !

"अपनी मौत को इतनी जल्दी भूल गये विजू आनन्द !" हँसी पूजा कोठारी—जैसे रात के खौफनाक सन्नाटे में कोई आत्मा हँसी हो—"अभी कार्यक्रम शुरू होने में थोड़ा समय बाकी है 'फोर स्कवायर' दल के पहले मैम्बर—अगर जिन्दा रहना चाहते हो—अगर चाहते हो कि तुम्हारी जान किसी प्रकार बच जाये, तो इस प्रोग्राम को इसी वक्त कैंसिल करके अपने बचाव की कोई तरकीब सोचो।"

"तुम मुझे पागल करके छोड़ोगी।" विक्षिप्तों की तरह चिल्ला उठा विजू आनन्द—"आखिर तुम चाहती क्या हो ?"

"मैं सिर्फ दहशत के जानलेवा साये में तुम्हारी हत्या करना चाहती हूँ।" पुनः खिलखिलाकर हँसी पूजा कोठारी—"मैं चाहती हूँ कि मरने से पहले हर सैकिण्ड तुम्हारे दिल में यह अहसास रहे कि तुम्हें अपने किसी कुकृत्य की सजा मिलने वाली है। मैं तुम्हें मौत का अच्छी तरह मजा चखा देना चाहती हूँ।"

"तुम जरूर कोई खतरनाक बला हो।" पुनः चिल्लाया विजू आनन्द !

"तुम मुझे कुछ भी कह सकते हो महान संगीतकार—क्योंकि मैं जानती हूँ कि इस समय तुम्हारे दिल पर क्या गुजर रही है। मैं अपना चैलेन्ज फिर दोहराती हूँ—तुम आज की रात किसी भी

क्षण मरने वाले हो—दुनिया की कोई शक्ति तुम्हें बचा नहीं सकती। अपने सारे गार्डस—माँस के टुकड़ों पर पलने वाले अपने तमाम कुत्तों और थाइलैण्ड की सारी पुलिस को अपने चारों तरफ इकट्ठा कर लो। तुमने तो कोठारी परिवार की हत्या रात के अंधेरे में एक तन्हाँ ट्रेन के डिब्बे के अंदर की थी—लेकिन मैं तुम्हें सरेआम मारूंगी—सरेआम ! और फिर भी थाइलैण्ड का कानून मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।"

उसके बाद सेल्युलर फोन पर आवाज आनी बंद हो गयी।

लाइन डिस्कनेक्ट हो चुकी थी।

विजू आनन्द मरियल बैल की तरह धम्म् से एक कुर्सी पर बैठ गया—सेल्युलर फोन उसके हाथ से फिसलकर नजदीक ही रखी एक टेबिल पर जा गिरा।

उसके मस्तिष्क में ढेरों अनार फूटने लगे।

एक बार फिर उसका सारा शरीर पसीनों में लथपथ होता चला गया—वह समझ नहीं पा रहा था कि उस मुश्किल से किसी तरह छुटकारा पाये।

●●●

तभी टोनी ने उसके लिये बने उस 'स्पेशल रूम' में कदम रखा।

विजू आनन्द को पसीनों में बुरी तरह लथपथ देखकर टोनी चौंक पड़ा था और एकदम से लपककर उसके काफी नजदीक आया।

"क्या बात है सर ?" टोनी ने सख्त हैरानी से पूछा—"क्या हुआ है आपको ? मैंने सुबह भी कहा था कि अगर आपकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है—तो मैं प्रोग्राम कैंसिल करा दूं।"

"नहीं।" विजू आनन्द कुर्सी पर थोड़ा तनकर बैठा—"ऐसी कोई बात नहीं है।"

उसने अपनी जेब से रूमाल निकाल लिया और अपने चेहरे पर छलछला आये पसीने साफ करने लगा।

"कोई बात तो जरूर है सर !" टोनी अपने शब्दों पर जोर देकर बोला—"पिछले कई घण्टों से हमारे म्यूजिक ग्रुप के मैम्बर नीचे हॉल में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं—लेकिन आप क्लब में आने के बाद भी उनसे मिलने के लिये नहीं गये और न ही आपने आज उन्हें कोई जरूरी निर्देश दिये।"

विजू आनन्द चुप बैठा रहा—लेकिन उसके चेहरे पर चल रहे भावनाओं के प्रचण्ड को बिल्कुल स्पष्ट देखा जा सकता था।

"बताइये सर !" टोनी उत्तेजित होकर बोला—"आखिर क्या बात है—किस रहस्य को आप छिपा रहे हैं।"

इस बार गहरी साँस ली विजू आनन्द ने।

"टोनी !" फिर वो धीमें स्वर में बोला—"न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि आज रात मेरे साथ कोई बड़ी दुर्घटना घटने वाली है—इतनी बड़ी दुर्घटना, जिसमें मेरी जान भी जा सकती है।"

"य···यह आप क्या कह रहे हैं सर !" दहल उठा टोनी—उसके नेत्र आतंक से फैल गये—"ल···लेकिन इतना खौफनाक अहसास आपको क्यों हो रहा है ?"

एक बार फिर खामोश हो गया विजू आनन्द !

वो समझ न सका कि उसे क्या करना चाहिये। मुश्किल तो ये थी कि वो उस घटना के बारे में किसी को विस्तार से बता भी नहीं सकता था—क्योंकि तब उसे अपना यह राज भी खोलना पड़ता कि बंगलौर में 'फोर स्कवायर' बनकर उन चार जिगरी दोस्तों ने कैसा दरिन्दगी से भरा खेल खेला था।

"जवाब दीजिये सर !" टोनी ने पुनः उत्सुकतापूर्वक पूछा—"आखिर क्या बात है—क्यों आपको इतना खौफनाक अहसास हो रहा है ?"

"ब···बात कुछ भी नहीं।" विजू आनन्द घटना पर पर्दा डालता हुआ बोला—"ब···बस मुझे लग रहा है कि आज रात मेरे साथ कोई बुरी घटना घटने वाली है—जिसमें मेरी जान भी जा सकती है।"

"आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं सर !"

"न···नहीं।" विजू आनन्द का स्वर आहिस्ता से काँपा—"म···मैं कुछ नहीं छिपा रहा।"

"फिर तो रात आपने ज़रूर कोई बुरा सपना देख लिया होगा।" टोनी अपने चेहरे पर मुस्कान लाता हुआ बोला—"इसी वजह से आप इतना डर गये हैं। आप निश्चिंत रहें सर—आपके साथ आज रात कोई बुरी दुर्घटना नहीं घटने वाली। आपको शायद मालूम नहीं है—इस समय पूरे 'हिलटॉप' क्लब को चारों तरफ से थाइलैण्ड पुलिस ने घेरा हुआ है और इस विशाल क्लब के अंदर भी चप्पे-चप्पे पर आपकी सुरक्षा के इंतजाम हैं। कोई भी व्यक्ति आसानी से आप तक नहीं पहुँच सकता—और अगर किसी ने जबरदस्ती आप तक पहुँचने का प्रयास किया—तो उससे पहले ही असंख्य गोलियाँ उसे भून डालेंगी।"

"तुम शायद ठीक कह रहे हो।" टोनी की बात सुनकर विजू आनन्द के अंदर विश्वास पैदा हो गया था—"वाकई यह सब मेरा वहम है—यह बुरे सपने के अतिरिक्त कुछ नहीं कि आज रात किसी दुर्घटना में, मैं मर भी सकता हूँ।"

विजू आनन्द झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और एकाएक उसके चेहरे से आतंक के सारे भाव मिट गये।

"मुझे तो इस बात की हैरानी है सर !" टोनी बोला—"कि ऐसा विचार भी आपके दिमाग में कैसे आ गया।"

"मैंने वाकई एक सपना देख लिया था—बुरा सपना ! जिसे मैं इत्तेफाक से हकीकत समझने लगा था।"

विजू आनन्द की बात सुनकर जोर से हँस पड़ा टोनी—उसकी हँसी ने दहशत के उस माहौल को बिल्कुल ही हल्का-फुल्का कर दिया।

उसी पल टोनी ने घड़ी देखी।

"सर !" टोनी एकाएक चौंककर बोला—"प्रोग्राम शुरू होने में अब सिर्फ चालीस मिनट रह गये हैं—आइये, नीचे आकर अब आप ग्रुप के मैम्बर से मिल लें और आज होने वाले प्रोग्राम की सारी तैयारियाँ देख लें।"

"चलो।"

विजू आनन्द पूरे विश्वास के साथ चलता हुआ टोनी के पीछे-पीछे कमरे से बाहर निकला।

पूजा कोठारी की धमकी को कुछ देर के लिये वो पूरी तरह भूल गया था और उसे लग रहा था कि वहाँ उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

●●●

नीचे 'हिलटॉप क्लब' के विशाल हॉल में जाकर वो अपने म्यूजिक ग्रुप के मैम्बरों से मिला और उसने प्रोग्राम की सारी तैयारियाँ देखीं।

तैयारियाँ वाकई काफी अच्छे ढंग से की गयी थीं—खासतौर पर रोशनी का इंतज़ाम तो काफी ऊँचे दर्जे का था।

विजू आनन्द ने अपने ग्रुप के मैम्बरों को उस धुन के बारे में बताया जो उन्हें आज प्रस्तुत करनी थी। वह उसकी बिल्कुल नई धुन थी—जिसकी पिछले सप्ताह ही उसने रचना की थी।

विजू आनन्द अभी अपने ग्रुप के मैम्बरों से बातें ही कर रहा था कि तभी उसका सेक्रेटरी टोनी फिर तेज-तेज कदमों से चलता हुआ उसके करीब आया।

"सर !" टोनी आते ही थोड़ी चिन्तित मुद्रा में बोला—"एक बुरी खबर है।"

"कैसी बुरी खबर ?" आहिस्ता से काँप उठा विजू आनन्द !

"हमारे ग्रुप में लिली नाम की जो लड़की इलैक्ट्रिक गिटार बजाती है।" टोनी बोला—"वह आज नहीं आयी है।"

"लिली नहीं आयी।" विजू आनन्द ने चौंककर अपने ग्रुप मैम्बरों के ऊपर दृष्टिपात किया—लिली वाकई उनमें नहीं थी—"लेकिन क्यों ?" विजू आनन्द ने हैरत से पूछा—"वह क्यों नहीं आयी ?"

"अभी-अभी लिली का फोन आया था सर !" टोनी बोली—"उसकी तबीयत कुछ खराब है। उसे एकाएक बुखार हो गया है और नजला-खाँसी की भी शिकायत है।"

"माई गॉड !" विजू आनन्द ने अपना सिर पकड़ लिया—"इस लड़की की तबीयत भी खराब होनी थी—लेकिन अब हमारा यह प्रोग्राम कैसे होगा—आज इलैक्ट्रिक गिटार कौन बजायेगा ?"

"सर—लिली फोन पर एक बात और कह रही थी।"

"क्या ?"

"उसकी आवाज तो कुछ खराब थी—नजले और खाँसी की वजह से भर्रायी हुई थी—परन्तु उसने बताया कि उसकी एक सहेली है, जो उससे भी अच्छा इलैक्ट्रिक गिटार बजाती है—इसलिये आज रात के प्रोग्राम के लिये वो उसे आपके पास भेज रही है।"

"इस लिली का दिमाग खराब हो गया है।" विजू आनन्द झुंझला उठा—"भला कोई भी साधारण लड़की इलैक्ट्रिक गिटार कैसे बजा सकती है।"

"यह तो उस लड़की से मिलने के बाद ही बेहतर पता चलेगा सर !" टोनी थोड़ा हिचकिचाता हुआ बोला—"ल'''लेकिन अगर लिली ने उस लड़की को आपके पास भेजा है—तो जरूर उसमें कोई खास बात तो होगी ही।"

विजू आनन्द के चेहरे पर फिर भी विश्वास के भाव न आये—उस सूचना ने उसका सारा मूड ऑफ कर दिया था।

"टोनी साहब—टोनी साहब !" तभी 'हिलटॉप क्लब' का एक सिक्योरिटी गार्ड दौड़ता हुआ वहाँ आया।

टोनी तेजी से उसकी तरफ घूमा।

"क्या बात है ?" टोनी ने पूछा।

"टोनी साहब—एक लड़की अभी-अभी क्लब में आयी है, वह

कहती है कि उसे लिली नाम की एक लड़की ने भेजा है और उसे 'विजू साहब' से मिलना है।"

"लीजिये सर !" टोनी ने विजू आनन्द की तरफ देखा—"वह लड़की भी आ गयी।"

विजू आनन्द शान्त खड़ा रहा।

"अगर आप कहें—तो मैं उसे अंदर बुलाऊँ सर ?"

"ठीक है।" विजू आनन्द ने थोड़े अनमने ढंग से कहा—"बुलाओ उसे अंदर।"

"जाओ।" टोनी ने सिक्योरिटी गार्ड से कहा—"उस लड़की को अंदर भेज दो।"

"अभी भेजता हूँ सर !"

सिक्योरिटी गार्ड वहाँ से चला गया।

●●●

मुश्किल से दो मिनट बाद ही एक लड़की ने हॉल में कदम रखा।

उस लड़की के आते ही ऐसा लगा—जैसे हॉल की सुंदरता एकाएक कई गुना बढ़ गयी हो। उस लड़की का व्यक्तित्व शीशे की तरह चमकदार था और उसकी शारीरिक रचना फैशन मॉडलों की तरह आकर्षक थी। इतना ही नहीं—उसके यौवन कलश ऐसे छलछलाते सागर की तरह थे कि देखते ही कोई भी पुरुष उसके साथ सिर्फ सहवास की कल्पना ही कर सकता है।

वह ऊँचे हील वाले सैण्डिलों पर किसी बेबी डॉल की तरह चलती हुई उन्हीं की तरफ बढ़ी आ रही थी।

विजू आनन्द और टोनी—दोनों नेत्र फैलाये उस असीम रूपवती लड़की को देखते रह गये। और सिर्फ वह दोनों ही क्यों—हॉल में मौजूद सभी व्यक्तियों की निगाहें उसी एक चमकदार शख़्सियत पर केन्द्रित होकर रह गयी थीं।

"गुड नाइट सर !" वह लड़की विजू आनन्द के सामने आकर खड़ी हो गयी थी और फिर उसने बड़े बेबाक अंदाज में अपना हाथ विजू आनन्द की तरफ बढ़ाया।

"गुड नाइट !" विजू आनन्द ने लड़की का कोमल हाथ अपने हाथ में ले लिया और फिर अपनी रिस्टवॉच देखी—"वाकई रात की शुरूआत हो चुकी है।"

"अगर रात की शुरूआत न भी हो—तब भी क्या फर्क पड़ता है सर !" लड़की खिलखिलाकर हँसी—तो उसके मोतियों जैसे दाँत

चमक उठे, जिन्होंने उसकी सुंदरता और बढ़ा दी–"संगीतकार के लिये तो सुबह, दोपहर, शाम तक होती है–जब स्वर खिलते हैं। और मैं महसूस कर रही हूँ कि यहाँ थोड़ी ही देर बाद स्वर खिलने वाले हैं। ऐसे स्वर–जो सबको रोमांचित कर देंगे और आज की यह रात पूरे बैंकाक के लिये एक यादगार रात बन जायेगी।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"आप मुझे लिली ही पुकार सकते हैं सर !" लड़की ने दोबारा खिलखिलाते हुए ही जवाब दिया–"आखिर मैं उसी की कार्बन कॉपी बनकर तो यहाँ आयी हूँ।"

"तुम्हारी भाषा-शैली तो बड़ी अच्छी है।" विजू आनन्द की एकाएक उस लड़की के अंदर दिलचस्पी जागने लगी थी–"अब सिर्फ यह देखना है कि क्या तुम इलेक्ट्रिक गिटार भी इतने ही सुन्दर ढंग से बजा लेती हो।"

"मैं अभी इलेक्ट्रिक गिटार का भी प्रदर्शन करके दिखाती हूँ सर !"

वह लड़की एकाएक तेज-तेज कदम बढ़ाती हुई बड़े यकीन के साथ इलैक्ट्रिक गिटार की तरफ बढ़ गयी।

फिर उसने विजू आनन्द की ही एक धुन उस गिटार पर बजाकर दिखाई।

"वैरी गुड !" विजू आनन्द उस धुन को सुनते ही चहक उठा–"वाकई तुम्हारे अंदर कला है–लिली ने तुम्हें यहाँ भेजकर गलत नहीं किया। अगर तुम हमारे आज के प्रोग्राम में सही संगत कर लेती हो–तो फिर तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिये हमारे ही ग्रुप में शामिल कर लिया जायेगा।"

"थैंक्यू सर !"

तभी टोनी, विजू आनन्द की तरफ बढ़ा।

"प्रोग्राम शुरू होने में अब सिर्फ बीस मिनट बचे हैं सर !" टोनी बोला–"अब आपके 'उर्मी स्नान' का समय हो गया है।"

"हाँ !" विजू आनन्द को भी जैसे एकाएक कुछ याद आया–"सचमुच मेरे 'उर्मी स्नान' का समय हो गया है।"

●●●

पाठकों–अब आप सावधान हो जाइये।

क्योंकि वह क्षण आ चुका है–जब पूजा कोठारी अपने पहले शिकार की हत्या करेगी।

यहाँ कथानक के बीच में भी आपको इसलिये डिस्टर्ब किया गया है—ताकि कथानक के आगे बढ़ने से पहले आपको 'उर्मी स्नान' के सम्बंध में विस्तार से जानकारी दी जा सके।

उर्मी स्नान—यह एक बहुत पुरानी कला है, जिसे संगीतकार या गायक करते हैं।

उर्मी स्नान—यानि कण्ठ का स्नान !

इस स्नान को करने के लिये संगीतकार या गायक एक आदमकद टब में लेट जाता है—उसके सिर के बिल्कुल ऊपर एक गीजर लगा होता है और उस गीजर में से हल्का गुनगुना पानी निकलकर सीधे उसके कण्ठ में गिरता है।

उसी क्रिया के दौरान वह व्यक्ति अपने सुरों का आरोह-अवरोह भी करता है।

इस 'उर्मी स्नान' से फायदा ये है कि अगर संगीतकार या गायक वह साधना लगातार करे—तो वह अपने कण्ठ से निकलने वाले सुरों को ऊँची-से-ऊँची साउण्ड पर ले जा सकता है।

यूरोप में इस क्रिया को ही 'वेव बाथ' कहते हैं।

बहरहाल—विजू आनन्द का हमेशा से यह नियम था कि वह अपना प्रोग्राम देने से सिर्फ बीस मिनट पहले 'उर्मी स्नान' जरूर करता था। इससे उसके शरीर का एक-एक जोड़ खुल जाता था और सुरों में ताजगी आ जाती थी। विजू आनन्द 'उर्मी स्नान' को ही अपनी सफलता का मूलमन्त्र मानता था।

उसका कहना था—अगर वो प्रोग्राम देने से बीस मिनट पहले 'उर्मी स्नान' न करे—तो उसके प्रोग्राम में किसी भी हालत में इतनी ताजगी न आ पाये।

बहरहाल विजू आनन्द की तर्ज पर ही थाइलैण्ड के अनेक गायक और संगीतकार अपना प्रोग्राम देने से पहले 'उर्मी स्नान' करने लगे थे।

●●●

विजू आनन्द आज भी 'उर्मी स्नान' करने के लिये चला गया।

उसके जाते ही खूबसूरत और नौजवान टोनी तेजी से उस लड़की की तरफ बढ़ा—जिसे लिली ने भेजा था और जो आज उनके प्रोग्राम में इलैक्ट्रिक गिटार बजाने वाली थी।

पाठकों को यह बताना फिजूल ही है कि वो लड़की कोई और नहीं बल्कि पूजा कोठारी थी।

पूजा कोठारी—जो क्लब में ऐण्ट्री लेते ही टोनी की नजरें भाँप गयी थी—और समझ गयी थी कि वो नौजवान एकाएक उसके साथ सहवास करने को व्याकुल हो चुका है।

"हैलो यंग लेडी !" टोनी ने पूजा कोठारी के नजदीक पहुँचकर उसे मक्खन लगाया—"तुम काफी सुंदर हो—तुम्हारे यहाँ आने से एकाएक हॉल में रौनक आ गयी है।"

हँसी पूजा कोठारी—वह हँसी, तो एक बार फिर उसके मोतियों जैसे सफेद दाँत चमक उठे।

"तुम कोई नई बात नहीं बता रहे हो नौजवान !" पूजा कोठारी थोड़े मखौल उड़ाने वाले अंदाज में बोली—"यह बात आज से पहले भी दर्जनों नौजवान मुझसे कह चुके हैं।"

टोनी का सारा उत्साह एकाएक हवा हो गया—लड़की पहले ही वार में उस पर हावी हो गयी थी।

"लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है।" पूजा कोठारी पुनः चित्ताकर्षक ढंग से मुस्कुराती हुई बोली—"तुम कोई ऐसी बात कहो—जो मुझसे पहले कभी किसी नौजवान ने न कही हो—तो मैं तुमसे जरूर प्रभावित होऊँगी।"

"मैं एक ऐसी बात कह सकता हूँ।" टोनी फिर उत्साह से भरकर बोला—"जो गारण्टी के साथ तुमसे पहले कभी किसी नौजवान ने न कही होगी।"

"क्या ?"

"यह तो तुम जानती ही हो—मैं विजू साहब का पर्सनल सेक्रेटरी हूँ।"

"बिल्कुल जानती हूँ।"

"इतना ही नहीं।" टोनी गरमजोशी के साथ बोला—"विजू साहब मेरा हर कहा मानते हैं। अगर मैं चाहूँ—तो तुम्हें थाइलैण्ड के इस सबसे बड़े और सबसे आलीशान म्यूजिक ग्रुप का परमानेन्ट मैम्बर भी बनवा सकता हूँ।"

"वैरी गुड !" पूजा कोठारी ने अपनी चमकदार नीली-नीली आँखों से उसकी तरफ देखा—"इस बार तुमने वाकई किसी समझदार नौजवान जैसी बात की है।"

"लेकिन ...।" टोनी आगे कुछ कहते हुए हिचकिचाया।

"लेकिन क्या ?"

"तुम्हें मुझे खुश करना होगा।" टोनी की आवाज उस क्षण बेहद धीमी हो गयी थी।

"परन्तु तुम मुझसे कैसी खुशी हासिल करना चाहते हो नौजवान ?" पूजा कोठारी की आँखें इस प्रकार गोल दायरे में सिकुड़ गयीं—मानों वह टोनी की बात का कोई अर्थ न समझ सकी हो।

"मेरे साथ यहाँ आओ—मैं तुम्हें अभी बताता हूँ कि मैं तुमसे कैसी खुशी हासिल करने का इच्छुक हूँ।"

●●●

टोनी फौरन पूजा कोठारी को 'हिलटॉप क्लब' के ऐसे तन्हा कमरे में ले गया—जहाँ उन दोनों के अलावा कोई न था।

पूजा कोठारी को उस कमरे में ले जाते ही उसने उसे दीवार से सटा दिया और उसके सामने एकदम तनकर खड़ा हो गया।

इतना ही नहीं—उन कुछ क्षणों में ही टोनी की आँखों में वासना के लाल-लाल डोरे भी खिंच गये और उसकी नाक की नसिकाओं से गरम-गरम भभकारे निकलकर पूजा के चेहरे से टकराने लगे।

"अब तुम खुद सोचकर बताओ सुंदर लड़की !" टोनी बड़ी बेबाकी से उसकी आँखों में झांकता हुआ बोला—"कि तुम मुझे किस तरह खुश कर सकती हो।"

"मैं तो अभी भी कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।" पूजा कोठारी ने अपना नाटक जारी रखा—"आज की तारीख में कोई भी व्यक्ति सिर्फ दौलत से ही खुश हो सकता है—और मेरे पास तो दौलत भी नहीं है। अगर मेरे पास दौलत होती—तो मैं यहाँ गिटार बजाने ही क्यों आती ?"

"बकवास न करो।" टोनी खीझकर चिल्ला उठा—"तुम्हारे पास बेशुमार दौलत है—बेशुमार दौलत ! इतनी दौलत—जो मैंने पहले कभी किसी लड़की के पास नहीं देखी।"

"ल॰॰लेकिन कहाँ है वो दौलत ?" पूजा कोठारी ने हैरत से इधर-उधर देखा—"म॰॰॰मुझे तो कहीं नजर नहीं आ रही दौलत।"

टोनी एकाएक पूजा कोठारी के जिस्म के ऊपर झुक गया—फिर उसके कंपकंपाते हाथ पूजा कोठारी के दोनों हिमालय की तरह तने वक्षों पर घूमने लगे।

"क॰॰॰क्या कर रहे हो ?" पूजा कोठारी के मुँह से सिसकारी छूटी।

"यह है वो दौलत—यह !" टोनी दीवानों की तरह उसके वक्षों को सहलाता हुआ बोला—"इनमें अकूत धन भरा है—कुबेर के खजाने से भी ज्यादा धन—इसीलिये यह इतने भारी हो गये हैं।"

"सचमुच तुम काफी शैतान हो।" पूजा कोठारी खिलखिलाकर हँसी—"शैतान भी और प्यारे भी। हालाँकि यह सौदा काफी मँहगा

है नौजवान !" पूजा कोठारी उसे स्नेह से निहारती हुई बोली—"लेकिन तुम्हारे जैसे हैण्डसम और दिलफरेब पुरुष के साथ मुझे यह सौदा मंजूर है।"

टोनी—जो उस पल तक काफी गरम हो गया था—वह एकाएक पूजा कोठारी से कसकर लिपट गया। उसने उत्तेजना में उसके कई चुम्बन ले डाले और उसके हाथ रेंगते हुए उसकी टॉप के अंदर घुस गये तथा उसकी गोलाइयों का जायजा लेने लगे।

"क्या बात है डियर !" पूजा कोठारी ने शरारती अंदाज में हँसते हुए ही उसे अपने से पीछे धकेला—"क्या मुझे अपने ग्रुप का परमानेन्ट मैम्बर बनाने से पहले ही सब कुछ कर डालना चाहते हो।"

"न···नहीं।" टोनी ने अपनी भारी होती साँसों को संतुलित किया—"म···मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं।"

"तो चलो—फिलहाल विजू आनन्द साहब के पास चलते हैं।"

●●●

विजू आनन्द तब तक अपने 'स्पेशल रूम' में बंद हो गया था।

बंद होते ही उसने अपने कपड़े उतारे—बाथरूम में पहुँचा और वहाँ लगा पानी का गीजर चालू करके देखा। उसमें ठीक उतना ही गुनगुना पानी भरा था—जितने गुनगुने पानी की उसे 'उर्मी स्नान' के लिये आवश्यकता थी।

फिर वह इत्मीनान से आदमकद बाथटब में लेट गया और अपना मुँह इस तरह खोल लिया कि गीजर की टोंटी में से गिरता हल्का गुनगुना पानी सीधे उसके कण्ठ से टकराने लगा।

उस बाथरूम से सटा हुआ ही एक छोटा-सा केबिन था—उस केबिन में इस समय विजू आनन्द के म्यूजिक ग्रुप के चार मैम्बर खड़े थे—वह फौरन उसी पल आर्केस्ट्रा पर एक बड़ी प्यारी धुन बजाने लगे। उस धुन की आवाज एक ऊँचे रोशनदान द्वारा बिल्कुल साफ-साफ बाथरूम के अंदर तक पहुँच रही थी।

विजू आनन्द उसी धुन के द्वारा अपने कण्ठ से अलग-अलग सुर निकालने लगा।

'उर्मी स्नान' की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी।

●●●

उधर—टोनी को पूरी तरह अपने प्रेमजाल में फांसने के बाद पूजा कोठारी लगभग दौड़ती हुई उस केबिन में पहुँची जहाँ म्यूजिक ग्रुप के चारों मैम्बर खड़े आर्केस्ट्रा बजा रहे थे।

जबकि टोनी वापस नीचे हॉल में चला गया।

पूजा कोठारी ने केबिन में कदम रखते ही देखा कि वह चारों मैम्बर आर्केस्ट्रा बजाने में इतने खोये हुए थे कि उन्हें यही पता न चला कि कोई और व्यक्ति भी उस केबिन में दाखिल हो गया है।

इससे पहले कि उन चारों को उसके बारे में भनक लग पाती—पूजा कोठारी तेजी के साथ उस केबिन से बाहर निकल गयी।

वह दौड़ती हुई उस मेन स्विच के पास पहुँची—जहाँ से उस पूरे फ्लोर पर बिजली संचालित हो रही थी।

उसने आनन-फानन रबड़ के दस्ताने निकालकर अपने हाथों पर चढ़ाये—फिर उसके हाथों में एक प्लास नजर आने लगा।

अगले ही पल पूजा कोठारी ने दो काम बड़ी तेजी के साथ किये।

पहला काम—उसने उस लाइन का फेस एकदम डायरेक्ट कर दिया—जिस लाइन से बिजली संचालित होकर पानी के गीजर तक पहुँच रही थी।

दूसरा काम—उसने न्यूट्रल का तार मेन स्विच से जोड़ दिया।

फिर पूजा कोठारी ने जितने आनन-फानन ढंग से रबड़ के दस्ताने निकालकर पहने थे—उतने ही आनन-फानन ढंग से उसने दस्ताने उतारकर जेब में रखे।

प्लास जेब में रखा।

फिर वह पहले की तरह ही दौड़ती हुई वापस केबिन में पहुँची—वहाँ म्यूजिक ग्रुप के चारों मैम्बर अभी भी बड़ी तन्मयता से आर्केस्ट्रा पर धुन बजा रहे थे। जबकि बाथरूम के अंदर से अब विजू आनन्द के 'बचाओ-बचाओ' करके जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी—स्वाभाविक तौर पर अब गीजर के पानी में करण्ट प्रवाहित हो गया था और इसी कारण विजू आनन्द बाथरूम में पड़ा बुरी तरह छटपटा रहा था। लेकिन वह चारों दीन-दुनिया से बेखबर धुन बजाने में इतने मग्न थे कि उन्हें यही पता न था—कितनी बड़ी घटना वहाँ जन्म ले रही है।

पूजा कोठारी भी आँखें बंद करके उन चारों के बराबर में ही खड़ी हो गयी—और ऐसा प्रदर्शन करने लगी, जैसे वो भी संगीत की उस दुनिया में बुरी तरह खोई हो।

संगीत सम्राट की चीखें गूंजती रहीं—गूंजती रहीं—परन्तु संगीत के शोर में उन चीखों को सुनने वाला कोई न था।

और फिर—एक क्षण वह भी आया, जब उन चीखों की आवाज आनी बंद हो गयीं।

●●●

यही वो क्षण था—जब टोनी ने वहाँ कदम रखा।

टोनी उस समय थोड़ा आश्चर्यचकित और बेचैन-सा नजर आ रहा था।

"क्या बात है ?" उसने आते ही घोर विस्मय से पूछा—"आज अभी तक 'उर्मी स्नान' चल रहा है।"

टोनी के स्वर में इतनी तेजी थी कि म्यूजिक ग्रुप के वह चारों मैम्बर ऑर्केस्ट्रा बजाते-बजाते रुक गये—उनके नेत्र खुले और वह मानों किसी स्वप्नलोक से बाहर आये।

पूजा कोठारी ने भी उन्हीं की तरह चौंककर आँखें खोलीं—जैसे वह नींद से जागी हो।

"पहले तो कभी विजू साहब ने पाँच मिनट से ज्यादा 'उर्मी स्नान' नहीं किया।" टोनी हैरत से बोला और उसने अपनी रिस्टवॉच देखी—"लेकिन आज पंद्रह मिनट से भी ज्यादा हो गये हैं। नीचे प्रोग्राम का भी समय हो गया है और हॉल में दर्शक उनकी बेचैनी से प्रतिक्षा कर रहे हैं।"

समय का अहसास होते ही म्यूजिक ग्रुप के वह चारों मैम्बर चौंके।

"वाकई !" एक मैम्बर ने भी हैरानी जाहिर की थी—"आज तो कमाल हो गया—हमें भी आर्केस्ट्रा बजाते-बजाते समय का अहसास नहीं रहा।"

"मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है।" म्यूजिक ग्रुप के दूसरे मैम्बर ने थोड़े भयभीत अंदाज में कहा—"व... वरना विजू साहब इतनी देर तक तो किसी भी हालत में 'उर्मी स्नान' नहीं करते।"

"मैं अभी देखता हूँ।" टोनी बोला—"क्या चक्कर है।"

"तुम कैसे देखोगे ?"

"अभी पता चल जाता है।" टोनी लपककर रोशनदान के करीब पहुंचा और फिर उसकी तरफ मुँह करके चिल्लाया—"विजू साहब—विजू साहब—।"

कोई प्रतिक्रिया नहीं।

"विजू साहब !" ग्रुप के बाकी चार मैम्बर भी हलक फाड़कर चिल्लाये—"विजू साहब !"

फिर कोई प्रतिक्रिया नहीं।

"मिस्टर टोनी !" पूजा कोठारी भी अब चिन्तित मुद्रा में टोनी से बोली—"मेरा तो दिल घबरा रहा है—तुम्हें फौरन अंदर रूम में घुसकर देखना चाहिये कि क्या चक्कर है ?"

"तुम ठीक कहती हो।" टोनी के चेहरे पर परेशानी की लकीरें गहरी हो गयी थीं—"म···मुझे वाकई रूम के अंदर घुसकर देखना चाहिये।"

टोनी तेजी से रूम के दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"सुनो !"

"क्या है ?" ठिठका टोनी !

"मुझे यह एक चिट्ठी विजू साहब तक पहुंचानी थी।" पूजा कोठारी ने अपनी स्कर्ट की जेब से शीघ्रतापूर्वक एक चिट्ठी निकालकर टोनी की तरफ बढ़ाई।

"च···चिट्ठी !" चौंका टोनी—"य···यह कैसी चिट्ठी है ?"

"दरअसल मैं जब नीचे 'हिलटॉप क्लब' में दाखिल हो रही थी—तभी मुझे विजू साहब की एक प्रशंसिका मिली—उसने मुझे यह चिट्ठी दी और कहा कि अगर मैं इस चिट्ठी को विजू साहब तक पहुँचा दूँ—तो मेरी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"तुमने पहले ही यह चिट्ठी विजू साहब को क्यों नहीं दी।" टोनी के नेत्र सिकुड़े—"आखिर वो नीचे काफी देर तक तुम्हारे पास रहे थे।"

"तब मेरे उन्हें चिट्ठी देना ध्यान नहीं रहा।"

"ठीक है।"

टोनी ने उसके हाथ से चिट्ठी छीनी और फिर वह बिना कोई सैकिण्ड गंवाये दौड़ता हुआ केबिन से बाहर निकल गया।

●●●

टोनी 'स्पेशल रूम' के सामने पहुँचा—उस वक्त रूम का दरवाजा अंदर से बंद था।

टोनी फौरन अपने कंधे की प्रचण्ड चोट दरवाजे के उस हिस्से पर मारने लगा—जहाँ सिटकनी होती है।

तीन-चार प्रचण्ड चोटों में ही सिटकनी नीचे गिर गयी और 'स्पेशल रूम' का दरवाजा लहलहाकर खुलता चला गया।

टोनी आँधी की तरह दौड़ता हुआ रूम के अंदर घुसा और एकदम बाथरूम में पहुँचा।

बाथरूम में पहुंचते ही टोनी के कण्ठ से हृदय विदारक चीख निकल गयी।

सामने बाथटब में भीषणतम करण्ट प्रवाहित हो रहा था और उसमें पीड़ा से छटपटाता, हाथ-पैर फैंकता तथा मुँह से झाग निकालता हुआ विजू आनन्द पड़ा था।

वह हलक फाड़कर चिल्लाना चाह रहा था—परन्तु उसकी चीख अब हलक में ही घुट गयी थी—उसके थरथराते होठों से बस टूटे-टूटे शब्द ही निकल रहे थे—"म''' मुझे ब''' बचाओ—मुझे ब''' बचाओ—।"

●●●

उसी पल एक बार फिर कई घटनायें एक साथ घटीं।

म्यूजिक ग्रुप के चारों मैम्बर जहाँ तूफानी गति से दौड़ते हुए नीचे हॉल में यह सूचना देने पहुँचे थे कि ऊपर कुछ गड़बड़ हो गयी है।

वहीं—पूजा कोठारी, टोनी के केबिन से जाते ही दौड़ती हुई पुनः स्विच के नजदीक पहुँचीं।

उसने आनन-फानन रबड़ के दस्ताने दोबारा पहने।

प्लास से पकड़कर फेस और न्यूट्रल को वापस अपनी-अपनी जगह जोड़ा—जिससे करण्ट का प्रवाह रुक गया।

फिर वो वहीं नजदीक ही बने एक टॉयलेट के अंदर घुस गयी।

उसने अद्वितीय फुर्ती से अपने दस्ताने उतारकर फ्लश के पाइप में डाल दिये और ऊपर से प्लास डाल दिया। इतना ही नहीं—फिर पूजा कोठारी ने सिस्टन की जंजीर भी पकड़कर खींच दी थी—फौरन पानी एक तेज धमाके के साथ फ्लश के पाइप में गिरा और दस्ताने तथा प्लास को बहा ले गया।

सबूत मिट चुके थे।

●●●

उधर—टोनी अभी भीषणतम करण्ट के कारण विजू आनन्द को छटपटाते हुए देख यह सोच ही रहा था कि उसे क्या करना चाहिये—तभी करण्ट का प्रवाह रुक गया।

टोनी ने एकदम लपककर विजू आनन्द को बाथटब में से बाहर निकाल लिया—परन्तु तब तक विजू आनन्द मरने की स्थिति में पहुँच चुका था।

उसके साँस उल्टे-सीधे चल रहे थे—मुँह से झाग निकल रहे थे और वह पीड़ा से छटपटा रहा था।

"सर !" टोनी ने विजू आनन्द को पकड़कर बुरी तरह झंझोड़ा—"सर—यह सब कैसे हुआ—कैसे ?"

"ज''' जरूर यह उ''' उसी लड़की ने क''' किया है।" विजू आनन्द फँसे-फँसे स्वर में बोला—"उ''' उसी ने।"

"लेकिन किसने ?" चिल्लाया टोनी—"किसकी बात कर रहे हैं आप ?"

"व'''वही—ज'''जो इलैक्ट्रिक ग'''गिटार बजाने आयी थी—ज'''जिसे लिली ने भेजा था। व'''वो अब कहाँ है ?"

"वह तो बाहर है।" टोनी की आँखों में यकायक आश्चर्य के भाव तैरे—"परन्तु उसने आपके लिये यह चिट्ठी दी है—कह रही थी कि आपकी किसी प्रशंसिका ने उसे यह चिट्ठी आप तक पहुंचाने के लिये कहा है।"

हालाँकि उस समय विजू आनन्द की बहुत जर्जर हालत थी और साफ लग रहा था कि वो किसी भी क्षण दम तोड़ने वाला है—लेकिन चिट्ठी का नाम सुनकर न जाने कहाँ से उसके शरीर में इतनी शक्ति आ गयी कि उसने लगभग झपटकर टोनी के हाथ से वो चिट्ठी ले ली।

इतना ही नहीं—फिर उस चिट्ठी को खोलकर उसने पढ़ा भी—लिखा था :

"हैलो विश्व के महानतम संगीतकार—मैंने तुमसे कहा था कि मैं 36 घण्टे के अंदर-अंदर तुम्हारी हत्या करूंगी—और देखो, अब तुम्हारी आखिरी साँसें चल रही हैं। कुछ ही देर बाद तुम मर जाओगे—तुम्हारा खेल खत्म हो गया। अब बाकी तीन की बारी है।"

वह चिट्ठी टाइपशुदा थी।

उस चिट्ठी को पढ़ते ही विजू आनन्द के चेहरे पर कुछ क्षण के लिये पश्चाताप के निशान उभरे—बंगलौर का वो सारा नजारा कुछ सैकिण्ड में ही उसकी आँखों के गिर्द घूम गया, जब उन चारों दोस्तों ने 'फोर स्कवायर' बनकर वहाँ दरिन्दगी का नृशंस खेल खेला था—उन क्षणों को याद करके आँखें डबडबा आयीं विजू आनन्द की—उसके कण्ठ से एक जोरदार हिचकी उबली और फिर वो हमेशा-हमेशा के लिये मौत के आगोश में सो गया।

उसी क्षण पूजा कोठारी और म्यूजिक ग्रुप के चारों मैम्बरों ने भी दौड़ते हुए बाथरूम में कदम रखा।

●●●

विजू आनन्द के इस भयानक हत्याकाण्ड या भयानक हादसे की वजह से एकाएक पूरे 'हिलटॉप क्लब' में जबरदस्त अफरा तफरी मच गयी थी।

जिसने भी विजू आनन्द की मौत की खबर सुनी—वही दहल गया।

और नीचे 'हिलटॉप क्लब' के विशाल हॉल में विजू आनन्द के

जो हजारों प्रशंसक उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे—उनके ऊपर तो उस खबर को सुनकर बिजली-सी गड़गड़ाती हुई गिरी।

यह इत्तेफाक ही था कि आज 'हिलटॉप क्लब' में थाइलैण्ड का सबसे धुरंधर जासूस और स्पेशल क्राइम ब्रांच का सुपर कमाण्डो स्पार्को भी मौजूद था।

स्पार्को—वह वो जासूस था, जिसने आज तक बड़े-बड़े पेचीदा और होपलैस केसों को सुलझाकर दिखाया था—इसी कारण उसे स्पेशल क्राइम ब्रांच की 'लोमड़ी' भी कहा जाता था—इतना ही नहीं उसे थाइलैण्ड के 'राष्ट्रपति पदक' से भी दो बार विभूषित किया जा चुका था।

स्पार्को—एक ठिगने कद का, चमकीली आँखों वाला अड़तीस वर्षीय व्यक्ति। स्पार्को, विजू आनन्द के मधुर संगीत का जबदस्त प्रशंसक था और आज की रात वह खासतौर से विजू आनन्द का संगीत सुनने के लिये ही 'हिलटॉप क्लब' आया था।

लेकिन विजू आनन्द की मौत का समाचार सुनकर स्पार्को के दिलो-दिमाग पर भी वैसी ही भीषण बिजली गड़गड़ाती हुई गिरी—जैसी बिजली विजू आनन्द के दूसरे प्रशंसकों पर गिरी थी।

थाइलैण्ड पुलिस ने पूरे 'हिलटॉप क्लब' को फौरन चारों तरफ से घेर लिया—पुलिस की पेट्रोलिंग कारों ने वहाँ जाल-सा फैला दिया और क्लब से किसी भी व्यक्ति के बाहर निकलने पर पाबंदी लगा दी गयी।

जबकि स्पार्को फौरन अद्वितीय फुर्ती से दौड़ता हुआ उस 'स्पेशल रूम' में पहुँचा था—जहाँ बाथरूम में अभी भी विजू आनन्द की लाश पड़ी थी और वहाँ अब भीड़ जमा हो चुकी थी।

लेकिन स्पार्को को देखते ही भीड़ 'खाई' की तरह फटती चली गयी—और स्पार्को निर्विघ्न विजू आनन्द की लाश तक पहुँचा।

पूजा कोठारी तब भी वहाँ थी।

"कैसे हुआ यह सब ?" स्पार्को ने बाथरूम में कदम रखते ही पूछा।

"क''' कुछ कह नहीं सकता।" टोनी उस समय भी जबरदस्त दहशतजदा था और उसके चेहरे का रंग पीला जर्द पड़ा हुआ था—"म''' मैं ''' ब बाथरूम के अंदर घुसा—तो उस समय टब में भीषणतम करण्ट प्रवाहित हो [illegible] था और बाथटब में बुरी तरह हाथ-पैर फैंकते; [illegible]से झाग निकालते तथा पीड़ा से छटपटाते विजू साहब पड़े थे। उनके मुँह से आवाज भी नहीं निकल रही थी और साँस उल्टे-सीधे चल रहे थे।"

"क'''करण्ट !" तेज झटका लगा स्पार्को को—"ल''' लेकिन टब के अंदर इतना भीषणतम करण्ट कैसे प्रवाहित हुआ ?"

"क'''कुछ कह नहीं सकता।" टोनी का स्वर अभी भी उलझनपूर्ण था—"म'''मगर जहाँ तक मैं समझता हूँ—वह भीषणतम करण्ट गीजर के अंदर से निकलते पानी द्वारा प्रवाहित हो रहा था।"

"इसका मतलब गीजर की सिटकनी तब ऑन थी ?"

"नहीं।" टोनी की गर्दन फौरन इंकार में हिली—"सिटकनी तब बंद थी—इतने बेवकूफ तो विजू साहब भी नहीं थे, जो गीजर की सिटकनी ऑन करके गीजर खोल देते और फिर खुद उसके नीचे बाथटब में लेट जाते। वह तो साफ-साफ अपनी मौत को दावत देने वाला मामला होता।"

"अगर सिटकनी बंद थी—तब करण्ट कैसे प्रवाहित हुआ ?"

"यही तो समझ नहीं आ रहा। परन्तु हो सकता है कि मेन स्विच में कुछ गड़बड़ हो गयी हो और उसी के कारण पूरी लाइन में भीषणतम करण्ट प्रवाहित हो गया हो।"

स्पार्को के नेत्र गोल दायरे में सिकुड़ गये—तुरन्त पूछा उसने—"और फिर करण्ट का वह प्रवाह रुका किस तरह ?"

"द'''दरअसल विजू साहब को पीड़ा से छटपटाते देख मेरे होश उड़ गये थे।" टोनी बोला—"मैं अभी सोच ही रहा था कि किस तरह विजू साहब को उस भीषणतम करण्ट से बाहर निकाला जाये कि तभी करण्ट का वो प्रवाह अपने आप रुक गया।"

"अपने आप !" स्पार्को के नेत्र हैरानी से फटे।

"हाँ—अपने आप !"

"कमाल है—करण्ट का प्रवाह अपने आप कैसे रुक गया—जबकि बिजली वगैरा भी नहीं गयी।"

"य'''यह तो मुझे भी नहीं मालूम।" टोनी की आवाज उलझनपूर्ण थी—"कि करण्ट का प्रवाह अपने आप किस तरह रुका।"

अभी स्पार्को उस शुरूआती जंजाल में ही फँसा हुआ था कि तभी एकाएक उसकी नजर विजू आनन्द की लाश के ऊपर पड़े टाइपशुदा कागज पर गयी।

स्पार्को ने फौरन उस कागज को उठाया—और पढ़ा।

कागज पढ़ते ही स्पार्को के दिमाग में विस्फोट होते चले गये—भयंकर विस्फोट—एक ही झटके में यह साबित हो गया कि वो एकदम साफतौर पर हत्या का मामला है।

●●●

जबकि पूजा कोठारी—वह न सिर्फ इस समय भी पूरे विश्वास के साथ वहाँ खड़ी थी बल्कि उसके चेहरे पर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान न थे। यहाँ तक कि स्पार्को के वहाँ पहुँचने से पहले उसने उस टाइपशुदा कागज को भी घटनास्थल से गायब करने की कोशिश नहीं की थी।

उस कागज को पढ़ते ही स्पार्को पुनः झटके से टोनी की तरफ घूमा और उसने सरसराये स्वर में पूछा—"य"'यह कागज यहाँ कैसे आया ?"

"इन्होंने दिया था।" टोनी ने बे-हिचक पूजा कोठारी की तरफ उंगली उठा दी।

स्पार्को की शक से भरी निगाहें पूजा कोठारी की तरफ उठीं—"य"'यह कौन हैं ?"

"यह हमारे म्यूजिक ग्रुप में आज ही आयी हैं।" टोनी बोला—"दरअसल हमारे ग्रुप की परमानेन्ट मेम्बर लिली की तबीयत कुछ खराब थी—इसीलिये लिली ने ही इन्हें इलैक्ट्रॉनिक गिटार की संगत देने के लिये आज अपनी जगह भेजा था।"

"नाम क्या है इनका ?"

"न"'नाम तो हमें भी नहीं मालूम।"

स्पार्को का शक एकाएक पूजा कोठारी पर दृढ़ हो गया—उसकी आँखों में गुस्से की लालिमा दौड़ गयी और वह सीधे पूजा कोठारी को ही निशाना बनाकर थोड़े तेज स्वर में बोला—"तुम्हारा नाम क्या है लड़की ?"

"आप पहले धीमें स्वर में बात करें।" पूजा कोठारी—जो उस समय स्पार्को के किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए तैयार थी—थोड़े दबंग अंदाज में बोली—"क्योंकि विजू साहब की मौत का जितना आप सब लोगों को दुःख हो रहा है—उतना ही मुझे भी दुःख है। मैं विजू साहब की जबरदस्त प्रशंसिका थी और आज मुझे यह परम सौभाग्य प्राप्त हो रहा था कि मैं उनके ग्रुप में, उनके साथ इलैक्ट्रॉनिक गिटार बजाती। लेकिन उनकी अकस्मात् मृत्यु के कारण मेरा यह सपना अधूरा ही रह गया है। जहाँ तक मेरे नाम का सवाल है—मेरा नाम पूजा कोठारी है और मैं एक भारतीय लड़की हूँ। यह रहा मेरा पासपोर्ट !" पूजा कोठारी ने फौरन अपने पर्स में से इंटरनेशनल पासपोर्ट निकालकर स्पार्को की तरफ बढ़ा दिया।

इस समय उसे अपना असली नाम-पता बताने में कोई हर्ज महसूस नहीं हो रहा था—क्योंकि जो व्यक्ति उसका नाम सुनकर उछल पड़ता—वह इस वक्त उसके सामने लाश की सूरत में पड़ा था।

स्पार्को ने एक सरसरी-सी निगाह पासपोर्ट पर डाली और उसे खोलकर देखा।

"यह हत्या तुमने की है ?" स्पार्को पुनः सख्त लहजे में बोला।

"मैं जानती थी।" पूजा कोठारी पहले की तरह ही दबंग अंदाज में बोली—"कि अब तुम यही सवाल करोगे। लेकिन तुम्हारा यह सवाल बेवकूफी से भरा है जासूस महोदय—क्योंकि अगर मैं इस समय ये कहूँगी कि यह हत्या मैंने नहीं की—तब भी तुम बार-बार चिल्ला-चिल्लाकर यही कहोगे कि यह हत्या तुम्हीं ने की है। और अगर मैं यह कहती हूँ—हाँ, यह हत्या मैंने ही की है—तब भी मेरे कहने मात्र से यह साबित नहीं हो जायेगा कि मैं ही वास्तव में हत्यारी हूँ। दरअसल दोनों ही मामलों में सबूत चाहियें और फिलहाल मेरे पास अपने आपको निर्दोष साबित करने के लिये पर्याप्त सबूत हैं—इसीलिये मैं निर्दोष हूँ। लेकिन अगर तुम समझते हो कि यह हत्या गारण्टी के साथ मैंने ही की है—तो तुम खुशी-खुशी मुझे अपराधी साबित करने की कोशिश कर सकते हो। लेकिन मेरा दावा है कि तुम मुझे अपराधी साबित नहीं कर पाओगे।"

चौंक पड़ा स्पार्को—बुरी तरह चौंक पड़ा—जिंदगी में पहले कभी उसे इस तरह की लड़की नहीं मिली थी, जो इस प्रकार शब्दों से खेलते हुए बिल्कुल निडर होकर जवाब दे।

अपनी आँखों को पुनः थोड़ा सिकोड़कर पूछा स्पार्को ने—"इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है कि यह हत्या तुमने नहीं की ?"

"इस समय तुम्हारे शक का मुख्य आधार यही बात तो है।" पूजा कोठारी बोली—"क्योंकि यह टाइपशुदा पत्र मैंने विजू साहब तक पहुँचाया।"

"बिल्कुल।" स्पार्को बे-धड़क बोला—"और यह कोई कम बड़ा शक का आधार नहीं है—क्योंकि इस टाइपशुदा पत्र से साफ जाहिर है कि इसे हत्यारे ने लिखा है। हत्यारा जरूर विजू साहब के मरने से पहले चाहता था कि उन्हें इस बात से अवगत करा दे—वो उसके कारण मर रहे हैं। इसीलिये हत्यारे ने यह टाइपशुदा पत्र विजू साहब के दम तोड़ने से पहले उन तक पहुंचाया—ताकि उसके चैलेन्ज की ठोस हकीकत साबित हो सके।"

"इसमें कोई शक नहीं।" पूजा कोठारी बिना विचलित हुए

बोली—"कि यह पत्र हत्यारे की ही करतूत है। लेकिन मिस्टर टोनी को मैंने चिट्ठी देते समय ही बता दिया था कि मुझे यह चिट्ठी विजू साहब की एक प्रशंसिका ने 'हिलटॉप क्लब' में दाखिल होते समय दी थी और उसने विनती करते हुए कहा था कि अगर मैं यह चिट्ठी विजू साहब तक पहुँचा दूँ—तो मेरी बड़ी मेहरबानी होगी। मुझे उस चिट्ठी को उससे ले लेने में कोई हर्ज महसूस नहीं हुआ—क्योंकि प्रशंसकों की भावनायें बड़ी कोमल होती हैं और विजू साहब के चाहने वाले तो वैसे भी उनके जबरदस्त दीवाने हैं। तब तो यह बात मेरे ख्वाब में भी नहीं थी कि वही लड़की वास्तव में कुछ ही देर बाद विजू साहब की हत्या करने वाली है।"

"लेकिन यह भी तो हो सकता है।" स्पार्को बोला—"कि यह पत्र विजू साहब के नाम वास्तव में तुमने ही लिखा हो और अब तुम उनकी किसी अकल्पनीय प्रशंसिका की आड़ लेकर एक झूठा और मनगढ़ंत किस्सा हमें सुना रही होओ?"

"बिल्कुल हो सकता है।" पूजा कोठारी ने नहले पर दहला मारते हुए कहा—"क्यों नहीं हो सकता ऐसा। लेकिन जासूस महोदय—तुम भूल रहे हो कि अगर विजू साहब की हत्या मैंने की होती—अगर यह टाइपशुदा पत्र मैंने ही लिखा होता—तो मैं इस समय तक तमाम लोगों की नजरों के सामने यहाँ न खड़ी होती बल्कि अपने काम को अंजाम देकर कब की 'हिलटॉप क्लब' से फरार हो चुकी होती। परन्तु मैं इस समय यहां खड़ी हूं—यही मेरी बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत है। मैं तुम्हारे या बाकी लोगों के बाथरूम में पहुंचने से पहले इस पत्र को नष्ट करने की भी कोशिश कर सकती थी—मगर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। यह भी मेरी बेगुनाही का सबूत है। मैं जानती हूं कि मैं इस बात को साबित नहीं कर सकती कि मुझे यह पत्र विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने दिया था—परन्तु जासूस महोदय, ठीक इसी तरह तुम भी इस बात को साबित नहीं कर सकते कि मुझे यह पत्र विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने नहीं दिया था।"

धमाके पर धमाके होने लगे स्पार्को के दिमाग में।

ऐसा धुरंधर अपराधी सचमुच उसकी जिंदगी में पहले कभी नहीं आया था—जो खुद ही सवाल करे और खुद ही उन सवालों का जवाब देकर उनका अस्तित्व मिटा दे।

स्पार्को पलक झपकते ही भांप गया कि उसका मुकाबला इस बार एक बहुत खतरनाक दिमाग से होने जा रहा है।

बोली—"कि यह पत्र हत्यारे की ही करतूत है। लेकिन मिस्टर टोनी को मैंने चिट्ठी देते समय ही बता दिया था कि मुझे यह चिट्ठी विजू साहब की एक प्रशंसिका ने 'हिलटॉप क्लब' में दाखिल होते समय दी थी और उसने विनती करते हुए कहा था कि अगर मैं यह चिट्ठी विजू साहब तक पहुँचा दूँ—तो मेरी बड़ी मेहरबानी होगी। मुझे उस चिट्ठी को उससे ले लेने में कोई हर्ज महसूस नहीं हुआ—क्योंकि प्रशंसकों की भावनायें बड़ी कोमल होती हैं और विजू साहब के चाहने वाले तो वैसे भी उनके जबरदस्त दीवाने हैं। तब तो यह बात मेरे ख्वाब में भी नहीं थी कि वही लड़की वास्तव में कुछ ही देर बाद विजू साहब की हत्या करने वाली है।"

"लेकिन यह भी तो हो सकता है।" स्पार्को बोला—"कि यह पत्र विजू साहब के नाम वास्तव में तुमने ही लिखा हो और अब तुम उनकी किसी अकल्पनीय प्रशंसिका की आड़ लेकर एक झूठा और मनगढ़ंत किस्सा हमें सुना रही होओ ?"

"बिल्कुल हो सकता है।" पूजा कोठारी ने नहले पर दहला मारते हुए कहा—"क्यों नहीं हो सकता ऐसा। लेकिन जासूस महोदय—तुम भूल रहे हो कि अगर विजू साहब की हत्या मैंने की होती—अगर यह टाइपशुदा पत्र मैंने ही लिखा होता—तो मैं इस समय तक तमाम लोगों की नजरों के सामने यहाँ न खड़ी होती बल्कि अपने काम को अंजाम देकर कब की 'हिलटॉप क्लब' से फरार हो चुकी होती। परन्तु मैं इस समय यहां खड़ी हूं—यही मेरी बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत है। मैं तुम्हारे या बाकी लोगों के बाथरूम में पहुंचने से पहले इस पत्र को नष्ट करने की भी कोशिश कर सकती थी—मगर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। यह भी मेरी बेगुनाही का सबूत है। मैं जानती हूं कि मैं इस बात को साबित नहीं कर सकती कि मुझे यह पत्र विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने दिया था—परन्तु जासूस महोदय, ठीक इसी तरह तुम भी इस बात को साबित नहीं कर सकते कि मुझे यह पत्र विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने नहीं दिया था।

धमाके पर धमाके होने लगे स्पार्को के दिमाग में।

ऐसा धुरंधर अपराधी सचमुच उसकी जिंदगी में पहले कभी नहीं आया था—जो खुद ही सवाल करे और खुद ही उन सवालों का जवाब देकर उनका अस्तित्व मिटा दे।

स्पार्को पलक झपकते ही भांप गया कि उसका मुकाबला इस बार एक बहुत खतरनाक दिमाग से होने जा रहा है।

ऐसे दिमाग से—जो किसी के भी छक्के छुटा सकता है।

●●●

अलर्ट हो गया स्पार्को—एकदम चौकन्ना—पूछा उसने—"तुम्हारा पासपोर्ट बता रहा है कि तुम कल ही हिन्दुस्तान से बैंकाक आयी हो।"

"बिल्कुल ठीक।"

"इतनी जल्दी तुम्हारे लिली से सम्बंध कैसे हो गये ?"

"अच्छा सवाल है।" पूजा कोठारी ने पुनः बिना विचलित हुए जवाब दिया—"दरअसल कल हिन्दुस्तान से आते ही इत्तेफाक से मेरी एक पब्लिक प्लेस पर लिली से मुलाकात हो गयी—मुझे जब यह पता चला कि वह विजू साहब के म्यूजिक ग्रुप में इलैक्ट्रिक गिटार बजाती है—तो मेरी उसके अंदर दिलचस्पी जाग उठी—क्योंकि मैं भी इलैक्ट्रिक गिटार काफी अच्छा बजा लेती हूं। लिली ने मुझे चाय पर अपने घर निमंत्रित किया—जहां मैंने उसे गिटार बजाकर दिखाया। बहरहाल उसके बाद हम दोनों के बीच काफी अच्छी दोस्ती हो गयी—यह इत्तेफाक ही है कि आज लिली की तबीयत खराब थी—इसलिये उसने मुझे अपनी जगह यहां प्रोग्राम अटेण्ड करने भेज दिया। बस इतनी-सी हम दोनों के सम्बंधों की कहानी है—लेकिन अगर मुझे यह मालूम होता कि यहां आकर मैं इतने बड़े चक्कर में फंस जाऊंगी—तो विश्वास जानों मैं यहां कभी न आती।"

"ठीक है।" स्पार्को उसके चेहरे पर उभरने वाले भावों को पढ़ता हुआ बोला—"हम इस सम्बंध में लिली से पूछताछ करते हैं—क्योंकि मुझे शक है कि तुम यह कहानी भी मनगढंत ही सुना रही हो।"

"अगर तुम्हें शक है।" पूजा कोठारी पूरी संजीदगी से बोली—"तो तुम बे-हिचक पूछताछ कर सकते हो—मुझे कोई ऐतराज नहीं।"

"मिस्टर टोनी !" स्पार्को, टोनी की तरफ घूमा—"आप मुझे लिली का टेलीफोन नम्बर दें।"

टोनी ने फौरन एक कागज पर लिली का टेलीफोन नम्बर लिखकर दे दिया।

"यहां टेलीफोन कहां हैं ?"

"नीचे मेरे ऑफिस में है।" फौरन 'हिलटॉप क्लब' का मैनेजर आगे बढ़कर बोला—"आइये—मैं आपको वहां लेकर चलता हूं।"

मैनेजर के साथ नीचे जाने से पहले स्पार्को वहां खड़े थाइलैण्ड पुलिस के जवानों से सम्बोधित हुआ—"जब तक मैं लिली को टेलीफोन करके लौट नहीं आता—तब तक यह लड़की यहां से हिलनी भी नहीं चाहिये।"

"आप बेफिक्र रहें सर !" थाइलैण्ड पुलिस के एक जवान ने अलर्ट होकर कहा—"यह लड़की कहीं नहीं जायेगी—अगर इसने यहां से भाग निकलने का जरा भी प्रयास किया, तो हम इसे बे-हिचक गोली मार देंगे।"

"बिल्कुल यही करना।"

"तुम निश्चिंत होकर जाओ ऑफिसर !" पूजा कोठारी ने भी मुस्कुराते हुए कहा था—"मैं कहीं नहीं भागने वाली—क्योंकि मैं जानती हूं कि तुम किसी भी हालत में मुझे अपराधी साबित नहीं कर सकते।"

स्पार्को बार-बार उसे अचम्भे से देखने पर मजबूर हो रहा था—उसने वाकई अपनी पूरी जिंदगी में ऐसी दीदा दिलेर और यकीन से भरी हुई लड़की नहीं देखी थी।

फिर वो मैनेजर के साथ नीचे चला गया।

●●●

मुश्किल से दस मिनट बाद ही स्पार्को लौटा—उसके चेहरे पर उस समय निराशा थी और साफ लग रहा था कि उसके हाथ कोई उत्साहजनक खबर नहीं लगी है।

"क्या कह रही है लिली ?" टोनी ने फौरन छूटते ही पूछा।

"कुछ खास नहीं कह रही।" स्पार्को ने गहरी सांस छोड़ते हुए जवाब दिया—"उसने भी बस उन्हीं बातों को दोहराया है—जो इस लड़की ने अभी-अभी बयान की थी।"

"ओह !"

"तुम ख्वामखाह मेहनत कर रहे हो ऑफिसर !" स्पार्को की बात सुनकर पूजा कोठारी के चेहरे की मुस्कान और गहरी हो गयी—"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि तुम मुझे किसी भी हालत में अपराधी साबित नहीं कर पाओगे। एनी वे—अब मुझे यहां से चलना चाहिये—क्योंकि संगीत प्रोग्राम तो अब होना नहीं है—जो मेरी यहां इलैक्ट्रिक गिटार बजाने की जरूरत पड़े।

"नहीं—तुम यहां से नहीं जा सकतीं।" स्पार्को एकाएक चीखता हुआ पूजा कोठारी के सामने दीवार बनकर खड़ा हो गया।

पूजा कोठारी के चेहरे पर भी अब एकाएक सख्ती के निशान उभर आये थे।

"तुम मुझे जाने से रोक भी नहीं सकते ऑफिसर !" गुर्राई पूजा कोठारी।

"क्यों नहीं रोक सकता—तुम्हें शायद मेरे अधिकारों का अंदाजा नहीं है।"

"बिल्कुल है अंदाजा !" चीखी पूजा कोठारी तथा फिर उसने अपनी उंगली भाले की तरह स्पार्को की तरफ उठाई—"लेकिन तुम"'तुम शायद एक आम आदमी के अधिकारों को भूल गये हो ऑफिसर ! एक आम आदमी के पास इतने अधिकार होते हैं—जितने किसी भी देश के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के पास भी नहीं होते। यह बात अलग है कि आम आदमी उन अधिकारों से वाकिफ नहीं होता—उन्हें जानता नहीं। और इस समय तुम मुझे किस अधिकार से रोक सकते हो—तुम्हारे पास मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं है। अभी तक मैंने तुम्हारे हर सवाल का जवाब दिया है और मेरी हर बात सच निकली है। इसके अलावा तुम एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात और भूल रहे हो ऑफिसर !"

"क'''कौन-सी बात ?"

"मैं एक भारतीय नागरिक हूं और इस समय यहां तुम्हारे देश में मेहमान हूं।" पूजा कोठारी गरजती चली गयी—"इसलिये मेरे अधिकार इस वक्त वैसे भी काफी बढ़े हुए हैं—अगर तुमने मुझे यहां जबरदस्ती रोकने का प्रयास किया या मेरे साथ कोई उल्टी-सीधी हरकत की—तो मैं न सिर्फ तुम पर बल्कि तुम्हारी थाइलैण्ड सरकार पर भी मानहानि का मुकदमा ठोक सकती हूं।"

बेचारा स्पार्को—जिसके सामने बड़े-बड़े अपराधियों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी—पूजा कोठारी की बातें सुनकर उसकी भी हवा खराब हो गयी।

"मैं यहां से जा रही हूं।" पूजा कोठारी उसे साफ-साफ चैलेंज देते हुई बोली—"अगर तुम मुझे रोकना चाहते हो—तो रोककर दिखाओ।"

समझ न सका स्पार्को—उसे उस समय क्या कदम उठाना चाहिये।

"ल'''लेकिन तुम बैंकाक में ठहरी कहां हो ?" स्पार्को ने हिम्मत करके पूछा।

"गुड क्वेश्चन !" पूजा कोठारी के होठों पर हल्की-सी मुस्कान दौड़ी—"यह सवाल पूछने के तुम अधिकारी हो। मैं बैंकाक के सबसे ज्यादा प्रसिद्ध 'बिस्मार्क होटल' में ठहरी हूं।"

ब'''बिस्मार्क होटल ! एक साथ वहां कई सारे मस्तिष्कों में भयंकर विस्फोट हो गये थे—कई सारे चेहरों पर चौंकने के भाव उभरे—स्पार्को बोला—"ल'''लेकिन वो होटल तो विजू साहब के बंगले के बिल्कुल सामने है।"

"ठीक कहा तुमने।" मुस्कुराई पूजा कोठारी—"वह होटल विजू

साहब के बंगले के बिल्कुल सामने है—लेकिन जहां तक मैं समझती हूं ऑफिसर, सिर्फ इसलिये उस होटल में ठहरना कोई अपराध तो नहीं है—क्योंकि वो होटल विजू साहब के बंगले के बिल्कुल सामने है।"

"त'''तुम उस होटल के कौन-से कमरे में ठहरी हो ?"

"कमरा नम्बर दो सौ आठ !" पूजा कोठारी के चेहरे पर निरंतर मुस्कान अटखेली कर रही थी—"अब अगर तुम्हारी इंवेस्टीगेशन पूरी हो गयी हो—तो मैं जाना चाहूंगी।"

"ठ'''ठीक है—तुम जा सकती हो।"

"वैसे एक गलती तुम अभी भी कर रहे हो ऑफिसर !" पूजा कोठारी थाइलैण्ड के उस धुरंधर जासूस को निरंतर अपने शब्द जाल में उलझाती हुई बोली।

"क'''कैसी गलती ?" चिहुंका स्पार्को !.

हो सकता है कि मैंने अपने होटल का नाम और कमरा नम्बर तुम्हें गलत बता दिया हो—इसलिये, मेरे यहां से जाने से पहले तुम्हें 'बिस्मार्क होटल' फोन करके मेरे बयान की सत्यता परखनी चाहिये—कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें धोखा देकर फरार हो जाऊं तथा फिर कभी तुम्हारे हाथ न आ सकूं।"

स्पार्को—बेचारा स्पार्को—उसके दिमाग में चिंगारियां इस तरह छूटने लगीं, जैसे कोई उसके दिमाग में घुसकर वेल्डिंग कर रहा हो।

पूजा कोठारी उसे कदम-कदम पर मात दे रही थी—हर कदम पर मात।

स्पार्को एक बार फिर आंधी-तूफान की तरह दौड़ता हुआ नीचे मैनेजर के केबिन में पहुंचा—अद्वितीय फुर्ती से टेलीफोन डायरेक्ट्री में 'बिस्मार्क होटल' का टेलीफोन नम्बर देखा—उसे उतनी ही तेजी से डायल किया तथा फिर दूसरी तरफ से रिसीवर उठाये जाते ही उसने पूजा कोठारी के बारे में पूछा कि उस नाम की कोई हिन्दुस्तानी लड़की उस होटल में ठहरी हुई थी या नहीं।

और—एक बार फिर स्पार्को के चेहरे पर फटकार बरसने लगी—चेहरे पर बेइन्तहां हताशा के चिन्ह नजर आने लगे तथा फिर उसने टेलीफोन का रिसीवर इतनी जोर से क्रेडिल पर पटका कि यही बहुत बड़ा शुक्र था कि उस टेलीफोन के परखच्चे न उड़ गये।

उसी पल—'लोमड़ी' की तरह चालाक समझे जाने वाले उस धुरंधर जासूस की हताशा का मन-ही-मन भरपूर आनन्द लेती पूजा कोठारी मुस्कुराती हुई मैनेजर के केबिन में दाखिल हुई।

"मुझे तुमसे यह पूछने की कोई जरूरत नहीं है जासूस महोदय !" पूजा कोठारी उसे चैलेन्जिंग अंदाज में देखती हुई बोली—"कि तुम्हें क्या जवाब मिला है। क्योंकि उस जवाब का हर शब्द, हर अक्षर तुम्हारे चेहरे पर लिखा है। वैसे काबिल जासूस वही होता है—जो अच्छी तरह और पूरी तरह तहकीकात कर ले। और मैं समझती हूं कि तुम्हारी तहकीकात अब वाकई पूरी हो चुकी है।"

स्पार्को हक्का-बक्का सा पूजा कोठारी को देखने लगा।

उसके सामने वह अपने आपको पूरी तरह 'उल्लू का पट्ठा' अनुभव कर रहा था।

"अब मुझे चलना चाहिये।" पूजा कोठारी बोली।

फिर वो वहां एक सैकिण्ड के लिये भी नहीं रुकी—तुरन्त तेज-तेज कदम उठाती हुई हिलटॉप क्लब से बाहर निकल गयी।

जबकि पीछे स्पार्को अभी भी अपनी जगह स्तब्ध-सा खड़ा था और महामूर्खों की तरह जोर-जोर से पलकें झपका रहा था।

वाकई वो उसकी जिंदगी का सबसे ज्यादा सनसनीखेज केस था—सनसनीखेज भी और जबरदस्त झटके वाला भी।

●●●

महान संगीतकार विजू आनन्द की मौत की खबर ने न सिर्फ बैंकाक शहर में बल्कि पूरे थाइलैण्ड में जबरदस्त खलबली मचा दी थी।

वह खबर रेडियो और टी० वी० द्वारा आनन-फानन सम्पूर्ण थाइलैण्ड में फैल गयी।

जल्द ही थाइलैण्ड पुलिस की एक एमरजेन्सी मीटिंग बुलाई गयी—जिसमें स्पेशल क्राइम ब्रांच का सुपर कमाण्डो स्पार्को भी मौजूद था।

"मैं सबसे पहले आप लोगों के सामने एक रहस्योद्घाटन करना चाहूंगा।" स्पार्को मीटिंग शुरू होते ही थोड़े आंदोलित लहजे में बोला।

"कैसा रहस्योद्घाटन ? मीटिंग में उपस्थित सारे ऑफिसर चौंके।"

"दरअसल यह पता चल गया है।" स्पार्को बोला—"कि गीजर के पानी में भीषणतम् करण्ट किस प्रकार प्रवाहित किया गया। सारी गड़बड़ मेन स्विच से की गयी थी—किसी ने फेस एकदम डायरेक्ट कर दिया था और न्यूट्रल का तार मेन स्विच से जोड़ दिया—जिससे गीजर की सिटकनी ऑफ होने के बावजूद भी उसके पानी में भीषणतम् करण्ट प्रवाहित हो गया और वही भीषणतम् करण्ट विजू साहब की मृत्यु का कारण बना।"

"इसका मतलब जिसने भी विजू साहब की हत्या की।" थाइलैण्ड पुलिस का एक ऑफिसर थोड़े विस्मय से बोला—"वह इलैक्ट्रिक सिस्टम के बारे में अच्छी-खासी नॉलिज रखता था।"

"स्वाभाविक बात है कि हत्यारे को इलैक्ट्रिक सिस्टम के बारे में अच्छी-खासी नॉलिज थी।" स्पार्को पहले की तरह ही थोड़े तेज स्वर में बोला—"और अगर हत्यारे को इलैक्ट्रिक सिस्टम के बारे में नॉलिज नहीं भी थी—तब भी उसने हत्या करने के लिये वह जानकारी जुटाई होगी। बहरहाल हत्यारे ने काफी सूझ-बूझ और चालाकी के साथ विजू साहब की हत्या की—और बाकायदा प्री-प्लान ढंग से की। इसीलिये वो फौरन घटनास्थल पर ही गिरफ्तार भी न किया जा सका। जबकि सारा पुलिस बल तुरन्त ही अलर्ट हो गया था और पूरे 'हिलटॉप क्लब' की एकदम चारों तरफ से घेरेबन्दी कर दी गयी थी।"

"क्या मेन स्विच के ऊपर से हत्यारे के फिंगर प्रिण्टों के निशान मिले ?" वह सवाल एक अन्य पुलिस ऑफिसर ने स्पार्को से किया।

"नहीं—कोई निशान नहीं मिले।" स्पार्को बोला—"मैं पहले ही बयान कर चुका हूं—हत्यारा हद से ज्यादा चालाक था। उसने कहीं भी ऐसा कोई निशान नहीं छोड़ा—जिसके कारण वो पुलिस के फंदे में फंस सके। मेन स्विच में गड़बड़ करने वाली बात भी इसलिये साबित हुई—क्योंकि फेस और न्यूट्रल के तारों को वापस अपनी-अपनी जगह कसते समय हत्यारे ने थोड़ी जल्दबाजी दिखाई तथा उन्हें सारी तरह से नहीं कस पाया—इसीलिये यह रहस्य खुल गया—जिससे पता चला कि वास्तव में उसने क्या किया था। इसके अलावा इस भयानक हत्याकाण्ड से जुड़ी एक और बड़ी सनसनीखेज बात उजागर हुई है।"

"कौन-सी बात ?" मीटिंग में मौजूद थाइलैण्ड पुलिस के तमाम ऑफिसरों की निगाहें उस समय स्पार्को के चेहरे पर ही जमीं थीं।

"दरअसल विजू साहब के पर्सनल सेक्रेटरी टोनी से पता चला है।" स्पार्को एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला—"कि विजू साहब आज सुबह से ही बेहद डरे हुए थे—कई बार उसने उन्हें आज आतंक के कारण पसीनों में लथपथ भी देखा था—उन्होंने 'हिल टॉप क्लब' में आने के बाद एक बार टोनी से कहा भी था कि आज रात उनके साथ कोई भयंकर दुर्घटना घट सकती है—जिसमें उनकी जान जाने का भी अंदेशा है। विजू साहब की बात को तब टोनी ने गंभीरता से नहीं लिया और यह कहकर उन्हें सान्तवना दी कि जरूर उन्होंने कोई बुरा सपना देख लिया है—इसी कारण वह इतने आतंकित हैं।"

"माई गॉड !" एक पुलिस अधिकारी के मुंह से सिसकारी छूटी और उसके नेत्र आश्चर्य से फैले—"मिस्टर स्पार्को—इस घटना से तो साफ जाहिर है कि विजू साहब को अपनी हत्या होने से पहले ही खबर थी और जरूर कोई उन्हें मार डालने की लगातार धमकियां दे रहा था।"

बिल्कुल ठीक अंदाजा लगाया आपने। स्पार्को ने भी उत्तेजित होकर कहा—"वैसे भी विजू साहब की लाश के ऊपर जो टाइप शुदा पत्र पड़ा पाया गया—उस पत्र में भी यह एकदम साफतौर पर लिखा था कि हत्यारे ने उन्हें छत्तीस घण्टे के अंदर-अंदर मार डालने का अल्टीमेटम दिया था—इतना ही नहीं उसने अपने उस अल्टीमेटम को सच भी साबित करके दिखाया।"

"ल""लेकिन अगर कोई विजू साहब को हत्या की धमकियां दे रहा था।" वह सवाल एक अन्य पुलिस अधिकारी ने किया—"तो फिर उन्होंने थाइलैण्ड पुलिस की मदद क्यों नहीं ली ?"

"इस सवाल का जवाब तो विजू साहब ही बेहतर ढंग से दे सकते थे।" स्पार्को बोला—"कि उन्होंने पुलिस की मदद क्यों नहीं ली। मगर अफसोस —विजू साहब इस समय हमारे बीच नहीं हैं।"

"हालात वाकई काफी पेचीदा हैं।" पहले वाले पुलिस अधिकारी ने ही गहरी सांस लेकर कहा—"लेकिन अगर हम तमाम हालातों का गहराई से अध्ययन करें—एक-एक प्वॉइण्ट को बारीकी से देखे तो हम पायेंगे कि शक की सुई पूरी तरह पूजा कोठारी की तरफ घूमती है। साफ-साफ लगता है कि वही वो लड़की है—जिसने विजू साहब की हत्या की।"

"परन्तु सिर्फ लगने से ही क्या होता है।" स्पार्को पुनः गरमजोशी में भरकर बोला—"मुश्किल तो ये है कि पूजा कोठारी के खिलाफ हमारे पास कोई सबूत नहीं हैं। वह लड़की कल ही इण्डिया से बैंकाक आयी है—जिस लड़की को अभी बैंकाक आये हुए पूरी तरह दो दिन भी नहीं हुए, वह भला विजू साहब की हत्या क्यों करना चाहेगी ? इतनी जल्दी उसकी विजू साहब से क्या दुश्मनी हो सकती है ? फिर पूजा कोठारी द्वारा बतायी गयी अभी तक एक-एक बात सच निकली है—उसने अपना नाम सही बताया—जिस होटल में ठहरी है, उस होटल का पता सही बताया। यह सही बताया कि उसे लिली ने भेजा था—क्लब में भी उसकी तमाम गतिविधियां बिल्कुल ठीक थीं—कुल मिलाकर पूजा कोठारी के खिलाफ इस समय हमारे पास ऐसा कोई सबूत नहीं है—जिसके बलबूते पर हम उसे गिरफ्तार कर सकें। और अगर हम उसे जबरदस्ती गिरफ्तार करते हैं तथा गिरफ्तार करने के

बाद यह साबित नहीं कर पाते कि वह वास्तव में अपराधी है—तो सचमुच हमें लेने के देने पड़ जायेंगे। क्योंकि वह एक विदेशी नागरिक है—इतना ही नहीं, वह काफी तेज दिमाग भी रखती है। जिसे अपने अधिकारों की और अन्तर्राष्ट्रीय कानून की पूरी-पूरी समझ है।"

"लेकिन फिर भी तुम्हें चैक तो करना चाहिये मिस्टर स्पार्को !" एक अन्य पुलिस अधिकारी शब्दों पर जोर देकर बोला—"कि पूजा कोठारी इस समय कहां है और क्या कर रही है ?"

"उसे दोबारा चैक करने से क्या होगा ?" स्पार्को के नेत्र सिकुड़े।

"संभव है कि उसके खिलाफ जो सबूत पहली मुलाकात में आपको नहीं मिले—वह दूसरी मुलाकात में मिल जायें।"

उस पुलिस अधिकारी की बात ने स्पार्को को सोचने के लिये विवश कर दिया।

वह वाकई काफी हद तक सही कह रहा था।

"ठीक है।" स्पार्को एकाएक बेहद उत्साह के साथ कुर्सी छोड़कर उठा—"मैं अभी अपनी पूरी टीम के साथ 'बिस्मार्क होटल' जाकर पूजा कोठारी से दोबारा मिलता हूं और उससे बातचीत के दौरान कोई ऐसा रहस्य उगलवाने की कोशिश करता हूं—जिसके बलबूते पर उसे अपराधी साबित किया जा सके।"

●●●

घटनाओं का जाल अभी भी बुरी तरह उलझा हुआ था।

रात के समय साढ़े दस बज रहे थे—लेकिन रोशनी का शहर बैंकाक अभी भी रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगा रहा था और सड़क पर आम दिनों की तरह ही काफी चहल-पहल थी।

परन्तु फिर भी आज बैंकाक निवासियों के चेहरों पर वो चमक नहीं थी—जिसके लिये वो पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। उनका प्रिय हीरो मर गया था—विजू आनन्द मर गया था—और इसीलिये उन सबके चेहरों पर मातम की काली रेखायें खिंची थीं।

स्पार्को अपने आठ सदस्यीय दल के साथ 'बिस्मार्क होटल' पहुंचा।

थाइलैण्ड पुलिस के वह सारे जवान उस समय चीन में बनी ए० के० 56 असाल्ट राइफलों से लैस थे—सभी बेहद चौकन्ने अलर्ट—और स्पेशल कमाण्डो ट्रेनिंग द्वारा प्रशिक्षित।

स्पार्को अपने पूरे दल के साथ पुलिस वैन में से उतरने के बाद लगभग दौड़ाता हुआ उस कमरे के सामने पहुंचा—जिसमें पूजा कोठारी ठहरी थी।

दरवाजा उस समय बंद था।

स्पार्को ने फौरन अपनी एक आंख की-हॉल से सटा दी और कमरे के अंदर का दृश्य देखा।

तुरन्त—पलक झपकते ही उसे कमरे में मौजूद पूजा कोठारी नजर आ गयी—वह सामने बेड पर ही इत्मीनान से लेटी हुई थी और क़ोई पुस्तक बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ रही थी।

स्पार्को ने दरवाजे के की-हॉल में से ही उस पुस्तक का नाम पढ़ा।

और—पुस्तक का नाम पढ़ते ही स्पार्को के दिमाग में एक साथ हजारों चीटियां रेंगती चली गयीं—एक बार फिर धमाके पर धमाके होने लगे—तेज धमाके।

जो पुस्तक पूजा कोठारी इस समय पढ़ रही थी, उसका नाम था—'हत्या के 101 शानदार तरीके'—।

स्पार्को ने बेहद सनसनी-सी अनुभव करते हुए एक बार अपने पीछे खड़े अपने साथियों की तरफ देखा—फिर वह एकदम से स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति हवा में उछला तथा फिर उसकी दोनों लातें धड़ाक् से दरवाजे के पल्लों पर पड़ीं।

और—दरवाजे पर वह प्रचण्ड लात मारते ही स्पार्को खुद भी लुढ़ककर नीचे गिरते-गिरते बचा—दरअसल दरवाजे की अंदर से सिटकनी लगी हुई नहीं थी—इसलिये लात मारते ही दोनों पल्ले धड़ाक् से खुल गये और वह तेज झोंक में मुंह के बल आगे गिरते-गिरते बचा।

बड़ी मुश्किल से स्पार्को ने खुद को गिरने से बचाया।

"आईये जासूस महोदय !" पूजा कोठारी मुस्कुराती हुई बैड पर सीधी बैठ गयी—"आईये।"

पूजा कोठारी ने अपनी किताब बंद करके वहीं एक तरफ रख दी।

तब तक थाइलैण्ड पुलिस के बाकी आठ जवान भी स्पार्को के पीछे-पीछे अंदर कमरे में घुस आये थे।

"मैं जानती थी।" पूजा कोठारी पूर्ववत् मुस्कुराती हुई बोली—"कि तुम जरूर आओगे जासूस महोदय—इसलिये मैंने दरवाजा पहले ही खुला छोड़ दिया था, ताकि तुम्हें अंदर आने में कोई तकलीफ न हो। आओ—बैठो।"

बेचारा स्पार्को—अंदर आते ही पूजा कोठारी ने उसे पुनः जिस प्रकार प्रभाव में लेना शुरू कर दिया था—उसकी वजह से वो एक

बार फिर महामूर्खो की तरह अपने ही आदमियों का चेहरा देखने पर विवश हो गया।

"वैसे क्या मैं पूछ सकती हूं।" पूजा कोठारी के होठों से मुस्कान गायब हो गयी—"कि इतनी रात को तुम मेरी शान्ति भंग करने यहां किसलिये आये हो ?"

"विजू साहब जैसे व्यक्ति की हत्या हो गयी है और हत्यारा अभी तक पकड़ा नहीं गया है।" स्पार्को थोड़े तीखे लहजे में बोला—"तुम क्या समझती हो—इतने बड़े हादसे के बाद भी तुम शान्ति से लेट सकती हो।"

"लेकिन अगर विजू साहब की हत्या हो गयी है।" पूजा कोठारी बोली—"तो इसमें मेरा क्या कसूर है ?"

"तुम्हारा कसूर ये है कि तुम भी संदेह के घेरे में आ रही हो।"

"मगर सिर्फ संदेह के घेरे में आने से क्या होता है—तुम्हारे पास मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं है।"

"एक सबूत है—पुख्ता सबूत।" स्पार्को बोला—"तुमने वह टाइपशुदा चिट्ठी विजू साहब के प्राण त्यागने से पहले उन तक पहुंचाई थी।"

"मैंने चिट्ठी जरूर पहुंचाई थी—लेकिन मैं पहले ही बता चुकी हूं कि मुझे वो चिट्ठी विजू की एक प्रशंसिका ने उन तक पहुंचाने के लिये दी थी।"

"लेकिन तुम इस बात को साबित नहीं कर सकतीं।" स्पार्को पूरी तरह जिरह करता हुआ बोला—"कि तुम्हें वो चिट्टी विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने दी थी।"

"बिल्कुल सही कहा तुमने।" पूजा कोठारी तुरन्त बोली—"मैं वाकई इस बात को साबित नहीं कर सकती। परन्तु इसमें मेरे लिये चिन्ता की क्या बात है—जिस तरह मैं यह साबित नहीं कर सकती कि मुझे वो चिट्ठी विजू साहब की किसी प्रशंसिका ने दी थी—बिल्कुल उसी तरह तुम भी यह बात साबित नहीं कर सकते कि मुझे वो चिट्ठी विजू साहब की प्रशंसिका ने नहीं दी थी। और जासूस महोदय—यह बात मैं तुमसे पहले भी क्लब में कह चुकी हूं।"

स्पार्को का दिमाग भिन्ना उठा—बुरी तरह भिन्ना उठा।

वाकई वो इस बार एक धुरंधर मस्तिष्क से टकरा बैठा था। पूजा कोठारी—जो किसी भी तरह स्पार्को के जाल में नहीं फंस रही थी।

"ठीक है।" स्पार्को भी जैसे आज उससे हार मानने को तैयार न था—"तुम यह बताओ कि तुम बैंकाक किसलिये आयी थीं ?"

"यूं ही थोड़ा सैर-सपाटा करने के लिये।" पूजा कोठारी बे-हिचक बोली—"मैंने यहां की वेश्याओं का काफी नाम सुन रखा था—मैंने सुना था कि यहां के रेड लाइट एरिये काफी बड़े-बड़े हैं और यहां की वेश्यायें अपने ग्राहकों को शारीरिक रूप से सन्तुष्ट करने की बड़ी-बड़ी अद्भुत कलायें जानती हैं। तुम्हारी जानकारी के लिये मैं एक नई बात बता दूं जासूस महोदय—मैं भी एक वेश्या हूं।"

"व"'वेश्या !" बम-सा फटा स्पार्को के दिमाग में।

कोई वेश्या इतनी बुद्धिमान भी हो सकती है—यह वो पहली बार देख रहा था।

"इतना ही नहीं।" पूजा कोठारी मुस्कुराती हुई आगे बोली—"मैं भारत के सबसे खूबसूरत बंगलौर शहर में 'गरम छुरी' के नाम से प्रसिद्ध हूं। 'गरम छुरी' का मतलब तो जानते ही होओगे तुम—अगर नहीं जानते, तो एक बार मुझे अपने बिस्तर तक आने का मौका दो—फिर 'गरम छुरी' का सारा मतलब खुद-ब-खुद तुम्हारी समझ में आ जायेगा। वैसे मैं तुमसे इस काम की ज्यादा कीमत भी नहीं लूंगी डियर !"

"बकवास न करो।" स्पार्को चिल्ला उठा—"मैं तुमसे कोई फालतू बात नहीं करना चाहता। और सुनो—जब तक विजू साहब का हत्यारा नहीं पकड़ा जायेगा—तब तक अब तुम यह बैंकाक शहर छोड़कर भी कहीं नहीं जा सकतीं।"

"तुम मुझे इस शहर के अंदर अपनी मर्जी से एक मिनट भी नहीं रोक सकते जासूस महोदय !" पूजा कोठारी एकाएक निर्भीक लहजे में बोली—वैसे भी मेरे पासपोर्ट के वीजे की अवधि कल खत्म हो रही है और कल ही मैं हर हालत में बैंकाक छोड़कर चली जाऊंगी। तुम्हारे पास मेरे खिलाफ ऐसा कोई सबूत नहीं है—जिसके बलबूते पर तुम मुझे जबरदस्ती बैंकाक शहर में रुकने के लिये मजबूर कर सको।

"लेकिन जब तक विजू साहब का हत्यारा गिरफ्तार नहीं हो जाता—तब तक हम तुम्हें शक की बिना पर रोक सकते हैं।"

"और अगर विजू साहब का हत्यारा दस साल तक भी गिरफ्तार न किया जा सका—तो क्या मुझे दस साल तक बैंकाक में ही रहना होगा।"

सब फिर महामूर्खों की तरह एक-दूसरे का चेहरा देखने पर विवश हो गये।

स्पार्को की तो बुरी हालत हो चुकी थी।

उसका दिल चाहने लगा कि वो अपने सिर के बाल बुरी तरह

नोंच डाले—वह चालाक लड़की उसे मुकम्मल तौर से पागल बना देने पर आमादा थी।

"फिर भी अगर तुम्हें लगता है।" पूजा कोठारी, स्पार्को को चैलेन्जिंग अंदाज में देखती हुई बोली—"कि तुम थाइलैण्ड की किसी दण्ड प्रक्रिया के अन्तर्गत मुझे रोक सकते हो या अरेस्ट कर सकते हो—तो मैं खुशी-खुशी अरेस्ट होने के लिये तैयार हूं। परन्तु उससे पहले सिर्फ एक मेहरबानी मेरे ऊपर करो—मुझे थाइलैण्ड के किसी ऐसे अच्छे से वकील का पता जरूर बता दो—जो तुम पर और तुम्हारी थाइलैण्ड सरकार पर मान-हानि का मुकदमा ठोकने में मेरी मदद कर सके। और खासतौर पर वह तुम्हें तो जरूर ही कंगला कर डाले। तुम्हारे जिस्म पर यह जो खूबसूरत वर्दी है—इसे उतरवा ले और तुम्हारे पुरखों की जितनी भी जमीन-जायदाद है—उसे नीलाम करवाने में मेरी मदद करे। मैं इस काम के लिये बैंकाक का सबसे धुरंधर वकील करना चाहती हूं—धन की कोई चिन्ता नहीं—वह जितना धन मांगेगा, मैं दूंगी—खुलेदिल से दूंगी।"

स्पार्को ने भिन्नाकर अपना सिर पकड़ लिया। और फिर वह सचमुच अपने बाल नोंचने लगा।

"चलो।" उसके बाद स्पार्को थाइलैण्ड पुलिस के जवानों की तरफ घूमकर इतनी जोर से चिल्लाया था—जैसे उसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया हो—"चलो यहां से—यह लड़की जरूर कोई पागल है।"

"गुड नाइट!" पूजा कोठारी मधुर मुस्कान बिखेरती हुई थाइलैण्ड पुलिस के उन धुरंधरों को विदा करने दरवाजे तक गयी—"कल मैं बैंकाक छोड़ने से पहले तुम्हें सूचित कर दूंगी जासूस महोदय—तब तक अगर तुम मुझे रोकने की कोई कानूनी तरकीब सोच सको—तो मुझे वाकई बहुत खुशी होगी।"

स्पार्को बार-बार अपना सिर ठोकता और बाल नोंचता हुआ वहां से भागता चला गया।

लड़की ने उसका दिमाग खराब करके रख दिया था।

लेकिन एक बात अभी भी स्पार्को के दिमाग में बार-बार बज रही थी—वो यह जानने को बेकरार था कि वो लड़की अब क्या करेगी?

बैंकाक में अब उसका अगला कदम क्या होगा?

यही पता लगाने के लिये स्पार्को अपने पूरे पुलिस दल के साथ उस रात होटल में ही रुक गया और सुबह होने का इंतजार करने लगा।

सुबह—जिसके मखमली दामन में और भी ढेर सारी सनसनीखेज घटनायें छिपी थीं।

●●●

उस रात पूजा कोठारी इत्मीनान से सोई।

उसे किसी भी किस्म का कोई डर या चिन्ता नहीं थी।

सुबह वह उसी टाइम पर सोकर उठी—जिस टाइम पर रोजाना उठती थी। बाथरूम में जाकर फ्रेश हुई—धुले हुए कपड़े पहने और फिर नाश्ता किया।

उन तमाम क्रियाओं से निपटने के बाद पूजा कोठारी ने उसी कमरे में रखी टेलीफोन डायरेक्ट्री के अंदर टोनी का एड्रेस तलाश किया—जो उसे मुश्किल से पांच मिनट के अंदर ही मिल गया।

फिर वह सेण्डिल ठकठकाती हुई रूम से बाहर निकली—ताला लगाया—और फिर नीचे होटल की लॉबी में पहुंची।

वहां थाइलैण्ड पुलिस के जवान अभी भी चारों तरफ फैले हुए थे—जो उसे देखते ही यूं अलर्ट हो गये, जैसे उन्होंने अपने सबसे बड़े दुश्मन को देख लिया हो।

लेकिन वाह री किस्मत—वह अपने उस सबसे बड़े दुश्मन को रोक भी तो नहीं सकते थे।

"क्या बात है।" पूजा कोठारी ने एक बड़ी चित्ताकर्षक मुस्कान उन सबकी तरफ उछाली और मखौल उड़ाने वाले अंदाज में बोली—"तुम लोग क्यों परेशान हो रहे हो—तुम्हारी आंखों से लगता है कि तुम सारी रात सोये भी नहीं। जाओ—तुम लोग अपने-अपने घर जाकर इत्मीनान से आराम करो।"

"हम इस समय ड्यूटी पर हैं।" तभी स्पार्को दहाड़ता हुआ वहां आया—"और ड्यूटी के समय आराम शब्द हम थाइलैण्ड वासियों कि डिक्शनरी में शामिल नहीं होता।"

वह सारी रात ठण्ड में ठिठुरता हुआ बाहर बैठा रहा था और इस समय काफी गुस्से में भरा था।

"वैरी गुड !" पूजा कोठारी मुस्कुरायी—"काफी अच्छी बात है—जो आराम शब्द तुम थाइलैण्ड वासियों की डिक्शनरी में शामिल नहीं होता।"

"लेकिन तुम इस समय कहां जा रही हो ?"

"मैं विजू साहब के पर्सनल सेक्रेटरी टोनी के पास जा रही हूं।"

"टोनी के पास !" स्पार्को के दिमाग में धमाका-सा हुआ—"लेकिन क्यों ?"

"दरअसल उसने कल मुझसे वादा किया था कि वह मुझे अपने क्लब का परमानेन्ट मैम्बर बनवा देगा।" पूजा कोठारी बोली—"अब तो वह क्लब रहा नहीं—फिर भी मैं उससे पूछना चाहती हूं कि क्या वो मुझे किसी और क्लब का मैम्बर बनवा सकता है। अगर उसने मुझे किसी क्लब का मैम्बर बनवा दिया—तो तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है—फिर मैं यहीं बैंकाक में रुक जाऊंगी। इतना ही नहीं—फिर तुम इत्मीनान से इंवेस्टीगेशन भी कर सकते हो। हां—अगर तुम इस समय मेरे पीछे-पीछे टोनी के फ्लैट तक आना चाहो—तो जरूर आ सकते हो।"

"तुम जरूर कोई मूर्ख लड़की हो।" उसके अंतिम शब्दों में छिपे व्यंग्य को भांपकर स्पार्को झुंझला उठा—"तुम मुझे पागल करके छोड़ोगी।"

मुस्कुरायी पूजा कोठारी—फिर सीधे स्पार्को की आंखों में झांकती हुई बोली—"किस देश के संविधान में लिखा है कि किसी पुलिस अधिकारी को अपना पीछा करने के लिये कहना उसे पागल बना देने के लिये पर्याप्त है।"

"मैं तुमसे बात भी नहीं करना चाहता।" स्पार्को चिल्लाया—"दफा हो जाओ यहां से।"

"यह तुम्हारी मर्जी है कि तुम मुझसे बात करना चाहते हो या नहीं। लेकिन मैं तुम्हारी दोस्त हूं।" पूजा कोठारी मुस्कुराते हुए बोली—"तुम मुझसे हाथ तो मिलाओगे न ?"

"नहीं।" स्पार्को पहले की तरह ही झुंझलाकर बोला—"मैं तुमसे हाथ भी नहीं मिलाना चाहता।"

"ठीक है—अगर तुम मुझसे इतना ही नाराज हो, तो इसमें मेरा क्या दोष है।"

फिर पूजा कोठारी बड़ी शान के साथ चलती हुई होटल बिस्मार्क से बाहर निकल गयी।

●●●

थोड़ी ही देर बाद वो एक टैक्सी में बैठी टोनी के फ्लैट की तरफ उड़ी जा रही थी।

अब उसे बैंकाक छोड़ने से पहले दूसरे 'फोर स्कवायर' के बारे में पता लगाना था—उसका नाम क्या है और वो कहाँ है ?

दौड़ती हुई टैक्सी के अंदर बैठी पूजा कोठारी ने पीछे मुड़कर देखा—यह देखकर उसने चैन की सांस ली कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था। अगर कोई उसका पीछा भी करता तब भी उसे

ज्यादा परवाह न थी। क्योंकि पूजा कोठारी ने अभी तक जो भी कदम उठाया था—बे-खौफ उठाया था।

जल्द ही टैक्सी उस बीस मंजिले कॉम्पलैक्स के सामने जाकर रुकी—जिसकी आठवीं मंजिल पर टोनी का बड़ा शानदार फ्लैट था।

पूजा कोठारी लिफ्ट में सवार होकर आठवीं मंजिल पर पहुँची और उसने फ्लैट की कॉलबेल बजायी।

शीघ्र ही टोनी ने दरवाजा खोला और अपने सामने पूजा कोठारी को खड़े देखकर वह इतनी जोर से चिहुँका—जैसे उसने कोई बहुत आपेक्षित वस्तु अपने सामने देख ली हो।

"त…तुम।" टोनी को झटका लगा—"तुम यहाँ !"

टोनी ने फौरन पूजा कोठारी को पकड़कर फ्लैट में अंदर खींचा और जल्दी से दरवाजे की सिटकनी चढ़ायी।

"तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिये था।" टोनी बौखलाया-सा बोला।

"क्यों ?"

"क्योंकि बेवकूफ लड़की—इस समय बैंकाक की सारी पुलिस तुम्हारे पीछे है। तुम पर विजू साहब की हत्यारी होने का शक किया जा रहा है।"

"मैं जानती हूँ कि मेरे ऊपर हत्यारी होने का शक किया जा रहा है।" पूजा कोठारी एकाएक अपने चेहरे पर दुःख के असंख्य भाव ले आयी और उसकी आंखों में आंसू छलछलाने लगे—"लेकिन टोनी—तुम तो जानते हो कि मैं निर्दोष हूँ और मेरे ऊपर ख्वामखाह शक किया जा रहा है। मेरी गलती सिर्फ इतनी थी टोनी, कि मैंने विजू साहब की प्रशंसिका का वह पत्र उन तक पहुँचाया। पूरे बैंकाक में इस समय मुझे सिर्फ तुम्हारे ऊपर ही विश्वास है—तुम तो मुझे निर्दोष समझते हो न टोनी—या फिर तुम भी मुझे अपराधी ही समझ रहे हो ?" बड़े भावनात्मक अंदाज में वह शब्द बोलते हुए पूजा कोठारी उससे कसकर लिपट गयी और अपनी छातियाँ धीरे-धीरे उसके सीने से रगड़ने लगी।

पूजा कोठारी के मगरमच्छी आंसुओं ने टोनी को पिघला दिया—उसके शरीर में फिर वासना की लहर दौड़ गयी।

"नहीं-नहीं।" टोनी शीघ्रतापूर्वक बोला—"मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो पूजा—विजू साहब की हत्या तुमने नहीं की।" टोनी, पूजा कोठारी के बालों में स्नेह से उंगलियाँ फेरने लगा।

"लेकिन स्पार्को हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ चुका है टोनी।" पूजा कोठारी लगभग सुबकते हुए बोली—"मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि

मुझे क्या करना चाहिये—इस समय भी मैं स्पार्को से बड़ी मुश्किल से अपना पीछा छुड़ाकर यहाँ तक आयी हूँ।"

टोनी ने पूजा कोठारी का चाँद जैसा मुखड़ा अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया—फिर बड़े अनुरागपूर्ण लहजे में बोला—"बताओ—मैं इस मुश्किल में तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ ?"

"तुम मेरी एक मदद कर सकते हो टोनी।"

"बोलो।"

"अगर किसी तरह मुझे यह पता चल जाये।" पूजा कोठारी उसके शरीर से पीछे हटती हुई बोली—"कि वास्तव में विजू साहब की हत्या किसने की है—तो मेरी सारी समस्या पलक झपकते ही हल हो जायेगी।"

"लेकिन हत्यारे के विषय में तो मुझे भी कुछ मालूम नहीं हैं।" टोनी बोला—"अगर तुमने विजू साहब की हत्या नहीं की—तो साफ जाहिर है कि उस लड़की ने विजू साहब की हत्या की है—जिसने विजू साहब की प्रशंसिका बनकर एक चिट्ठी उन तक पहुंचाने के लिये तुम्हें दी।"

"इसमें कोई शक नहीं।" पूजा कोठारी बोली—"कि वह लड़की पूरी तरह शक के घेरे में आती है। विजू साहब की हत्या भी जरूर उसी ने की है—लेकिन मुझे लगता है कि फिर भी वास्तव में अपराधी वो लड़की नहीं है। उस लड़की को तो सिर्फ विजू साहब की हत्या करने के लिये भाड़े पर लिया गया था या फिर उसे किसी और तरह से इस्तेमाल किया गया। क्योंकि जहाँ तक मेरा अनुमान है—विजू साहब की ऐसी किसी साधारण लड़की से कोई दुश्मनी नहीं हो सकती।"

"फिर किससे दुश्मनी हो सकती है ?" टोनी की एकाएक पूजा कोठारी की बातों में दिलचस्पी बढ़ने लगी।

"मुझे लगता है कि विजू साहब की हत्या करके किसी ने उनसे पुरानी दुश्मनी निकाली है—उनका कोई पुराना दोस्त भी हत्यारा हो सकता हैं।" पूजा कोठारी धीरे-धीरे अपने असली मकसद की तरफ बढ़ती हुई बोली—"टोनी—क्या तुम विजू साहब के ऐसे किसी पुराने दोस्त को जानते हो—जिससे विजू साहब की आठ-दस वर्ष पुरानी दोस्ती रही हो ?"

"नहीं।" टोनी फौरन बोला—"मैं विजू साहब के ऐसे किसी दोस्त को नहीं जानता।"

"जवाब देने में इतनी जल्दबाजी मत करो टोनी—खूब सोच-समझकर जवाब दो। यह मेरी जिंदगी और मौत का सवाल है।"

टोनी के माथे पर अब सिलवटें पड़ गयीं और वह किसी गहरी सोच में डूब गया।

"याद करो—शायद कभी विजू साहब ने ही तुमसे अपने किसी पुराने दोस्त का जिक्र किया हो ?"

टोनी सोचता रहा।

"कुछ याद आया टोनी ?"

"ह...हाँ।" टोनी के मुंह से एकाएक अंधकूप में फंसा स्वर निकला—"ह...हाँ—याद आया। एक बार मैंने विजू साहब के साथ उन्हीं जैसी उम्र वाले एक व्यक्ति की तस्वीर देखी थी।"

"क...कौन था वो व्यक्ति ?" पूजा कोठारी ने छूटते ही पूछा।

"तब विजू साहब ने खुद ही बताया था।" टोनी बोला—"कि वो व्यक्ति उनका पुराना दोस्त था और जब वो हिन्दुस्तान के बंगलौर शहर में रहते थे—तब वो उनके साथ उन्हीं के कॉलिज में पढ़ता था।"

"वैरी गुड।" पूजा कोठारी एकाएक उत्साह से भर गयी—"क्या नाम था उसका—विजू साहब के उस दोस्त का नाम बताओ।"

"न...नाम...।"

"हाँ—नाम।"

टोनी के माथे पर पुनः सिलवटें पड़ गयीं।

"क...कमल।" टोनी अपने दिमाग पर खूब जोर डालता हुआ बोला—"कमल कपूर। ह...हाँ—यही नाम बताया था विजू साहब ने उसका—यही नाम। उन्होंने बताया था कि उनका वह दोस्त आजकल अमरीका के सान फ्रांसिसको शहर में रहता है और वहाँ बहुत बड़ा इंजीनियर है—[illegible] के विकास कार्यों में उसका हमेशा काफी बड़ा योगदान रहता है।"

"सान फ्रांसिसको।" पूजा कोठारी की आंखें चमक उठीं—"यह शहर तो अमरीका के लॉस एंजिल्स के पास है ?"

"बिल्कुल ठीक।"

पूजा कोठारी का मन-मयूर नाच उठा।

उसे दूसरे 'फोर स्कवायर' का पता चल चुका था।

लेकिन जल्द ही पूजा कोठारी ने अपने चेहरे पर गंभीरता की चादर ओढ़ ली और वो पहले की तरह ही संजीदा नजर आने लगी।

"क्या सोच रही हो ?" टोनी ने पूजा कोठारी को दोबारा अपनी बांहों के दायरे में लपेट लिया।

"सोच रही हूँ कि जो व्यक्ति आज की तारीख में अमरीका का इतना बड़ा इंजीनियर है—वह कम-से-कम हत्या जैसा जघन्य अपराध नहीं कर सकता।"

"ठीक कहा तुमने—मेरा भी यही ख्याल है कि कमल कपूर जैसा व्यक्ति विजू साहब की हत्या किसी भी हालत में नहीं कर सकता। अब छोड़ो इस सब बात को।" टोनी की सांसें भभकने लगी थीं और उसने अपने धधकते होठ पूजा कोठारी के गालों पर रख दिये—"अब अगर तुम्हारी इजाजत हो—तो मैं तुम्हारी इस बेशुमार दौलत का आनन्द भोग लूं?"

"तुम सचमुच काफी शैतान हो।" पूजा कोठारी के होठों पर चंचल मुस्कान दौड़ी—"ठीक है यंगमैन—तुम आज मेरी इस बेशुमार दौलत को भोग सकते हो।"

"ओह माई स्वीट हार्ट—यू आर ग्रेट—रिअली यू आर ग्रेट।"

टोनी ने पूजा कोठारी को कुछ और ज्यादा कसकर अपनी बांहों में लपेट लिया।

फिर वह उसकी मांसल पीठ को सहलाने लगा।

पूजा कोठारी, टोनी की उस हरकत से रोमांचित हो उठी थी।

उसके गदराये जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

इस बीच टोनी ने उत्तेजना पूर्वक पूजा कोठारी के कई सारे चुम्बन भी ले डाले।

फिर वह उसे बांहों में भरे-भरे वहीं नंगे फर्श पर लेट गया।

●●●

उसके बाद पूजा कोठारी ने कुछ और महत्वपूर्ण काम किये।

टोनी के पास वह जिस मकसद से आयी थी—उसका वह मकसद हल हो चुका था।

उसे न सिर्फ दूसरे 'फोर स्कवायर' का नाम मालूम हो गया था, बल्कि यह भी पता चल चुका था कि वो रहता कहाँ है।

पूजा कोठारी ने आनन-फानन बैंकाक से ही अमरीका के सान फ्रांसिसको शहर का वीजा लिया—उसी दिन की फ्लाइट के टिकिट बुक कराये।

उसके बाद पूजा कोठारी बैंकाक के एक निर्जन से इलाके में पहुंची—वहाँ कच्चे मकान बने हुए थे और आबादी लगभग 'ना' के बराबर थी।

पूजा कोठारी ने उनमें से एक मकान पिछले दिनों ही चुपचाप किराये पर लिया था।

वह मकान का दरवाजा खोलकर अंदर घुसी।

फौरन उसकी नजर मकान में बंद एक पंद्रह-सौलह वर्ष के लड़के पर पड़ी—जिसका रो-रोकर बुरा हाल था—पूजा कोठारी को देखते ही वह लड़का पुनः हिस्टीरियाई अंदाज में रोता हुआ पूजा कोठारी की तरफ लपका और उसके पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगा।

"मुझे मेरी सिस्टर के पास जाना है—मुझे मेरी सिस्टर के पास जाना है।"

"चिन्ता मत करो हैरी।" पूजा कोठारी ने उसे प्यार से कंधे पकड़कर उठाया—"तुम्हारी रिहाई का समय आ गया है—तुम्हारी सिस्टर लिली भी बड़ी बेसब्री से तुम्हारा ही इंतजार देख रही हैं—सचमुच वह तुमसे बहुत प्यार करती है।"

बुरी तरह रोते हैरी की आवाज खुशी से भर गयी।

"क''''क्या मैं सचमुच जा सकता हूँ मैडम ?"

"हाँ—तुम अब जा सकते हो।" पूजा कोठारी ने उसे स्नेह भाव से देखा—"तुम अब आजाद हो। मुझे दुःख है कि लिली को अपने इशारों पर नचाने के लिये मुझे तुम्हारा अपहरण करना पड़ा। अपने काम के लिये मैंने तुम्हारे जैसे प्यारे बच्चे का इस्तेमाल किया—मैं तुमसे माफी चाहती हूँ।"

"नहीं सिस्टर—नहीं।" हैरी फिर रो पड़ा—"आप सचमुच मेरी सिस्टर जैसी हैं—मेरी लिली जैसी—आपने मुझे कोई दुःख नहीं दिया। मैं आपको कभी नहीं भूल सकूंगा।"

"तुम अब जाओ हैरी—जल्दी जाओ—और अपनी सिस्टर से भी बोलना कि अगर हो सके—तो वह भी मुझे माफ कर दे।"

हैरी प्यार से उसे देखने लगा।

जिसमें वो 'लिली' का प्रतिबिम्ब देख रहा था। जज्बाती हो उठा हैरी—फिर वो तेज-तेज कदमों से चलता हुआ उस मकान से बाहर निकल गया।

पूजा कोठारी उसे जाते देखती रही।

●●●

फिर पूजा कोठारी टैक्सी में सवार होकर तूफानी गति से 'होटल बिस्मार्क' पहुंची।

शाम की छः बजे की फ्लाइट के उसके टिकिट थे।

होटल बिस्मार्क में पहुंचकर पूजा कोठारी ने देखा कि स्पार्को

और थाइलैण्ड पुलिस के सभी जवान वहाँ से जा चुके थे—इस समय उस पर निगाह रखने वाला वहाँ कोई न था।

पूजा कोठारी तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ती हुई अपने कमरे में पहुंची और फिर उसने नोटों से भरी अपनी अटैची में सामान पैक करना शुरू कर दिया।

साढ़े पांच बजे रहे थे—जब पूजा कोठारी सान फ्रांसिसको जाने के लिये अटैची लेकर एअरपोर्ट पहुंची।

यह देखकर वो हैरान रह गयी कि स्पार्को उस समय थाइलैण्ड पुलिस के साथ एअरपोर्ट पर ही मौजूद था।

जैसे ही पूजा कोठारी ने एअरपोर्ट पर कदम रखा—फौरन स्पार्को और थाइलैण्ड पुलिस के जवानों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया।

"यह क्या हरकत है ?" तत्काल पूजा कोठारी की भृकुटि तनी।

"कोई खास हरकत नहीं।" स्पार्को बड़े विश्वास के साथ मुस्कुराता हुआ उसकी तरफ बढ़ा—"चिन्ता मत करो—मैं तुम्हें अरेस्ट नहीं कर रहा हूं। मुझे सिर्फ यह पूछना था कि आज तुम्हारा हिन्दुस्तान वापस लौटने का प्रोग्राम था और अभी थोड़ी देर पहले मुझे सूचना मिली है कि तुम एकाएक सान फ्रांसिसको के लिये रवाना हो रही हो। क्या मुझे मिली यह रिपोर्ट गलत है मैडम ?"

"नहीं।" पूजा कोठारी ने बे-धड़क जवाब दिया—"तुम्हें मिली रिपोर्ट एकदम सही है—मैं वाकई इस समय सान फ्रांसिसको जा रही हूँ।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि एकाएक तुम्हारे प्रोग्राम में यह परिवर्तन किसलिये हो गया ?"

—"बस—आज अकस्मात् मेरे दिल में यह उमंग उठी कि क्यों न हिन्दुस्तान वापस लौटने से पहले अमरीका भी घूम लिया जाये। हो सकता है कि सान फ्रांसिसको पहुंचने के बाद मैं वहाँ से किसी और देश के लिये उड़ जाऊं।" पूजा कोठारी के होठों की मुस्कान गहरी हो गयी—"सच्चाई तो ये है ऑफिसर—मैंने अपनी पूरी जिंदगी में जिस्म बेच-बेचकर जितनी दौलत इकट्ठी की है—इस बार मैं उस सारी दौलत को ठिकाने लगा देना चाहती हूँ।"

स्पार्को, पूजा कोठारी के थोड़ा और नजदीक पहुंचा तथा उसकी आंखों में शक के भाव गहरे हो गये।

"दौलत ठिकाने लगा देना चाहती हो।" सपार्को ने आंखों में

आंखें डालकर सनसनाये स्वर में पूछा—"या फिर सान फ्रांसिसको जाने के पीछे कोई और मकसद है ?"

"और क्या मकसद हो सकता है ?"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि वहाँ जाकर भी तुम किसी खूनी घटना को जन्म देना चाहती हो ?"

एकाएक इतनी जोर से खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी—कि आते जाते यात्री भी हैरान होकर उसका चेहरा देखने लगे और स्पार्को के चेहरे पर भी अचम्भे के भाव उभर आये।

"तुम मजाक वाकई बहुत अच्छा कर लेते हो जासूस महोदय।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ।" स्पार्को गुर्राया।

"ठीक है।" पूजा कोठारी बोली—"मैं स्वीकार करती हूं कि तुम मजाक नहीं कर रहे हो। लेकिन जरा सोचो—अगर मैं यह स्वीकार कर भी लूं कि मैं सान फ्रांसिसको वाकई किसी खूनी घटना को जन्म देने जा रही हूँ तब भी तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे ? क्योंकि किसी को अपराधी साबित करने के लिये सिर्फ उसका बयान ही तो काफी नहीं होता।"

स्पार्को एक बार फिर सकते जैसी अवस्था में पूजा कोठारी को देखता रह गया।

"अब मुझे चलना चाहिये ऑफिसर।" पूजा कोठारी ने अपनी रिस्टवॉच पर दृष्टिपात किया—"वैसे भी मेरी फ्लाइट का समय होने वाला है। गुड बाय—अगर जीवित रहे तो हम दोनों फिर जिंदगी के किसी मोड़ पर मिलेंगे।"

पूजा कोठारी अटैची उठाये तेज-तेज कदमों से आगे की तरफ बढ़ गयी।

और—स्पार्को हतप्रभ्-सा उसे जाते देखता रहा।

उसे लगा—जैसे विजू आनन्द का हत्यारा उसकी बंद मुट्ठी में से निकलकर भागा जा रहा हो।

और वो चाहते हुए भी उसे पकड़ पाने में असफल हो।

बिल्कुल असफल।

स्पार्को का दिल चाहा कि वो वहीं एअरपोर्ट पर ही गुस्से में अपना सिर धुनना शुरू कर दे।

थोड़ी ही देर बाद स्पार्को के देखते-ही-देखते पूजा कोठारी हवाई जहाज में बैठकर बैंकाक से उड़ गयी।

यह स्पार्को की जिंदगी का पहला केस था—जब कोई अपराधी यूं उसकी आंखों के सामने से फरार हो गया था।

बोइंग सात हजार अड़तालीस विमान आसमान का सीना चाक करके संयुक्त राज्य अमेरिका की तरफ उड़ा जा रहा था।

उस विमान की आगे से चौथी पंक्ति में पूजा कोठारी ब्राउन सूट में सजी-धजी बैठी थी।

हालांकि पूजा कोठारी का पहला मिशन पूरी तरह सफल रहा था—लेकिन फिर भी पूजा कोठारी उस क्षण बेहद जज्बाती हो रही थी। उसे अपने मम्मी, डैडी और बड़ी बहन की याद बड़ी शिद्दत से आ रही थी।

उसकी आंखों के गिर्द 13 मार्च की उस मनहूस रात का नजारा एक बार फिर घूमने लगा—जब ट्रेन के अंदर उसके परिवार के साथ भयंकर विभीषिका घटित हुई थी।

उस घटना की याद आते ही पूजा की आंखों में आंसू छलछला आये—जिन्हें छिपाने के लिए पूजा कोठारी ने फौरन अपनी आंखों पर काला चश्मा चढ़ा लिया।

कैसा भयानक दुःख था उसका—जिसे वो किसी दूसरे के सामने प्रकट भी नहीं कर सकती थी।

"मैडम।" तभी एक उसी की तरह सुंदर एअर होस्टेज उसके सामने आकर खड़ी हो गयी—"क्या आप कॉफी लेंगी?"

"नहीं सिस्टर।" अपना काला चश्मा दुरुस्त करके पूजा कोठारी थोड़े भावनात्मक लहजे में बोली—"मुझे कॉफी नहीं चाहिए। हां—अगर तुम मुझे पढ़ने के लिए कोई मैगजीन लाकर दे सकती हो, तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"आपको कैसी मैगजीन चाहिए मैडम?"

"कोई ऐसी मैगजीन।" पूजा कोठारी बोली—"जिसमें अमेरिका के बारे में काफी कुछ लिखा हुआ हो।"

"ओह।" मुस्कुरायी एअर होस्टेज—"इसका मतलब आपको अमेरिका से काफी प्रेम है मैडम।"

"हां—बिल्कुल ठीक कहा तुमने।" पूजा कोठारी ने भी मुस्कराने का प्रयास किया था—"मुझे अमेरिका से सचमुच बहुत प्रेम है। क्योंकि ज्यादातर बुद्धिमान लोग वहीं हैं—और आज भी विश्व के अंदर जितने वैज्ञानिक आविष्कार होते हैं, उनमें से बहुसंख्यक आविष्कारों की रचना अमेरिकनों द्वारा ही की जाती हैं। मैं उस महान देश को बार-बार देखना चाहती हूं और उसके विषय में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी पाने की इच्छुक हूं।"

"ठीक है मैडम।" एयर होस्टेज मुस्कुराकर बोली—"मैं अभी आपके लिये एक ऐसी मैगजीन लेकर आती हूँ—जिससे आपको अमरीका के विषय में काफी जानकारी मिल जायेगी।"

"गुड।"

एअर होस्टेज तुरन्त वहाँ से चली गयी।

उसके जाते ही पूजा कोठारी ने अपना काला चश्मा उतार लिया और रूमाल से अपनी आंखों के आंसू साफ करने लगी।

●●●

शीघ्र ही एअर होस्टेज मैगजीन लेकर लौट आयी थी।

"यह पत्रिका का बिल्कुल नवीनतम अंक है।" एअर होस्टेज वह मैगजीन पूजा कोठारी को पकड़ाती हुई बोलो—"और मैं समझती हूं कि इस पत्रिका से आपको अमरीका के विषय में काफी कुछ जानकारी मिल जायेगी।"

"थैंक्यू।"

उस पत्रिका को देखते ही पूजा कोठारी की आंखों में चमक कौंध उठी।

पत्रिका के कवर पेज पर ही एक नक्शा बना था—पूजा कोठारी की निगाहें फौरन किसी शिकारी कुत्ते की तरह मेप पर एक ही जगह जाकर फिक्स् हो गयी।

वहाँ—जहाँ 'सान फ्रांसिसको' लिखा था।

पूजा कोठारी पत्रिका के पन्ने पलटती हुई तेजी से वहाँ पहुंची—जहाँ सान फ्रांसिसको के विषय में काफी जानकारी थी।

उसके बाद वो पूरी डिटेल पढ़ने लगी।

सान फ्रांसिसको एक बड़ा सुंदर नगर है।

इसके अलावा उस नगर की सबसे बड़ी विशेषता ये है कि वहाँ अमरीका के बड़े-बड़े आर्किटेक्ट इंजीनियर इकट्ठे होकर नई-नई बिल्डिंगों के नक्शे बनाते हैं।

आज अमरीका में जितनी भी प्रसिद्ध इमारते हैं—उन सबके नक्शे सान फ्रांसिसको में ही बने।

यहाँ तक की अमरीका की बेहद प्रसिद्ध इमारत 'न्यू एम्पायर स्टेट बिल्डिंग' या 'स्टेचू ऑफ लिबर्टी' के नक्शे भी कभी वहीं बने थे।

कुल मिलाकर सान फ्रांसिसको दुनिया भर के आर्किटेक्ट इंजीनियरों के लिये स्वर्ग समान जगह है। इसके अलावा सान फ्रांसिसको के बारे

में काफी और जानकारी भी थी—लेकिन पूजा कोठारी ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

उसके लिये वही बातें काफी महत्वपूर्ण थीं—क्योंकि उसका शिकार नम्बर दो भी एक आर्किटेक्ट इंजीनियर ही था।

पत्रिका पढ़ने के बाद पूजा कोठारी ने एक कॉफी मंगाकर पी और फिर सीट से पीठ लगाकर आंखें बंद कर लीं।

●●●

पूजा कोठारी की जब आंख खुली—तब दिन पूरी तरह निकल आया था।

और यही वो समय था, जब विमान के अंदर घोषणा हुई—"अमरीकी एअरवेज का यात्रीवाहक विमान जल्द ही सान फ्रांसिसको एयरपोर्ट पर उतरने जा रहा है—इसलिये यात्री कृपया अपनी-अपनी बेल्टें बॉध लें।"

पूजा कोठारी ने फौरन अपनी बेल्ट बांध ली।

थोड़ी ही देर बाद यात्रीवाहक विमान भयानक गर्जना करता हुआ सान फ्रांसिसको एअरपोर्ट पर उतरा।

फिर पूजा कोठारी अपनी अटैची लेकर एअरपोर्ट से बाहर निकली।

एयरपोर्ट से बाहर निकलकर उसने अमरीका के नीले आकाश की तरफ़ देखा और उसके बाद वह होठों-ही-होठों में बुदबुदा उठी—"हे मेरे शिकार नम्बर दो—मैं आ चुकी हूँ। अब तुम्हारी जिंदगी के चंद दिन बाकी हैं—सिर्फ चंद दिन।"

उसके बाद पूजा कोठारी ने एक टैक्सी पकड़ी और सान फ्रांसिसको के सबसे प्रसिद्ध हिल्टन होटल की तरफ उड़ चली—जहाँ उसे तीसरी मंजिल पर अपने लिये एक सुइट मिल गया।

हिल्टन होटल की रूम सर्विस बेहद प्रसिद्ध है—वह एक फाइव स्टार इंटरकॉण्टिनेंटल होटल है और अमरीका के प्रसिद्ध होटलों में उसकी गणना होती है।

●●●

अपने सुइट में बंद होते ही पूजा कोठारी ने एक बड़ा अजीबो-गरीब काम किया।

उसने अपने सारे कपड़े उतार डाले और फिर बाथरूम में जमकर स्नान किया।

फिर वह बिस्तर पर पदमासन जैसी मुद्रा में बैठ गयी—उसे आज

जाने क्यों अपने मम्मी-डैडी और बड़ी बहन की बहुत याद आ रही थी—उसकी आंखों के गिर्द बार-बार एक्सप्रेस ट्रेन में घटा हादसा कौंध रहा था—फिर चारों दरिन्दों के चेहरे बार-बार उसके मानस-पटल पर कौंधने लगे।

हंसते हुए चेहरे—खिलखिलाते चेहरे—और वासना का घिनौना खेल खेलते चेहरे।

पदमासन जैसी मुद्रा में बैठे-बैठे पूजा कोठारी की आंखें सुर्ख होने लगी—जल्द ही उनकी रंगत ऐसी हो गयी, जैसे उसके चेहरे पर दो अंगारे धधक रहे हों।

फिर एकाएक वो हिचकियाँ ले-लेकर रोने लगी—जैसे कोई बच्चा रो रहा हो—लगभग आधा घण्टे तक पूजा कोठारी फूट-फूटकर रोती रही।

उसके बाद उसने अपने गले में लटका लॉकिट उतारकर सामने रख लिया—सचमुच वह एक बहुत भावुक दृश्य था—फिर पूजा कोठारी ने अपनी जेब से कागज का एक टुकड़ा निकाला जगह-जगह से फटा हुआ टुकड़ा। पूजा कोठारी कुछ देर तक कागज के उस टुकड़े को बड़ी भावनामयी आंखों से देखती रही—फिर उसने कागज के उस टुकड़े को स्नेहवश अपनी आंखों से लगा लिया तथा फिर दोबारा हिचकियां ले-लेकर रोने लगी।

कुछ देर रोने के बाद उसने अपने आंसू पौंछे।

"मैं भी कितनी मूर्ख हूँ।" फिर पूजा कोठारी खुद-ब-खुद बड़बड़ाई—"मैं उन दिवंगत आत्माओं की याद में आंसू बहा रही हूं—जिनके ऊपर अभी मुझे उनके हत्यारों का खून बहाना है। उसके बाद पूजा कोठारी ने अपने हाथ में मौजूद फटे से कागज पर दृष्टिपात किया था—उस कागज को देखकर वह कुछ और भावुक हो उठी—"य""यह वही कागज है—जो मुझे मेरी प्यारी-प्यारी दीदी ने तब लिखा था—जब मैं बोर्डिंग हाउस में पढ़ती थी। उन्हीं के निमंत्रण पर मैं आगरा घूमने जाने के लिये बंगलौर से लौटी थी—लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि ट्रेन में उस रात कैसी खतरनाक विभीषिका घटित होने जा रही है।"

पूजा कोठारी की आंखों में पुनः आंसू छलछला आये—उसकी आंखों में बार-बार आंसुओं का सैलाब-सा उमड़ उठता था।

"मैं जानती हूँ कि किसी अपराधी के लिये कोई डायरी लिखना गलत है।" पूजा कोठारी फिर होठों-ही-होठों में बुदबुदाई थी—"अपने किसी प्रियजन का फोटो रखना भी गुनाह है—इसलिये मैं तुम लोगों की कोई निशानी अपने पास नहीं रखती। आज इस कागज को भी

मैं वॉश-वेशन में बहा देती हूं। लेकिन हाँ।" पूजा कोठारी ने अपने सामने रखे लॉकिट को कसकर अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया—"अपने दुश्मनों की इस निशानी को मैं हमेशा अपने पास रखूंगी—ताकि मेरे अंदर प्रतिशोध की ज्वाला जलती रहे—वो कभी ठण्डी न हो।"

और फिर—पूजा कोठारी ने सचमुच कागज के उस टुकड़े को फाड़कर वाश वेशन में बहा दिया था।

कागज के उस टुकड़े को बहाकर वो थोड़ी देर के लिये बिस्तर पर लेट गयी।

उसके बाद भी काफी देर तक उसके भीतर भावनाओं का अन्तर्द्वन्द चलता रहा।

●●●

ठीक आधा घण्टे बाद उसके सुइट की कॉलबेल बजी।

तब तक पूजा कोठारी पूरी तरह नॉर्मल हो चुकी थी—उसने फौरन दरवाजा खोला।

उसके सामने एक हृष्ट-पुष्ट काला नीग्रो वेटर खड़ा था—उसका कद लम्बा था और हाथ काफी सुडौल थे।

"मैडम।" काला नीग्रो अंदर आकर बोला—"आपके लिये सुबह की चाय।"

"ठीक है—रख दो यंगमैन।"

"यंगमैन।" चाय का कप टेबिल पर रखता हुआ बुरी तरह चौंका काला नीग्रो—"अ...आपने मुझे यंगमैन कहा मैडम—एक काले नीग्रो को यंगमैन कहा।"

"क्यों ?" उसे इतनी बुरी तरह चौंकता देख पूजा कोठारी की आंखों में भी हैरत के निशान उभरे—"क्या तुम यंगमैन नहीं हो ?"

"यह बात नहीं मैडम।" नीग्रो जल्दी से बोला—"दरअसल अमरीका में इस तरह के सम्बोधन का सौभाग्य हम काले नीग्रो लोगों को बहुत कम ही मिल पाता है।"

"तुम कहाँ के रहने वाले हो ?"

"मैं मूलतः वेस्टइंडीज का निवासी हूं।" काला नीग्रो बोला—"दरअसल कभी मेरे दादा मुझे यहाँ ले आये थे—तबसे मैं बस यहीं हूं।"

पूजा कोठारी को न जाने क्यों ऐसा लगा कि वह नीग्रो सान फ्रांसिसको में उसके काफी काम आ सकता है।

"तुम इस होटल में वेटर के अलावा भी कुछ और काम करते हो ?"

"नहीं मैडम।" नीग्रो बोला—"मैं तो कोई और काम नहीं करता—लेकिन इस शहर से थोड़ा हटकर एक नया सान फ्रांसिसको शहर बनाया जा रहा है—वहां बड़ी-बड़ी भव्य बिल्डिंगें बनायी जा रही हैं और उनके नक्शे इस तरह प्लान किये गये हैं कि वैसी बिल्डिंगें पहले कभी किसी ने दुनिया में कहीं नहीं देखी होगी। मेरा पूरा परिवार वहीं रहता है और उन्हीं बिल्डिंगों के निर्माण कार्य में मजदूरी करता है।"

बिल्डिंगों के निर्माण कार्य के नाम एक बार फिर पूजा कोठारी की आंखें शिकारी कुत्ते की तरह चमक उठीं।

"बैठ जाओ यंगमैन।" पूजा कोठारी जल्दी से बोली—"बैठ जाओ।"

"ल···लेकिन मैं आपके सामने कैसे बैठ सकता हूं मैडम।"

"क्यों नहीं बैठ सकते—हम हिन्दुस्तानियों की निगाह में इंसान सब बराबर होते हैं। वैसे भी मुझे तुमसे कुछ जरूरी काम है।"

काला नीग्रो थोड़ा हिचकिचाता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया।

उसी पल पूजा कोठारी ने एक गिलास में थोड़ी चाय पलटकर उसकी तरफ बढ़ाई।

"लो—मेरे साथ चाय पीओ।"

"य···यह आप क्या कह रही हैं मैडम।" काला नीग्रो और बुरी तरह हड़बड़ा उठा—"अ···अगर होटल के स्टाफ ने मुझे आपके साथ चाय पीते देख लिया—तो मेरी नौकरी चली जायेगी।"

"चिन्ता मत करो—तुम्हें कोई नहीं देखेगा। वैसे भी दरवाजा अंदर से बंद है।"

"ल···लेकिन···।"

"ओह—कम ऑन यंगमैन।"

काले नीग्रो ने हिचकिचाते हुए चाय का गिलास उठा लिया।

सचमुच पहले कभी किसी ने उसके साथ इस तरह का बर्ताव नहीं किया था—खासतौर पर किसी सुंदर लड़की ने।

"आप सचमुच कोई देवी हैं मैडम।"

ऐसी कोई बात नहीं।" पूजा कोठारी मुस्कुरायी—"मैं भी तुम्हारे जैसी ही एक साधारण इंसान हूं।"

काले नीग्रो ने उसके सामने बैठे-बैठे चाय का एक घूंट भरा।

"म···मैं समझ नहीं पा रहा हूं मैडम।" काला नीग्रो बोला—"कि मैं आपका इतना बड़ा अहसान कैसे उतारूंगा।"

"अगर इतनी मामूली बात को तुम अहसान समझते हो यंगमैन।"

पूजा कोठारी ने भी अपना चाय का कप उठाया—"तो इस अहसान को तुम आसानी के साथ उतार भी सकते हो।"

"कैसे ?"

"तुम्हारा पूरा परिवार बिल्डिंगों के निर्माण कार्य में लगा हुआ है।" पूजा कोठारी बोली—"क्या तुम यहां किसी ऐसे भारतीय इंजीनियर को जानते हो—जो पिछले कुछ वर्षों से इस सान फ्रांसिसको शहर में रह रहा है ?"

"यहां तो बहुत सारे भारतीय इंजीनियर काम कर रहे हैं मैडम।" काला नीग्रो बोला—"उनमें से भला यह किस तरह पता चलेगा कि आपको किसकी तलाश है। दरअसल विदेशी इंजीनियरों के लिये यहां का नियम कुछ ऐसा है कि उन्हें पहले पासपोर्ट विभाग में अपनी ऐण्ट्री करवानी पड़ती है—फिर कुछ कॉण्ट्रेक्ट पर वह लोग यहां रहते हैं और उसके बाद अपना काम खत्म करके यहां से चले जाते हैं।

"ओह।" पूजा कोठारी ने भी चाय का घूंट भरा—"क्या तुम पासपोर्ट विभाग के अंदर से किसी प्रकार भारतीय इंजीनियरों की पूरी लिस्ट लाकर मुझे दे सकते हो ?"

"बिल्कुल दे सकता हूं मैडम।" काला नीग्रो फौरन बोला—"दरअसल पासपोर्ट विभाग में मेरा एक पहचान वाला है—वो बड़ी आसानी से यह काम कर देगा। बस वो खर्चे-पानी के लिये थोड़े-बहुत डॉलर लेगा।"

"कितने डालर ?"

"ज्यादा नहीं—यही कोई सौ-दो सौ डॉलर।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी ने फौरन सौ-सौ डॉलर के पांच नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाये—"यह लो पांच सौ डॉलर।"

"प···पांच सौ डॉलर।" नीग्रो के नेत्र फैले।

"हां। जब तुम भारतीय इंजीनियरों की लिस्ट लाकर मुझे दे दोगे—तब मैं तुम्हें इतने ही डॉलर और दूंगी।"

काले नीग्रो की आंखों में अब हैरानी के चिन्ह उभर आये—"लेकिन आप उस लिस्ट का क्या करेंगी मैडम ?"

"दरअसल मैं भारत सरकार की प्रतिनिधि हूं।" पूजा कोठारी बोली—"और मैं यहां ये जानकारी हासिल करने आयी हूं कि अमरीका सरकार हमारे इंजीनियरों को यहां कैसी सुख-सुविधायें दे रही है। इसी सिलसिले में, मैं एक ऐसे भारतीय इंजीनियर से मिलना चाहती हूं—जो

यहां काफी समय से रह रहा है। क्योंकि इस मामले में वो मुझे बिल्कुल सही जानकारी दे सकता है।"

"ओह।" काले नीग्रो की आंखें सिकुड़ी—"इसका मतलब आप भारत सरकार की तरफ से यहां आयी हैं।"

"बिल्कुल।"

"ओ० के० मैडम—फिर तो मैं आपकी मदद जरूर करूंगा।"

इस बीच काले नीग्रो ने अपने गिलास में मौजूद चाय पूरी तरह समाप्त कर ली थी—फिर वो वहां से उठकर चला गया।

●●●

पूजा कोठारी को लगा—उसे बिल्कुल सही समय पर, बिल्कुल सही आदमी सान फ्रांसिसको के अंदर मिल गया था।

शाम तक पूजा कोठारी होटल के अपने उसी सुइट में पड़ी रही।

शाम के उस समय पांच बज रहे थे—जब वही काला नीग्रो बड़ी प्रसन्नचित मुद्रा में उसके सुइट के अंदर आया।

"क्या बात है।" पूजा कोठारी तुरन्त बैड से उठकर बैठी—"बड़े खुश नजर आ रहे हो।"

"हां, मैडम।" काले नीग्रो ने उत्साह के साथ जवाब दिया—"मैं वाकई खुश हूं—क्योंकि आपका काम बन गया है।"

"य...यानि तुम पासपोर्ट विभाग से भारतीय इंजीनियरों की लिस्ट ले आये?"

"यस मैडम।" काले नीग्रो ने फौरन अपनी जेब से एक लम्बी लिस्ट निकालकर पूजा कोठारी की तरफ बढ़ाई—"यह है वो लिस्ट जिसमें सान फ्रांसिसको के अंदर रहने वाले सभी भारतीय इंजीनियरों के नाम लिखे हैं।"

पूजा कोठारी ने फौरन काले नीग्रो के हाथ से उस लिस्ट को झपट लिया।

और फिर बड़ी तेजी से उस लिस्ट में कमल कपूर का नाम देखा।

जल्द ही उसे लिस्ट में लिखा कमल कपूर का नाम नजर आ गया था—उस नाम को देखते ही पूजा कोठारी की आंखें कुछ और ज्यादा तेजी से चमक उठीं।

यानि उसे टोनी से जो जानकारी मिली थी—वो बिल्कुल सही थी और कमल कपूर नामक उसका दूसरा शिकार अभी भी सान फ्रांसिसको में ही था।

"आपको जिस इंजीनियर की तलाश थी मैडम।" काले नीग्रो ने पूछा—"क्या उसका नाम लिस्ट के अंदर है?"

"हां।" पूजा कोठारी बोली—"उसका नाम लिस्ट में है। तुमने वाकई बड़ी कुशलता से मेरा काम कर दिखाया है—अब मुझे कम-से-कम इस बात का यकीन है कि वह इंजीनियर सान फ्रांसिसको में ही है—और मुझे अब किसी तरह सिर्फ उस तक पहुंचना है।"

"मुझे खुशी है मैडम—कि मैं आपके किसी काम आ सका।"

तभी पूजा कोठारी ने सौ-सौ डॉलर के पांच और नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाये।

"यह लो यंगमैन—तुम्हारा बाकी का मेहनताना।"

"ल'''लेकिन इस सबकी क्या जरूरत है मैडम।" काला नीग्रो बोला—"आपने सुबह ही मुझे पांच सौ डॉलर दिये थे—उनमें से ही काफी डॉलर बचे हुए हैं।"

"कोई बात नहीं—फिर भी तुम इन्हें अपने पास रख लो।" पूजा कोठारी ने जबरन उसकी बंद मुट्ठी में पांच सौ डॉलर ठूंस दिये—"अपनी पत्नी और बच्चों के लिये इन पांच सौ डॉलर के कुछ कपड़े खरीद लेना—वह खुश हो जायेंगे।"

"आप सचमुच बहुत अच्छी हैं मैडम।" काला नीग्रो आभारपूर्ण नजरों से उसे देखता हुआ बोला—"क्या मैं आपके किसी और काम भी आ सकता हूं ?"

"हां—अगर तुम चाहो, तो मेरा एक काम और कर सकते हो।"

"बोलिये मैडम।" नीग्रो ने उत्साहित होकर कहा—"मैं आपके लिये कुछ भी खुशी-खुशी करूंगा।"

"क्या तुम किसी तरह यह पता लगा सकते हो कि यह भारतीय इंजीनियर सान फ्रांसिसको में रहते कहां हैं ?"

काले नीग्रो का दमकता चेहरा एकाएक बल्ब की तरह बुझ गया।

"क्या हुआ ?"

"यहां इंजीनियरों का एड्रेस पता लगाना ही सबसे मुश्किल काम है मैडम। दरअसल एक साल पहले यहां कुछ विदेशी इंजीनियरों का अपहरण करने के बाद उनकी हत्या कर दी गयी थी—बस तभी से अजनबी लोगों को किसी इंजीनियर का पता बताने से पहले उससे काफी पूछताछ की जाती है।"

"क्या पासपोर्ट विभाग में मौजूद तुम्हारा दोस्त भी एड्रेस नहीं बता सकता ?"

"नहीं मैडम—एड्रेस वाली फाइल उसके पास नहीं है। मैंने बताया न कि अब इस मामले में काफी सख्ती बरती जाती है।"

"ओह।" पूजा कोठारी के माथे पर चिन्ता की लकीरें उभरीं—"कोई बात नहीं।" फिर वह जल्दी से बोली—"एड्रेस मैं खुद पता कर लूंगी।"

"लेकिन आप कैसे पता लगायेंगी ?"

"तुम बस देखते जाओ।" पूजा कोठारी के होठों पर एकाएक बेहद दिलचस्प मुस्कान दौड़ी—"बहुत जल्द मुझे न सिर्फ एड्रेस मालूम हो जायेगा बल्कि मैं अपनी मंजिल पर भी पहुंच जाऊंगी।"

●●●

बहरहाल पूजा कोठारी फौरन ही हरकत में आ गयी थी और उसने अपने दूसरे शिकार की हत्या करने के लिये उसके चारों तरफ जाल फैलाना शुरू कर दिया था।

उसने सबसे पहले होटल की एक मर्सडीज बेन्ज कार किराये पर ली और उसे साउथ एवेन्यू के उस इलाके की तरफ दौड़ा दिया—जहां इंजीनियर रहते थे।

वह एक बिल्डिंग के रिसेप्शन पर पहुंची—जहां एक लम्बा-सा खूबसूरत अंग्रेज बैठा था।

"क्या तुम बता सकते हो हैण्डसम।" पूजा कोठारी उस खूबसूरत अंग्रेज से बोली—"कि यहां हमारे हिन्दुस्तान के इंजीनियर कहां रहते हैं ?"

"हमारा हिन्दुस्तान।" बुरी तरह चौंका अंग्रेज युवक—"इतना प्यार करती हैं आप अपने हिन्दुस्तान से।"

"तुम हिन्दुस्तानियों के जज्बातों को नहीं समझ सकते हैण्डसम।" पूजा कोठारी का स्वर एकाएक भभक उठा—"क्योंकि मैं जानती हूं कि अमरीकन हिन्दुस्तानियों से बहुत नफरत करते हैं।"

"ऐसी तो कोई बात नहीं—हम लोग तो हिन्दुस्तानियों से बिल्कुल भी नफरत नहीं करते।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।" पूजा कोठारी योजनाबद्ध अंदाज में एकाएक गलाफाड़-फाड़कर चिल्लाने लगी—"तुम हिन्दुस्तानियों को मूर्ख, पागल और न जाने क्या-क्या समझते हो—मुझे सब मालूम है।"

पूजा कोठारी को गला-फाड़-फाड़कर चिल्लाते देख वहां फौरन भीड़ जमा होने लगी—जबकि रिसेप्शन पर बैठे अंग्रेज युवक के एकाएक हाथ-पैर फूल गये थे और वो समझ न सका कि उसके मुंह से आखिर ऐसी क्या बात निकल गयी—जिसके कारण वो लड़की इतना नाराज हो गयी है।

"क्या बात है।" फौरन एक समझदार-सा अंग्रेज बूढ़ा भीड़ को चीरकर पूजा कोठारी के नजदीक आया—"तुम इतनी बुरी तरह चिल्ला क्यों रही हो बेबी ?"

"सर।" बौखलाया-सा अंग्रेज युवक जल्दी से बोला—"यह कह रही हैं कि हम अमरीकन, हिन्दुस्तानियों से बहुत नफरत करते हैं और उन्हें पागल समझते हैं—इसीलिये यह इतना चिल्ला रही हैं।"

अंग्रेज बूढ़े ने भी थोड़े आश्चर्य से पूजा कोठारी को देखा और अपनी ऐनक दुरूस्त किया।

"इस तरह की तो कोई भी बात हमारे दिमाग में नही है बेबी।" अंग्रेज बूढ़ा बेहद शालीनता से बोला—"लगता है कि तुम्हें किसी ने अमरीकनों के खिलाफ भड़का दिया है।"

"मुझे किसी ने नहीं भड़काया।" पूजा कोठारी पहले की तरह ही चिल्लाकर बोली—"मुझे मालूम हुआ है कि यहां भारतीय इंजीनियरों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं होता।"

अब अंग्रेज बूढ़ा हंसने लगा।

"आप हंस क्यों रहे हैं ?" पूजा कोठारी पुनः चिल्लाई।

"सचमुच—फिर तो तुम्हें कोई गलतफहमी ही हो गयी है बेबी।" अंग्रेज बूढ़ा मुस्कुराते हुए ही बोला—"तुम नहीं जानती—हम लोग भारतीय इंजीनियरों का कितना ख्याल रखते हैं। यहां हमारी सरकार ने भारतीय इंजीनियरों के लिये एक बिल्कुल अलग कॉलोनी बना रखी है। इतना ही नहीं—उस कॉलोनी का नाम भी 'स्वामी विवेकानन्द कॉलोनी' रखा गया है। वहां हर वो सुख-सुविधा मौजूद है—जो सान फ्रांसिसको की किसी भी और वी० आई० पी० कॉलोनी के अंदर है। अगर तुम्हें इस बूढ़े की बात का यकीन नहीं आता—तो तुम खुद उस कॉलोनी को जाकर अपनी आंखों से सारे इंतजाम देख सकती हो।"

"कहां है वो कॉलोनी ?"

"यहां से सीधे जाकर दांयी तरफ मुड़ोगी—तो सामने ही तुम्हें कॉलोनी का वह गेट नजर आ जायेगा, जिसके अंदर भारतीय इंजीनियर किसी एक खुशहाल परिवार की तरफ हंसी-खुशी रहते हैं।"

पूजा कोठारी का पहला मकसद हल हो गया था। पहला मकसद हल होते ही उसने अपने चेहरे पर बड़े नाटकीय ढंग से अफसोस के भाव उभार लिये।

"लगता है सचमुच मुझे कोई गलतफहमी हो गयी है।" पूजा कोठारी खेद प्रकट करती हुई बोली—"अगर सचमुच आपकी सरकार

ने हमारे इंजीनियरों को इतनी सुख-सुविधायें दे रखी हैं—तब तो वाकई मुझसे आप लोगों का अपमान हुआ है—जिसके लिये मैं माफी चाहती हूं।" और फिर सचमुच पूजा कोठारी ने अपने दोनों हाथ जोड़ लिये।

"नहीं-नहीं।" अंग्रेज बूढ़े ने फौरन पूजा कोठारी ने दोनों हाथ पकड़े—"माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं बेबी। बल्कि मुझे खुशी है कि तुम अपने देश से इतना प्यार करती हो।"

तब तक वहां जमा हुई भीड़ धीरे-धीरे छंटने लगी थी। भीड़ के छंटते ही पूजा कोठारी 'स्वामी विवेकानंन्द कॉलोनी' की तरफ बढ़ गयी।

अब पूजा कोठारी का एक महत्वपूर्ण काम और बचा था—कॉलोनी के अंदर जाकर कमल कपूर के फ्लैट का पता लगाना।

यह काम उस पहले काम से भी ज्यादा मुश्किल था।

क्योंकि कॉलोनी में वो किसी से 'कमल कपूर' के नाम से फ्लैट का एड्रेस नहीं पूछना चाहती थी—इसकी वजह ये थी कि बाद में जब वो कमल कपूर की हत्या करती, तो तभी अमरिकन पुलिस के सामने यह रहस्य भी उजागर होता कि आज से कुछ दिन पहले एक लड़की कमल कपूर का फ्लैट तलाशती घूम रही थी और बस वो तभी शक के घेरे में आ जाती।

इस प्रकार उसे कमल कपूर के फ्लैट का पता भी लगाना था और इस तरह पता लगाना था कि उसे 'कमल कपूर' का नाम लेकर किसी से फ्लैट का पता न पूछना पड़े।

काम मुश्किल था।

लेकिन दिमाग की बदौलत उसने उस मुश्किल काम को संभव करके दिखाना था।

●●●

पूजा कोठारी की मर्सडीज़ बेन्ज कार 'स्वामी विवेकानन्द कॉलोनी' के मेन गेट के सामने जाकर रुकी।

उसने देखा—कॉलोनी के अंदर कुछ भारतीय बच्चे लॉन में क्रिकेट खेल रहे थे—वहीं दरवाजे पर एक सशस्त्र गार्ड भी खड़ा था।

पूजा कोठारी अपनी मर्सडीज़ बेन्ज़ कार से उतरकर जैसे ही मेन गेट की तरफ बढ़ी—तभी सशस्त्र गार्ड उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"कहिये मैडम।" वह अपनी भारी-भरकम आवाज़ में बोला—"क्या बात है ?"

"मुझे राजगोपाल जी से मिलना है।" पूजा कोठारी ने योजना के अनुसार यूं ही एक काल्पनिक नाम सशस्त्र गार्ड के सामने लिया।

"राजगोपाल जी।" गार्ड के चेहरे पर बेहद हैरानी के भाव उभरे–"ल···लेकिन यहां तो 'राजगोपाल जी' नाम के कोई व्यक्ति नहीं रहते।"

"ऐसा कैसे हो सकता है।" पूजा कोठारी फौरन अपनी बात पर अड़ गयी–"वह मेरे अंकल हैं–मैं खासतौर पर उन्हीं से मिलने हिन्दुस्तान से यहां अमरीका आयी हूं। वह दस साल पहले हिन्दुस्तान गये थे–तभी उन्होंने मुझे यहां का एड्रेस बताया था।"

"दस साल पहले।" गॉर्ड के चेहरे पर आश्चर्य और बढ़ा–"क्या इस बीच तुम्हारा अपने अंकल से कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ ?"

"न···नहीं।" पूजा कोठारी ने सकुचाते हुए जवाब दिया–"प···पत्र व्यवहार तो कोई नहीं हुआ।"

"फिर तो तुमसे भयानक गलती हो चुकी है मैडम।" गार्ड बोला–"अमरीका आने से पहले तुम्हें उनसे फोन पर बात करनी चाहिये थी और यह कन्फर्म करना चाहिये था कि आज भी अमरीका में ही हैं या नहीं–अगर वो यहां रहते थे, तो जरूर बहुत पहले ही यहां से जा चुके हैं। क्योंकि पिछले दो साल से तो मैं यहां हूं–इस बीच मैंने तो कभी राजगोपाल जी का नाम नहीं सुना।"

पूजा कोठारी के माथे पर अब साफ-साफ चिन्ता की लकीरें उभर आयीं।

"यह तो वाकई बहुत भरी गड़बड़ हो चुकी है।" पूजा कोठारी नाटकीय ढंग से बोली–"क्या किसी तरह यह मालूम हो सकता है कि अब राजगोपाल जी कहां हैं ?"

"नहीं–यह तो मालूम नहीं हो सकता।" गार्ड शुष्क स्वर में बोला–"हां–अगर इस कॉलोनी में उनका कोई दोस्त है, तो वह जरूर इस बारे में कुछ बता सकता है। लेकिन सवाल ये है कि यह बात भी किस प्रकार पता चले कि यहां उनका दोस्त कौन है।"

"मुझे याद आया।" पूजा कोठारी फौरन बोली–"दस साल पहले अंकल जब मिले थे–तो वह अपने एक ऐसे दोस्त का बार-बार जिक्र कर रहे थे, जो उनके साथ इसी कॉलोनी में रहता था–उसका कुछ ऐसा ही नाम था–स···संजय। नहीं–नहीं–संजय नहीं। सुरेन्द्र।" फिर पूजा कोठारी अपने आप ही बड़बड़ाई–"नहीं–सुरेन्द्र भी नहीं। मुझे नाम याद नहीं आ रहा है।" पूजा कोठारी ने अपना दिमाग ठकठकाया और फिर गार्ड के सामने चाल चली–"क्या तुम्हारे पास ऐसी कोई लिस्ट होगी–जिसमें इस कॉलोनी के अंदर रहने वाले सभी नामों का जिक्र हो। अगर तुम्हारे पास ऐसी कोई लिस्ट हो–तो कृपया

वह लिस्ट मुझे दिखाओ। हो सकता है कि उन नामों को पढ़कर मुझे अंकल के दोस्त का नाम याद आ जाये।"

"ए···ऐसी लिस्ट तो मेरे पास है।" गार्ड बोला—"ल···लेकिन।"

"लेकिन क्या ?"

"मुझे ऊपर से सख्त हिदायत है कि मैं उस लिस्ट को किसी भी अजनबी को न दिखाऊं।"

"मगर मैं अजनबी कहां हूं।" पूजा कोठारी फौरन बोली—"मैं अपने अंकल की तलाश में भटक रही हूं—मुझे उनसे बहुत जरूरी काम है। अगर वो मुझे मिले गये—तो मेरा दिल तुम्हें दुआयें देगा।"

"प···परन्तु····।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी ने बेहद दुःखी अंदाज में गहरी सांस ली—"अगर तुम मुझे वो लिस्ट नहीं दिखाना चाहते—तो कोई बात नहीं। मैं चलती हूं।"

फिर पूजा कोठारी सचमुच वहां से जाने के लिये मुड़ी।

"सुनो—सुनो।" गार्ड जल्दी से बोला।

पूजा कोठारी के कदम ठिठके।

"तुम वाकई मुझे बहुत मजबूर नजर आती हो।" गार्ड बोला—"इसलिये मेरे साथ केबिन में आओ—मैं तुम्हें वो लिस्ट दिखाता हूं।"

"थैंक्यू—थैंक्यू वैरी मच।" पूजा कोठारी को चेहरा खिल उठा—"तुम्हारी इस मदद के लिये मैं हमेशा तुम्हारी आभारी रहूंगी।"

फिर पूजा कोठारी उस गार्ड के साथ वहीं बने एक छोटे से केबिन में पहुंची—जहां टेबिल पर एक रजिस्टर रखा हुआ था और उस रजिस्टर में न सिर्फ उस कॉलोनी के अंदर रहने वाले सभी इंजीनियरों के नाम थे बल्कि उनके नाम के आगे उनके फुल एड्रेस भी लिखे हुए थे।

"यह लो मैडम।" सशस्त्र गार्ड ने रजिस्टर खोलकर पूजा कोठारी की तरफ बढ़ाया—"आप इनमें अपने अंकल के दोस्त का नाम तलाश सकती हैं।"

"धन्यवाद।"

पूजा कोठारी की आंखों में एक बार फिर शिकारी कुत्ते जैसी चमक कौंध उठी थी।

उसकी आंखें बड़ी तेजी से रजिस्टर के नामों पर दौड़ने लगी और फिर वह एक नाम पर जाकर ठिठक गयी—कमल कपूर के नाम पर।

उसके नाम के आगे उसका पूरा एड्रेस लिखा था—विंग बी, पंद्रहवीं मंजिल—फ्लैट नम्बर चार।

पूजा कोठारी ने तुरन्त उस एड्रेस को कण्ठस्थ कर लिया और फिर रजिस्टर का पन्ना पलटा—शीघ्र ही उसने सारे इंजीनियरों के नाम देख डाले।

"क्या बात है मैडम।" गार्ड बोला—"क्या आपको अभी भी अपने अंकल के दोस्त का नाम नहीं मिला ?"

"नहीं।" पूजा कोठारी के चेहरे पर पुनः परेशानी के निशान उभरे—"मुझे उनका नाम याद नहीं आ रहा है।"

"फिर तो हो सकता है—उनके दोस्त भी यहां से चले गये हों।"

"हां—यह भी संभव है।" पूजा कोठारी ने रजिस्टर बंद कर दिया—"मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हें परेशान किया।"

"ऐसी कोई बात नहीं मैडम—आने वाले लोगों का मार्ग दर्शन करने के लिये ही तो मुझे यहां बिठाया गया है।"

पूजा कोठारी केबिन से बाहर निकली—तो उसके पीछे-पीछे सशस्त्र गार्ड बाहर निकला।

"अब आप क्या करेंगी मैडम ?"

"देखो—कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। अब किसी और ढंग से उनका पता लगाने की कोशिश करूंगी—और अगर वो तब भी न मिले, तो उसके बाद मेरे सामने एक ही रास्ता होगा कि मैं वापस हिन्दुस्तान लौट जाऊं।"

"ओह।"

उसके बाद पूजा कोठारी तेज-तेज कदमों से अपनी मर्सडीज बेन्ज कार की तरफ बढ़ गयी—लेकिन कार में बैठने से पहले पूजा कोठारी ने कॉलोनी की 'विंग बी' इमारत पर जरूर दृष्टिपात किया। वह कॉलोनी के बिल्कुल आखिरी सिरे पर बनी थी और लगभग बीस मंजिली इमारत थी।

पूजा कोठारी मर्सडीज कार में बैठी और अगले ही पल वो मर्सडीज बेन्ज कार तूफानी गति से आगे बढ़ गयी।

●●●

पूजा कोठारी जहां बेहद चालाकी से अपने शिकार नम्बर दो की हत्या करने के लिये धीरे-धीरे उसके बारे में सारी जानकारियां इकट्ठी कर रही थी—वहीं उसका शिकार नम्बर दो यानि कमल कपूर अपने सिर पर मंडराते खतरे से पूरी तरह अंजान था।

कमल कपूर—वह एक सामान्य कद और गोरी रंगत वाला हृष्ट-पुष्ट नौजवान था।

उसकी उम्र लगभग पैंतीस-छत्तीस वर्ष के आसपास थी—लेकिन जीवन में उसे इतनी खुशियां मिली थीं कि वो मुश्किल से पच्चीस-छब्बीस वर्ष का नौजवान लगता था।

जवान और खूबसूरत लड़कियों के साथ अप्राकृतिक सहवास करने का उसे आज भी शौक था—यह बात अलग है कि जब वो अपनी मनपसंद क्रिया करता, तो लड़कियों का मन घृणा से भर जाता।

लेकिन कमल कपूर अपनी आदत से मजबूर था—उसे लड़कियों के साथ उस प्रकार के सहवास में जो आनन्द मिलता था—वो साधारण सहवास के अंदर उसे कभी भी प्राप्त न हुआ।

उस समय भी कमल कपूर ने अपने बिस्तर पर एक लम्बे-चौड़े जिस्म वाली अंग्रेज वेश्या को दबोच रखा था।

वेश्या को उसने घोड़ी बना रखा था।

और खुद उसके ऊपर सवार था।

लगभग बीस मिनट तक बिस्तर पर तूफान आता रहा—फिर उसका सारा जोश ठण्डा हो गया।

काफी देर तक कमल कपूर वेश्या की नंगी पीठ पर पड़ा हांफता रहा। फिर वासना का उन्माद जब पूरी तरह उसके ऊपर से उतर गया—तो वह उसे छोड़कर उठा।

थोड़ी ही देर बाद वेश्या भी अपने कपड़े पहनकर वहां से चली गयी।

●●●

उधर—पूजा कोठारी ने कमल कपूर की हत्या करने की दिशा में पहला कदम उठाया।

उसने सान फ्रांसिसको की टेलीफोन डायरेक्ट्री में कमल कपूर का टेलीफोन नम्बर देखा—जो उसे फौरन मिल गया। लेकिन इंजीनियरों के एड्रेस उस टेलीफोन डायरेक्ट्री में भी नहीं थे।

कमल कपूर का टेलीफोन नम्बर मिलते ही उसने पब्लिक टेलीफोन बूथ से उसे फोन घुमाया।

"हैलो।" तुरन्त एक अपरिचित आवाज पूजा कोठारी के कानों में पड़ी।

"कौन—कमल कपूर?"

"यस—मैं कमल कपूर ही बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आयी—"आप कौन ?"

हंसी पूजा कोठारी।

बिल्कुल इस तरह—जैसे कोई शैतान हंसा हो—उसकी वो हंसी किसी को भी डरा देने के लिये पर्याप्त थी।

"क···कौन हो तुम ?" चिल्लाया कमल कपूर।

"मेरे कई नामों में-से एक नाम 'मौत' भी है कमल कपूर।" पूजा कोठारी जहरीली नागिन की तरह फुंफकार उठी—"वो मौत—जो हिन्दुस्तान के बंगलौर शहर से हवा में उड़कर यहां तक आयी है सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी जान लेने।"

"ज···जान लेने।" कमल कपूर के दिलो-दिमाग पर बम से गड़गड़ाते हुए गिरे—"क···क्या बकवास कर रही हो तुम—अ···और बंगलौर शहर—ब···बंगलौर शहर से मेरा क्या सम्बन्ध है ?"

"बंगलौर शहर से तुम्हारा वही रिश्ता है कमल कपूर।" पूजा कोठारी फुंफकारी—"जो किसी भी इंसान का अपने गुनाहों से होता है—उन गुनाहों से, जिन्हें इंसान वक्त के साबुन से चाहे कितना भी रगड़-रगड़कर धो ले—लेकिन उन गुनाहों के धब्बे मिटा नहीं करते। फोर स्कवायर दल तो तुम्हें अभी भी याद होगा कमल कपूर।"

"फ···फोर स्कवायर।" कांप उठी कमल कपूर की आवाज।

"क···कैसा फोर स्कवायर दल ?"

"मैं उस फोन स्कवायर दल की बात कर रही हूं।" पूजा कोठारी भभकते स्वर में बोलती चली गयी—"जो आज से आठ वर्ष पहले बंगलौर शहर में सक्रिय हुआ करता था। जिसके चार मैम्बर थे—चार मैम्बर। चारों घनिष्ट दोस्त थे—चारों का एक ही शौक था—रात के अंधेरे में ट्रेन के अंदर चढ़कर मासूम लड़कियों के साथ बलात्कार करना और फिर उनकी हत्या कर देना। ऐसा ही एक भयानक हत्याकाण्ड उन चारों ने आज से आठ साल पहले 13 मार्च की रात को भी किया था—याद है 13 मार्च की रात कमल कपूर ?"

"त···तुम यह सारी कहानी मुझे क्यों सुना रही हो ?" कमल कपूर हड़बड़ाये स्वर में बोला।

"यह सारी कहानी मैं तुम्हें इसलिये सुना रही हूं।" पूजा कोठारी एक-एक शब्द चबाती हुई बोली—"क्योंकि 'फोर स्कवायर' दल के उन चार शैतानों में से एक शैतान तुम भी थे—तुम।"

"य···यह सब झूठ है।" कमल कपूर चिल्ला उठा—"मेरा 'फोर

स्कवायर' दल से कोई सम्बंध नहीं—त''' तुम्हें जरूर कोई गलतफहमी हो गयी है।"

"मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई।" पूजा कोठारी कहर भरे स्वर में बोलती चली गयी—"13 मार्च की रात तुम आज तक भूले तो नहीं होओगे कमल कपूर। वो रात—जब तुम दरिन्दों ने मिलकर बंगलौर की सेशन कोर्ट के जज अरविन्द कोठारी के पूरे परिवार को मार डाला था। उनके परिवार में अगर कोई बचा था—तो पंद्रह वर्ष की एक छोटी-सी बच्ची बची थी। जो उस समय टॉयलेट के अंदर थी और उसने वहीं छिपे-छिपे अपनी नीली-नीली आंखों से उस पूरी विभीषिका को देखा था। उस मासूम लड़की ने देखा था कि तुम चार दरिन्दों ने कितनी बेदर्दी से उसके डैडी को मार डाला—उसकी मां को मार डाला और फिर उसकी प्यारी-प्यारी दीदी के साथ बलात्कार करने के पश्चात उसकी भी हत्या कर दी।"

"त''' तुम उस लड़की को कैसे जानती हो ?"

पूजा कोठारी की रगों में खून की जगह तेजाब-सा दौड़ता चला गया—भावनाओं की वजह से उसका चेहरा बनने बिगड़ने लगा।

"क्योंकि पापी इंसान।" पूजा कोठारी जहरीले स्वर में बोली—"वो मासूम बच्ची मैं ही हूं—जो आज जवानी की दहलीज पर कदम रख चुकी है और जिसके अंदर आज आठ साल बाद भी प्रतिशोध की प्रचण्ड ज्वाला धधक रही है।"

सिसकारी छूट गयी कमल कपूर के मुंह से—"त''' तुम अरविन्द कोठारी की छोटी बेटी हो ?"

"हां—मैं अरविन्द कोठारी की छोटी बेटी हूं। लेकिन उससे भी पहले मैं तुम्हारे लिये मौत हूं। तुम्हें शायद मालूम नहीं कि मैं एक 'फोर स्कवायर' की हत्या कर भी चुकी हूं और अब दूसरे 'फोर स्कवायर' यानि तुम्हारी बारी है।"

"ए''' एक 'फोर स्कवायर' की हत्या कर चुकी हो।" कमल कपूर के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया—"क''' किसकी हत्या कर दी है तुमने ?"

"विजू आनन्द की।"

"नहीं।" चीख पड़ा कमल कपूर—"नहीं।"

"अब मेरी बात बहुत ध्यान से सुनो कमल कपूर।" पूजा कोठारी की आवाज हद दर्जे तक खतरनाक हो उठी—"इस समय शाम के सात बज रहे हैं—कल रात ठीक नौ बजे तुम्हारी लाश तुम्हारे फ्लैट के अंदर पड़ी होगी—मरने के लिये तैयार हो जाओ—अलविदा।"

और—उसके बाद पूज. कोठारी ने लाइन डिस्कनेक्ट कर दी।

वह जब पब्लिक टेलीफोन बूथ पर दरवाजा खोलकर बाहर निकली—तो उसका चेहरा आग बरसा रहा था—आग-ही-आग।

●●●

उस टेलीफोन ने कमल कपूर की हवा खुश्क कर दी थी।

हालांकि वो दिलेर आदमी था—अपने आप को मर्द समझता था—लेकिन पूजा कोठारी के उस धमकी भरे फोन ने उसके होश उड़ाकर रख दिये।

पलक झपकते ही उसकी आंखों के गिर्द बंगलौर का वो सारा नजारा घूम गया—जब उन चार दोस्तों ने 'फोर स्कवायर' दल के रूप में वहां आतंक बरपा कर दिया था। फिर कमल कपूर की आंखों के गिर्द 13 मार्च की रात का तो नजारा भी घूमा—जब उन चारों ने ट्रेन के अंदर कोठारी परिवार की हत्या की।

उस रात सविता कोठारी के साथ बलात्कार करते समय उसका लॉकेट वहीं ट्रेन में गिर गया था—जिसका अहसास उसे काफी बाद में जाकर हुआ।

कमल कपूर यादों के उस स्याह अंधकूप में चक्कर लगाता रहा—फिर कुछ सोचकर उसने तेजी से थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक फोन मिलाया और वहां विजू आनन्द के बारे में पूछताछ की।

तुरन्त उसे पता चल गया कि विजू आनन्द की हत्या हो चुकी थी। कमल कपूर के हाथ-पैर और ज्यादा ठण्डे पड़ गये—यानि लड़की ठीक कह रही थी। उसकी बात में वजन था।

कमल कपूर बैचेनीपूर्वक इधर-उधर घूमने लगा।

पूजा कोठारी की धमकी भरे शब्द उसके दिमाग पर बार-बार हथौड़े की तरह पड़ रहे थे—"कल रात ठीक नौ बजे तुम्हारी लाश तुम्हारे फ्लैट के अंदर पड़ी होगी कमल कपूर।"

"कल रात ....।"

झुंझला उठा कमल कपूर—उसने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया।

फिर कुछ सोचकर उसने सान फ्रांसिसको ने पुलिस हैडक्वार्टर फोन घुमाया।

●●●

इंस्पेक्टर जैक।

जैक सान फ्रांसिसको पुलिस का एक मजबूत स्तम्भ था और वो अपने महकमें की नाक समझा जाता था।

जैक की आधी से ज्यादा उम्र अपराधियों के साथ आंख-मिचौली खेलते गुजर गयी थी। उसकी उम्र लगभग छियालीस साल थी और वो उम्र के उस पड़ाव पर था--जहां इंसान रिटायरमेण्ट के बारे में सोचने लगता है।

लेकिन अभी जैक के अंदर ऐसी कोई बात न थी। वह लम्बे चौड़े और चुस्त-दुरूस्त जिस्म का मालिक था। वह न सिर्फ खुद चौकन्ना रहता था बल्कि अपने डिपार्टमेंट के नौजवान साथियों के लिये भी प्रेरणा स्त्रोत बना रहता था कि उन्हें भी इसी तरह चौकन्ना रहना चाहिये।

जैक ने अपनी जिंदगी में बड़े-बड़े चालाक अपराधी देखे थे।

परन्तु उससे आज तक ऐसा कोई अपराधी नहीं टकराया था—जो उसे मात दे सके।

जैक की दिली इच्छा थी कि उसके रिटायर होने से पहले कम-से-कम एक बार उससे ऐसा कोई अपराधी जरूर टकराये—जो उसे दिमागी दांव-पेचों के मामले में मात दे सके।

●●●

बहरहाल—कमल कपूर का फोन मिलते ही जैक फौरन अपने सहयोगियों के साथ पुलिस वैन में सवार होकर भागा-भागा उसके फ्लैट पर पहुंचा।

कमल कपूर उस समय भी बेहद दहशतजदा अवस्था में एक कुर्सी पर बैठा था और डर के मारे उसकी बुरी हालत थी।

"कहिये मिस्टर कपूर।" जैक, कमल कपूर के सामने वाली कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—"आपने मुझे क्यों बुलाया है ?"

"म'''मेरी जिंदगी खतरे में पड़ गयी है।" कमल कपूर अपना सिर पकड़े-पकड़े बोला—"म'''मेरी हत्या होने वाली है।"

जैक के दिमाग में एकाएक बम-सा फट गया—उसे ख्वाब में भी उम्मीद नहीं थी कि वो कमल कपूर की जबान से ऐसी बात सुनेगा—वह तो कोई चोरी-चकारी का मामला समझकर वहां आया था।

"अ'''आपकी हत्या होने वाली है।" जैक जैसे आदमी का स्वर भी दहल उठा—"लेकिन यह बात आप कैसे कह रहे हैं ?"

"दरअसल थोड़ी देर पहले ही मेरे पास एक फोन आया था।" कमल कपूर रूमाल से अपने चेहरे के पसीने साफ करता हुआ

बोला—"एक बेहद खतरनाक लड़की का फोन। उसने मुझे धमकी दी कि कल रात ठीक नौ बजे मेरी हत्या हो जायेगी और मेरी लाश मेरे इसी फ्लैट के अंदर पड़ी होगी।"

"मगर वह लड़की आपकी हत्या क्यों करेगी ?"

"इ···इस बारे में उसने कुछ नहीं बताया।"

"लड़की का नाम क्या था ?"

"उसने अपना नाम भी नहीं बताया।"

"कमाल है।" जैक की आवाज में अब सख्त अचम्भे के भाव उभरे—"ऐसा अजीबोगरीब केस मैंने अपनी पूरी जिंदगी में न पहले कभी देखा और न सुना। एक लड़की किसी को हत्या की धमकी देती है—लेकिन वह अपने शिकार को न अपना नाम बताती है और न यह बताती है कि वह उसकी हत्या क्यों करेगी। सचमुच—जबरदस्त सस्पैंस है।"

"इसे तुम चाहे कुछ भी कहो मिस्टर जैक।" कमल कपूर झुंझलाकर बोला—"मगर यह तय है कि वो लड़की बहुत खतरनाक है और मेरी हत्या करके रहेगी।"

"अच्छा यह बताइये मिस्टर कपूर।" जैक अपनी आंखें सिकोड़कर बोला—"उस लड़की की उम्र क्या रही होगी—जिसने आपको धमकी दी।"

"अजीब सवाल कर रहे हो तुम।" कमल कपूर बोला—"मेरी उस लड़की से टेलीफोन पर बात हुई थी—मैंने उसे देखा नहीं—फिर मैं उसकी उम्र कैसे बता सकता हूं ?"

"रिलैक्स मिस्टर कपूर—रिलैक्स।" जैक उसे शान्त करता हुआ बोला—"मैं जानता हूं कि आपकी उससे फोन पर बात हुई थी—लेकिन इंसान की आवाज से उसकी उम्र का अंदाजा लगाया जाता है। आवाज़ सुनकर ही अनुमान हो जाता है कि यह किसी बूढ़े आदमी की आवाज है या किसी ज़वान आदमी की।"

"वह जवान लड़की थी।"

"गुड। जैक अपनी पी-कैप दुरूस्त करता हुआ बोला—"उसकी उम्र क्या रही होगी—अंदाजन ?"

कमल कपूर अब एकाएक सावधान हो गया—वो जानता था कि उसने जैक जैसे धुरंधर जासूस के सामने जो छोटा-सा झूठ बोला है, उसे वो किसी भी पल पकड़ सकता है।

"उ···उम्र।" कमल कपूर ने अपने माथे पर सिलवटें डालीं—"उसकी उम्र यही कोई बाइस और छब्बीस के बीच में रही होगी—आवाज

से तो ऐसा ही लगता था।"

जैक के होठों पर एकाएक प्यारी-सी मुस्कान दौड़ गयी।

"आप ख्वामखाह चिन्ता कर रहे हैं मिस्टर कपूर।" जैक बोला—"वह जरूर कोई मवाली टाइप की लड़की होगी—आजकल सान फ्रांसिसको में ऐसी बहुत-सी लड़कियां सक्रिय हैं—जो लोगों को धमकी देकर उनसे नोट ऐंठने का प्रयास करती हैं।"

"नहीं।" कमल कपूर तुरन्त बोला—"वह ऐसी लड़की नहीं थी—उसका मकसद नोट ऐंठना नहीं था।"

"फिर क्या मकसद था ?"

"वह हण्ड्रेड परसेण्ट मेरी हत्या ही करना चाहती है।"

"लेकिन कोई भी अजनबी लड़की भला आपकी हत्या क्यों करना चाहेगी मिस्टर कपूर।" जैक एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला—"आखिर हत्या करने के पीछे कोई तो वजह हो—कोई तो मकसद हो।"

"उसका मकसद मुझे मालूम नहीं।" कमल कपूर झुंझला उठा—"लेकिन इतना जानता हूं कि वो लड़की हर हालत में मेरी हत्या करना चाहती है और अगर तुमने मेरी सुरक्षा के व्यापक इंतजाम न किये—तो कल रात ठीक नौ बजे वो लड़की जरूर मेरी हत्या कर डालेगी।"

जैक के चेहरे पर अब बड़े अजीबोगरीब भाव उभर आये—वो समझ नहीं पा रहा था कि उसे कमल कपूर की बात को गंभीरता से लेना चाहिये या नहीं।

"ठीक है।" जैक बोला—"मैं आपकी सिक्योरिटी के लिये यहां दो पुलिसमैन बिठा देता हूं।"

"नहीं—दो पुलिसमैन नहीं मिस्टर जैक।"

"फिर ?"

"यहां कम-से-कम सात-आठ पुलिसमैन बिठाओ—मुझे नहीं लगता कि सिर्फ दो पुलिसमैन उस खतरनाक लड़की का कुछ बिगाड़ पायेंगे।"

"ओ० के० मिस्टर कपूर—मैं सात-आठ पुलिसमैन ही बिठा देता हूं।"

"और तुम कहां रहोगे ?"

"कल रात आठ बजे मैं खुद भी आपकी सुरक्षा के लिये यहां आ जाऊंगा।" जैक बोला—"वैसे कुछ होना नहीं है—आप बेकार में इतना परेशान हो रहे हो।"

"फिर भी सावधानी के तौर पर तो कुछ कदम उठाये जाने जरूरी हैं।"

"हां—सावधानी के तौर पर कदम उठाये जाने जरूरी हैं।" जैक ने भी कबूल किया—"और वो कदम मैंने उठा दिये हैं।"

जैक के साथ उस समय वहां आठ पुलिसमैन आये थे—जैक ने उन सभी को वहां पूरी तरह अलर्ट रहने की हिदायत दी और खुद वहां से चला गया।

●●●

जैक के जाते ही उन सभी आठ पुलिसमैनों ने फ्लैट की किलेबन्दी-सी कर दी थी।

फौरन ही सभी खिड़की-दरवाज़े बंद कर दिये गये—पर्दे डाल दिये गये—उन्होंने रोशनदान तक सील कर डाले थे और फ्लैट में किसी के भी आने जाने पर पूरी तरह पाबन्दी लगा दी।

कुल मिलाकर कुछ ही सैकिण्डों में उस फ्लैट की हालत ऐसी हो गयी कि पुलिसमैनों की इजाजत के बिना वहां परिन्दा भी पर न मार सके।

कमल कपूर अपने बैडरूम में बंद होकर लेट गया था—दहशत के मारे उसकी अभी भी बुरी हालत थी—हर पल उसे ऐसा लग रहा था कि अभी कहीं से कोई गोली चलेगी और विजू आनन्द की तरह वो परलोक सिधार जायेगा।

बहरहाल वो रात इत्मीनान से गुज़री तथा अगला आधा दिन भी उसी तरह गुजर गया।

कमल कपूर आज एक क्षण के लिये भी अपने फ्लैट से बाहर नहीं निकला था और उसने ऑफिस तथा साइट वगैरहा पर जाने के अपने सारे प्रोग्राम कैंसिल कर दिये।

●●●

रात के उस समय ठीक आठ बज रहे थे—जब वायदे के मुताबिक जैक भी रिवॉल्वर लेकर वहां आ गया।

"मैं क्या कहता था।" जैक आते ही बोला—"कुछ नहीं होगा। कल की सारी रात भी सही-सलामत गुजर गयी और आज दिन में भी कुछ नहीं हुआ। तुम बेकार में परेशान हो रहे थे।"

"मैं बेकार में परेशान नहीं हो रहा था मिस्टर जैक।" कमल कपूर अभी भी बैचेनी के आलम में बोला—"और अगर तुम यह सोच रहे हो कि खतरा टल गया है—तो यह भी तुम्हारी गलतफहमी है। मत भूलो उस लड़की ने आज रात ठीक नौ बजे मुझे मार डालने की धमकी दी है और अभी नौ बजने में काफी समय बाकी है।"

"ओ० के०।" जैक वहीं कुर्सी पर पसरकर बैठ गया—"देखेंगे आज

रात नौ बजे भी वह लड़की कौन-सा कारनामा दिखाती है। वैसे भी नौ बजने में कौन-सा ज्यादा समय बाकी है—एक घण्टे बाद नौ भी बज जायेंगे।"

जैक के शब्द भी अभी पूरे न हुए थे कि तभी जोर-जोर से टेलीफोन की घण्टी बजने लगी।

अकस्मात् बजी टेलीफोन की उस घण्टी ने सबको चौंकाकर रख दिया—यहां तक कि जैक भी बुरी तरह हड़बड़ा उठा।

●●●

उधर घण्टी बजते ही कमल कपूर भी चील की तरह टेलीफोन की तरफ झपटा।

उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो।" वह एकाएक बंदूक से छूटी गोली की तरह बोला।

"हैलो कमल कपूर।" पूजा कोठारी बहुत जोर से खिलखिलाकर हंसी—"हैलो मेरे शिकार नम्बर दो—मैं पूजा कोठारी बोल रही हूं।"

प''पूजा कोठारी—वह शब्द आतंक के उन क्षणों में कमल कपूर के दिलो-दिमाग पर हथौड़े की तरह पड़े।

"त''तुम।" कमल कपूर हड़बड़ा उठा—"तुम।"

"क्यों—मेरा नाम सुनकर चौंक पड़े फोर स्क्वायर।" पूजा कोठारी पुनः खिलखिलाकर हंसी—"मैंने तुम्हें इसलिये फोन किया है—क्योंकि तुम्हारी हत्या होने में अब सिर्फ थोड़ा ही समय बाकी है। याद है—मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी कि आज रात ठीक नौ बजे तुम्हारी लाश तुम्हारे ही फ्लैट के अंदर पड़ी होगी।"

"तुम जरूर कोई पागल लड़की हो।" कमल कपूर चिल्लाया—"तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि मैंने यहां पुलिस को बुला लिया है और इस समय पुलिस मेरे फ्लैट पर तुम्हारे ही आने का इंतजार कर रही है।"

"मैं सब जानती हूं कमल कपूर—सब।" पूजा कोठारी की खिलखिलाती हंसी एक बार फिर कमल कपूर के कानों में पड़ी—"मैं जानती हूं कि इस समय तुम्हारे फ्लैट पर आठ पुलिसमैन मौजूद हैं—जिन्होंने अपने तौर पर तुम्हारे पूरे फ्लैट को सीलबन्द किया हुआ है। खिड़की, दरवाजे, रोशनदान—लगभग हर जगह को उन्होंने बड़े ही चौकस अंदाज में बंद कर रखा है। इतना ही नहीं—तुम्हारी जान की हिफाजत करने के लिये थोड़ी ही देर पहले इंस्पेक्टर जैक भी वहां पहुंच चुका है और इस समय वो तुम्हारे बराबर में ही खड़ा है। मैं कुछ गलत तो नहीं कह रही मेरे शिकार नम्बर दो ?"

छक्के छूट गये कमल कपूर के—उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं—उसने एक नजर सचमुच अपने बराबर में ही खड़े जैक पर डाली—फिर लगभग बुरी तरह बौखलाया-सा बोला—"ह'''हां—य''''
यह सच है—सब सच है। ल'''लेकिन, तुम यह सब कैसे जानती हो ?"

"क्योंकि मैं तुम्हारी मौत हूं कमल कपूर—मौत।" पूजा कोठारी का लहजा एकाएक बेहद खूंखार हो उठा—"और मौत से कुछ भी छिपा नहीं रहता। अभी तुमने अपनी जान की हिफाजत के लिये अमरीका की सिविल पुलिस को बुलाया है। लेकिन अगर तुम वाकई अपनी जान बचाना चाहते हो—तो सी० आई० ए० को फोन करो—अमरीका के राष्ट्रपति को फोन करो। इस समय सिविल पुलिस की जो टुकड़ी तुम्हारे फ्लैट पर मौजूद है—वह बेचारे तुम्हें मेरे हाथों से नहीं बचा सकते। उन्हें तो यह भी पता नहीं चलेगा कि ठीक नौ बजे मैं कब तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगी और तुम्हें मार भी डालूंगी। इसलिये जो करना है—जरा जल्दी करो कमल कपूर। क्योंकि तुम्हारे पास समय वैसे भी काफी कम है—अब तुम्हारे मरने में सिर्फ चालीस मिनट बचे हैं—सिर्फ चालीस मिनट।"

कमल कपूर के शरीर से पसीने की धारायें छूटने लगीं।

उसके हाथ-पैर जूड़ी के मरीज की तरह थर-थर कांप रहे थे—वह स्तब्ध-सी मुद्रा में रिसीवर हाथ में लिये खड़ा था—जबकि दूसरी तरफ से पूजा कोठारी सम्बंध-विच्छेद कर चुकी थी।

●●●

कमल कपूर ने जब पूजा कोठारी के फोन की डिटेल जैक को बतायी—तो वह भी हड़बड़ाये बिना न रहा।

अलबत्ता उसने पूजा कोठारी का नाम तब भी जैक को नहीं बताया।

अभी तक जहां जैक उस पूरे घटनाक्रम को काफी हलके-फुलके तौर पर ले रहा था—वहीं फोन वाली उस घटना के बाद एकाएक वो भी बेहद गंभीर हो उठा।

उसने सबसे पहले आनन-फानन कमल कपूर के टेलीफोन में ऐसा इंतजाम किया कि अगर पूजा कोठारी का वहां दोबारा फोन आये—तो वह उसे तुरन्त टेप कर सके।

उसके बाद जैक ने पुलिस हैडक्वार्टर फोन घुमाया।

"तुम फौरन एक काम करो।" जैक अपने एक सहयोगी को आदेश देता हुआ बोला।

"कहिये सर।"

"साउथ एवेन्यू के इलाके में जितने भी पब्लिक टेलीफोन बूथ

हैं—उन सभी टेलीफोन बूथों पर सादी वर्दी में पुलिस के आदमी फैला दो और उन टेलीफोन बूथ से एक घण्टे के अंदर-अंदर जितनी भी लड़कियां टेलीफोन करती नजर आयें—उन सभी को गिरफ्तार करके उनसे कड़ाई के साथ पूछताछ करो।"

"ओ० के० सर।" सहयोगी ने तत्परता के साथ जवाब दिया—"कोई और आदेश ?"

"नहीं—कोई आदेश नहीं। इस सम्बंध में महत्वपूर्ण सूचना मिलते ही मुझे तुरन्त सूचित करना।"

"अवश्य सर—मैं अभी सारा इंतजाम करता हूं।"

"गुड।"

जैक ने रिसीवर रख दिया।

फिर उसने अपनी रिस्टवॉच देखी—नौ बजने में अब पच्चीस मिनट बाकी थे।

●●●

घड़ी की सुई जैसे-जैसे नौ की तरफ बढ़ रही थी—ठीक उसी अनुपात में उनके बीच दहशत भी बढ़ती जा रही थी।

सबसे ज्यादा बुरी हालत कमल कपूर की थी—वह पुलिसमैनों के बीच में बैठ गया था और जैक को तो उसने अपने बिल्कुल बराबर में ही बिठा लिया था—लेकिन फिर भी पसीनें की धारायें उसके शरीर से बुरी तरह बह रही थीं—जिन्हें वो बार-बार रूमाल से साफ करता।

"त···तुम देख लेना वो आयेगी।" कमल कपूर आतंक के वशीभूत होकर बार-बार एक ही बात बड़बड़ा रहा था—"वो जरूर आयेगी और तुम लोगों के बीच में ही मुझे मार डालेगी—तुम लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे।"

"मिस्टर कपूर।" जैक ने उसकी पीठ थपथपाई—"इतना डरना अच्छा नहीं। इसमें कोई शक नहीं कि हालात बेहद सस्पैंसफुल हैं—लेकिन फिर भी मैं एक बात दावे से कहूंगा कि सर्वप्रथम तो उस लड़की का यहां आना ही मुमकिन नहीं और अगर वो यहां आ भी गयी—तो हम नौ हथियार बन्द लोगों के बीच में वो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगी। इतना ही नहीं—यहां आने के बाद उसका खुद यहां से बचकर जाना असंभव होगा।"

"यह सब बेकार की बातें हैं।" कमल कपूर झुंझला उठा—"वह लड़की न सिर्फ तुम लोगों के सामने ही यहां आयेगी बल्कि देख लेना—वह मेरी हत्या भी कर डालेगी और तुम लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे—कुछ नहीं।"

जैक ने गहरी सांस ली।

वह जानता था कि कमल कपूर इस समय इतना आतंकित है कि वह उसे कुछ नहीं समझा पायेगा—कुछ नहीं।

●●●

बहरहाल घड़ी की सुई धीरे-धीरे नौ के अंक की तरफ सरकती रही।

जिस क्षण नौ बजने वाले थे—उस पल उन सभी के बीच पहले से भी ज्यादा दहशत व्याप्त हो गयी।

हर किसी को लग रहा था कि अभी कहीं से वो लड़की प्रकट होगी और कमल कपूर को मार डालेगी।

परन्तु नौ बज गये।

सवा नौ बज गये।

फिर साढ़े नौ भी बज गये—लेकिन उस रहस्यमयी लड़की की परछाई तक वहां आसपास नजर न आयी।

"अब वो यहां नहीं आयेगी।" जैक एकाएक कुर्सी छोड़कर उठा—"साढ़े नौ बज चुके हैं—अगर उसे यहां आना होता, तो कब की आ चुकी होती।"

"म"मुझे भी ऐसा ही लगता है।" कमल कपूर ने अपने चेहरे पर छलछला आये पसीने साफ किये—"वो अब नहीं आयेगी—फिर भी तुम लोग उसका आधा घण्टा और इंतजार करो—क्या पता वो आ जाये।"

"ठीक है।" जैक बोला—"हमें आधा घण्टा और इंतजार करने में कोई ऐतराज नहीं।"

जैक टहलता हुआ एक खिड़की के नजदीक पहुंचा तथा उसने खिड़की खोलकर नीचे झांका।

दूर-दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था और वहां खतरे का कैसा भी कोई आभास न था।

जैक कुछ देर खिड़की के पास खड़ा नीचे झांकता रहा—फिर उसने खिड़की बंद कर दी और वापस अपनी उसी कुर्सी पर आ बैठा, जहां पहले बैठा हुआ था।

बाकी का आधा घण्टा भी पहले की तरह ही खामोशी के साथ गुजर गया।

न लड़की आनी थी—न आयी।

"हमें अब चलना चाहिये।" जैक बोला—"रात के दस बज चुके हैं—मैं पहले ही कहता था कि वह लड़की खामखाह तुम्हें परेशान

कर रही है। भला ऐसा भी कहीं हो सकता है कि कोई बे-मतलब किसी की हत्या करना चाहे—न कोई दुश्मनी न कोई वजह।"

कमल कपूर उस समय अजीब-सी कश-म-कश में उलझा हुआ था—वह समझ नहीं पा रहा था कि जैक के सामने क्या बोले।

●●●

अभी जैक और उसके सहयोगी पुलिसमैन वहां से जाने की तैयारियों में जुटे ही हुए थे कि तभी नीचे से शोर-शराबे की आवाज आने लगी।

"यह कैसा शोर है ?" कमल कपूर उछलकर खड़ा हुआ।

"अभी देखता हूं।"

जैक तेजी से खिड़की की तरफ झपटा था फिर उसने खिड़की खोलकर नीचे झांका।

अगले ही पल उसके नेत्र हैरत से फैल गये—नीचे ढेर सारी लड़कियां और पुलिसमैन मौजूद थे। शोर-शराबा वह लड़कियां ही कर रही थीं।

जैक फौरन लिफ्ट में सवार होकर नीचे पहुंचा—उसके पीछे-पीछे ही कमल कपूर और उसके सहयोगी भी लपके।

"यह क्या हो रहा है ?" जैक नीचे पहुंचते ही चिल्लाया।

"सर।" फौरन एक पुलिसमैन आगे बढ़ा—"आपके आदेश के मुताबिक पिछले डेढ़ घण्टे में हमने साउथ एवेन्यू के पब्लिक टेलीफोन बूथों से इन लड़कियों को गिरफ्तार किया है—इन्हें उस क्षण गिरफ्तार किया गया, जब यह टेलीफोन कर चुकी थीं।"

"लेकिन हमारा कसूर क्या है ?" तभी कुछ लड़कियां और जोर-जोर से चिल्लाती हुई जैक की तरफ बढ़ीं—"हमें क्यों गिरफ्तार किया गया है ?"

"आप सब प्लीज शान्त हो जाइये।" जैक ने अपने दोनों हाथ उठाकर उन्हें शान्त रहने के लिये कहा—"हमें एक अपराधी की तलाश है—उसी सिलसिले में आप सबको गिरफ्तार किया गया है। लेकिन बहुत जल्द आप सभी को छोड़ दिया जायेगा।"

"मगर हम अपराधी नहीं हैं।" कुछ लड़कियां और ज्यादा जोर-जोर से चिल्लाने लगीं—"हमें जल्दी घर पहुंचना है—वहां हमारे परिवार वाले हमारा इन्तजार कर रहे होंगे।"

उस शोर-शराबे को सुनकर कॉलोनी के लगभग सभी लोग जाग गये थे और वो खिड़कियां खोल-खोलकर नीचे झांकने लगे।

"मिस्टर कपूर।" जैक, कमल कपूर की तरफ बढ़ा—"क्या आप

किसी तरह उस लड़की को पहचान सकते हैं—जिसने आपको हत्या की धमकी दी ?"

"नहीं—मैं उसे नहीं पहचान सकता।" कमल कपूर बोला—"मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैंने उसकी सिर्फ आवाज सुनी है।"

"ओह।"

"लड़कियां अब पहले से भी कहीं ज्यादा शोर-शराबा मचाने लगी थीं—उनमें से कई लड़कियां तो बेहद धनाढ्य और शक्तिशाली परिवारों से सम्बन्धित थीं—इतना ही नहीं वो वक्त पड़ने पर उस हरकत के लिये पुलिस की ऐसी-तैसी तक कर सकती थीं।

"सर।" पहले वाला पुलिसमैन पुनः जैक की तरफ बढ़कर बोला—"हमें इस मामले में जल्दी कोई कदम उठाना चाहिये—ज्यादा देर तक लड़कियों को बंधक बनाकर रखना उचित नहीं—वैसे भी रात का समय है।"

"ठीक है।" जैक भी स्थिति की नजाकत को समझता हुआ बोला—"तुम इन सबको छोड़ दो।"

"ओ० के० सर।"

पुलिसमैन ने जैसे ही उन सब लड़कियों की रिहाई का आदेश जारी किया—वहां मचता शोर-शराबा एकदम से बंद हो गया और तमाम लड़कियां कॉलोनी के मुख्य दरवाजे की तरफ लपक पड़ीं।

उसके बाद जैक भी ज्यादा देर तक वहां नहीं रुका।

उसने सबसे पहले कमल कपूर के टेलीफोन को टेप करने की जो व्यवस्था की थी—उस व्यवस्था को भंग किया और फिर अपने तमाम सहयोगियों के साथ वहां से रवाना हो गया।

●●●

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है—पूजा कोठारी दूसरे 'फोर स्कवायर' की हत्या की बड़ी नायाब स्कीम सोच चुकी थी।

और उसने कमल कपूर की हत्या उस क्षण करनी थी—जब कोई आसानी से इस बात की कल्पना भी न कर सके कि अब उसकी हत्या होने वाली है।

वह नौ बजे का अल्टीमेटम देकर भी कमल कपूर के फ्लैट पर नहीं पहुंची थी—तो उसके इस कदम के पीछे भी उसका बेहद षडयन्त्रकारी दिमाग काम कर रहा था।

बहरहाल—आइये देखें कि दूसरे 'फोर स्कवायर' की हत्या होने से पहले और क्या-क्या सस्पैंसफुल घटनायें घटीं।

●●●

कमल कपूर की बैचेनी काफी बढ़ी हुई थी और वो लगातार अपने सिर पर खतरे की तलवार को लटका महसूस कर रहा था। जैक तथा उसके सहयोगी पुलिसमैनों के जाने के बाद वह अपने आपको और ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगा। हालांकि वह अपने बैडरूम में बिल्कुल बंद था—लेकिन फिर भी उसे लग रहा था कि अभी कहीं से कोई खिड़की दरवाजा टूटेगा और वही लड़की एकदम से उसके सामने आ खड़ी होगी।

कमल कपूर की आंखों में नींद पूरी तरह गायब थी।

जब उसे यह भली-भांति अहसास हो गया कि वो आज रात वहां अकेला सो नहीं सकेगा—तो वह बिस्तर से उठा—फ्लैट से बाहर निकलकर ताला लगाया—नीचे जाकर अपनी कार में बैठा और फिर उसने कार मार्टिना के फ्लैट की तरफ दौड़ा दी।

मार्टिना—यह उस अंग्रेज लड़की का नाम था, जिसके साथ कमल कपूर का पिछले कई सालों से जबरदस्त रोमांस चल रहा था और अब सिर्फ एक महीने बाद वह दोनों शादी के पवित्र बंधन में बंधने वाले थे।

मार्टिना के पिता भी एक आर्किटेक्ट इंजीनियर थे—और उनका नाम 'मिस्टर एनसन' था। कमल कपूर की सबसे पहले मिस्टर एनसन से ही मुलाकात हुई थी और फिर धीरे-धीरे वो उनकी बेटी के भी दिल में उतर गया।

●●●

मार्टिना—लगभग पच्चीस वर्षीय सुंदरी।

जिसका कद लम्बा था—नैन-नक्श आकर्षक थे—यौवन कलश काफी भरे-भरे थे—कुल मिलाकर मार्टिना एक सुंदर लड़की थी।

कमल कपूर इतनी रात को मार्टिना के फ्लैट पर पहुंचा—तो मार्टिना उसे देखकर चिहुंकी।

"त···तुम।" मार्टिना के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आये—"त···तुम्हारा इतनी रात को कैसे आना हुआ—अ···और तुम इतना घबराये हुए क्यों हो कमल ?"

"अंदर चलो।" कमल कपूर बोला—"फिर मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूं।"

वह मार्टिना के साथ फौरन ही उसके बैडरूम में बंद हो गया।

मिस्टर एनसन भी अपने बैडरूम के दरवाजे पर खड़े कमल कपूर को देख रहे थे—लेकिन उन्हें इस तरह कमल कपूर का अपनी बेटी

के बैडरूम में बंद होना कुछ बुरा न लगा—वैसे भी उन दोनों की एक महीने बाद तो शादी ही होने वाली थी।

●●●

कमल कपूर बैडरूम में पहुंचते ही बिस्तर पर फैलकर लेट गया—लेकिन उसके चेहरे पर आतंक के भाव अभी भी थे।

"आखिर बात क्या है कमल।" मार्टिना की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी—"तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

"ए···एक बुरी सूचना है मार्टिना।" कमल कपूर की आवाज आहिस्ता से कंपकंपाई।

"कैसी बुरी सूचना ?"

"एक लड़की मेरी हत्या करना चाहती है।"

"क···क्या कह रहे हो तुम ?" उसके नजदीक ही बैड पर बैठते हुए मार्टिना के मुंह से तेज सिसकारी छूट गयी—"ह···हत्या। नहीं··· नहीं···तुम जरूर मजाक कर रहे हो कमल।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा।" कमल कपूर झुंझलाता हुआ सीधा बैठा—"वह लड़की सचमुच मेरी हत्या करना चाहती है।"

"ल···लेकिन कमल।" मार्टिना के ज़िस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया—"कोई भी लड़की तुम्हारी हत्या क्यों करना चाहेगी—उ···उसे तुम्हारी हत्या करके क्या मिलेगा ?"

"यह मुझे भी नहीं मालूम।" कमल कपूर शुष्क स्वर में बोला—"कि वह मेरी हत्या क्यों करना चाहती है—मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि वह कोई हिन्दुस्तानी लड़की है। तुम नहीं जानती मार्टिना—थोड़ी ही देर पहले मेरे फ्लैट पर कितना बड़ा हंगामा होकर निपटा है। उस लड़की ने आज रात नौ बजे मुझे मार डालने का अल्टीमेटम दिया था—मैंने फौरन पुलिस प्रोटक्शन हासिल कर ली—पुलिस मेरे फ्लैट में चारों तरफ फैल गयी—मुझे पूरी उम्मीद थी कि वो लड़की आयेगी—लेकिन वो नहीं आयी। फ···फिर भी मुझे लगता है कि वो लड़की मेरी हत्या का जरूर कोई-न-कोई प्रयास करेगी ?"

"माई गॉड।" मार्टिना के शरीर में झुरझुरी दौड़ी—"तुम्हारे साथ इतनी बड़ी घटना घट गयी—और तुमने मुझे इन्फॉर्मेशन तक नहीं दी।

"मैंने तुम्हें और अंकल को परेशान करना मुनासिब नहीं समझा।"

"तुम जरूर पागल हो।" मार्टिना झुंझला उठी—"तुम जिंदगी-मौत से लड़ रहे थे और हमें सूचना देते हुए तुम्हें हमारी परेशानी का ख्याल

आ गया। कमल—मत भूलो मैं तुम्हारी होने वाली बीवी हूं—तुम्हारे हर सुख-दुःख को बांटना मेरा हक बनता है।"

"मैं जानता हूं डार्लिंग।" कमल कपूर ने थोड़ा जज्बाती होकर मार्टिना को अपने बाहुपोश में भर लिया—"मैं जानता हूं कि तुम मेरी होने वाली बीवी हो—इसीलिये तो मैं सीधा दौड़कर इस समय तुम्हारे पास आया हूं। कमल कपूर, मार्टिना के बालों को स्नेह से सहलाने लगा—"अच्छा यह बताओ—तुम मुझसे प्यार तो करती हो न मार्टिना ?"

"क्या अब मुझे यह बात भी बतानी होगी।" मार्टिना ने एकाएक नाराजगी भरी नजरों से कमल कपूर को घूरा।

"मैं जानता हूं कि तुम मुझसे प्यार करती हो—लेकिन फिर भी एक बार मैं यह बात तुम्हारी जबान से सुनना चाहता हूं।"

"ह""हां।" मार्टिना ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई—"हां—मैं तुमसे प्यार करती हूं कमल। ढेर सारा प्यार।"

कमल कपूर ने एकाएक मार्टिना को कसकर अपने जिस्म के साथ चिपका लिया—फिर उसकी आंखों में झांकता हुआ फुसफुसाया—"अ""और अगर मुझे कुछ हो गया मार्टिना—तो तुम क्या करोगी ?"

"न""नहीं।" थर्रा उठी मार्टिना—"तुम्हें कुछ नहीं होगा कमल—कुछ नहीं। अगर उस लड़की ने तुम्हारी जान लेने की कोशिश की तो मैं उससे कहूंगी कि वो मुझे मार डाले—लेकिन तुम्हें कुछ न कहे। त""तुम नहीं जानते कमल—मैं तुम्हें अपनी जिंदगी से भी ज्यादा प्यार करती हूं—मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं जी सकती।"

कमल कपूर ने मार्टिना को और ज्यादा कसकर अपनी बांहों में भर लिया—उसने अपने होठ मार्टिना के होठों पर रख दिये और उसकी आंखों से गरम-गरम आंसू बहने लगे।

उस क्षण उसे अपनी तमाम करतूतों का पश्चाताप हो रहा था। वही बैडरूम में मार्टिना का प्यारा पालतू कुत्ता टॉमी भी लेटा हुआ था—जिसने अब आंखें बंद कर ली थीं।

●●●

कमल कपूर और मार्टिना को नहीं मालूम था कि दो आंखें छिपकर इस समय भी उन पर नजर रखे हुए हैं।

वह आंखें थीं—पूजा कोठारी की आंखें।

पूजा कोठारी—जो 'विवेकानन्द कॉलोनी' से ही कमल कपूर का पीछा करते हुए वहां तक आयी थी और इस समय खिड़की के पीछे खड़ी उन दोनों के वार्तालाप का एक-एक अंश सुन रही थी।

●●●

बहरहाल फिर कमल कपूर ने सारी रात मार्टिना के बैडरूम में ही गुजारी और दिन निकलने पर वहां से विदा हुआ।

कमल कपूर सीधा अपने फ्लैट पर पहुंचा और वहां पहुंचते ही दफ्तर की तैयारियों में जुट गया था—तभी एकाएक जोर-जोर से टेलीफोन की घण्टी घनघना उठी।

चौंका कमल कपूर—उसने लपककर रिसीवर उठाया।

"हैलो।"

"हैलो फोर स्कवायर।"

"फ...फोर स्कवायर।" कमल कपूर को इतना तेज झटका लगा—जैसे एक साथ उसके शरीर में हजारों बिच्छुओं ने डंक मार दिया हो—"क...कौन—कौन हो तुम ?"

हंसी पूजा कोठारी—खनकते सिक्कों की तरह जोर से खिलखिलाकर हंसी।

"इतनी जल्दी अपनी मौत को भूल गये फोर स्कवायर।"

"त...तुम—प...पूजा कोठारी।" कमल कपूर हकलाये स्वर में बोला—उसके शरीर के सभी मसामों ने एक साथ पसीना उगल दिया—"लेकिन तुम तो कल रात नौ बजे आने वाली थीं—मेरी मौत बनकर।"

"हां—मैं कल रात आने वाली थी।" पूजा कोठारी बोली—"मगर किसी कारणवश न आ सकी—इसीलिये मैंने तुम्हें आज फोन किया है।"

"अ...आज।" थर्राया कमल कपूर—"अ...आज क्यों फोन किया है ?"

"क्योंकि जो काम मैं कल न कर सकी कमल कपूर—उसे आज पूरा करूंगी।" पूजा कोठारी ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा—"आज रात ठीक नौ बजे तुम्हारी लाश तुम्हारी फ्लैट के अंदर पड़ी होगी।"

"तुम बकवास कर रही हो।" बुरी तरह चिल्ला उठा कमल कपूर—"तुम मुझे बेवकूफ बना रही हो।"

इस बार बड़ी शालीनता के साथ हंसी पूजा कोठारी—"क्या मैंने विजू आनन्द का बेवकूफ बनाया था डियर ? क्या यह सच नहीं कि मैंने उसे मौत के घाट उतार दिया ? फिर जरा सोचो—मैं तुम्हारा ही बेवकूफ क्यों बनाऊंगी ? और तुम्हारा बेवकूफ बनाकर मुझे मिलेगा भी क्या ? मुझे एक-एक करके तुम सभी फोर स्कवायर की हत्या करनी है और आज रात तुम्हारी मौत निश्चित है—मरने के लिये तैयार हो जाओ कमल कपूर—क्योंकि कल का सूरज तुम्हारी किस्मत में नहीं है—अलविदा।"

इसी के साथ लाइन कट गयी।

●●●

कमल कपूर के हाथ-पैर इस तरह कंपकंपाने लगे—जैसे वह एकाएक जूड़ी का मरीज बन गया हो।

चेहरा एकदम छिपकली की खाल की तरह पीला जर्द पड़ गया—आंखों में हवाइयां उड़ती नजर आने लगीं—मसामों में एक साथ फिर ढेर सारा पसीना उगल दिया।

कमल कपूर ने शीघ्रतापूर्वक टेलीफोन का रिसीवर उठाया और फिर बड़ी तेजी से पुलिस हैडक्वार्टर के नम्बर डायल किये।

तुरन्त दूसरी तरफ घण्टी जाने लगी।

जैसे ही किसी ने हैडक्वार्टर में फोन उठाया—कमल कपूर मशीनी रफ्तार से बोला—"मेरी फौरन मिस्टर जैक से बात कराओ।"

"आपका नाम ?"

"मैं कमल कपूर बोल रहा हूं।"

"ओह-मिस्टर कपूर।" फौरन वह भारी-भरकम आवाज बिल्कुल स्पष्ट हो गयी—"मैं जैक ही हूं—क्या बात है—आप परेशान क्यों हैं ?"

"मिस्टर जैक।" कमल कपूर आन्दोलित मुद्रा में बोला—"मेरे पास अभी-अभी फिर उसी लड़की का फोन आया था।"

जैक के मुंह से सिसकारी छूट गयी—"व···वही लड़की—जिसने कल आपको मार डालने की धमकी दी थी ?" जैक भी थोड़ा उत्तेजित हुआ।

"हां—वही लड़की मिस्टर जैक।" कमल कपूर जल्दी-जल्दी अपने चेहरे के पसीने साफ करता हुआ बोला—"उसने मुझसे कहा कि वो कल रात किसी वजह से मेरी हत्या करने नहीं आ सकी थी—परन्तु आज रात नौ बजे वह मुझे हर हालत में मार डालेगी—आज रात मेरी हत्या होने से कोई नहीं बचा सकता।"

"वह लड़की जरूर कोई पागल है मिस्टर कपूर।" जैक लगभग गुर्राकर बोला—"मैंने आपसे कल भी कहा था कि वह लड़की आपको सिर्फ डरा रही है—हकीकत में वो ऐसा कुछ नहीं करने वाली, जिस तरह की वो धमकी देती है।"

"न···नहीं—व···वो सचमुच मुझे मार डालेगी मिस्टर जैक।" कमल कपूर बुरी तरह बौखलाया-सा बोला—"व···वह जो कह रही है—उसे करके रहेगी।"

"लेकिन सवाल तो ये है मिस्टर कपूर।" जैक ने एक-एक शब्द

चबाया—"वह लड़की भला आपकी हत्या क्यों करेगी—हत्या करने के पीछे कोई तो मकसद होना चाहिये।"

"म···मकसद मुझे मालूम नहीं—परन्तु वो मुझे मार डालेगी—वो मुझे नहीं छोड़ेगी—आप प्लीज अपने आदमियों को लेकर जल्दी से मेरे पास आ जाइये।"

"लेकिन···।"

"मैं आपसे जो कह रहा हूं—वो करो मिस्टर जैक—जल्दी।"

"ठीक है।" जेक बोला—"मैं आता हूं—इस बीच आप अपने फ्लैट के सभी खिड़की-दरवाजे अच्छी तरह कसकर बंद कर लो।"

"ओ० के०।"

●●●

शीघ्र ही जैक अपने सहयोगी पुलिसमैनों के साथ दोबारा कमल कपूर के फ्लैट पर पहुंच गया।

वहां पहुंचते ही फिर पहले की तरह ही सभी खिड़की, दरवाजे और रोशनदान कसकर बंद कर दिये गये।

टेलीफोन कॉल टेप करने की पुनः व्यवस्था की गयी।

जल्द ही कल की तरह ही सारे इंतजाम वहां कर दिये गये थे और पलक झपकते ही वो फ्लैट एक मजबूत किला बन गया।

"मिस्टर कपूर।" वह सारे इंतजाम करने के बाद जैक आराम से कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—"मैं आपसे फिर कहूंगा कि वह कोई बेवकूफ लड़की है—जो मजाक-मजाक में न सिर्फ आपको बल्कि हम सबका वक्त बर्बाद कर रही है। आप देख लेना—आज रात भर कुछ नहीं होना—वो यहां फटकेगी भी नहीं।"

"न···नहीं जैक।" कमल कपूर अभी भी बुरी तरह घबराया हुआ था।

"व···वो आज रात जरूर आयेगी—वो जरूर कुछ-न-कुछ करेगी।"

"ठीक है।" जैक कुर्सी पर अधलेटी जैसी मुद्रा में आ गया—"अगर यह बात है तो आने दो उसे—देखेंगे उसको भी।"

●●●

मार्टिना उन दिनों कम्प्यूटर का कोर्स कर रही थी।

उस दिन भी वो कमल कपूर के जाते ही बड़े आनन-फानन ढंग से तैयार हुई—क्योंकि कम्प्यूटर की क्लास उसे सुबह के समय ही अटेण्ड करनी होती थी। उस समय मार्टिना ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ी अपने बाल संवार रही थी कि तभी जोर-जोर से टेलीफोन की घण्टी बजी।

"हैलो।" मार्टिना ने रिसीवर उठाया—"कौन ?"

"मैं वही हिन्दुस्तानी लड़की बोल रही हूं यंग बेबी।" तुरन्त पूजा कोठारी का सनसनाता स्वर मार्टिना के कान में पड़ा—"जिसका जिक्र कमल कपूर ने तुमसे कल रात किया था।"

"ह···हिन्दुस्तानी लड़की।" मार्टिना के मुंह से तीव्र सिसकारी छूटी—उसके हाथ से कंघा उछलकर नीचे गिरा—"व···वही हिन्दुस्तानी लड़की—जो कमल कपूर की हत्या करना चाहती है ?"

"बिल्कुल वही।"

"ल···लेकिन···।"

"मेरे पास ज्यादा समय नहीं है यंग बेबी।" पूजा कोठारी की आवाज बेहद कठोर हो उठी—"इसलिये मेरी बात सुनो और बहुत ध्यान से सुनो—आज रात ठीक नौ बजे तुम्हारे प्रेमी की हत्या होने वाली है।"

"न···नहीं।" चिल्लाई मार्टिना—"नहीं—तुम मेरे कमल को नहीं मार सकतीं—त···तुम उसकी हत्या नहीं कर सकतीं।"

हंसी—बहुत जोर से खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी। उसकी आवाज ऐसी नशीली हो गयी—जैसे किसी नागिन ने जमकर नशा कर लिया हो।

"मुझे उस दुष्ट की हत्या करने से कोई नहीं रोक सकता मार्टिना—कोई नहीं।" पूजा कोठारी फुंफकार उठी—"हां—एक चेतावनी मैंने तुम्हें भी देनी है और इस समय मैंने तुम्हें इसीलिये फोन किया है।"

"क···कैसी चेतावनी ?" कांप गयी मार्टिना की आवाज।

"तुम कमल कपूर से फौरन अपने सारे सम्बंध खत्म कर लो—वरना मैं तुम्हारे भी पूरे परिवार की हत्या कर डालूंगी।"

"न···नहीं।" चिल्ला उठी मार्टिना—"नहीं—मैं कमल कपूर से अपने सम्बंध खत्म नहीं कर सकती—किसी हालत में नहीं कर सकती।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी गंभीर हो उठी—"तो फिर कमल कपूर की मौत के साथ-साथ तुम अपने परिवार की तबाही भी देखने के लिये तैयार हो जाओ—बहुत जल्द तुम्हारे परिवार के ऊपर खून बरसेगा—खून की बारिश होगी यंग बेबी—अलविदा।" लाइन कट गयी।

मार्टिना के कानों में जोर-जोर से सीटियां बजने लगीं—उसे पूरा कमरा घूमता हुआ नजर आने लगा—हाथ-पैरों में चीटियां दौड़ने लगीं—बेशुमार चीटियां।

●●●

कमल कपूर उस समय जैक की सामने वाली कुर्सी पर बैठा था और बहुत डरा हुआ था।

टेलीफोन उन दोनों के बीच वाली टेबिल पर रखा था और उसके साथ टेपरिकॉर्ड कनेक्टिड था।

सुबह के साढ़े दस बज रहे थे—जब एकाएक जोर-जोर से टेलीफोन की घण्टी बजी।

टेलीफोन की घण्टी बजने ने उन सब लोगों को एकदम से यूं स्तब्ध किया—जैसे कोई आफत आ गयी हो।

कमल कपूर का हाथ तेजी से टेलीफोन के रिसीवर की तरफ झपटा।

"नहीं।" चिल्लाया जैक—"नहीं मिस्टर कपूर—रुको—अभी रिसीवर मत उठाना।"

कमल कपूर ठिठक गया।

"मैं पहले टेपरिकॉर्ड ऑन कर दूं।"

जैक ने बेहद आनन-फानन स्पीड से टेपरिकॉर्ड ऑन कर दिया—फौरन उसके स्पूल घूमने लगे—इस बीच टेलीफोन की घण्टी लगातार जोर-जोर से चीख रही थी।

"अब आप रिसीवर उठायें।"

कमल कपूर ने एकदम झपटकर रिसीवर उठाया—इस दौरान फ्लैट के अंदर मौजूद सारे पुलिसमैन सिमटकर उसके इर्द-गिर्द जमां हो गये थे।

●●●

उन सबको इस बात की पूरी उम्मीद थी कि वह फोन 'धमकी देने वाली लड़की' का होगा—लेकिन आशा के विपरित वह मार्टिना का फोन निकला।

"फोन उठाने में इतनी देर कैसे लगा दी कमल ?" मार्टिना ने एकदम गोली की तरह छूटते स्वर में सवाल दागा।

"म'''मैं कुछ परेशान था।" कमल कपूर का विचलित स्वर—"इ'''इसलिये थोड़ी देर हो गयी—म'''मगर तुमने फोन क्यों किया ?"

"म'''मेरे पास अभी-अभी उस हिन्दुस्तानी लड़की का फोन आया था कमल।" मार्टिना आंदोलित लहजे में बोली—"जिसने तुम्हें मार डालने की धमकी दे रखी है। उसने मुझसे कहा कि वो आज रात नौ बजे तुम्हारी हत्या कर डालेगी—क्या यह सच है कमल—क'''क्या उसने वाकई तुम्हें भी ऐसी कोई धमकी दी ?"

"हां।" कमल कपूर के चेहरे का सारा खून निचुड़ गया—"यह सच है—उसका आज सुबह मेरे पास भी फोन आया था।"

"माई गॉड।" थर्रा उठी मार्टिना—"अ···अब क्या होगा कमल ?"

"चिन्ता मत करो।" कमल कपूर थोड़ा हौंसले के साथ बोला—"मैंने पुलिस की मदद ले ली है और इस समय इंस्पेक्टर जैक के अलावा कई सारे पुलिसकर्मी भी मेरे फ्लैट पर ही मौजूद हैं—वो शैतान लड़की यहां आसानी से फटक भी नहीं सकती। यह बताओ—उस लड़की ने तुमसे कुछ और तो नहीं कहा ?"

"हां।" मार्टिना जल्दी से बोली—"एक बात और कही कमल।"

"क···क्या ?"

"उसने मुझे चेतावनी दी कि मैं तुमसे अपने सारे सम्बंध समाप्त कर लूं—वरना वो मेरे पूरे परिवार की हत्या कर डालेगी।"

"ओह।" कमल कपूर के चेहरे पर अब हद से ज्यादा आतंक के भाव उमड़ आये।

"मैं डैडी के साथ अभी तुम्हारे फ्लैट पर आ रही हूं कमल।"

"नहीं।" कमल कपूर हलक फाड़कर चिल्ला उठा—"न···नहीं मार्टिना—तुम यहां मत आना—किसी हालत में मत आना।"

"ल···लेकिन क्यों ?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे साथ-साथ तुम्हारे ऊपर भी मौत के बादल मंडराने लगे। तुम नहीं जानतीं—वो बहुत खतरनाक लड़की हैं। वह जो कह रही है—उसे कर गुजरेगी। इसलिये मुझसे दूर रहो—जितना ज्यादा-से-ज्यादा दूर रह सकती हो—उतना दूर रहो।"

"म···मगर मैं तुमसे बिल्कुल भी दूर नहीं रह सकती कमल।" मार्टिना की आवाज बेहद रूंआसी हो उठी—"अगर मरना ही है—तो क्यों न हम दोनों साथ-साथ मरें।"

"तुम पागल हो गयी हो।" गुर्राया कमल कपूर।

"ह···हां—मैं पागल हो गयी हूं। म···मैं डैडी के साथ तुम्हारे फ्लैट पर आ रही हूं।"

"लेकिन···।"

कमल कपूर कुछ और कहता—उससे पहले ही मार्टिना ने लाइन काट दी।

कमल कपूर गुस्से में अपना सिर दोनों हाथों में पकड़कर बैठ गया—टेलीफोन का रिसीवर उसने क्रेडिल पर पटक दिया था।

घटनाओं का चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा था।

जैक ने टेपरिकॉर्ड में रिकॉर्ड हुई उस पूरी वार्ता को धीमी आवाज में सुना—इस बीच कमल कपूर अपना सिर पकड़े बैठा रहा।

वार्ता सुनने के बाद जैक ने टेप बंद कर दिया और फिर कमल कपूर की तरफ देखा।

"यह मार्टिना कौन है ?" जैक ने पूछा।

"मेरी मंगेतर है—एक महीने बाद हमारी शादी होने वाली है।"

"ओह।" जैक के होंठ सिकुड़े।

●●●

आधा घण्टे बाद ही बुरी तरह घबराई हुई अवस्था में मिस्टर एनसन और मार्टिना भी वहां आ गये।

वह दोनों कमल कपूर से भी ज्यादा बौखलाये हुए थे—खासतौर पर मार्टिना की तो कुछ ज्यादा ही बुरी हालत थी—डरे हुए मिस्टर एनसन भी कम नहीं थे।

"क्या हुआ बेटा ?" मिस्टर एनसन फ्लैट के अंदर आते ही कमल कपूर की तरफ लपके—"यह तुम किस चक्कर में फंस गये।"

"हां अंकल।" कमल कपूर ने हताश मुद्रा में गर्दन झुका ली—"चक्कर में तो मैं वाकई फंस चुका हूं—अब तो सिर्फ रिजल्ट निकलने का इंतजार है।"

"कोई रिजल्ट नहीं निकलने वाला।" जैक कुर्सी छोड़कर उठा। "मैं फिर कहूंगा—आप लोग ख्वामंखाह डर रहे हैं। वह लड़की जो भी है—सिर्फ आप लोगों का बेवकूफ बना रही है।"

"वह बेवकूफ नहीं बना रहीं।" कमल कपूर पहले की तरह ही अपनी बात पर अडिग बोला—"बल्कि वह सीरियस है—पूरी तरह सीरियस।"

"ठीक है भई।" जैक ने उंगलियों से अपना सिर ठकठकाया "देखते हैं वो आज रात कौन-सा नया गुल खिलाती है।"

●●●

समय धीरे-धीरे अपनी रफ्तार से फासला तय करता रहा।

पहले आठ बजे।

फिर नौ बजे।

और फिर दस भी बज गये।

लेकिन पूजा कोठारी उस दिन भी वहां न आयी।

"लो भई।" जैक ने अंगड़ाई-सी लेते हुए कुर्सी पर पहलू बदला "दस बज चुके हैं—परन्तु अभी तक उस तीसमार खां लड़की

का कहीं कुछ पता नहीं है—जो ठीक नौ बजे हत्या करने के वास्ते यहां आने वाली थी।"

कमल कपूर का चेहरा अब देखने योग्य था—मिस्टर एनसन और मार्टिना भी अजीब से सस्पैंस में उलझे नजर आ रहे थे।

"मैं फिर कहूंगा।" जैक बोला—"उस लड़की के किस्से को भूल जाओ—वह खुद तो पागल है ही—अपने साथ-साथ वह आप सब लोगों को भी पागल कर डालेगी।"

"लेकिन मुझे न जाने क्यों ऐसा लगता है।" कमल कपूर बोला—"कि वह लड़की जरूर कुछ करेगी।"

"अगर उसने कुछ करना होता मिस्टर कपूर।" जैक ने एक-एक शब्द चबाया—"तो वह अब तक कर डालती। मेरी आज तक की सारी उम्र अपराधियों के पीछे ही भागते-भागते गुजरी हैं—जिन अपराधियों ने कुछ करना होता है, वह पहले डंके की चोट पर चिल्ला-चिल्लाकर अपना कारनामा बयान नहीं करते बल्कि वह एकदम से हंगामा कर डालते हैं और उनके हंगामा करने के बाद पता चलता है कि ऐसा कुछ हो गया।"

कमल कपूर चुपचाप अपनी गर्दन झुकाये जैक की बात सुन रहा था—उसकी बात सुनने के अलावा कमल कपूर के सामने कोई चारा भी न था—क्योंकि एक बार फिर जैक का तर्क ही सच निकला था।

"उस लड़की को एक बुरा ख्वाब समझकर भूल जाओ।" जैक पुनः बोला—"और उसकी किसी बात पर ध्यान मत दो। अब हमें चलना चाहिये—चलो भई।" जैक ने अपने साथियों को आदेश दिया। तुरन्त सारे पुलिसमैन वहां से जाने के लिये तैयार हो गये।

"कोई और नई घटना घटे—तो मुझे जरूर सूचित करना। गुड नाइट।" जैक ने उन तीनों की तरफ हाथ हिलाया।

"ग"'गुड नाइट।" कमल कपूर के मुंह से फंसी-फंसी सी आवाज निकली—उसने आहिस्ता से हाथ हिला दिया था।

जैक फौरन अपनी पूरी पुलिस पलटन के साथ वहां से विदा हो गया।

●●●

अब फ्लैट में कमल कपूर—मार्टिना—और मिस्टर एनसन बचे थे।

पुलिस फोर्स के जाने के काफी देर बाद तक भी उन तीनों के बीच सनसनीखेज-सा सन्नाटा छाया रहा—रहस्यमयी लड़की की काली छाया मानों उन तीनों के इर्द-गिर्द मंडरा रही थी।

"मैं समझती हूं कि हमें थोड़ा भोजन कर लेना चाहिये।" मार्टिना, कमल कपूर का ख्याल करके बोली—"दोपहर भी हम तीनों ने कुछ नहीं खाया था।"

"म···मुझे तो भूख नहीं है।" कमल कपूर बोला—"हां—आप दोनों जरूर कुछ खा लीजिये।"

"नहीं बेटे।" एनसन ने कमल कपूर के कंधे पर हाथ रखा।

"हम दोनों के साथ थोड़ा तुम भी कुछ खाओगे—तो तुम्हारी तबीयत संभलेगी। इस तरह भूखे पेट रहना अच्छी बात नहीं है। जाओ मार्टिना—तुम किचन में जाकर कुछ बना लाओ।"

मार्टिना फौरन वहां से उठकर किचन में चली गयी।

जल्द ही उसने बड़े स्वादिष्ट नमकीन चावल बना लिये थे—जो पंद्रह बीस मिनट में ही तैयार हो गये।

फिर उन तीनों ने एक साथ बैठकर भोजन किया—यह बात अलग है कि वह ज्यादा कुछ न खा सके। परन्तु बिल्कुल भूखे पेट रहने से तो थोड़ा बहुत कुछ खाना ही बेहतर था।

रात के उस समय बारह बज रहे थे—जब मिस्टर एनसन और मार्टिना ने भी कमल कपूर से विदा ली।

●●●

सुबह का वक्त—मार्टिना अभी भी अपने बिस्तर पर बेसुध पड़ी गहरी नींद सो रही थी—तभी टेलीफोन की निरन्तर बजती घण्टी ने उसे झकझोर कर जगाया।

न जाने कब से वो घण्टी लगातार चीख रही थी—मार्टिना ने झपटकर रिसीवर उठाया।

"हैलो मार्टिना।" रिसीवर उठाते ही मार्टिना के कानों में उसी 'रहस्यमयी लड़की' की खिलखिलाती हंसी सुनायी पड़ी—तो उसकी नींद भक्क् से उड़ गयी—"गुड मार्निंग डार्लिंग।"

"त···तुम।" होश उड़ गये मार्टिना के—"त···तुम।"

मैंने तुम्हें एक बहुत बुरी सूचना देने के लिए इस वक्त फोन किया है।

"कैसी बुरी सुचना ?" मार्टिना का स्वर आशंका से कॉपा।

"याद है डार्लिंग।" पूजा कोठारी एकाएक जख्मी नागिन की भांति फुंफकार उठी—"मैंने तुमसे कल क्या कहा था। मैंने कहा था कि कमल कपूर से अपने सारे सम्बंध खत्म कर लो—वरना तुम्हारे परिवार के ऊपर मौत के स्याह बादल मंडराने लगेंगे। लेकिन तुमने

मेरी बात नहीं मानी—तुमने समझा कि मैं कोई बेवकूफ लड़की हूं, जो तुमसे मजाक कर रही हूं इसीलिये मेरी धमकी के बावजूद तुम कल सारा दिन कमल कपूर के साथ रही। अब अपनी इस हरकत की सजा भुगतो।" पूजा कोठारी गुर्रा उठी—"जाओ—और जाकर देखो कि तुम्हारे डैडी की बाथरूम में लाश पड़ी है।"

"न···नहीं।" चीख उठी मार्टिना—"नहीं—तुम मेरे डैडी की हत्या नहीं कर सकतीं।"

"मैंने तुम्हारे डैडी की हत्या कर दी है पागल लड़की—जाओ और जल्दी बाथरूम में जाकर उनकी लाश को देखो।"

मार्टिना के हाथ से रिसीवर छूट गया।

वह बेपनाह आतंकित अवस्था में चीखती-चिल्लाती हुई बाथरूम की तरफ दौड़ी।

●●●

बाथरूम का दरवाजा उस समय बंद था—लेकिन खूब तेज शावर चलने की आवाज अंदर से बाहर तक आ रही थी।

"डैडी।" मार्टिना ने एकाएक बुरी तरह बाथरूम का दरवाजा झंझोड़ डाला—"डैडी।"

कोई प्रतिक्रिया नहीं—अंदर से कोई आवाज नहीं।

"डैडी।" मार्टिना और जोर से गला फाड़कर चिल्लायी—उसने और जोर-जोर से पागलों की तरह दरवाजा पीटा—"दरवाजा खोलिये डैडी—दरवाजा खोलिये।"

तभी एकाएक बाथरूम के अंदर चलता शावर बंद हो गया—फिर झटके से दरवाजा खुला और सामने मिस्टर एनसन खड़े नजर आये।

"क्या बात है।" एनसन, मार्टिना को पागलों की तरह दरवाजा पीटते देखकर चिल्ला उठे—"तुम इस तरह दरवाजा क्यों बजा रही हो ?"

"अ···आप।" एनसन को जीवित देखकर भौंचक्की रह गयी मार्टिना—उसके नेत्र हैरत से फट पड़े—"अ···आप जिन्दा हैं डैडी—ज···जिन्दा हैं आप ?"

"हां—मैं जिन्दा हूं।" एनसम ने मार्टिना को पकड़कर झंझोड़ा—"लेकिन बात क्या है—तुम घबरायी हुई क्यों हो—तुम इतना पसीनों में क्यों नहा रही हो ?"

मार्टिना लगभग भागती हुई वहीं रखी एक कुर्सी के नजदीक पहुंची और फिर किसी बेजान पुतले की तरह धम्म् से उस पर गिर पड़ी।

उसके हाथ-पैर ठण्डे हो रहे थे—उसे अपने सम्पूर्ण शरीर में

चींटियां-सी दौड़ती महसूस हो रही थी—उसका सांस इस तरह चल रहा था, जैसे वह कई हजार मीटर की दौड़ में हिस्सा लेकर आ रही हो।

"मार्टिना !" एनसन ने उसके नजदीक पहुंचकर उसे हिलाया—"मार्टिना—आखिर बात क्या है ?"

मार्टिना एक ही सांस में पूरी घटना बयान करती चली गयी।

उस घटना को सुनकर एनसन भी भौंचक्का रह गया।

●●●

एनसन और मार्टिना अभी उस सनसनीखेज घटना के प्रकोप से उभर भी न पाये थे कि तभी टेलीफोन की घण्टी पुनः जोर-जोर से घनघना उठी।

एक बार फिर मार्टिना के शरीर में बेपनाह फुर्ती समा गयी और उसने लगभग चील की तरह झपटकर रिसीवर उठाया।

"हैलो !" मार्टिना डकराई—"हैलो !"

और अगले ही क्षण मार्टिना के लगभग सभी मसामों ने एक साथ ढेर सारा पसीना उगल दिया—पूजा कोठारी हंस रही थी—जोर-जोर से खिलखिलाकर हंस रही थी।

"हैलो मार्टिना !" पूजा कोठारी बुलन्द अंदाज में कहकहे लगाते हुए बोली—"हैलो ! तुम्हारी इस समय जो हालत है—उसका अंदाजा मैं लगा सकती हूं यंग बेबी ! जरा सोचो—अगर मैं सचमुच तुम्हारे डैडी की हत्या कर डालूं—तो तुम्हारा क्या होगा !"

"न···नहीं।" मार्टिना भीख मांगने जैसे अंदाज में गिड़गिड़ा उठी—"नहीं—तुम मेरे डैडी की हत्या नहीं करोगी।"

"ठीक है—मैं नहीं करूंगी तुम्हारे डैडी की हत्या। लेकिन फिर तुम्हें मेरी बात माननी होगी—तुम्हें कमल कपूर से अपने सारे सम्बंध तोड़ने होंगे। वरना इस बार मैं तुम्हारे डैडी को सचमुच मार डालूंगी—सचमुच।"

और—उसके बाद लाइन कट गयी।

लेकिन मार्टिना के सम्पूर्ण शरीर में अभी भी बेशुमार चींटियां रेंग रही थीं।

●●●

अभी तक कोई नहीं जानता था कि पूजा कोठारी क्या खेल, खेल रही थी।

मगर इतना तय था कि वह खेल जो भी था—उसका अन्त लाजवाब होना था।

कमल कपूर के साथ चूहा-बिल्ली का वो खेल अगले दिन भी जारी रहा—अलबत्ता उस दिन थोड़े नये अंदाज में उस खेल का श्री गणेश हुआ।

कमल कपूर के यहां रोजाना अखबार आता था—और अखबार वाला दरवाजे की झिर्री के नीचे से अखबार अंदर सरका जाता। हर रोज की तरह कमल कपूर जब उस दिन भी अखबार उठाने के लिये दरवाजे की तरफ बढ़ा—तो उसने पाया कि अखबार के साथ-साथ आज वहां एक चिट्ठी भी पड़ी है। कमल कपूर ने फौरन झपटकर चिट्ठी उठाई और उसे खोलकर पढ़ा।

चिट्ठी टाइपशुदा थी और उसमें किसी ने कहीं एक शब्द भी अपने हाथ से नहीं लिखा था।

हैलो फोर स्क्वायर,

मैं जानती हूं कि तुमने कल रात भी पुलिस पलटन के साथ मेरा बड़ी बेसब्री से इंतजार किया होगा—लेकिन मैं नहीं आयी। कोई बात नहीं मेरे शिकार नम्बर दो—जो काम पिछली दो रातों में नहीं हुआ, वो आज रात होकर रहेगा।

तैयार रहना।

तुम्हारी मौत

जो आज रात तुम्हारे ऊपर झपटने वाली है।।

उस चिट्ठी को पढ़ते ही कमल कपूर का चेहरा गुस्से से दहक उठा और उसने आवेश में उस चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

अब तो उसे भी लगने लगा था कि पूजा कोठारी नाम की वो लड़की उसके साथ जरूर कोई भयंकर मजाक कर रही है।

●●●

परन्तु फिर भी उसने जैक को फोन मिलाया।

"उसने फिर मुझे धमकी दी है।" जैक के फोन उठाते ही कमल कपूर बोला।

"ओह—वैरी गुड !" जैक चहक उठा—"सचमुच मामला काफी इंट्रेस्टिंग मोड़ लेता जा रहा है—क्या उसने तुम्हें फिर फोन किया ?"

"नहीं—फोन नहीं किया।" कमल कपूर बोला—"बल्कि इस बार उसने मुझे एक चिट्ठी लिखकर भेजी है—सुबह जब मैं अखबार उठाने के लिये दरवाजे के नजदीक पहुंचा, तो वहीं दरवाजे के करीब ही एक चिट्ठी भी पड़ी थी। चिट्ठी टाइपशुदा थी और उसमें कहीं किसी की हैंडराइटिंग नहीं थी।।"

"लड़की पागल होने के साथ-साथ थोड़ी चालाक भी मालूम होती है।" जैक बोला—"वरना वो चिट्ठी टाइप कराकर न भेजती।"

"परन्तु मैं अब क्या करूं ?"

"तुमने कुछ नहीं करना है मिस्टर कपूर ! मैं समझता हूं कि तुम्हें दफ्तर गये हुए भी कई दिन हो गये हैं—तुम नहा-धोकर तैयार होओ और फिर सीधे दफ्तर जाओ। उस लड़की का ख्याल भी अब अपने दिमाग से निकाल दो।"

"लेकिन····।"

"जो मैं कह रहा हूं—सिर्फ वह करो मिस्टर कपूर। हां—अगर कोई और घटना घटे, तो मुझे जरूर सूचित करना।"

"ठीक है।" कमल कपूर थोड़े दृढ़ शब्दों में बोला—"मैं अब यही करता हूं।"

"गुड !"

●●●

उसके बाद कमल कपूर ने सचमुच वैसा ही किया—जैसा जैक ने उससे कहा था।

वह तैयार होकर दफ्तर गया और सारा दिन दफ्तर के काम में व्यस्त रहा—वहां उसे पूजा कोठारी का जरा भी ख्याल न आया।

शाम को जब वो थका-हारा घर लौटा—तो थोड़ी ही देर बाद वो वेश्या आ गयी, जिसके साथ वो अक्सर अप्राकृतिक मैथुन किया करता था।

वेश्या को देखते ही कमल कपूर की बांछें खिल गयी और वो एकदम उसके ऊपर झपट पड़ा।

पलक झपकते ही वो निर्वस्त्र हो गये थे।

हमेशा की तरह उसने वेश्या को घोड़ी बना लिया।

कमल कपूर उसके पीछे आकर सट गया—इतना ही नहीं उसके हाथ वेश्या के जिस्म पर रेंगते हुए उसकी बगलों से गुजरकर वक्षों तक पहुंच गये—फिर वो धीरे-धीरे उन्हें सहलाने लगा।

वेश्या के मुंह से अब मादक कराहें निकल रही थीं।

कितनी ही देर तक मादक कराहों और सिसकारियों का वह तूफान चलता रहा फिर कमल कपूर का पूरा शरीर जोर से कांपा था। और उसके बाद वो वेश्या के ऊपर ढेर हो गया।

वेश्या भी अब जोर-जोर से हांफने लगी थी—घोड़ी बने-बने उसके घुटने छिल गये—उसने कुर्सी के दोनों हत्थे छोड़ दिये और वो वहीं नीचे लेट गयी।

लेकिन कमल कपूर अभी भी उसके अंग-प्रत्यंग को टटोल रहा था—मानों वह अपने आपको दोबारा गरम कर देना चाहता हो।

इसी तरह नौ बज गये—मगर कोई चौंका देने वाली घटना उस रात भी न घटी।

●●●

मार्टिना अगले दिन फिर कमल कपूर से मिलने गयी और काफी देर तक उसके साथ रही।

उसके पश्चात मार्टिना के साथ घटना घटी।

मार्टिना, कमल कपूर के पास से जब वापस घर लौटी और अपने बैडरूम में घुसी—तो फौरन उसके हलक से चीख निकल गयी।

सामने ही दीवार पर जो कैलेण्डर टंगा हुआ था—उस पर खून से कुछ आड़े-तिरछे शब्द लिखे थे।

मेरी चेतावनी के बावजूद तुम फिर कमल कपूर से मिलने गयीं—इसका परिणाम भुगतो। किचन में तुम्हारे सबसे प्यारे कुत्ते टॉमी की लाश पड़ी है।

मार्टिना चीखती हुई अपने बैडरूम से बाहर निकली और किचन की तरफ दौड़ी।

"क''क्या हुआ बेटी ?" मार्टिना की चीख सुनकर मिस्टर एनसन भी दौड़कर बाहर आये—"क''क्या हुआ ?"

"ट''टामी मर गया डैडी !" मार्टिना चिल्लाती हुई किचन की तरफ भागती चली गयी—"ट''टॉमी मर गया।"

टॉमी की मौत की खबर ने मिस्टर एनसन के भी होश उड़ा दिये और वो भी मार्टिना के पीछे-पीछे किचन की तरफ दौड़े।

●●●

वह दोनों धड़धड़ाते हुए किचन में दाखिल हुए।

मगर यह क्या—वहां टॉमी की लाश कहीं न थी।

यहां तो कुछ नहीं है। मिस्टर एनसन ने चौंककर मार्टिना की तरफ देखा।

"ल''लेकिन मेरे बैड़रूम में जो कैलेण्डर टंगा है।" मार्टिना भी हतप्रभ-सी मुद्रा में बोली—"उस पर तो खून से यही लिखा था कि किचन में टॉमी की लाश पड़ी है।"

"जरूर तुम्हें वहम हुआ होगा बेटी !"

"नहीं।" मार्टिना दृढ़ शब्दों में बोली—"मुझे वहम नहीं हुआ—मैंने खुद अपनी आंखों से कैलेण्डर पर उन शब्दों को लिखे देखा थ—जैसे किसी ने खून से उंगलियां डुबोकर उन शब्दों को लिखा हो।"

यही वो पल था—जब टॉमी भी बाहर लॉन में जोर-जोर से भौंकता

हुआ अंदर आ गया और वह मिस्टर एनसन की टांगों से चिपटने लगा तथा उनके पैर चाटने लगा।

"लो—यह भी आ गया।" मिस्टर एनसन बोले—"अब तो शक की कोई गुंजाइश ही नहीं रही कि यह जिन्दा है।"

"त···तो फिर कैलेण्डर पर वह शब्द किसने लिखे ?" मार्टिना आतंकित मुद्रा में बोली—"और क्यों लिखे ?"

"जरा मैं भी तो देखूं उन शब्दों को।"

मिस्टर एनसन तेज-तेज कदमों से चलते हुए मार्टिना के बेडरूम की तरफ बढ़े—मार्टिना और टॉमी भी उनके पीछे-पीछे लपके।

●●●

बेडरूम में घुसते ही एक और धमाका हुआ—कैलेण्डर तो दीवार पर अपनी जगह टंगा हुआ था, लेकिन उस पर खून से लिखे शब्द मौजूद नहीं थे।

उस दृश्य को देखते ही मार्टिना के दिमाग में बम-सा फट पड़ा और उसके नेत्र हद दर्जे तक फैल गये।

"यहां तो कुछ नहीं है।" मिस्टर एनसन बोले।

"ल···लेकिन थोड़ी देर पहले मैंने इसी कैलेण्डर पर कुछ शब्द लिखे देखे थे।" मार्टिना चिल्लाई—"खुद अपनी आंखों से देखे थे।"

"रिलैक्स माई चाइल्ड—रिलैक्स !" मिस्टर एनसन ने उसकी पीठ थपथपाई—"आराम से बैठ जाओ।"

"लेकिन···।"

"बैठ जाओ।"

एनसन ने उसे जबरदस्ती एक कुर्सी पर बिठा दिया—जबकि मार्टिना अभी भी मूर्खों की तरह अपनी पलकें इस तरह झपका रही थी, मानों दुनिया का दसवां आश्चर्य देख रही हो।

"लगता है तुम्हारी तबीयत कुछ ठीक नहीं है बेटी—दहशत तुम्हारे ऊपर हावी हो चुकी है।"

"मेरे ऊपर कोई दहशत हावी नहीं हुई।" मार्टिना चिल्लाई—"मैंने सचमुच थोड़ी देर पहले इसी कैलेण्डर पर खून से यह लिखे देखा था कि टॉमी की लाश किचन में पड़ी है।"

"ठीक है—मैं तुम्हारी बात मानता हूं।" एनसन शान्त मुद्रा में बोले—"मैं कबूल करता हूं कि तुम जो कह रही हो—वह सच है। लेकिन अगर सचमुच कैलेण्डर पर खून से कुछ शब्द लिखे हुए थे—तो फिर वह गायब कैसे हो गये ?"

"मार्टिना चुप !"

"जवाब दो बेटी ?"

"म···मैं नहीं जानती कि वह शब्द गायब कैसे हुए।" मार्टिना झुंझलाकर बोली—"मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि मैंने इसी कैलेण्डर पर उन शब्दों को लिखे देखा था और इस बारे में मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई।"

"ओ० के०—अब तुम थोड़ी देर आराम कर लो।"

"लेकिन····।"

"रिलैक्स! थोड़ी देर आराम करोगी—तो तुम्हारी तबीयत संभल जायेगी।"

फिर मिस्टर एनसन, टॉमी को साथ लेकर बेडरूम से बाहर निकल गये।

मार्टिना अभी भी हतबुद्ध-सी कुर्सी पर बैठी थी—उसके कानों में सीटियां बज रही थीं और उसे साफ-साफ महसूस हो रहा था कि वह किसी बड़े जंजाल में उलझती जा रही है।

●●●

मिस्टर एनसन और मार्टिना—उन दोनों में से कोई भी नहीं जानता था कि पूजा कोठारी उस समय भी वहीं थी।

इतना ही नहीं—उसके पास एक बिल्कुल हू-ब-हू वैसा ही कैलेण्डर भी था, जैसा मार्टिना के बेडरूम में टंगा था।

और यही वो कैलेण्डर था—जिस पर खून से कुछ शब्द लिखे हुए थे।

मार्टिना जैसे ही चीखती हुई किचन में टॉमी की लाश देखने गयी थी—पूजा कोठारी ने उसी पल अद्वितीय फुर्ती के साथ वो कैलेण्डर बदल डाला।

फिर वह बड़ी खामोशी के साथ उन दोनों की नजरों में आये बिना वहां से चली भी गयी।

●●●

कमल कपूर और मार्टिना—उन दोनों की बुरी हालत थी।

पूजा कोठारी ने उनको ऐसा पागल बना रखा था कि उनकी स्थिति अपने सिर के बाल बुरी तरह नोंच डालने वाली हो रही थी।

शाम का समय—मार्टिना ड्राइंगहॉल में बैठी टी० वी० देख रही थी। लेकिन उसका सारा ध्यान टेलीफोन पर केन्द्रित था—क्योंकि थोड़ी-बहुत देर में ही उसकी एक सहेली का फोन आने वाला था।

कैलेण्डर वाली घटना अभी भी मार्टिना के दिमाग में ताजा थी और उसके अंदर विचारों का संघर्ष चल रहा था।

तभी एकाएक जोर-जोर से टेलीफोन की घण्टी बजने लगी।

मार्टिना ने फौरन रिसीवर उठाया और तेजी से बोली—"हैलो—रोजी ?"

"जी नहीं—मैं रोजी नहीं बल्कि मिशन हॉस्पिटल की एक नर्स मारथा बोल रही हूं।" तुरन्त दूसरी तरफ से किसी लड़की की एक बहुत गंभीर आवाज सुनाई दी।

"न"नर्स !" कांप गयी मार्टिना—"ल"लेकिन बात क्या है—आपने फोन क्यों किया ?"

"क्या आपका नाम मार्टिना है ?"

"जी हां।" मार्टिना तेजी से बोली—"मेरा ही नाम मार्टिना है।"

"दरअसल अभी-अभी हमारे मिशन हॉस्पिटल में एक व्यक्ति दाखिल हुआ है—जिसके शरीर में छः गोलियां लगी हुई हैं—वो बिल्कुल मरने जैसी हालत में है और उसकी आखिरी सांसें चल रही हैं वह बेहोशी के आलम में भी आपका ही नाम ले रहा है।"

"व"वह जरूर कमल कपूर है।" मार्टिना एकाएक गला फाड़कर चिल्ला उठी—"व"वह जरूर कमल कपूर है।"

"जी हां।" नर्स बोली—"उनका नाम कमल कपूर ही है— अभी चंद सैकिण्ड के लिये उन्हें होश आया था—होश में आते ही उन्होंने आपका टेलीफोन नम्बर लिखवाया और कहा कि जितनी जल्द-से-जल्द संभव हो—आपको हॉस्पिटल बुला लिया जाये।"

"म"मैं अभी आती हूं।" मार्टिना बदहवासों की तरह चिल्लायी—"मैं अभी आती हूं।"

मार्टिना ने टेलीफोन का रिसीवर इतनी जोर से क्रेडिल पर पटका कि यही बहुत बड़ा शुक्र था कि उसके परखच्चे न उड़ गये।

फिर मार्टिना आंधी-तूफान बनी दरवाजे की तरफ दौड़ी—उसके डैडी ऑफिस गये हुए थे।

लेकिन मार्टिना जैसे ही बाहर निकली—तभी उसके डैडी की कार भी पोर्च में आकर रुकी।

●●●

मार्टिना को बदहवासों की तरह घर से बाहर निकलते देख मिस्टर एनसन के भी हाथ-पैर फूल गये।

"क्या हुआ ?" मिस्टर एनसन बोले—"क्या हुआ बेटी ?"

मार्टिना दौड़ती हुई एनसन के नजदीक पहुंची और फिर उनसे लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ी।

"अ···आखिर उस दुष्ट लड़की ने कमल को मार ही डाला डैडी—मार ही डाला।"

"क···क्या कह रही हो तुम।" चीख पड़े मिस्टर एनसन—"क···कमल को मार डाला।"

"हां डैडी—हां।" मार्टिना फूट-फूटकर रोती हुई बोली—"अभी-अभी मेरे पास मिशन हॉस्पिटल की नर्स का टेलीफोन आया था—कमल वहां पड़ा जिंदगी-मौत से लड़ रहा है—उसे छः गोलियां मारी गयी हैं।"

वह सचमुच एक हृदयविदारक खबर थी।

उस खबर को सुनकर मिस्टर एनसन के भी छक्के छूट गये—वह जितनी तेजी के साथ कार से बाहर निकले थे, मार्टिना को लेकर उससे कहीं ज्यादा तेजी से वापस कार में बैठे और फिर उन्होंने कार बेहद तेज स्पीड से 'मिशन हॉस्पिटल' की तरफ दौड़ा दी।

●●●

'मिशन हॉस्पिटल' सान फ्रांसिसको के काफी बड़े हॉस्पिटलों में एक था।

मिस्टर एनसन दौड़ते हुए हॉस्पिटल के रिसेप्शन पर पहुंचे। और वहां उन्होंने कमल कपूर के बारे में पूछा।

"कमल कपूर !" रिसेप्शनिस्ट कम्प्यूटर स्क्रीन पर नजर दौड़ाते हुए बोली—"आज तो कमल कपूर नाम का कोई पेशेण्ट हॉस्पिटल में एडमिट नहीं किया गया।"

"मैडम !" मिस्टर एनसन ने बदहवासों की तरह कहा—"आपसे जरूर लिस्ट देखने में गलती हो रही है। थोड़ी ही देर पहले कमल कपूर को आपके हॉस्पिटल में एडमिट किया गया है—उनके छः गोलियां लगी हैं—वह जिंदगी-मौत से लड़ रहे हैं—वह जरूर एमरजेन्सी वार्ड में होंगे।"

रिसेप्शनिस्ट ने दोबारा कम्प्यूटर स्क्रीन पर नजर दौड़ाई।

"सॉरी सर !" फिर वह बोली—"मुझे कोई गलती नहीं हो रही—कमल कपूर नाम का आज कोई पेशेण्ट हमारे हॉस्पिटल में एडमिट नहीं किया गया।"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है।" मार्टिना चिल्ला उठी—"थोड़ी देर पहले ही आपको हॉस्पिटल की एक नर्स ने मुझे टेलीफोन पर यह जानकारी दी है।"

"नर्स का नाम ?"

"मारथा !"

रिसेप्शनिस्ट के होठों पर अब बड़ी प्यारी-सी मुस्कान सरगोशी करने लगी—"लगता है कि किसी ने आपके साथ बड़ा भयंकर किस्म का मजाक किया है—आप लोगों को सुनकर हैरानी होगी कि हमारे हॉस्पिटल में मारथा नाम की कोई नर्स भी नहीं है।"

उस जबरदस्त रहस्योद्घाटन पर मिस्टर एनसन और मार्टिना—वह दोनों ही बुरी तरह बौखला उठे।

उनके दिल-दिमाग में आतिशबाजी-सी छूटने लगी।

त···तो क्या वो भयंकर किस्म का मजाक भी उसी ने किया था—उसी दुष्ट लड़की ने।

मार्टिना ने फौरन दौड़कर कमल कपूर के फ्लैट का टेलीफोन नम्बर डायल किया—फौरन दूसरी तरफ से रिसीवर उठाया गया। रिसीवर उठाने वाला व्यक्ति न सिफ कमल कपूर था बल्कि वो अपने फ्लैट पर पूरी तरह सुरक्षित भी था।

●●●

हत्या करना बेहद आसान काम है।

क्योंकि उस समय आपको सिर्फ रिवॉल्वर का ट्रेगर दबाना होता है।

परन्तु अगर आप किसी व्यक्ति की हत्या इस प्रकार करना चाहें कि कानून भी आपको न पकड़ सके—तो आपको बाकायदा एक परफैक्ट योजना बनानी पड़ती है—व्यूह रचना करनी पड़ती है। और इस समय पूजा कोठारी अपने शिकार नम्बर दो के इर्द-गिर्द वही व्यूह रचना कर रही थी।

उसे धीरे-धीरे एक जाल में उलझा रही थी।

●●●

मिस्टर एनसन, मार्टिना और कमल कपूर—वह तीनों उस समय अलग-अलग कुर्सियों पर बैठे थे और उनके बीच बड़ी अजीब-सी खामोशी छाई थी।

तीनों ही परेशान थे और कुछ-कुछ बेचैन भी।

"मुझे अब मार्टिना की फ्रिक हो गयी है।" मिस्टर एनसन गहरी सांस खींचकर कमल कपूर से बोले—"मुझे लगता है कि इसे किसी डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा।

"डॉक्टर को !" मार्टिना एकाएक फट पड़ी—"लेकिन क्यों—मुझे क्या हुआ है।"

"प्लीज मार्टिना—प्लीज ! तुम नहीं जानती कि दहशत तुम्हारे दिल-दिमाग पर कितनी हावी हो चुकी है।"

"कौन कहता है कि दहशत मेरे दिल-दिमाग पर हावी हो गयी है।" मार्टिना लगभग चिल्लाकर बोला—"अगर मेरे पास किसी नकली मारथा नाम की नर्स का फोन आया—तो इसमें मेरी क्या गलती है। उसने अगर मुझसे ये कहा कि कमल कपूर हॉस्पिटल में पड़ा जिंदगी-मौत से लड़ रहा है—तो इसमें मैं क्या कर सकती हूं। उस खबर को सुनकर तो कोई भी बौखला सकता था।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" मिस्टर एनसन बोले—"ऐसी टेलीफोन कॉल को सुनकर कोई भी बौखला सकता है। लेकिन जरा सोचो—अगर किसी के पास ऐसी कोई टेलीफोन काल आये भी नहीं और उसे तब भी ऐसा अहसास हो कि उसके पास ऐसी कोई कॉल आयी है—तो इसे तुम क्या कहोगी ?"

कांप उठी मार्टिना की आवाज—"अ''''आप क्या कहना चाहते हैं डैडी ?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं माई चाइल्ड !" मिस्टर एनसन ने प्यार से उसका हाथ थपथपाया—"कि जिस तरह सुबह कैलेण्डर पर कुछ भी लिखा हुआ नहीं था और तब भी तुम्हें यह अहसास हुआ कि उस पर खून से कुछ लिखा था—बिल्कुल उसी तरह आज शाम के समय भी कोई टेलीफोन कॉल नहीं आयी थी—मगर चूंकि तुम अकेली बैठी हर पल कमल के बारे में सोच रही थीं, इसीलिये तुम्हें ऐसा लगा कि कमल को कुछ हो गया है। वो हॉस्पिटल में पड़ा जिंदगी-मौत से लड़ रहा है।"

"यह सब झूठ है।" मार्टिना पागलों की तरह चिल्लाई—"सच्चाई ये है कि सुबह मैंने कैलेण्डर पर खून से चेतावनी भी लिखी देखी थी और आज शाम टेलीफोन कॉल भी आयी थी। मुझे कोई वहम नहीं हुआ—मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई।"

"मेरी बच्ची !" मिस्टर एनसन थोड़े भावुक स्वर में बोले—"मैं फिर भी एक बार तुम्हें डॉक्टर को दिखाना चाहता हूं।"

"मगर किसलिये—मुझे हुआ क्या है।" मार्टिना आक्रोश में बोली—"कमल—तुम ही इन्हें क्यों नहीं समझाते।"

कमल कपूर चुप बैठा रहा।

"तुम कुछ बोलते क्यों नहीं कमल ?"

"मैं समझता हूं कि तुम्हें अंकल की बात मान ही लेनी चाहिये।"

मार्टिना के मुंह से तेज सिसकारी छूट गयी—"क''''कमल—तुम भी''''।"

"नहीं मार्टिना !" कमल कपूर ने संजीदगी के साथ इंकार में गर्दन हिलाई—"मैं जानता हूं कि तुम सच कह रही हो—तुम्हारे एक-एक शब्द में सच्चाई है—मगर फिर भी अंकल की तसल्ली के लिये यही बेहतर है कि तुम एक बार इनके साथ डॉक्टर के चली जाओ।"

मार्टिना हैरत से कमल कपूर को देखती रह गयी।

●●●

वह एक प्रसिद्ध मनो-चिकित्सक था—उसने मार्टिना का पूरा केस बेहद गंभीरतापूर्वक सुना और फिर आंखें बंद करके उस केस पर विचार करने लगा।

काफी देर तक वो सोचता रहा था उसने आंखें खोलीं।

"जिस तरह की घटनायें पिछले कुछ दिनों में मार्टिना के साथ घटी हैं।" डॉक्टर बोला—"उनकी वजह से कोई भी व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार हो सकता है और अगर वो डिप्रेशन की वजह से इस तरह की काल्पनिक बातों में सच्चाई की तस्वीर देखने लगे—तो यह कोई चौंका देने वाला मामला नहीं—क्योंकि बिल्कुल इस तरह की घटनायें पहले भी घट चुकी हैं।"

"परन्तु उन केसों में और इस केस में एक फर्क है डॉक्टर !" कमल कपूर बोला।

"कैसा फर्क ?" डॉक्टर के नेत्र सिकुड़े।

"अभी इस केस में यह साबित नहीं हुआ है कि वह घटनायें काल्पनिक थी। अभी सिर्फ इस बात की आशंका जाहिर की जा रही है कि कहीं डिप्रेशन की वजह से वह दोनों घटनायें मार्टिना की वहम तो नहीं थीं।"

"यानि अभी मुझे सच्चाई का पता लगाना है।"

"बिल्कुल ठीक।"

"लेकिन सच्चाई का पता लगाने के लिये मुझे कुछ मैडीकल टेस्ट करने होंगे।"

"मैं टेस्ट कराने के लिये तैयार हूं।" मिस्टर एनसन ने कहा।

"परन्तु मैं तैयार नहीं।" मार्टिना चिल्लाई—"मैं बिल्कुल ठीक हूं।"

"मार्टिना—प्लीज शान्त हो जाओ।" कमल कपूर ने उसे झंझोड़ा—"शान्त हो जाओ।"

"लेकिन…।"

"टेस्ट होने से कुछ नहीं हो जायेगा मार्टिना—सिर्फ कुछ देर की बात है।"

मार्टिना दोनों हथेलियों में अपना चेहरा छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

"म···मैं पागल हो जाऊंगी कमल !" मार्टिना रुंधे स्वर में बोली—"म···मैं सचमुच पागल हो जाऊंगी—मुझे उस खतरनाक लड़की के शिकंजे से बचा लो।"

मिस्टर एनसन और कमल कपूर की आंखों में भी आंसू छलछला आये।

उन दोनों ने अपनी पूरी जिंदगी में कभी अपने आपको इतना बेबस महसूस नहीं किया था।

●●●

बहरहाल फिर उसी दिन मार्टिना के दिमाग के कई सारे टैस्ट हुए और उसका ब्लड भी चैक होने के लिये लैब भेजा गया।

कोई नहीं जानता था कि पूजा कोठारी उन तीनों की एक-एक हरकत पर नजर रख रही है।

उसी दिन पूजा कोठारी ने दूसरे फोर स्क्वायर की हत्या करने की दिशा में अपनी योजना का सबसे महत्त्वपूर्ण कदम उठाया।

वह उसी दिन रात के समय चुपचाप उस लैब के अंदर चोरों की तरह घुसी—जिस लैब में मार्टिना का ब्लड टेस्ट होने के लिये भेजा गया था।

फिर उसने वहां आनन-फानन मार्टिना के ब्लड की रिपोर्ट तलाश करनी शुरू की।

मुश्किल से आधा घण्टे की मेहनत के बाद ही पूजा कोठारी को मार्टिना के ब्लड की रिपोर्ट मिल गयी—उसका ब्लड टेस्ट हो चुका था।

मार्टिना का ब्लड ग्रुप था—+B

शीघ्र ही पूजा कोठारी ने मार्टिना के ब्लड ग्रुप की एक बिल्कुल हू-ब-हू वैसी ही नकली रिपोर्ट तैयार करनी शुरू की।

उस दूसरी रिपोर्ट में उसने मार्टिना का ब्लड ग्रुप +B की जगह +O लिखा और उसके बाद उस रिपोर्ट को बिल्कुल उसी जगह रख दिया—जहां पहली रिपोर्ट रखी थी।

पहली रिपोर्ट के उसने टुकड़े-टुकड़े करके अपनी जेब में डाल लिये।

उस बेहद महत्वपूर्ण काम को अंजाम देकर पूजा कोठारी जिस प्रकार चोरों की तरह छिपते हुए वहां घुसी थी—उसी प्रकार चोरों की तरह खामोशी के साथ वहां से बाहर निकल गयी।

●●●

अगले दिन मार्टिना के सभी टेस्टों की रिपोर्टें मनो-चिकित्सक के पास पहुंच गयी।

उसने मिस्टर एनसन, कमल कपूर और मार्टिना के सामने ही उन रिपोर्टों को गंभीरता से देखा।

"इनमें कोई खास बात है डॉक्टर ?" मिस्टर एनसन ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"नहीं—खास बात कोई नहीं।" डॉक्टर ने संजीदगी के साथ जवाब दिया—"सभी टेस्ट बिल्कुल नॉर्मल आये हैं और इन टेस्टों से साफ साबित होता है कि मार्टिना को कोई दिमागी बीमारी नहीं।"

"थैंक गॉड !" मार्टिना ने राहत की सांस ली—"मैं तो सोच रही थी कि कहीं तुम मुझे आज पागल ही साबित न कर दो।"

"ऐसी कोई बात नहीं यंग बेबी !" डॉक्टर, मार्टिना को देखकर मुस्कुराया—"मत भूलो—मैं एक डॉक्टर हूं और केस की बिल्कुल सही-सही तस्वीर ही पेशेण्ट को दिखाना मेरा काम है।"

"लेकिन एक बात हम लोगों के समझ नहीं आयी।" कमल कपूर गौर से डॉक्टर को देखता हुआ बोला।

"क्या बात ?"

"अगर मार्टिना दिमागी रूप से बिल्कुल ठीक है।" कमल कपूर बोला—"तो फिर इसे कैलेण्डर पर खून से लिखी वह पंक्तियां क्यों नजर आयीं—मुझे गोली लगने का वहम इसे कैसे हुआ ?"

"इसके पीछे दो कारण हो सकते हैं।" डॉक्टर बोला—"पहला कारण तो ये है कि जो रहस्यमयी लड़की आपकी हत्या करना चाहती है—संभव है कि वह इन्हें भी अपने किसी खास मकसद को पूरा करने के लिये डराना चाहती हो।"

"म''''मगर मार्टिना को डराकर उस लड़की को क्या हासिल होगा ?"

"यह तो वही लड़की बेहतर बता सकती है।" डॉक्टर बोला—"कि उसे क्या हासिल होगा।"

मिस्टर एनसन ने पूछा—"और दूसरा कारण क्या है ?"

"दूसरा कारण ये है कि दिमागी टेंशन की वजह से भी इनके साथ इस तरह की घटनायें घटी हो सकती हैं। बहरहाल वजह चाहे जो भी है—उसका किसी बीमारी से कोई ताल्लुक नहीं। हां मैं एक हिदायत जरूर दूंगा—आप कुछ दिन तक मार्टिना के साथ थोड़ी सावधानी बरतें।"

"कैसी सावधानी ?" मिस्टर एनसन के नेत्र सिकुड़े।

"जैसे आप इन्हें घर पर अकेला न छोड़ें—इन्हें अकेला न सोने दें और फोन तो यह कुछ दिन तक किसी भी हालत में अटेण्ड न करें।"

"इसके अलावा कोई और हिदायत ?"

"नहीं—बाकी कोई हिदायत नहीं—अब आप लोग जा सकते हैं।"

"थैंक्यू—थैंक्यू वैरी मच डॉक्टर !" मिस्टर एनसन ने डॉक्टर से कसकर हाथ मिलाया—"आपने मेरी सारी चिन्ता दूर कर दी—वरना मैं सोच रहा था कि मेरी बेटी को न जाने क्या हो गया है।"

मिस्टर एनसन ने डॉक्टर को उसकी फीस दी और फिर वह तीनों सारी मैडीकल रिपोर्टें लेकर क्लीनिक से बाहर निकल आये।

●●●

फिर पूजा कोठारी ने अपनी उस योजना का सबसे महत्वपूर्ण पत्ता फेंका।

उसने वो तुरूप चाल चली—जिसके बाद उसके शिकार नम्बर दो यानि फ़ोर स्क्वायर दल के एक और मैम्बर कमल कपूर की हत्या हो गयी।

निस्संदेह पूजा कोठारी ने जिस प्रकार कमल कपूर की हत्या की—वह एक आश्चर्यजनक हत्या थी और बड़े से बड़ा तेज दिमाग अपराधी भी किसी की उस प्रकार हत्या करने के बारे में नहीं सोच सकता।

उस दिन रविवार था और कमल कपूर के दफ्तर की छुट्टी थी।

कमल कपूर, मार्टिना की वजह से पहले ही काफ़ी दिमागी टेंशन में था कि तभी उसके टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

"हैलो !" कमल कपूर ने रिसीवर उठाया—"कौन ?"

"मैं पूजा कोठारी बोल रही हूं।" हमेशा की तरह पूजा कोठारी बहुत जोर से खिलखिलाकर हंसी और फिर नागिन की तरह फुफंकार उठी—"तुम आज तक सिर्फ अपनी किस्मत से बचते रहे हो कमल कपूर—परन्तु आज रात तुम्हारी हर हालत में हत्या होने वाली है।"

"तुम पागल लड़की हो।" कमल कपूर गुस्से में चिल्ला उठा—"तुम सिर्फ डराना जानती हो—सिर्फ डराना। तुमने मुझे और मार्टिना को बिल्कुल अपनी तरह ही पागल बनाकर रख दिया है—। सच्चाई यह है कि तुम मेरी हत्या नहीं कर सकतीं।" कमल कपूर चिंघाड़ता चला गया—"हत्या करना तुम्हारे बस का ही नहीं है—विजू आनन्द की हत्या भी जरूर किसी और ने की होगी।"

हंसी पूजा कोठारी—उसकी बौखलाहट देखकर पहले से भी ज्यादा जोर से खिलखिलाकर हंसी।

पूजा कोठारी की हंसी में अजीब-सा खौफ था—अजीब-सी दहशत थी।

"कमल कपूर—तुमने हिन्दुस्तान में भेड़िय वाला कहानी तो जरूर पढ़ी होगी।" पूजा कोठारी लगातार हंसते हुए बोली—"एक चरवाहा जंगल में रोजाना चिल्लाया करता था—भेड़िया आ गया—भेड़िया आ गया—भेड़िया आ गया। उसकी चीख-पुकार सुनकर गांव वाले रोजाना वहां आ जाते—लेकिन जल्द ही गांव वालों को मालूम हो गया कि लड़का ख्वामखाह उन्हें बेवकूफ बनाने के लिये चिल्लाया करता है और तब उन्होंने उसकी चीख-पुकार पर ध्यान देना बंद कर दिया। लेकिन यह क्या—एक दिन सचमुच भेड़िया आ गया। उस दिन वह चरवाहा खूब गला फाड़-फाड़कर चिल्लाया—भेड़िया आया—भेड़िया आया—भेड़िया आया। मगर तब उसकी मदद करने कोई गांव वाला न पहुंचा—सबने यही समझा कि वह उस दिन भी मजाक कर रहा है। और उसी दिन भेड़िये ने उस चरवाहे को फाड़ डाला। आज बिल्कुल चरवाहे जैसी हालत तुम्हारी होने वाली है कमल कपूर— आज सचमुच तुम्हारी जिंदगी में भेड़िया आने वाला है, जो तुम्हें मार डालेगा।"

"तुम फिर बकवास कर रही हो।" कमल कपूर पुनः हिस्टीरियाई अंदाज में चिंघाड़ उठा—उसका चेहरा गुस्से में दहक उठा था—"सच्चाई ये है कि तुम मुझे आज भी डरा रही हो।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी उसके गुस्से की आग में और अधिक घी डालती हुई बोली—"अगर यह बात है—तो मैं तुम्हारी आज रात को नहीं बल्कि अभी हत्या करूंगी। लेकिन मैं तुम्हें तुम्हारे फ्लैट के अंदर नहीं मारना चाहती। अगर तुममें हिम्मत है।" पूजा कोठारी उसे आक्रोश में चैलेन्ज देती हुई बोली—"अगर तुम असली मर्द के बच्चे हो—तो सौ की स्पीड से कार चलाते हुए अपनी कॉलोनी से बाहर निकलो।"

"ठीक है।" चिंघाड़ा कमल कपूर—"मैं अभी कालोनी से बाहर निकलता हूं।"

"निकलो बाहर—मैं भी आज बाहर खड़ी हुई तुम्हारा ही इंतजार कर रही हूं—आज हो ही जाये मुकाबला।"

"मैं अभी बाहर आता हूं।"

कमल कपूर ने टेलीफोन का रिसीवर धड़ाक् से क्रेडिल पर पटक दिया।

उसका गुस्सा अब सातवें आसमान पर पहुंच चुका था—वह

जंगली सांड की तरह जोर-जोर से हुंकारे भर रहा था। उसने अपनी लॉडिड रिवॉल्वर और मोबाइल फोन आनन-फानन अपनी जेब में ठूंसे और फिर वह फर्श रौंदता हुआ अपने फ्लैट से बाहर निकला।

गुस्से ने उसका दिमाग खराब कर दिया था—वह नहीं समझ पा रहा था कि वो क्या करने जा रहा है।

कमल कपूर दौड़ता हुआ अपनी कार में घुसा—उसने कार स्टार्ट की—अगले ही पल कार बंदूक से छूटी गोली की तरह कालोनी से निकल कर सड़क पर भागी।

उस समय कार की स्पीड सौ से भी ज्यादा तेज थी—शायद एक सौ बीस के आसपास।

●●●

कमल कपूर को अपने बेपनाह गुस्से और बेहद तेज ड्राइविंग का फौरन ही दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ा।

कालोनी के सामने ही एक सब्जी बेचने वाली वैन खड़ी थी—जैसे ही कमल कपूर की कार आंधी-तूफान बनी कालोनी से बाहर निकली—वह फौरन उस वैन से टकरा गयी और वैन से टकराते ही उस कार के परखच्चे उड़ गये।

वहीं ट्रक में पूजा कोठारी भी मौजूद थी—वह ट्रक उसने आज ही किराये पर लिया था।

उस एक्सीडेन्ट के होते ही वह अपना ट्रक बेहद तूफानी गति से सड़क पर दौड़ाती हुई उसी दिशा में लपकी और कमल कपूर की कार के जो अंजर-पंजर शेष थे—उनको वह अपने ट्रक से कुचलती हुई वहां से फरार हो गयी।

उस भयानक एक्सीडेन्ट के होते ही साउथ एवेन्यू के उस पूरे इलाके में तेज हलचल मच गयी—एकाएक बड़ी तादाद में भीड़ वहां जमा होने लगी।

●●●

कमल कपूर की हालत बहुत खस्ता थी—यही बहुत बड़ा करिश्मा था कि इतने भयानक एक्सीडेण्ट के बावजूद वो अभी तक जिन्दा था। उसका शरीर कार के स्टेयरिंग और सीट के बीच में बुरी तरह फंस चुका था—इसके अलावा वो ऊपर से नीचे तक खून में इस कदर नहाया हुआ था, जैसे किसी ने लाल रंग से भरी बाल्टी पूरी-की-पूरी उसके ऊपर उंडेल दी हो।

पीड़ा से बुरी तरह छटपटाते हुए कमल कपूर ने अपनी जेब से

मोबाइल फोन निकाला और कंपकंपाती उंगलियों से मार्टिना के घर का नम्बर डायल किया।

फौरन घण्टी जाने लगी।

"हैलो।" फिर लाइन पर मिस्टर एनसन की आवाज उभरी।

"अ···अंकल।" कमल कपूर फंसे-फंसे स्वर में बोला—"म··· मैं कमल—क···कमल।"

"क···कमल।" चीख निकल गयी मिस्टर एनसन के हलक से—"क्या हुआ बेटा कमल—त···तुम्हारी आवाज दर्द से भरी हुई क्यों है ?"

"म···मेरा एक्सीडेण्ट हो गया है अंकल—अ···अपनी कॉलोनी के सामने ही—अ···आप जल्दी यहां आइये—म···मार्टिना को भी लेकर।"

"मैं आता हूं बेटा—अभी आता हूं।"

लेकिन मिस्टर एनसन के वो शब्द कमल कपूर ने न सुने—उससे पहले ही उसके हाथ से मोबाइल फोन छूट गया और उसकी गर्दन लुढ़क गयी।

वो बेहोश हो चुका था।

●●●

सान फ्रांसिसको के मिशन हॉस्पिटल में भूकम्प-सा आ गया। कमल कपूर को फौरन ही एमरजेन्सी वार्ड में एडमिट कर लिया गया और डॉक्टरों का एक दल उसका ऑपरेशन करने लगा।

ऑपरेशन थियेटर के बाहर मार्टिना दोनों हथेलियों में मुंह छिपाकर फूट-फूटकर रो रही थी—जबकि मिस्टर एनसन उसे चुप कराने की भरसक कोशिश कर रहे थे—लेकिन उनकी हर कोशिश असफल थी।

आधा घण्टे तक कमल कपूर का ऑपरेशन चला।

ठीक आधा घण्टे बाद ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा खुला और डॉक्टरों का दल बाहर निकला।

"अब कमल की कैसी तबीयत है डॉक्टर ?" मिस्टर एनसन फौरन डॉक्टरों के दल की तरफ झपटे—"वह ठीक तो है न ?"

"आप बिल्कुल भी चिन्ता मत कीजिये।" एक डॉक्टर बोला—"ऑपरेशन सफल रहा है और अब मिस्टर कमल खतरे से बाहर हैं।"

"थैंक गॉड।"

मार्टिना भी उस खबर को सुनकर जल्दी-जल्दी अपने आंसू साफ करने लगी।

"लेकिन मिस्टर कमल के शरीर से काफी खून निकल चुका है।" उसी डॉक्टर ने आगे कहा—"और अब उन्हें फौरन खून की जरूरत

है—उनका ब्लड ग्रुप—A है—आपको फौरन उनके ग्रुप के खून का इंतजाम करना होगा।"

"खून का इंतजाम करने की कोई जरूरत नहीं।" मार्टिना जल्दी से बोली—"मेरा ब्लड ग्रुप O है और इस ग्रुप का खून किसी को भी दिया जा सकता है—यह देखिये मेरी ब्लड रिपोर्ट।" मार्टिना ने फौरन अपने पर्स में से ब्लड रिपोर्ट निकालकर डॉक्टर को दिखाई—"परसों ही मेरा ब्लड टेस्ट हुआ है—आप मेरे जिस्म से चाहे कितना भी खून निकालकर कमल को चढ़ा सकते हैं—लेकिन प्लीज उसे बचा लीजिये।"

"वैरी गुड।" मार्टिना की ब्लड रिपोर्ट देखते ही डॉक्टर की आंखें चमक उठीं—"सचमुच तुम्हारे होते हुए हमें मिस्टर कमल के लिये ब्लड की जरूरत नहीं—जल्दी से हमारे साथ अंदर आओ।"

मार्टिना फौरन डॉक्टरों के उस दल के साथ ऑपरेशन थियेटर के अंदर चली गयी।

●●●

और—पूजा कोठारी की यही योजना थी—यही योजना। कि डॉक्टर पूजा कोठारी का ब्लड ग्रुप O समझकर उसे कमल कपूर के जिस्म में चढ़ा दें।

क्योंकि डॉक्टरों के उस कदम का एक ही परिणाम निकलना था—कमल कपूर की मौत।

फौरन मौत।

पूजा कोठारी उस समय वहीं हॉस्पिटल के गलियारे में बैठी थी और मुस्कुराते हुए मार्टिना को ऑपरेशन थियेटर के अंदर जाते देख रही थी।

कैसी अद्भुत बात थी—जो मार्टिना, कमल कपूर की जिंदगी की सबसे बड़ी मुहाफिज थी—वही उसकी मौत का कारण बनने वाली थी।

●●●

विशेष नोट—जो सामान्य पाठक ब्लड के बारे में खास जानकारी नहीं रखते, उन्हें मैं कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देना अपना फर्ज समझता हूं।

मान लीजिये—किसी व्यक्ति का ब्लड ग्रुप A है और उसे किसी असामान्य परिस्थितियों में भूल से B ग्रुप का ब्लड चढ़ा दिया जाता है—तो उस व्यक्ति को फौरन मरने से दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती—वह कुछ देर में ही छटपटाकर दम तोड़ देगा।

अगर आप किसी व्यक्ति को गोली मार दें—तो उसके कुछ प्रतिशत बचने के चांस हमेशा रहते हैं। लेकिन अगर किसी के जिस्म

में दूसरे ग्रुप का ब्लड चढ़ा दिया जाये—तो उस व्यक्ति को शत-प्रतिशत मरना-ही-मरना है।

सिर्फ एक O ब्लड ग्रुप ही ऐसा है—जो किसी भी ब्लड ग्रुप वाले व्यक्ति को चढ़ाया जा सकता है और उससे उसे कोई हानि भी नहीं होती।

बहरहाल—पूजा कोठारी चाल चल चुकी थी।

शानदार चाल।

●●●

डॉक्टरों ने फौरन तेजी के साथ मार्टिना के जिस्म से एक बोतल खून निकाला और उसे कमल कपूर को चढ़ाने के लिये लगा दिया।

मिस्टर एनसन और मार्टिना उस समय कमल कपूर के पास ही थे।

जैसे ही मार्टिना का खून कमल कपूर के जिस्म के अंदर पहुंचा—वह बैचेन होने लगा—उसकी रगें फड़कने लगीं और वो अपने हाथ-पैर हिलाने लगा।

यही वो पल था—जब सफेद ड्रेस पहने एक नर्स हाथ में ट्रे लेकर ऑपरेशन थियेटर के अंदर दाखिल हुई। अगर कोई ध्यान से देखता—तो मालूम होता कि वह नर्स नहीं बल्कि पूजा कोठारी थी—जिसने अभी चंद सैकिण्ड पहले ही नर्सिंग स्टाफ के ड्रेसिंग रूम से नर्स की एक ड्रेस चुरायी थी और अब उस ड्रेस को पहनकर पूरी तरह नर्स बन चुकी थी।

"आप लोग बाहर निकलिये।" पूजा कोठारी ऑपरेशन थियेटर के अंदर दाखिल होती हुई मिस्टर एनसन और मार्टिना से बोली—"प्लीज—जल्दी बाहर निकलिये। मुझे पेशेण्ट की कुछ पट्टियां बदलनी हैं और उसे एक इंजेक्शन देना है।"

"लेकिन यह इतना बैचेन क्यों हो रहा है ?" मिस्टर एनसन, कमल को देखकर कुछ परेशान हुए—"य···यह अपने हाथ-पैर क्यों हिला रहा है ?"

"इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं सर।" पूजा कोठारी बोली—"जब पेशेण्ट को ब्लड चढ़ाया जाता है—तो वह शुरू-शुरू में पांच-दस मिनट तक इसी तरह बैचेन होता है। अब आप दोनों बाहर निकलिये—जल्दी—हरीअप।"

पूजा कोठारी उन दोनों को लगभग धकेलती हुई ऑपरेशन थियेटर के दरवाजे तक ले गयी और उन्हें बाहर निकाल दिया।

●●●

इस बीच कमल कपूर की हालत हद से ज्यादा बिगड़ चुकी थी।

मार्टिना के ब्लड के रूप में पोटेशियम साइनाइड से भी ज्यादा घातक जहर उसके जिस्म में पहुंच रहा था। कमल कपूर के सांस उल्टे-सीधे चलने लगे—वह अपने हाथ-पैर बुरी तरह पटकने लगा और उसका सम्पूर्ण शरीर पसीनों में नहाता चला गया।

"हैलो फोर स्कवायर दल के दूसरे मैम्बर—हैलो।" उसकी हालत देखकर पूजा कोठारी के चेहरे पर विलक्षण चमक पैदा हो गयी और उसने उसे झंझोड़ा—"अपनी आंखें खोलो फोर स्कवायर—आंखें खोलो अपनी। और देखो अपनी मौत को—जो तुम्हारे सामने खड़ी है।"

कमल कपूर की पलकें आहिस्ता से कंपकंपायी और फिर उसने अपनी बेजान आंखें खोलीं—जिनका जीवन दीप बुझ रहा था।

"त···तुम।" कमल कपूर जोर-जोर से उल्टे-सीधे सांस लेता हुआ बड़ी मुश्किल से बोला—"क···कौन हो तुम ?"

"मैं पूजा कोठारी हूं।" पूजा कोठारी, खतरनाक अंदाज में खिलखिलाती हुई बोली—"पूजा कोठारी—बंगलौर के सेशन जज अरविन्द कोठारी की सबसे छोटी बेटी।"

"त···तुम।" उन अंतिम क्षणों में भी दहशत के भाव तैर गये कमल कपूर की आंखों में—"त···तुम।"

"मैंने क्या कहा था कमल कपूर।" पूजा कोठारी एकाएक बेहद जुनूनी अंदाज में बोलने लगी—"आज भेड़िया आयेगा—आज भेड़िया आकर रहेगा। और देखो—सचमुच भेड़िया आ गया। तुम मर रहे हो कमल कपूर। याद करो।" पूजा कोठारी का चेहरा भभकने लगा—"याद करो। 13 मार्च की रात को—बंगलौर की उस रात को याद करो, जब तुम चार दोस्तों ने आगरे से आती ट्रेन के अंदर मेरे मम्मी-डैडी की हत्या की थी—मेरी मासूम-सी बहन के साथ तुमने बलात्कार किया था। मेरे सामने ही—मेरी इन नीली-नीली आंखों ने सब कुछ देखा था कमल कपूर—सब कुछ। इसीलिये इनमें इतनी आग भर गयी है।"

मरते हुए कमल कपूर की आंखों के सामने पुनः ट्रेन का वो सारा नजारा घूमने लगा—पटरियों पर धड़ाधड़ दौड़ती ट्रेन—सविता को बलात्कार के कारण निकलती पीड़ादायक चीखें—और गोलियों की आवाजें।

"मुझे आज भी याद है फोर स्कवायर नम्बर दो।" पूजा कोठारी का चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बन गया—उसके चेहरे पर प्रतिशोध की प्रचण्ड अग्नि धधकने लगी—"मुझे आज भी याद है तुमने उस रात

मेरी बहन के साथ अप्राकृतिक सहवास किया था—उसे घोड़ी बना लिया था और उसके नितम्बों पर भारी-भरकम घन की तरह हमले किये थे। मैं कुछ नहीं भूली—कुछ भी नहीं। आज आठ साल बाद तुम्हें अपने उस पाप की सजा मिल गयी—अब तुम सिर्फ कुछ सैकिण्डों के मेहमान हो।"

कमल कपूर के सांस और ज्यादा उल्टे-सीधे चलने लगे। लेकिन उसकी आंखों में अब आंसू भी झिलमिला उठे थे—पश्चाताप के आंसू। एक बार फिर वो यही सोच रहा था कि काश उन चार दोस्तों ने बंगलौर में वासना का वो घिनौना खेल न खेल होता—तो आज उसे वह दिन न देखना पड़ता।

मगर अब देर हो चुकी थी—बहुत देर।

"मैं आठ साल तक प्रतिशोध की अग्नि में जली हूं—आठ साल तक।" पूजा कोठारी नागिन की तरह फुंफकार उठी—"परन्तु आज रात मुझे कुछ सकून मिलेगा।"

उसके बाद पूजा कोठारी ने खून की बोतल पकड़ ली और उसे मुट्ठी में बंद करके जोर-जोर से भींचने लगी—जोर-जोर से।

"अलविदा मेरे शिकार नम्बर दो—अलविदा।"

कमल कपूर के नेत्र आतंक के आधिक्य से फैल गये—उसने गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना चाहा—किसी को मदद के लिये पुकारना चाहा—लेकिन वह कुछ न कर सका—कुछ भी नहीं। आवाज उसके हलक में ही घुटकर रह गयी थी। जबकि पूजा कोठारी बेहद जुनूनी अंदाज में अभी भी खून की बोतल को जोर-जोर से भींच रही थी—और जोर-जोर से।

●●●

थोड़ी ही देर बाद ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा धड़ाक से खुला और पूजा कोठारी बेहद हड़बड़ाई हुई अवस्था में बाहर निकली।

"क्या हुआ ?" उसे इतनी बुरी तरह हड़बड़ाया देख मार्टिना चौंकी—"क''क्या हुआ ?"

"प''पेशेण्ट की हालत एकाएक बहुत खराब हो गयी है।" पूजा कोठारी ने लगभग चीखते हुए कहा—"मैं अभी डॉक्टर को बुलाकर लाती हूं—इतने आप लोग पेशेण्ट के पास चलिये।"

मिस्टर एनसन और मार्टिना—उस खबर को सुनकर उन दोनों के पैरों में दहशत के पर लग गये—वह दौड़ते हुए फौरन ऑपरेशन थियेटर के अंदर घुसे और कमल कपूर के पास पहुंचे।

"न''नहीं इ इ इ !"

और यही वो पल था—जब उन दोनों के कण्ठ से ऐसी

हृदयविदारक चीख निकली कि वह ऑपरेशन थियेटर की दरों-दीवार तक को झंझोड़ती चली गयी।

सामने—उनकी आंखों के सामने कमल कपूर की लाश पड़ी थी—वह मर चुका था।

●●●

पूजा कोठारी हंस रही थी—जोर-जोर से खिलखिलाकर हंस रही थी—जैसे रात के घनघोर सन्नाटे में किसी इंसान का खून पीने के बाद कोई चुड़ैल हंस रही हो।

पूजा कोठारी उस समय होटल के अपने बाथरूम में थी—दरवाजा उसने अंदर से लॉक्ड किया हुआ था—जिस्म के सारे कपड़े उतार रखे थे और शावर फुल रफ्तार से खोल रखा था—ताकि उसके ठहाके लगाने की वो आवाज होटल में बाहर तक न जा सके।

"दो शिकार मर चुके हैं—दो शिकार !" पूजा कोठारी जोर-जोर से ठहाके लगाते हुए खुद से ही बोली—"अब तीसरे की बारी है—तीसरे फोर स्कवायर की।" पूजा कोठारी ने अपनी गर्दन छत की तरफ उठाई और वो चिल्ला उठी—"मैं आ रही हूं मेरे शिकार नम्बर तीन—मैं आ रही हूं—तुम दुनिया के चाहे जिस कोने में भी होओ, सावधान हो जाओ।"

फिर पूजा कोठारी ने हंसते हुए बिल्कुल नग्न अवस्था में ही वहीं रखी शैम्पेन की एक बोतल उठाई—उसका कार्क मुंह से खोलकर शावर की तरफ उछाला—फौरन ढेर सारी शैम्पेन झाग के रूप में उछलकर बाहर निकली।

"कमल कपूर की मौत के नाम !" पूजा कोठारी ने खुशी से किलकारी भरी—"उस शैतान के अन्त के नाम—जिसके कारण मेरा परिवार तबाह हुआ।"

पूजा कोठारी ने गटागट कई सारे शैम्पेन के घूंट भरे और फिर वह शैम्पेन को अपने शीशे की तरह चमकते संगमरमरी बदन पर बहाने लगी।

शैम्पेन—जो उसके हिमालय की तरह तने वक्षों की चोटियों को स्पर्श करके नाभि के ऊपर से होकर एक धारा की तरह नीचे की तरफ जा रही थी।

उसी क्षण पूजा कोठारी को अपने परिवार की याद आयी—अपने डैडी की—मम्मी की—और उस बड़ी बहन की, जिससे उसे हमेशा दोस्त जैसा प्यार मिला।

पूजा कोठारी की हंसी रुक गयी—वो जज्बाती हो उठी।

"मैं जानती हूं।" पूजा कोठारी की आंखों में आंसू झिलमिला उठे—"मैं जानती हूं कि इस समय तुम लोगों की आत्मायें जहां कहीं भी होंगी—बहुत खुश होंगी। परन्तु क्या तुम लोग यह भी जानते हो कि तुमसे बिछड़ने के बाद इस पूजा ने कितने दुःख उठाये हैं—कितनी पीड़ा झेली है। एक लड़की के लिये—खासतौर पर एक जवान लड़की के लिये जिंदगी की डगर पर अकेले चलना बिल्कुल ऐसा है, जैसे अंगारों से भरे रास्ते पर किसी का नंगे पैर चलना।"

पूजा कोठारी अपने परिवार को याद करके बेहद जज्बाती हो उठी—वह एकाएक फूट-फूटकर रोने लगी—हिड़कियों के साथ।

उसकी नसों में दर्द तेजाब बनकर बह रहा था—और उस दर्द को कम करने का एक ही तरीका था—वह रोये—दिल भरकर रोये।

पूजा कोठारी रोती रही—देर तक रोती रही।

●●●

रात का समय था—अधेड़ उम्र का जैक 'स्वामी विवेकानन्द कॉलोनी' में बेचैनीपूर्वक इधर-उधर टहल रहा था—इस समय जैक के साथ उसके दो सहयोगी भी थे—जो अमेरिकन स्पेशल डिटेक्टिव स्कवायड के जवान थे और बेहद खतरनाक किस्म के लड़ाका थे।

वह तीनों उसी बिल्डिंग के नीचे मटरगश्ती कर रहे थे—जिसमें कमल कपूर का फ्लैट था। अधेड़ उम्र का जैक बार-बार गर्दन उठाकर पंद्रहवी मंजिल पर बने कमल कपूर के फ्लैट पर दृष्टिपात करना नहीं भूलता था—जिसकी उसे वहां से खिड़की नजर आ रही थी।

दरअसल कमल कपूर की मौत ने जैक को बुरी तरह झंझोड़ डाला था—हालांकि वो एक स्वाभाविक मौत थी। परन्तु जैक का जासूसी दिमाग उसे स्वाभाविक मौत कबूल करने के लिये बिल्कुल तैयार न था—उसे उसमें से हत्या की बू आ रही थी।

वैसे भी जैक को हरेक बात पर शक करने की आदत बचपन से थी। शायद इसी वजह से उसका कभी किसी लड़की से प्रेम न हो सका और शादी भी न हुई। जहां जैक को शक करने की अपनी आदत के कारण कई बार नुकसान उठाने पड़े—वहीं अपनी उसी आदत की वजह से उसे कई बार फायदे भी हुए। जैसे उसने स्कॉटलैण्ड यार्ड में ट्रेनिंग के दौरान गोल्ड मैडल लिया ही इस बात पर था—उसका कहना था कि अगर मुझे बिल्कुल साफ-सुथरा चमकता हुआ सूरज नजर आये, तब भी मैं यही समझूंगा कि उसके पीछे कोई काला धब्बा जरूर है और मेरा प्रयास उसी काले धब्बे को तलाश करना होगा।

बहरहाल कमल कपूर की हत्या के बाद जैक को लग रहा था—उसकी जिन्दगी की यह जो सबसे बड़ी तमन्ना है कि रिटायर होने से पहले उसका किसी बहुत धुंरधर अपराधी से मुकाबला हो—वह तमन्ना शायद अब पूरी होने जा रही थी।

●●●

टहलते-टहलते जब रात के बारह बज गये—तो अमरिकन स्पेशल डिटेक्टिव स्कवायड के वह दोनों जवान बोर होने लगे।

"सर—मैं समझता हूं कि हम लोग ख्वामखाह अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं।" डिटेक्टिव स्कवायड एक जवान उबासी-सी लेता हुआ बोला— "जिस लड़की का आप इंतजार कर रहे हैं—वो यहां नहीं आयेगी। वैसे भी यह हत्या का मामला नहीं है बल्कि हण्ड्रेड परसेण्ट एक साधारण मौत है—जो डॉक्टरों की भयंकर लापरवाही के कारण हुई—इस कारण हुई, क्योंकि कमल कपूर के जिस्म में दूसरे ग्रुप का ब्लड चढ़ा दिया गया था।"

"नहीं।" जैक की गर्दन दृढ़ता के साथ इंकार में हिली—"यह साधारण मौत नहीं।"

"लेकिन क्यों सर !" डिटेक्टिव स्कवायड का दूसरा जवान भी उत्सुकता से बोला—"आप इसे साधारण मौत स्वीकार करने के लिये तैयार क्यों नहीं हैं ?"

"क्योंकि यह साधारण मौत है ही नहीं।" जैक गुर्रा उठा—"जरा सोचो—मार्टिना का ब्लड ग्रुप B था—फिर वह O कैसे हो गया ?"

"यह जरूर उस लैब की लापरवाही के कारण हुआ।" जवान बोला—"जिसने ब्लड टेस्ट किया था।"

"नहीं।" जैक आन्दोलित लहजे में बोला—"यह लैब की लापरवाही के कारण नहीं हुआ। लैब से साबित हो चुका है कि मार्टिना के पास जो ब्लड रिपोर्ट है—वो नकली है—उस पर हुए सिग्नेचर जाली हैं—इतना ही नहीं उस ब्लड रिपोर्ट पर जो राइटिंग है—वो भी उनके लैब-असिस्टेण्ट की राइटिंग नहीं है। खुद लैब-असिस्टेण्ट ने अपने बयान में कहा है कि उसने मार्टिना का ब्लड ग्रुप B ही कन्फर्म किया था और B ग्रुप की ही ब्लड रिपोर्ट तैयार की थी।"

"फिर रिपोर्ट कैसे बदल गयी ?" दोनों जवान चौंके।

"जरूर यह उसी लड़की का काम है—जो कमल कपूर की हत्या करना चाहती थी।" जैक बोला—"उसी ने किसी प्रकार लैब में घुसकर यह जाली ब्लड रिपोर्ट तैयार की होगी। हां—लैब वालों से यहां एक गलती जरूर

हुई—उन्होंने मार्टिना को ब्लड रिपोर्ट देते समय उसे भली-भांति चैक नहीं किया—वरना तभी साबित हो जाता,कि उस ब्लड रिपोर्ट पर हुए सिग्नेचर जाली हैं और वह राइटिंग भी उनके लैब-असिसटेण्ट की राइटिंग नहीं।"

"ओह !" दोनों जवानों के चेहरे पर व्याकुलता के भाव प्रकट हुए—"इसका मतलब कमल कपूर की हत्या करने के लिये ही ब्लड ग्रुप का वह सारा ड्रामा रचा गया ?"

"बिल्कुल।" जैक ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा—"दरअसल उस बेहद चालाक लड़की ने सब कुछ बेहद प्री-प्लान ढंग से किया—वह कमल कपूर की हत्या इस प्रकार करना चाहती थी कि वो एक सहज तथा स्वाभाविक मौत लगे और वो खुद कानून के शिकंजे में फंसने से बची रहे। दरअसल उसने बड़े ही योजनाबद्ध अंदाज में सबसे पहले मार्टिना को इतना डराया कि उसके डैडी को उसे लेकर एक मनो-चिकित्सक के पास जाना पड़ा—जहां उसके काफी सारे टेस्ट हुए—जिनमें ब्लड टेस्ट भी शामिल था। और यही उस बेहद खतरनाक लड़की का उसे डराने के पीछे मकसद था कि मार्टिना का ब्लड टैस्ट भी हो—ताकि वो उसके ब्लड ग्रुप का बड़ी चालाकी से O ग्रुप साबित कर सके—जैसा कि उसने किया भी।"

डिटेक्टिव स्कवायड के दोनों जवान अब हतप्रभ् से जैक की बात सुन रहे थे।

"इसके अलावा उस खतरनाक लड़की नें कमल कपूर को जो बार-बार हत्या करने की धमकी दी।" जैक आगे बोला—"और धमकियां देने के बाद वो कभी भी वक्त पर नहीं पहुंची—इसके पीछे भी उस लड़की का एक ही मकसद था कि हम सब उसे मूर्ख समझने लगें—पागल समझने लगें—और कमल कपूर की सुरक्षा से अपना ध्यान हटा लें—जैसा कि हमने किया भी। सच्चाई तो ये है कि वो लड़की एक-एक पत्ता काफी सोच-समझकर चल रही थी और उसने हम सबको अपने हाथों का मोहरा बना लिया था—क्योंकि हम सब वही सोच रहे थे और कर रहे थे—जो वो चाहती थी।"

"वैरी इंट्रेस्टिंग !" एक जवान बेहद प्रभावित होकर बोला—"अगर सब कुछ उस लड़की ने इसी तरह किया, जैसा आप बयान कर रहे हैं—तो वाकई वो बेहद चालाक लड़की है।"

"वो हद से ज्यादा चालाक है।" जैक बोला—"मेरी अपराधियों के पीछे भागते-भागते इतनी उम्र गुजर गयी—लेकिन मैंने इतना चालाक अपराधी अपनी पूरी जिंदगी में पहले कभी नहीं देखा। बल्कि अब

तो मुझे कमल कपूर का एक्सीडेण्ट भी उसी लड़की की योजना का एक हिस्सा नजर आ रहा है।"

"क्यों ?" दोनों जवान चौंके—"उसे कमल कपूर का एक्सीडेण्ट कराके क्या हासिल हुआ—जबकि वो उसे दूसरे ग्रुप का ब्लड देकर मारना चाहती थी ?"

"बिल्कुल ठीक—वह लड़की कमल कपूर को दूसरे ग्रुप का ब्लड देकर ही मारना चाहती थी—यही उसकी योजना थी। परन्तु कमल कपूर को मार्टिना का ब्लड चढ़वाने के लिये उसे माहौल भी तो तैयार करना था—ऐसे हालात भी तो पैदा करने थे, जो कमल कपूर को फौरन ब्लड की जरूरत पड़े और तब मार्टिना उसे ब्लड देने के लिये आगे आये। इसीलिये उसने कमल कपूर के एक्सीडेण्ट की व्यूह रचना की।"

दोनों जवान अब भौंचक्के से जैक को देखने लगे—जहां वो लड़की के कार्य—कलापों से बेहद प्रभावित हुए—वहीं वो इस बात से भी काफी इम्प्रेस हुए कि जैक ने उस लड़की की इतनी पेचीदा और बुद्धिमानी से भरी योजना को कितनी आसानी के साथ समझ लिया था।

●●●

उसके बाद कुछ देर के लिये वहां खामोशी छा गयी।

घड़ी की सुई अपनी सामान्य रफ्तार से धीरे-धीरे आगे सरक रही थी और काले स्याह आसमान पर नन्हें-नन्हें तारे झिलमिला रहे थे।

"ठीक है सर !" डिटेक्टिव स्कवायड के एक जवान ने अपने शोल्डर हॉलेस्टर में मौजूद रिवॉल्वर को थोड़े सही ढंग से रखा—"हम मानते हैं कि कमल कपूर की मौत, स्वाभाविक मौत नहीं थी बल्कि उसका बड़े ही प्री-प्लान ढंग से मर्डर किया गया और उसी लड़की ने उसका मर्डर किया—लेकिन अब सवाल यह पैदा होता है कि वो लड़की यहां क्यों आयेगी—उसका काम तो कमल कपूर की मौत के साथ ही खत्म हो गया ?"

"इसके अलावा एक सवाल और है।" दूसरा जवान भी बोला।

"क्या ?" जैक ने दूसरे जवान की तरफ चेहरा घुमाया।

"अगर वो लड़की यहां आना भी चाहे—तो कॉलोनी के गेट पर हर समय वॉचमैन खड़ा रहता है और यह बात उस लड़की को भी मालूम होगी—फिर ऐसी परिस्थिति में वो यहां आकर अपनी जान क्यों खतरे में डालेगी ?"

"दोनों ही सवाल अच्छे हैं।" जैक गंभीरता पूर्वक बोला—"इसमें कोई शक नहीं कि लड़की का काम भी खत्म हो गया है और वॉचमैन की वजह से यहां आकर वह क्यों अपने आपको खतरे में

डालेगी—लेकिन अपराध शास्त्र में एक बड़ी पुरानी किवंदति प्रसिद्ध है कि अगर अपराधी ज्यादा डरा हुआ न हो—तो वह कम-से-कम एक बार घटनास्थल पर जरूर आता है। मुझे न जाने क्यों बार-बार ऐसा लग रहा है कि वह लड़की भी एक बार यहां आयेगी।"

"लेकिन यह आपका वहम भी तो हो सकता है सर ?"

"बिल्कुल हो सकता है वहम !" जैक बोला—"मगर मुझे इस बात की उम्मीद कम ही है कि यह बात मेरा वहम साबित हो।"

●●●

और—अधेड़ उम्र का अनुभवी जासूस जैक जो बात सोच रहा था—वह बिल्कुल सही थी।

पूजा कोठारी ने उस रात वहां आने के लिये पूरी तैयारी की थी।

दरअसल अभी उसे तीसरे 'फोर स्कवायर' का पता लगाना था कि वो कहां है। वह तीसरे फोर स्कवायर को मारने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर चुकी थी—परन्तु अभी उसे अपने तीसरे शिकार का न नाम मालूम था और न एड्रेस !

पूजा कोठारी जानती थी कि तीसरे शिकार के बारे में कोई महत्वपूर्ण जानकारी उसे कमल कपूर के फ्लैट से ही हासिल हो सकती है।

क्योंकि पूजा कोठारी का विश्वास था कि अच्छा काम करने वाले व्यक्ति तो जरूर बिछुड़ जाते हैं—मगर जो बुरा काम करते हैं, उनकी आपस में हमेशा गहरी दोस्ती रहती है। उनके मस्तिष्क में एक गिल्टी कॉशंस होता है—वो कभी-न-कभी उस स्थान को देखना चाहते हैं, जहां उन्होंने पाप किया। उस याद को अपने मन में रखना चाहते हैं—मौका मिलते ही वो उस पाप की फिर पुनरावृत्ति करना चाहते हैं—इसलिये उनके बीच हमेशा किसी-न-किसी प्रकार सम्पर्क-सूत्र बना रहता है।

पूजा कोठारी को यकीन था कि कमल कपूर के फ्लैट से उसे अपने तीसरे शिकार के बारे में जरूर कोई जानकारी मिल जायेगी।

उस रात उसने वहां जाने के लिये एक बूढ़े आदमी का मेकअप किया।

दरअसल सान फ्रांसिसको में नाटक मण्डलियां बहुत हैं—इसलिये वहां ऐसी कई दुकानें भी हैं, जो उन नाटक मण्डलियों को कास्ट्यूम सप्लाई करने का काम करती हैं। पूजा कोठारी ने ऐसी ही एक दुकान से बूढ़े आदमी की कास्ट्यूम और थोड़ा-बहुत मेकअप का सामान ले लिया।

फिर होटल के अपने कमरे में आकर पूजा कोठारी ने अपने बालों का कुछ इस तरह कसकर जूड़ा बांधा कि उसके बाल सिर से लगभग चिपक गये—उसके बाद उसने अधपके और थोड़े-थोड़े सफेद बालों का एक विग पहन लिया, जिसे वो कास्ट्यूम सप्लायर की दुकान से ही लेकर आयी थी।

चेहरे पर नकली दाढ़ी-मूंछें लगायीं।

फाउण्डेशन से अपनी आंखों के नीचे और माथे पर कुछ इस तरह मैकअप किया कि वहां झुर्रियां आने लगीं।

शरीर पर पेण्ट-शर्ट पहनी और ऊपर से एक बहुत ढीली-ढाली जैकिट चढ़ा ली, जिसमें उसके वक्षों के उभार पूरी तरह छिप गये।

फिर पूजा कोठारी ने अपने आपको ड्रेसिंग टेबिल में देखा।

अगले ही पल वो मुस्कुरा उठी।

एक खूबसूरत लड़की वहां से पूरी तरह नदारद हो चुकी थी। बल्कि उसकी जगह पचास-पचपन साल का एक तन्दरूस्त बूढ़ा नजर आ रहा था।

थोड़ी ही देर बाद जब पूजा कोठारी बूढ़े के उसी मेकअप में अपने कमरे से निकलकर होटल से बाहर गयी—तो कोई इस बात का शक न कर सका कि वो एक लड़की भी हो सकती है।

●●●

जैक और डिटेक्टिव स्कवायड के दोनों जवानों को कमल कपूर के फ्लैट के नीचे टहलते-टहलते अब रात के दो बज चुके थे—लेकिन अभी तक कोई असामान्य घटना न घटी थी।

"सर !" डिटेक्टिव स्कवायड का एक जवान नींद के कारण लम्बी-सी उबासी लेता हुआ बोला—"अब तो काफी रात हो चुकी है—अगर उस लड़की ने यहां आना होता—तो कब की आ चुकी होती। मैं समझता हूं कि अब हमें यहां से चलना चाहिये।"

"नहीं—नहीं।" जैक ने फौरन इंकार में गर्दन हिलाई—"हमें थोड़ी देर और इंतजार करना चाहिये।"

"लेकिन अब रात के दो बज चुके हैं सर !" दूसरे जवान ने भी उत्कण्ठा के साथ कहा—"और फिर वैसे भी यहां निगरानी करने के लिये वाचमैन तो है ही—हम उससे बोलकर चले जायेंगे कि अगर कोई लड़की कॉलोनी में जबरदस्ती घुसने की कोशिश करे, तो वह उसे पकड़कर रखे और तुरन्त हैडक्वार्टर में हम लोगों को सूचना दे।"

"फिर भी हमें थोड़ी देर और इंतजार करना चाहिये—क्या पता वो लड़की आ ही जाये।"

"ठीक है सर !" दोनों जवानों के चेहरे पर निराशा पुत गयी—"अगर आप कह रहे हैं—तो थोड़ी देर और इंतजार करके देख लेते हैं।"

●●●

इसी तरह इंतजार करते-करते आधा घण्टा और गुजर गया—लेकिन तब भी कोई असामान्य घटना न घटी।

अब डिटेक्टिव स्कवायड के दोनों जवान हद से ज्यादा बैचेन हो उठे थे—अपनी पूरी जिंदगी में उन्होंने इतना बोरियत से भरा काम पहले कभी नहीं किया था—वैसे भी रात होने के कारण उनकी आंखों में नींट पूरी तरह भर चुकी थी।

"सर—अब तो हमें चलना ही चाहिये।"

"हां, सर !" दूसरे जवान ने भी फौरन कहा—"अब तो वाकई काफी समय हो चुका है—अब वह लड़की नहीं आयेगी।"

"शायद तुम लोग ठीक कह रहे हो।" अधेड़ उम्र वाले जैक का धैर्य भी अब जवाब देने लगा था और उसके चेहरे पर भी निराशा पुत गयी थी—"हम लोगों को चलना ही चाहिये।" फिर एकाएक जैक ठिठका—"लेकिन चलने से पहले एक काम करते हैं—क्यों न एक बार ऊपर जाकर कमल कपूर का फ्लैट चैक कर आयें।"

"यह बात ठीक है सर !" उनमें से एक जवान ने तुरन्त कहा— "एक बार फ्लैट चैक कर लेते हैं—इससे दिल को भी थोड़ी तसल्ली हो जायेगी।"

"ठीक है—तो फिर चलो।"

वह तीनों लिफ्ट की तरफ बढ़ गये।

अगले ही पल लिफ्ट पंद्रहवीं मंजिल की तरफ भागी जा रही थी। लेकिन अगर ईश्वर उस काली अंधेरी रात में उन तीनों की आंखों पर पर्दा न डाल देता—तो उन्हें जरूर मालूम होता कि जिस पूजा कोठारी का वह इतनी देर से इंतजार कर रहे हैं—वह पूजा कोठारी न जाने कब की उस कॉलोनी के अंदर दाखिल हो चुकी थी और बूढ़े के वेष में ही एक फोर्ड कार के नीचे छुपी हुई घण्टों से उनकी एक-एक एक्टीविटी देख रही थी।

दरअसल उस कॉलोनी की पिछली बाउण्ड्री वॉल थोड़ी टूटी हुई थी और पूजा कोठारी ने उसी का भरपूर फायदा उठाया था—वह उस बॉउण्ड्री वाल को लांघकर न सिर्फ चुपचाप उस कॉलोनी के

अंदर घुस आयी बल्कि उन तीनों जासूसों को जरा-सी भी भनक दिये बिना वो तीर की तरह फोर्ड कार के नीचे भी घुस गयी।

●●●

लिफ्ट पंद्रहवीं मंजिल पर जाकर रुकी।

फिर वह तीनों जासूस बड़ी तेजी के साथ लिफ्ट से निकलकर कमल कपूर के फ्लैट की तरफ बढ़े—जो सामने ही था।

"सब कुछ ठीक है सर !" एक जवान फ्लैट के नजदीक पहुंचकर बोला—"दरवाजे के ताले पर वही सील लगी है—जो पुलिस ने लगायी थी।"

"अरे मूर्खो सील को भी चैक कर लो।" जैक बोला—"तुम नहीं जानते—आजकल बड़े-बड़े चालाक अपराधी हो गये हैं। वह अपना सारा काम करने के बाद सील काफी हद तक उसी तरह लगा जाते हैं, जैसे ओरिजनल सील लगी होती है।"

"ठीक है सर—हम सील भी चैक करते हैं।" दोनों जवानों ने दरवाजे पर लगी सील को काफी बारीकी से चैक किया।

"सील बिल्कुल ठीक है सर—कहीं कोई गड़बड़ नहीं।"

"कोई पत्तरा तो उखड़ा नहीं है ?"

"नहीं सर—सब कुछ बिल्कुल ठीक है। फिर भी अगर एक बार आप देख लें—तो ज्यादा बेहतर है।"

"अरे मूर्खो—इस उम्र में अगर मेरी आंखें सही होतीं और इस काजली अंधेरे में भी मैं तुम्हारी तरफ देख सकता—तो क्या यूं ही खड़े होकर मैं तुम्हारे साथ दिमाग खपाता।"

"फिर भी अगर आप देख लें—तो ज्यादा सही रहेगा।"

"क्यों—तुम दोनों को कुछ नजर नहीं आया ?"

"यह बात नहीं सर—दरअसल आप ज्यादा अनुभवी हैं।"

"पता नहीं क्या बकते हैं साले !" जैक भुनभुनाता हुआ आगे बढ़ा और फिर उसने आंखें फाड़-फाड़कर तथा कुछ टटोल-टटोलकर सील चैक की।

"ठीक है सर ?"

"हां—ठीक है।" जैक थोड़े अवसादपूर्ण लहजे में ही बोला—"चलो अब।"

फिर वह तीनों जासूस जिस तरह लिफ्ट में सवार होकर ऊपर आये थे—उसी तरह नीचे चले गये।

उसके बाद वह तीनों कॉलोनी के वॉचमैन से मिले—जैक ने

उसे विशेषरूप से अलर्ट रहने के लिये कहा और खतरनाक लड़की के बारे में कुछ जरूरी निर्देश दिये—फिर वह तीनों पुलिस पेट्रोलिंग वैन में बैठकर हैडक्वार्टर की तरफ रवाना हो गये।

●●●

बहरहाल उन तीनों के जाते ही पूजा कोठारी फौरन हरकत में आ गयी थी—वह सबसे पहले लिफ्ट में सवार होकर कमल कपूर के फ्लैट के सामने पहुंची।

लेकिन वहां दरवाजे पर सील लगी देख उसे गहरा झटका लगा।

कुछ देर वो वहीं खड़ी कुछ सोचती रही—फिर वो वापस पलटी—नीचे पहुंची। सील तोड़ना उसने मुनासिब नहीं समझा था।

मुश्किल से पांच मिनट बाद ही पूजा कोठारी एक वाटर पाइप के सहारे बड़ी तेजी से ऊपर की तरफ रेंगती जा रही थी—यह उसकी जूडो, कराटे और कुंगफू की ट्रेनिंग का ही परिणाम था--जो इस तरह ऊपर चढ़ने में उसे कोई दुश्वारी पेश न आयी।

पूजा कोठारी उसी पाइप के सहारे-सहारे पंद्रह मंजिल ऊपर चढ़ गयी—उस पाइप से सटी हुई ही कमल कपूर के फ्लैट की एक खिड़की थी—पूजा कोठारी उस खिड़की को पकड़कर लटक गयी—फिर उसने अपनी जेब से एक कटर निकाला—खिड़की का शीशा काटा और फिर उस शीशे को हाथ में लिये-लिये खिड़की के रास्ते उसने फ्लैट के अंदर छलांग लगा दी।

वह धम्म् से फर्श पर जाकर गिरी—लेकिन गिरते ही स्प्रिंग लगे खिलौने की तरह उछली और जम्प लेकर एकदम सीधी खड़ी हो गयी।

शीशा अभी भी उसके हाथों में सुरक्षित था।

फिर उसने शीशा एक तरफ रखा।

उसके बाद उसने बेहद आनन-फानन तीसरे 'फोर स्कवायर' का नाम और एड्रेस पता लगाने के लिये उस फ्लैट की तलाशी लेनी आरम्भ कर दी—तलाशी वो बहुत सावधानीपूर्वक ले रही थी—जिस चीज को जहां से उठाती, वापस वहीं रख देती।

सबसे पहले उसने वार्डरोब देखा।

वहां मौजूद एक-एक चीज बारीकी के साथ चैक की।

वहीं एक फोटो-एलबम भी रखी थी—पूजा कोठारी ने उस फोटो-एलबम को खासतौर पर देखा—क्योंकि उसे इस बात की पूरी उम्मीद थी कि उस एलबम के अंदर उन चारों दोस्तों का कोई समूह-चित्र जरूर मिलेगा।

लेकिन पूजा कोठारी ने एलबम का एक-एक चित्र देख डाला—परन्तु

उसमें कमल कपूर को छोड़कर उसके बाकी किसी दोस्त के चित्र न थे।
फिर पूजा कोठारी ने वहीं रखी मेज की दराज देखी।
ग्लोब कम्पार्टमेण्ट देखा।
अलमारी देखी।
मगर कहीं से भी ऐसा कोई सूत्र बरामद न हुआ—जहां से उसे तीसरे 'फोर स्कवायर' के बारे में कोई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो पाती।
काफी देर तक पूजा कोठारी तलाशी लेती रही—परन्तु आखिर में उसे निराशा ही हाथ लगी।
वो धम्म् से एक कुर्सी पर बैठ गयी—उसे लगने लगा कि शायद तीसरे 'फोर स्कवायर' के बारे में उसे कोई जानकारी नहीं मिल पायेगी।
उसी क्षण पूजा कोठारी की नजर अपनी उस अंगूठी पर पड़ी—जिसके अंदर पोटेशियम साइनाइट का कैप्सूल रखा था।
उसे अपनी प्रतिज्ञा याद आयी—उसके कानों में अपने ही शब्द गूंजे—"अगर मैं किसी एक फोर स्कवायर को भी न मार सकी—तो मैं उसी क्षण पोटेशियम साइनाइट का कैप्सूल खाकर आत्महत्या कर लूंगी।"
"नहीं।" कुर्सी पर बैठी-बैठी चिल्लाती पूजा कोठारी—"नहीं—मुझे इतनी आसानी से मरना नहीं है।"
"मुझे अभी उन दोनों को भी मौत के घाट उतारना है।"
"मुझे अभी दो हत्यायें और करनी हैं।"
नागिन की तरह फुंफकारती हुई पूजा कोठारी एकाएक झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी—उसका चेहरा ज्वालामुखी की तरह दहकने लगा—होठ गुस्से से फड़फड़ाने लगे।
"ल''' लेकिन तीसरे 'फोर स्कवायर' का नाम और एड्रेस कहां से मिलेगा?"
"त''' तुम्हें अभी इस फ्लैट की और तलाशी लेनी चाहिये।" तभी पूजा कोठारी के अंदर से कोई चिल्लाया।
"इतनी जल्दी हार मत मानों पूजा कोठारी—इतनी जल्दी हार मत मानो।"

●●●

और फिर सचमुच पूजा कोठारी के शरीर में मानों बिजली-सी भर गयी थी—वह पुनः बड़ी गरमजोशी के साथ उस फ्लैट की तलाशी लेने में जुट गयी।
उसने उन सभी चीजों की तलाशी ली—जिनकी वो पहली मर्तबा में तलाशी नहीं ले सकी थी।

काफी देर तक वो तलाशी लेती रही।

तभी वो एक ऐसी अलमारी के करीब जाकर ठिठकी—जिसके अंदर काफी सारी किताबें भरी हुई थीं। पूजा कोठारी ने उन किताबों की भी तलाशी लेनी आरम्भ की।

अभी पूजा कोठारी उन किताबों की तरफ से भी निराश ही होने जा रही थी कि तभी अकस्मात् एक किताब के अंदर से एक चिट्ठी निकलकर नीचे फर्श पर गिरी।

पूजा कोठारी ने फौरन वो चिट्ठी उठाई और अगले ही पल उसकी बांछें खिल गयीं।

वह तीसरे फोर स्कवायर की चिट्ठी थी।

तीसरा फोर स्कवायर—जो सऊदी अरब की राजधानी रियाध में रहता था।

पूजा कोठारी ने आनन-फानन वो चिट्ठी अपनी जैकिट की जेब में रखी—किताब बंद करके उसे वापस बिल्कुल उसी जगह रखा, जहां वो पहले रखी थी।

फिर पूजा कोठारी ने पूरे फ्लैट में एक सरसरी-सी दृष्टि दौड़ाई—हर चीज बिल्कुल पहले की तरह ही अपनी जगह मौजूद थी—फ्लैट की स्थिति देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वहां की तलाशी ली गयी है या वहां की किसी भी चीज को छेड़ा गया है।

लेकिन एक जगह पूजा कोठारी की दृष्टि जाकर ठिठक गयी—कटे हुए शीशे पर—उसे देखकर कोई भी आसानी से अंदाजा लगा सकता था कि वहां कोई घुसा है।

"इसका भी कोई इंतजाम करना होगा।" पूजा कोठारी होठों-ही-होठों में बुदबुदाई।

दरअसल वो अपने खिलाफ वहां कैसा भी कोई सबूत छोड़कर नहीं जाना चाहती थी।

उसने कटा हुआ शीशा उठाया—खिड़की के रास्ते वापस बाहर निकली और पाइप पर लटक गयी—पाइप पर लटके-लटके उसने कटा हुआ शीशा खिड़की पर बिल्कुल इस तरह फिट किया कि वह नीचे से देखने पर किसी भी हालत में कटा हुआ न लगे।

उसके बाद वो छिपकली की तरह बड़ी तेजी के साथ रेंगती हुई नीचे उतर गयी और फिर टूटी हुई बॉउण्ड्री वाल को लांघकर कॉलोनी से बाहर निकल गयी।

कॉलोनी का वाचमैन अभी भी पहले की तरह बेहद अलर्ट होकर

मेन गेट पर पहरा दे रहा था और उसे कानों-कान इस बात की भनक भी नहीं थी कि कितनी बड़ी घटना वहां घट चुकी है।

●●●

लेकिन अभी उस कॉलोनी में एक घटना और घटनी थी।

पूजा कोठारी ने कटे हुए शीशे का इंतजाम करने के लिये वहां वापस जो आना था।

बहरहाल पूजा कोठारी ने उस काम को करने के लिये भी बड़े आनन-फानन अपनी योजना के पत्ते बिछाये।

साउथ एवेन्यू के उस इलाके के करीब ही एक लोकल रेलवे लाइन थी—जहां से रात के समय बहुत कम स्पीड से ट्रेनें गुजरती थीं।

पूजा कोठारी बूढ़े के उस वेष में ही उस रेलवे लाइन के नजदीक जाकर खड़ी हो गयी—ट्रेनें अपनी धीमी रफ्तार से आ जा रही थीं—परन्तु साफ लगता था कि पूजा कोठारी को उसमें चढ़ना नहीं है—वहां खड़े होने के पीछे उसका मकसद कुछ और है।

जल्द ही पूजा कोठारी का झुर्रीदार चेहरा चमक उठा—उसे अपने मतलब के आदमी मिल गये थे—जैसे ही एक लोकल ट्रेन उधर से गुजरी, तभी उसमें से कुछ शरारती लड़के भयानक शोर-शराबा करते हुए नीचे कूद पड़े और उसी की तरफ बढ़े।

"क्या बात है अंकल ?" उनमें से एक शरारती लड़का पूजा कोठारी के पास आकर दांत निकालता हुआ हंसा—"अंधेरे में कैसे खड़े हो—क्या चाहिये ?"

"खड़ा क्या हूं दोस्तों !" पूजा कोठारी अपनी आवाज को मर्दानी बनाने की भरसक कोशिश करती हुई बोली—"बस तुम्हारे जैसा ही आदमी हूं—चाहता हूं कि रात को इस अंधेरे में कुछ चोरी वगैरा करूं—जिससे कुछ माल हाथ लग जाये।"

"वाह—इस उम्र में भी बड़े बुलंद इरादे हैं अंकल !" एक लड़के ने पूजा कोठारी के कंधे पर जोर से हाथ मारा—"लगते भी काफी तगड़े हो—वैसे कर क्या सकते हो ?"

"कर तो मैं बहुत कुछ सकता हूं पट्ठों !" पूजा कोठारी पहले की तरह ही मर्दानी आवाज में बोली—"अगर तुम्हारा साथ रहे तो।"

"हम तो तुम्हारे साथ ही हैं अंकल—लेकिन कुछ माल-पानी भी मिलेगा या नहीं ?"

"क्यों नहीं मिलेगा माल पानी।" पूजा कोठारी फौरन बोली—"मैं पिछले दो-तीन दिन से एक फ्लैट पर नजर रखे हुए हूं—चलो मेरे साथ।"

"लेकिन इस इलाके के पुलिसिये बड़े खतरनाक होते हैं अंकल !" तभी एक लड़का कुछ सकपकाकर बोला।

"अरे कुछ नहीं होगा—अगर कोई पुलिसिया अकस्मात् आ भी गया—तो उसे कुछ दे दिला देंगे—मैं सब तरीके जानता हूं।"

"वाह—तुम तो बहुत चालाक नजर आते हो बुढ़ऊ !" उसी लड़के ने फिर पूजा कोठारी के कंधे पर धोल जमायी।

"चलो।" पूजा कोठारी बोली—"अब देर मत करो।"

वह चारों शरारती लड़के फौरन पूजा कोठारी के पीछे-पीछे चल पड़े।

पूजा कोठारी उस समय मवाली टाइप के बूढ़े आदमी का बड़ा शानदार अभिनय कर रही थी।

●●●

वह उन चारों को लेकर 'स्वामी विवेकानन्द कॉलोनी' से थोड़ा फासले से जाकर खड़ी हो गयी।

"वह सामने कॉलोनी देख रहे हो बच्चों ?"

"बिल्कुल देख रहे हैं।" चारों लड़के बोले—"क्या उसी कॉलोनी में वो फ्लैट है—जिस पर तुम पिछले कई दिन से नजर रखे हुए हो ?"

"एकदम सही अंदाजा लगाया।" पूजा कोठारी बोली—"उसी कॉलोनी की विंग बी इमारत में पंद्रहवी मंजिल पर चार नम्बर का एक फ्लैट है। मैं कई दिन से देख रहा हूं—वहां एक अकेली बूढ़ी औरत रहती है—उसका लड़का कहीं गया हुआ है। बड़ी मालदार औरत है पट्ठों—खूब जमकर माल पानी मिलेगा।"

"नहीं—नहीं।" एक लड़का कुछ घबरा उठा—"खून के नाम हमें डर लगता है अंकल !"

"अरे चिन्ता मत करो पट्ठों।" पूजा कोठारी पहले की तरह ही मर्दाना स्वर में बोली—"तुम्हें खून नहीं करना पड़ेगा—मैंने शाम के समय उस बुढ़िया को भी कहीं जाते देखा था—अब फ्लैट में कोई नहीं है।"

"फिर ठीक है अंकल !" चारों पुनः उत्साह से भर गये—"फिर तो हम मोर्चा संभाल लेंगे।"

"परन्तु कॉलोनी के मेन गेट पर जो वाचमैन खड़ा है।" उनमें से एक बोला—"उससे हम किस तरह निपटेंगे ?"

"उससे निपटने का भी एक शानदार तरीका मैं तुम लोगों को बताता हूं।"

पूजा कोठारी ने थोड़ा आगे को झुककर उन चारों के कान में धीरे से कुछ फुसफुसाया।

"वाह !" चारों चहक उठे—"सचमुच तुम्हारे दिमाग की दाद देनी पड़ेगी बुढ़ऊ !"

"अभी तुमने मेरा दिमाग देखा कहां है।" पूजा कोठारी हंसी—"चलो—अब ज्यादा देर मत करो। कहीं ऐसा न हो कि सोच-विचार में ही सारी रात गुजर जाये।"

●●●

उसके बाद पूजा कोठारी की योजना के अनुसार उन चारों में जो सबसे ज्यादा तगड़े दो लड़के थे—वह तेज-तेज कदमों से वाचमैन की तरफ बढ़ गये—उन्होंने उसके पास जाकर कोई एड्रेस पूछा—उस वाचमैन ने एड्रेस बताने के लिये जैसे ही मुंह खोला, उन दोनों लड़कों ने धड़ाधड़ अपने प्रचण्ड घूंसे उसकी खोपड़ी पर जड़ दिये।

वाचमैन बिना चीख-पुकार मचाये उनकी बांहों में झूल गया और बेहोश हो गया।

दोनों लड़के उसे घसीटते हुए वहीं बने एक छोटे-से केबिन के अंदर ले गये और उसके भैंसे जैसे मरियल शरीर को एक कुर्सी पर पटक दिया।

अब रास्ता साफ था।

फौरन वह चारों लड़के, पूजा कोठारी के साथ कॉलोनी के अंदर घुस गये।

"इस चोरी के लिये इतना बड़ा रिस्क तो हम ले रहे हैं।" उनमें से एक लड़का कुछ चिन्तित स्वर में बोला—"परन्तु अगर फ्लैट में कुछ माल पानी हाथ न लगा—तो बड़ा दुःख होगा।"

"चिन्ता क्यों करते हो बच्चों।" पूजा कोठारी ने फौरन पांच-पांच सौ डॉलर के चार नोट निकालकर उनकी तरफ बढ़ाये—"अगर फ्लैट में कुछ हाथ न लगे—तो इन नोटों को अपने पास रख लेना।"

"वाह !" चारों ने फौरन पांच-पांच सौ डॉलर झपट लिये—"वाकई बड़े दिलवाले हो बुढ़ऊ !"

"दिलवाला भी हूं और दिमाग वाला भी।" पूजा कोठारी बोली—"वह तो बस बूढ़ा होने की वजह से अपने शरीर से थोड़ा मात खा गया हूं—इसलिये पाइप के सहारे इतना ऊपर चढ़ते हुए थोड़ा डर लगता है। फ्लैट के दरवाजे के रास्ते में घुसना नहीं चाहता—क्योंकि उसमें खतरा है—अगर आसपास का कोई व्यक्ति जाग गया, तो मैं फंस जाऊंगा—वरना यह काम तो मैं अकेला ही करके दिखाता।"

"चढ़ने की तो कोई चिन्ता नहीं अंकल !" उनमें से एक

बोला—"चढ़ तो मैं जाऊंगा—पन्द्रह क्या बीस मंजिल तक भी मैं पाइप पकड़कर चढ़ सकता हूं।"

"मुझे मालूम है बच्चों!" पूजा कोठारी के झुर्रीयुक्त चेहरे पर मुस्कान दौड़ी—"तुम्हारे जैसी उम्र में मेरा भी यही हाल था।"

"लेकिन उस फ्लैट की खिड़की कौन-सी है?"

"पाइप के सहारे-सहारे पन्द्रहवीं मंजिल पर जो खिड़की नजर आ रही है—बस,वही उस फ्लैट की खिड़की है। लेकिन तुम उस खिड़की का शीशा किस तरह तोड़ोगे?"

"शीशा!" लड़का हंसा—"शीशा तो हम अभी तोड़ते हैं बुढ़ऊ—लो एक ईंट!"

उनमें से एक लड़के ने दौड़कर वहीं पड़ी एक ईंट उठा ली—दूसरे ने अद्धा उठाया—फिर उन्होंने निशाना साधकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति से ईंट और अद्धे को ऊपर की तरफ उछाला।

निशाना अचूक था—आखिर वह उनका रोजाना का काम था—ईंट और अद्धा धड़ाधड़ खिड़की के उसी शीशे पर जाकर लगे, जो कटा हुआ था—तत्काल उस शीशे के परखच्चे उड़ गये।

"वाह पट्ठों—तुम्हें तो फौज में होना चाहिए था।" पूजा कोठारी ने खुश होकर कहा—"अब चढ़ जाओ—मैं यहीं खड़ा तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।"

वह चारों फौरन पाइप के सहारे-सहारे बड़ी तेजी के साथ ऊपर चढ़ते हुए फ्लैट के अंदर घुस गए।

"भगवान तुम्हारा भला करे।"

पूजा कोठारी ने एक आखिरी दृष्टि उस खिड़की पर डाली—जिसमें से वह चारों अंदर घुसे थे—फिर वह बंदूक से छूटी गोली की तरह वहां से भागी।

वहां से भागकर पूजा कोठारी सीधी लोकल रेलवे लाइन पर पहुंची और तभी गुजरने वाली एक लोकल ट्रेन के आखिरी डिब्बे का दरवाजा पकड़कर झट से उसमें चढ़ गयी और अंदर जाकर बैठ गयी।

●●●

चौथा भाग : रियाध (साऊदी अरब)

पूजा कोठारी ने अगले दिन ही सान फ्रांसिसको छोड़ दिया था। वह अपना तीसरा शिकार करने के लिए सऊदी अरब की राजधानी रियाध के लिए रवाना हो गयी।

रियाध—जो अपनी खूबसूरत इमारतों, खूबसूरत सड़कों और बेपनाह धन-दौलत के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। रियाध के बारे

में कहा जाता है कि दुनिया की कीमती-से-कीमती कार जो आपको कहीं देखने के लिये न मिले—वो आपको रियाध की सड़क पर दौड़ती हुई आसानी से मिल जायेगी।

हवाई जहाज में बैठते ही पूजा कोठारी ने उस लैटर को निकालकर फिर पढ़ा—जो उसे कमल कपूर के फ्लैट से मिला था।

उस लैटर के मुताबिक तीसरे फोर स्कवायर का नाम 'सलमान आफरीदी' था।

सलमान आफरीदी—जो आज की तारीख में सऊदी अरब का बहुत बड़ा चित्रकार था। अमूर्त कला के क्षेत्र में उसका नाम पूरी दुनिया में प्रसिद्ध था और उसकी एक-एक पेण्टिंग कई-कई लाख डॉलर में बिक जाती थी। इतना ही नहीं—वह कई बार सऊदी अरब की सरकार द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका था और वहां के शाह के बहुत करीबी और खास मित्रों में उसकी गणना होती थी।

●●●

दोपहर की तेज तपती हुई धूप उस समय रियाध में चारों तरफ फैली हुई थी—जब सऊदी अरब के यात्री वाहक विमान ने रियाध एअरपोर्ट पर लैण्ड किया।

थोड़ी ही देर बाद नीली जिन्स और लाल टॉप में सजी-धजी पूजा कोठारी हाथ में अटैची उठाये एअरपोर्ट से बाहर निकली—उस समय वो बहुत खूबसूरत नजर आ रही थी।

उसके माथे पर सिलवटें पड़ी हुई थीं—जो इस बात की गवाह थीं कि वो अपने तीसरे शिकार के इर्द-गिर्द बहुत जल्द कोई चक्रव्यूह रचने जा रही है।

●●●

बहरहाल खेल शुरू हुआ।

एअरपोर्ट से बाहर निकलते ही पूजा कोठारी को सड़क के किनारे बड़े-बड़े होर्डिंग लगे नजर आये।

आइये—विश्व के महानतम् चित्रकार से मिलिये।

सलमान आफ़रीदी से मिलने का सुनहरी अवसर !

उन बड़े-बड़े होर्डिंगों पर नीचे जो ब्यौरा लिखा था—उसके मुताबिक सलमान आफरीदी के चित्रों की विशाल प्रदर्शनी रियाध की प्रसिद्ध 'हमीमा आर्ट गैलरी' में लगी हुई थी।

उस प्रदर्शनी का सबसे भव्य आकर्षण जो था—वो यह था कि सलमान आफरीदी ने उस दिन शाम के 4 बजे से 6 बजे तक आर्ट

गैलरी में ही दर्शकों के बीच मौजूद रहना था। और जिस तरह से उस बात की पब्लिसिटी की जा रही थी—उससे साफ जाहिर होता था कि सलमान आफरीदी वहां की बहुत बड़ी हस्ती था और उसका इस प्रकार पब्लिक के बीच आना काफी बड़ी बात थी।

उन होर्डिंग्स को देखकर पूजा कोठारी मुस्कुरा उठी।

यानि बहुत जल्द उसकी फोर स्कवायर नम्बर तीन से मुलाकात होने जा रही थी।

●●●

पूजा कोठारी ने सबसे पहले रियाध के पांच सितारा होटल में अपने लिये एक कमरा बुक किया।

फिर उसने षड़यन्त्र रचने के लिये एक बार फिर मेकअप का सहारा लिया—इस बार वह रूसी लड़की बनी।

उसने अपने बालों को भूरे रंग में शेड कर लिया—उसकी आंखें नीली थीं ही—ऊपर से उसने ड्रेस कुछ रूसी स्टाइल की पहन ली—तो वह पूरी तरह रशियन लड़की नजर आने लगी।

शाम को वह '[illegible] आर्ट गैलरी' पहुंची—तो वहां पब्लिक का हुज्जूम उमड़ा हुआ था। सलमान आफरीदी आर्ट गैलरी के अंदर आ चुका था और पब्लिक उससे मिलने के लिये पागल हो रही थी—सबके हाथों में ऑटोग्राफ बुक थी और वह गला फाड़-फाड़कर 'सलमान आफरीदी—सलमान आफरीदी' चिल्ला रहे थे।

पूजा कोठारी ने देखा—उस भीड़ में लड़कियों की तादाद भी अच्छी-खासी थी।

पूजा कोठारी ने अपने पर्स में-से ऑटोग्राफ बुक निकाल ली तथा फिर भीड़ को चीरती हुई सलमान आफरीदी के नजदीक पहुंची।

और !

उसके नजदीक पहुंचते ही पूजा कोठारी के दिलो-दिमाग पर भयानक बिजली गड़गड़ाती हुई गिरी—उसे देखते ही वो पहचान गयी—वो वही था—वही—जो नपुंसक था। जो 13 मार्च की रात ट्रेन में अपने दोस्तों को बुरी तरह उत्तेजित होकर सिर्फ गाइड-लाइन दे रहा था कि उन्हें क्या-क्या करना चाहिये।

सलमान आफरीदी को देखते ही पूजा कोठारी का चेहरा भभकने लगा—उसने बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर गुस्से का दौरा पड़ने से बचाया।

●●●

"हैलो सर !" पूजा कोठारी जैस्मीन के फूलों जैसी मधुर मुस्कान बिखरते हुए बोली—"क्या आप मुझे भी ऑटोग्राफ देंगे ?"

"क्यों नहीं—जरूर।" सलमान आफरीदी ने उसके हाथ से ऑटोग्राफ बुक ले ली—"तुम्हारा नाम ?"

"मुझे सिल्विया कहते हैं।"

"ओह—सिल्विया !" सलमान आफरीदी खुशी से चहका—"सिल्विया तो मेरी बड़ी मशहूर पेण्टिंग का नाम भी था।"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा सर !" पूजा कोठारी प्रफ्फुलित होती हुई बोली—"दरअसल मैं एक रूसी लड़की हूं और आपकी जबरदस्त प्रशंसिका हूं। मेरे मां-बाप ने तो मेरा नाम कुछ और रखा था—लेकिन मैं आपकी सिल्विया नाम की पेण्टिंग से इस कदर प्रभावित हुई कि मैंने अपना नाम ही सिल्विया रखकर उस पेण्टिंग को अपनी जिंदगी का एक हिस्सा बना लिया।"

"वैरी गुड !" सलमान आफरीदी के चेहरे पर मुस्कान और ज्यादा फैल गयी—"सचमुच मैंने तुम्हारे जैसी प्रशंसिका पहले कभी नहीं देखी—जो मेरी कला से इतना प्यार करती है।"

"आप नहीं जानते सर—आप कितने महान हैं—आपकी कला कितनी महान है।"

"मैं महान नहीं।" सलमान आफरीदी खुशी से भर्राये स्वर में बोला—"बल्कि तुम लोगों के प्यार ने मुझे महान बना दिया है।"

फिर सलमान आफरीदी ने ऑटोग्राफ बुक पर सिग्नेचर किये—उसके गाल का चुम्बन लिया और उसका कंधा थपथपाया।

"शाम के छः बजे के बाद जब यह प्रोग्राम खत्म हो जाये।" सलमान आफरीदी, पूजा कोठारी से बोला—"तब मुझसे मिलना।"

"जरूर सर—जरूर !"

उसके बाद सलमान आफरीदी पुनः पहले की तरह ही अपने प्रशंसकों से घिरा हुआ जल्दी-जल्दी उनकी ऑटोग्राफ बुकों पर सिग्नेचर करने लगा था।

भीड़ में अफरा-तफरी थी—दीवानगी थी—कोई सलमान आफरीदी को छूना चाह रहा था—कोई उससे हाथ मिलाना चाह रहा था—कोई अपने होंठ उसके गालों पर रखकर खुश होता।

पूजा कोठारी भी खुश थी—आखिर वो अपने षड़यन्त्र का पहला पत्ता सफलतापूर्वक फैंक चुकी थी।

●●●

शाम के छः बजे तक सलमान आफरीदी अपने प्रशंसकों के बीच बेहद व्यस्त रहा और उसे सांस लेने तक भी फुर्सत न मिली।

लेकिन छः बजे के बाद 'हमीमा आर्ट गैलरी' बंद कर दी गयी—इसलिये पब्लिक का जो हुज्जूम वहां उमड़ा हुआ था, वह भी खत्म हो गया।

तब आर्ट गैलरी के 'रेस्ट रूम' में सलमान आफरीदी और पूजा कोठारी के बीच दूसरी मुलाकात हुई।

सलमान आफरीदी उस समय एक कुर्सी पर अधलेटा-सा पड़ा था और पूजा कोठारी उसके सामने सोफा चेयर पर बैठी थी।

"आपको मेरी बात सुनकर हैरानी होगी सर !" पूजा कोठारी मुस्कुराते हुए बोली—"मैं रूस से खासतौर पर सऊदी अरब इसलिये आयी हूं—ताकि आपसे मुलाकात कर सकूं—आप जैसे महान चित्रकार के दर्शन कर सकूं।"

"ओह—रिअली !" सलमान आफरीदी के चेहरे पर चित्ताकर्षक मुस्कान दौड़ी—"सचमुच मैंने तुम्हारे जैसी फैन पहले कभी नहीं देखी।"

"आपके चित्र हैं ही ऐसे सर—जो भी उन्हें एक बार देखे, आपका फैन हो जाये।"

उसी पल पूजा कोठारी की दृष्टि सलमान आफरीदी के गले पर पड़ी—वहां दिल के आकार वाला वही लॉकिट झूल रहा था—जो सभी 'फोर स्कवायर' की परमानेन्ट निशानी था—जिसमें बेशकीमती हीरे जड़े थे।

"सर !" पूजा कोठारी ने फौरन ही अगली चाल चली—"मैं अपने वतन से इतनी दूर आपसे मिलने के लिये आ तो गयी हूं—अब मेरी एक इच्छा और है—अगर आप उसे पूरी कर दें तो।"

"क्यों नहीं।" सलमान आफरीदी फौरन बोला—"तुम्हारे जैसी अपनी किसी भी प्रशंसिका की कोई इच्छा पूरी करके मुझे खुद बहुत खुशी होगी। बे-हिचक बताओ—तुम क्या चाहती हो ?"

"सर—मैं कुछ दिन आपके साथ रहकर आपके काम करने का अंदाज देखना चाहती हूं।" पूजा कोठारी बोली—"मैं देखना चाहती हूं कि आप चित्र किस तरह बनाते हैं। लेकिन एक बात से आप बेफिक्र रहिये सर !" पूजा कोठारी ने जल्दी से कहा—"मैं आपको डिस्टर्ब बिल्कुल भी नहीं करूंगी—मेरी वजह से आपको कोई परेशानी नहीं होगी।"

"तुम सचमुच मेरी बड़ी अच्छी फैन हो।" सलमान आफरीदी

मुस्कुराते हुए आराम कुर्सी पर सीधा बैठा और उसने आगे झुककर पूजा कोठारी का गाल थपथपाया।

"इ''' इसका मतलब !" पूजा कोठारी की आवाज खुशी से कांपी—"इसका मतलब आपने मुझे अपने साथ रहने की इजाजत दे दी सर ?"

"तुम्हें क्या लगता है—मैं मना कर सकता...?"

"ओह सर !" पूजा कोठारी सोफा चेयर से उछली और उससे कसकर [illegible]—"आप सचमुच अच्छे हैं—बहुत अच्छे।"

[illegible] ने उसके गाल का प्रगाढ़ चुम्बन ले लिया था।

इस [illegible] में कदम रखते ही पूजा कोठारी ने अपने तीसरे शिकार का [illegible] शुरू कर दिया।

थोड़ी ही देर बाद सलमान आफरीदी की कार में बैठकर उसके घर चली गयी थी।

घर क्या था—रियाध में सलमान आफरीदी का एक महल जैसा बंगला था—जिसमें वो राजा-महाराजाओं जैसी शानों-शौकत के साथ रहता था।

वहां एक बहुत सजी-धजी और खूबसूरत औरत ने सलमान आफरीदी का स्वागत किया। किसी औरत को सलमान आफरीदी के बंगले में देखकर पूजा कोठारी के दिमाग में बम-सा फटा।

"इससे मिलो।" सलमान आफरीदी, पूजा कोठारी से बोला—"यह हसीना है।"

"ह''' हसीना !"

"हां—हसीना ! मेरे बंगले की केअरटेकर।"

"ओह !"

पूजा कोठारी के दिमाग में मौजूद धुंए के सारे बादल एक साथ छंट गये।

तो हसीना नाम की वह औरत नौकरानी थी।

लेकिन उसके हाव-भाव और शान ऐसी थी—जैसे वह उस बंगले की मालकिन हो।

"दरअसल इस पूरे बंगले की देखभाल हसीना ही करती है।" सलमान आफरीदी मुस्कुराकर बोला—"इस समय तुम्हें बंगले की एक-एक चीज जो अपनी जगह सलीके के साथ रखी हुई और चमचमाती नजर आ रही है—उसके पीछे हसीना का ही हाथ है। और हसीना !" सलमान आफरीदी ने हसीना की तरफ देखा—"इनसे

मिलो—यह है सिल्विया ! मेरी बहुत बड़ी फैन—रूस से खासतौर पर रियाध इसलिये आयी हैं, ताकि मुझसे मुलाकात कर सकें। अब यह कुछ दिन तक हमारे साथ इसी बंगले में रहेंगी—इस बीच इन्हें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये—इन्हें इनका कमरा दिखा दो।"

"आइये मैडम !" हसीना, पूजा कोठारी से बोली—"मैं आपको आपके कमरे में लिये चलती हूं।"

"चलो।"

पूजा कोठारी, हसीना के पीछे-पीछे चल पड़ी।

लेकिन पूजा कोठारी को बिल्कुल साफ महसूस हो रहा था कि हसीना को उसका वहां आना जरा भी अच्छा नहीं लगा है।

बंगला वाकई बहुत बड़ा था—जिसमें बड़े-बड़े गलियारे थे—विशाल हॉल कमरे थे—कीमती गलीचे बिछे थे और झाड़-फानूस लटके थे।

हसीना हॉल जैसे ही एक काफ़ी बड़े बैडरूम में पूजा कोठारी को ले गयी।

"आपको यह रूम पसंद है मैडम ?" हसीना ने उससे पूछा।

"बिल्कुल पसंद है।" पूजा कोठारी ने खुश होकर जवाब दिया—"फर्स्ट क्लास !"

"अगर आपको किसी चीज की जरूरत पड़े—तो इस बेल को बजा देना।" हसीना ने बैडरूम में ही लगे एक स्विच की तरफ इशारा किया—"मैं फौरन आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगी।"

"शुक्रिया !"

फिर पूजा कोठारी को उस बैडरूम में छोड़कर हसीना वहां से चली गयी।

पूजा कोठारी, हसीना को जाते देखती रही।

हसीना की चाल साधारण नहीं थी—वह जब चलती थी, तो उसके दोनों कूल्हे आपस में रगड़ खा जाते थे और उनमें अजीब-सी थिरकन पैदा हो जाती थी।

पूजा कोठारी चौकन्ना हो उठी—उसकी आधी जिंदगी बंगलौर की सड़कों पर 'गरम छुरी' के रूप में गुजरी थी—वह न सिर्फ मर्दों की बल्कि औरतों की भी नस-नस से वाकिफ थी। और हसीना को देखकर वह एक बात दावे से कह सकती थी—वह औरत आने वाले दिनों में उसके लिये खतरा बन सकती है।

●●●

बहरहाल पूजा कोठारी उसी रात से सक्रिय हो उठी।

रात का एक बज रहा था—जब वह बड़ी खामोशी के साथ अपने बैडरूम से बाहर निकली और उसने पूरे बंगले का निरीक्षण करने का फैसला किया।

सलमान आफरीदी का बैडरूम बंगले में ग्राउण्ड फ्लोर पर था और जहां तक पूजा कोठारी का अनुमान था—हसीना भी ग्राउ-ड फ्लोर के ही किसी रूम में रहती थी।

वह बंगले के एक-एक कमरे का निरीक्षण करती हुई सलमान आफरीदी के बैडरूम के सामने पहुंची—और वहां पहुंचते ही पूजा कोठारी के शरीर में चार सौ चालीस वोल्ट से भी ज्यादा तेज बिजली दौड़ गयी।

दरअसल सलमान आफ़रीदी के बैडरूम में जीरो वाट का बल्ब जल रहा था और उसके अंदर से मादक कराहों के स्वर सुनाई दे रहे थे।

पूजा कोठारी ने फौरन अपनी आंख दरवाजे की झिर्री से सटा दी और अंदर का दृश्य देखा।

अंदर का दृश्य और भी ज्यादा सनसनीखेज था।

हसीना बिस्तर पर बिल्कुल नग्न लेटी थी।

सलमान आफरीदी भी निर्वस्त्र था।

इस समय सलमान आफरीदी, हसीना के जिस्म पर झुका हुआ था और शराब पी रहा था।

फिर उसने हसीना की कमर में बांहें पिरोकर उसे अपनी जांघ पर लिटा लिया और उसके होठों से शराब का गिलास सटाने लगा।

"नहीं।" हसीना कुनमुनाई—"अब और नहीं—मैं पहले ही काफी पी चुकी हूं।"

"थोड़ी और।"

"ल''लेकिन।"

"ओह कम ऑन डार्लिंग।" सलमान आफरीदी ने हसीना के काफी बड़े-बड़े वक्षों को पकड़कर भींचा—तो हसीना पुनः बड़े मादक अंदाज में खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"तुम वाकई बड़े शैतान हो डियर!" हसीना ने शराब के तीन-चार घूंट भर लिये थे—"जबसे तुम्हारे सोहबत में आयी हूं—तबसे तुमने शराब पीने के मामले में मुझे पूरी तरह ड्रिंकर बना दिया है।"

"शराब चीज ही ऐसी है।" सलमान आफरीदी मदमस्त अंदाज में बोला—"कमबख्त एक बार जिसके होठोंको लग जाये—बस लग जाये।"

सलमान आफरीदी ने नीचे झुककर हसीना के गाल का चुम्बन लिया और फिर वो उसकी गोरी-चिट्टी जांघें सहलाने लगा।

तभी सलमान आफरीदी ने एक बड़ी अजीबोगरीब हरकत दिखाई।

उसने थोड़ी-सी शराब हसीना के संगमरमरी बदन पर उड़ेल दी।

"क...क्या कर रहे हो?" हसीना उछली।

"लेटी रहो।" सलमान आफरीदी ने उसके मज़बूत कंधे कसकर जकड़ लिए थे—"लेटी रहो।"

"मगर कुछ कर भी रहे हो?"

"शराब पी रहा हूं—शराब!"

और उसके बाद सलमान आफरीदी सचमुच हसीना के जिस्म पर झुक गया तथा जबान से उसके शीशे जैसे बदन पर बहती शराब चाटने लगा।

"तुम सचमुच बहुत बदमाश हो।" हसीना मुस्कुरायी।

"ख़बरदार—मुझे बदमाश मत कहो।" सलमान आफरीदी हंसा था—"वरना मेरे चाहने वाले तुम्हारा गला काट डालेंगे।"

हसीना ने बड़े प्यार से उसकी पीठ पर एक मुक्का जमा दिया और उसके नितम्बों को अपनी दोनों मुट्ठियों में कसकर भींचा।

●●●

वह दोनों बड़े मजे के साथ सैक्स का वो आनन्ददायक ख़ेल, ख़ेल रहे थे।

पूजा कोठारी भी बड़ी दिलचस्पी से उनकी एक-एक हरकत पर नजर रखे थी।

इस बीच उसने अनुभव किया कि वह दोनों कुछ 'गरम' होने लगे थे—खासतौर पर हसीना तो कुछ ज्यादा ही गरम हो रही थी।

उसके गरम होने का पहला सबूत तो यही था कि वो बोल कम रही थी—फिर उसके हाथ सलमान आफरीदी के जिस्म को जल्दी-जल्दी सहलाने लगे थे और उसके दोनों पैरों की एड़ियां बिस्तर को बुरी तरह मसल रही थीं।

सलमान आफरीदी भी उत्तेजित होकर हसीना के वक्षों को सहलाने लगा और उसके साफ-सुथरे नितम्बों को जोर-जोर से भींचने लगा।

दोनों मस्त हो उठे।

फिर प्रगाढ़ चुम्बनों की आवाजें कमरे में गूंजने लगीं।

"स...सलमान!" हसीना के मुंह से कंपकंपाता स्वर निकला—उसकी नाक की नसिकाओं से भभकारे छूट रहे थे—"प... प्लीज—अब और नहीं—अ...और नहीं।"

"थोड़ी देर और।" सलमान आफरीदी की आवाज भी भारी हो गयी थी—वह उसकी गोरी बांहों के दायरे से कसकर चिपट गया।

वह उसके एक-एक अंग को चूमने लगा।

"म...मुझे शांत करो सलमान!" हसीना पागलों की तरह बोली—"प...प्लीज—मुझे शांत करो।"

"थोड़ी देर और रुको।"

"न...नहीं।" हसीना ने उसका जिस्म पकड़कर झंझोड़ा—उसके घुटने सलमान आफरीदी की दोनों जांघों के बीच में घुसने लगे—"म... मुझे शांत करो—वरना मैं पागल हो जाऊंगी सलमान!"

सैक्स के उस खेल को देखने में पूजा कोठारी की दिलचस्पी अब हद से ज्यादा बढ़ गयी। वाकई वो एक बेहद सनसनीखेज खेल था—और अब पूजा कोठारी ने यह देखना था कि उस खेल का अन्त किस तरह होता है।

●●●

बहरहाल उस खेल का अंत भी बड़ा दिलचस्प हुआ।

ऐसा अन्त—जिसकी पूजा कोठारी ने कल्पना भी नहीं की थी।

एकाएक सलमान आफरीदी के हाथ में एक 'सैक्स बेल्ट' नजर आने लगी।

सैक्स बेल्ट—जिसके आगे इंसान की खाल जैसी एक बहुत मुलायम रबड़ का आर्टीफिशल अंग लगा हुआ था और उसका आकार किसी भी तंदुरुस्त पुरुष के 'विशेष अंग' जितना था।

उस 'सैक्स बेल्ट' का इस्तेमाल यूरोप में ज्यादातर बूढ़े व्यक्ति करते हैं।

सलमान आफरीदी ने उस 'सैक्स बेल्ट' को अपनी कमर के साथ बांध लिया।

इस समय अगर कोई उसे एकाएक देखे—तो इस बात की कल्पना भी न कर सके कि वह नपुंसक है।

और—उसके बाद बिस्तर पर तूफान आ गया।

सलमान आफरीदी उफनती हुई नदी बन गया और हसीना लहरों की तरह उसके आगोश में सिमट-सिमटकर छटपटाने लगी।

उसके कण्ठ से हल्की-हल्की चीखें निकलने लगीं।

और जल्दी ही उसके अंतर से फुहारें छूट पड़ी थीं।

वो शान्त हो गयी—उसके हाथ-पैर ढीले पड़ गये।

●●●

पूजा कोठारी दौड़ती हुई अपने बैडरूम में पहुंची और अपने बिस्तर पर लेटकर बुरी तरह हांफने लगी।

उस अमानवीय सहवास क्रिया को देखकर उसका मन घृणा से भर उठा था—लेकिन वहीं उसके भीतर भी कुछ काम वासना जाग उठी।

उसे बंगलौर की गुलाबी रातें याद आने लगीं।

वो रातें—जब वो हर रात किसी नये पुरुष के साथ सहवास करती थी।

उनमें से जहां कुछ पुरुष घोड़े की तरह शक्तिशाली होते—तो वहीं कुछ सलमान आफरीदी की तरह नपुंसक—जो औरत की इच्छाओं को भड़का तो देते हैं, परन्तु फिर उन इच्छाओं को पूरी तरह शान्त करना उनके बसका नहीं होता।

पूजा कोठारी कितनी ही देर बिस्तर पर पड़ी हांफती रही—हांफती रही।

लेकिन फिर भी पूजा कोठारी पर वो रात बहुत भारी गुजरी।

उस रात उसके दिमाग में कई बार यह विचार कौंधा कि वो अभी बिस्तर से उठे और नीचे लाकर उस तीसरे 'फोर स्कवायर' की हत्या कर डाले।

मगर नहीं—पूजा कोठारी ने हर बार अपने आपको तसल्ली दी—नहीं पूजा ! तुमने सलमान आफरीदी की हत्या भी उसी तरह करनी है—जो कानून तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सके।

बेहद चतुराई से।

बेहद चालाकी के साथ।

पूजा कोठारी जहरीली नागिन की तरह बिस्तर पर पड़ी हांफती रही—उस रात उसने अपने ऊपर गुस्से का दौरा पड़ने से बड़ी मुश्किल से रोका।

●●●

सुबह का वक्त—सलमान आफरीदी और पूजा कोठारी एक ही टेबिल पर बैठे नाश्ता कर रहे थे—हसीना उन्हें नाश्ता सर्व करने में लगी थी।

दिन के उजाले में वो पूरी तरह एक नौकरानी की भूमिका अदा कर रही थी।

तभी वहां एक और लड़की का आगमन हुआ।

वो लड़की बेइन्तहां खूबसूरत थी—कद्दावर जिस्म की मालिक थी और शक्ल-सूरत से भी वो काफी जहीन नजर आ रही थी।

"आओ नीलोफर !" उस लड़की को देखते ही सलमान आफरीदी के चेहरे पर रौनक दौड़ गयी—"आओ—आज कैसे इधर का रास्ता भूल गयीं।"

"रास्ता तो नहीं भूली।" नीलोफर ने बड़ी खनकदार आवाज में कहा—"बस अदालत जा रही थी—सोचा आपसे ही मिलती चलूं।"

"नीलोफर—हम आज तुम्हें अपनी एक महान प्रशंसिका से मिलवाते हैं। इनसे मिलो !" सलमान आफरीदी ने सिल्विया की तरफ हाथ उठाया—"यह हैं सिल्विया—कल ही रूस से खासतौर पर रियाध इसलिये आयीं, ताकि मेरे साथ थोड़ा वक्त गुजार सकें और मेरा काम देख सकें।"

"ओह—रिअली ग्रेट !" नीलोफर खुशी से चिल्लाई और उसने पूजा कोठारी से कसकर हाथ मिलाया—"वाकई तुमसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई।"

"मुझे भी अच्छा लगा।"

"अब बैठ जाओ।"

"बैठ तो मैं जाती हूं।" नीलोफर कुर्सी पर बैठते हुए घोषणा-सी की—"लेकिन पहले ही एक बात बता देना मैं अपना फर्ज समझती हूं सलमान साहब—मैं नाश्ता बिल्कुल नहीं करूंगी। आप कितनी ही जिद करें—तब भी नहीं। आधा कप कॉफी नहीं—स्लाइस्ड नहीं—ऑमलेट नहीं—बर्गर नहीं—इसके अलावा टेबिल पर जो कुछ नजर आ रहा है, वो कुछ नहीं। अगर आपको यह बात कबूल हो, तो मैं दस मिनट के लिये बैठूं—वरना चलूं।"

"ठीक है बाबा !" सलमान आफरीदी की हंसी छूट गयी—"बैठो—बैठो। मैं तुमसे कुछ खाने के लिये नहीं कहूंगा।"

नीलोफर के आते ही एकाएक वहां का माहौल काफी हलका-फुलका हो गया था।

"सिल्विया !" सलमान आफरीदी मुस्कुराते हुए ही पूजा कोठारी से बोला—"क्या तुम इस बात पर यकीन कर सकती हो कि यह चंचल-सी नजर आने वाली लड़की सऊदी अरब की ऐसी पहली महिला वकील है—जो अदालत में खड़े होकर बलात्कार के केस लड़ती

है—धड़ल्ले से लड़ती है—और इसीलिये आज इसका नाम सऊदी अरब के बच्चे-बच्चे की जबान पर है। इतना ही नहीं—यह शैतान आज तक बलात्कार के केसों में बेशुमार मर्दों को फांसी की सजा करा चुकी है।"

"दरअसल उन्हें मैंने नहीं बल्कि उनकी करतूतों ने फांसी की सजा करायी।" नीलोफर उस सब्जैक्ट के छिड़ते ही एकाएक काफी गंभीर हो गयी थी—"वैसे भी सारी दुनिया जानती है कि हमारे देश के कानून काफी सख्त हैं—खासतौर पर बलात्कारी को तो सऊदी अरब में किसी भी हालत में माफ नहीं किया जाता। बलात्कार है भी सबसे खतरनाक जुर्म—जो कोई मर्द ही किसी औरत के साथ कर सकता है। खुद मेरा भी यही मानना है कि बलात्कार का अपराधी किसी हालत में अदालत से छूटना नहीं चाहिये—वह समाज के माथे पर लगा ऐसा बदनुमा दाग होता है—जिसे फौरन मिटा देना ही बेहतर है। वरना वो दाग फैलता जायेगा।"

"तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है।" पूजा कोठारी बोली—"कि अगर तुम्हारा बस चले—तो तुम पूरी दुनिया के बलात्कारियों को फांसी पर लटकवा दो ?"

"बिल्कुल सही कहा तुमने।" नीलोफर भभके स्वर में बोली—"अगर मेरा बस चले—तो मैं वाकई ऐसा ही करूं। हत्या का जुर्म भी इतना जघन्य नहीं—क्योंकि जिसकी हत्या होती है, सांसों की डोर टूटते ही उसे कुछ पता नहीं रहता। लेकिन जिस औरत के साथ बलात्कार हुआ होता है—वो जीते जी मरने का दुःख झेलती है। अपनी इज्जत का जनाजा उसके लिये शर्म से झुके कंधों पर लेकर चलना बहुत दुश्वारी का काम होता है। आज भी ऐसी बेशुमार औरतें हैं—जो बलात्कार होने के बाद अदालतों में जाने से घबराती हैं। मैं कहती हूं—उन्हें बिल्कुल भी नहीं घबराना चाहिये। क्योंकि बलात्कार होने के बाद जिस तरह औरत की इज्जत की धज्जियां उड़ती हैं—उसी तरह मर्द की इज्जत की धज्जियां भी उड़ती हैं।"

"ठीक है—ठीक है।" सलमान आफरीदी ने उसे फौरन टोका—"अब क्यों भाषण देने लगीं—यह अदालत नहीं हैं मैडम और वैसे भी तुम्हारे यह धधकते हुए विचार मैं पहले भी कई मर्तबा सुन चुका हूं—अखबारों में पढ़ चुका हूं। कम-से-कम अपने यह विचार प्रकट करके सिल्विया को तो बोर मत करो।"

"स''''सॉरी !" नीलोफर ने पूजा कोठारी से माफी मांगी—"आई एम सॉरी !"

"नैवर माइण्ड !" पूजा कोठारी मुस्कुरायी—"बल्कि तुम्हारे विचार जानकर मुझे अच्छा लगा।"

"दरअसल यह सब्जैक्ट ही कुछ ऐसा है।" नीलोफर बोली—"कि इस सब्जैक्ट के छिड़ते ही मैं जज्बाती हो जाती हूं और मेरा अपने आप पर काबू नहीं रहता। मैं चाहती हूं कि औरतों को अपनी लड़ाई खुद लड़नी चाहिये—अपने आप।"

●●●

उसके बाद नीलोफर जल्दी नॉर्मल हो गयी थी।

इस बीच सलमान आफरीदी और पूजा कोठारी नाश्ता भी करके निपट चुके थे।

"एक बात समझ नहीं आयी।" पूजा कोठारी नाश्ता करने के बाद नीलोफर से दोबारा सम्बोधित हुई—"सलमान साहब जहां सऊदी अरब के बहुत बड़े चित्रकार हैं—वहीं आप औरतों की हिमायत में केस लड़ने वाली बहुत बड़ी वकील हैं। दोनों के प्रोफेशन अलग-अलग हैं—फिर आपकी आपस में मित्रता कैसे हुई ?"

"गुड क्वेश्चन !" सलमान आफरीदी चहका—"इस सवाल का जवाब देता हूं तुम्हें।"

पूजा कोठारी ने सलमान आफरीदी की तरफ देखा।

"दरअसल नीलोफर के डैडी शेख मौहम्मद बिन रशीद सऊदी अरब के बड़े चित्रकार हैं और मैंने उन्हीं की शार्गिदी में पेण्टिंग बनाना सीखा था। बस उसी दौरान नीलोफर से भी दोस्ती हो गयी—जो आज तक कायम है।"

"एक और बात मैं तुम्हें बताती हूं।" नीलोफर मुस्कुराकर बोली।

"वो क्या ?"

"इन्होंने मेरे डैडी की शार्गिदी में पेन्टिंगें बनाना जरूर सीखा था—परन्तु आज की तारीख में चेला, उस्ताद के कान काट रहा है और सफलता के मामले में उनसे कई कदम आगे है।"

वह बात नीलोफर ने कुछ इस अंदाज में कही कि हंसी का एक तेज़ फव्वारा उन सबके बीच छूट गया।

इसी तरह हल्के-फुल्के विषय पर काफी देर तक उनके बीच बातें होती रहीं।

"अब मुझे चलना चाहिये।" फिर नीलोफर अपनी रिस्टवॉच में टाइम देखती हुई कुर्सी से खड़ी हो गयी थी—"मुझे कोर्ट भी पहुंचना है।"

"फिर कोई बलात्कार का केस होगा ?"

"हां।"

"लो भई।" सलमान आफरीदी हंसा—"आ गयी एक और मर्द की आफत—लटक गया फांसी पर बेचारा।"

पुनः सबकी हंसी छूट गयी थी—नीलोफर भी हंसी।

बहरहाल फिर हंसी-खुशी के उसी माहौल में नीलोफर वहां से विदा हो गयी।

नीलोफर के हाव-भावों से जो एक अंदाज़ा पूजा कोठारी ने फौरन लगाया—वो यह था कि सलमान आफरीदी और नीलोफर के बीच सिर्फ दोस्ताना ताल्लुकात थे और उनमें सैक्स सम्बन्ध जैसी कोई बात न थी।

वैसे भी नीलोफर जैसी उग्र विचारधारा वाली लड़की के साथ सैक्स सम्बन्ध बनाना बेहद जटिल कार्य था—विशेष रूप से सलमान आफरीदी जैसा नपुंसक मर्द तो ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता।

पूजा कोठारी को लगने लगा कि नीलोफर उसकी योजना में हण्ड्रेड परसेन्ट, कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

●●●

फिर सलमान आफरीदी ने अपना सारा दिन एक विशाल हॉल में चित्र बनाते हुए गुजारा।

पूजा कोठारी उसके नजदीक ही एक कुर्सी पर बैठकर उसे चित्र बनाते हुए देखने लगी।

हसीना भी सलमान आफरीदी का काफी ख्याल रखती थी।

वह हर दो घण्टे बाद उसे पूछने आती—उसे कुछ चाहिये तो नहीं।

पूजा कोठारी ने साफ-साफ महसूस किया कि उन सभी फोर स्कवायर की जिंदगी में जबरदस्त बदलाव आ चुका था।

अब वो आज से आठ साल पहले वाले फोर स्कवायर नहीं थे—जिनके लिये किसी की भी हत्या कर देना एक मजाक हुआ करता था।

अब वह सभी चूंकि बड़ी-बड़ी हस्तियां बन चुके थे—इसलिये जिंदगी में एक-एक कदम काफी फूंक-फूंककर उठाते थे और अपनी इज्जत-बेइज्जती की भी उन्हें काफी परवाह थी।

लेकिन अपनी जिंदगी में एक बार गुनाह के बीज जो वह बो चुके थे—उस फसल को तो अब उन्होंने काटना-ही-काटना था।

●●●

उसी दिन रात के समय वहां एक और नये किरदार का आगमन

हुआ—जिसकी नीलोफ़र और हसीना की तरह ही उस पूरे घटनाक्रम में काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

वह लम्बे-चौड़े कद-काठ वाला एक बड़ा शक्तिशाली आदमी था—उसकी मांस-पेशियां मजबूत थीं—उसके चेहरे पर कठोरता विद्यमान थी और उसके गाल पर चाकू के दो गहरे निशान थे—जो उसे बेहद खतरनाक बना रहे थे।

सलमान आफरीदी ने बड़ी गरमजोशी के साथ उस व्यक्ति का पूजा कोठारी से परिचय कराया।

"इनसे मिलो सिल्विया।" सलमान आफरीदी बोला—"यह हैं मेरे बड़े करीबी दोस्त—मिस्टर फतेह अली। बड़े काबिल इन्सान—सऊदी अरब की इंटेलीजेंस ब्यूरो के चीफ। यह जासूसी के क्षेत्र में आज तक ऐसे-ऐसे झण्डे गाड़ चुके हैं—जो इनसे पहले सऊदी अरब में कोई दूसरा जासूस नहीं गाड़ सका।"

"ओह।" पूजा कोठारी के एकाएक होठ सिकुड़ गये।

"इनका सऊदी अरब के जासूसों में वही स्थान है।" सलमान आफरीदी आगे बोला—"जो इंग्लैंड में जेम्स बॉण्ड का या भारत में करण सक्सेना का है।"

पूजा कोठारी अब बड़ी दिलचस्पी के साथ फतेह अली को देखने लगी—"यानि यह जासूसी जगत की सबसे बड़ी तोप है।"

"ऐसी कोई बात नहीं।" फतेह अली ने कहा।

"बिल्कुल ऐसी ही बात है।" सलमान आफरीदी बोला—"इनकी काबलियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सऊदी अरब की सरकार इन्हें कई बार सम्मानित कर चुकी है और कई बड़े-बड़े पेचीदा केस इन्हें सॉल्व करने के लिये दिये गये—जिनमें इन्होंने अपनी काबलियत के दम पर सफलता प्राप्त करके दिखाई।"

"वैरी गुड।"

"अब मैं तुम्हें यह भी बताता हूं कि मेरी और मिस्टर फतेह अली की आपस में दोस्ती कैसे हुई।" सलमान आफरीदी मुस्कुराकर बोला— "दरअसल मुझे और फतेह अली को शतरंज खेलने का बड़ा जबरदस्त शौक है—इसलिये हम दोनों लगभग हर शाम को एक साथ बैठकर शतरंज खेलते हैं।"

"लगता है कि इस समय भी आप दोनों इसीलिये इकट्ठे हुए हैं।" पूजा कोठारी बोली—"क्योंकि थोड़ी ही देर बाद यहां शतरंज खेली जाने वाली है।"

वह दोनों ही हंस पड़े।

"शतरंज हम दोनों खेलते जरूर हैं।" सलमान आफरीदी हंसता हुआ बोला—"लेकिन यह कम्बख्त फतेह अली इतना चालाक है कि हर बार ऐसी-ऐसी चौंका देने वाली चालें चलता है कि मुझे मात हो जाती है।"

उसके बाद सलमान आफरीदी ने पूजा कोठारी का परिचय भी फतेह अली से कराया।

●●

बहरहाल फिर बंगले के ड्राइंग हॉल में हमेशा की तरह शतरंज की बिसात बिछ गयी और वह दोनों खिलाड़ी एक-दूसरे के सामने डटकर बैठ गये थे।

पूजा कोठारी भी उनका खेल देखने के लिये वहां एक [illegible] पर बैठ गयी।

खेल शुरू हुआ।

दोनों ही एक-से-एक धुरंधर चाल चलने लगे।

लेकिन फतेह अली की चालें सचमुच बेहद खतरनाक थीं—वह काफी सोच-समझकर अपना एक-एक मोहरा आगे बढ़ाता था। मुश्किल से दस मिनट बाद ही सलमान आफरीदी के बादशाह को फतेह अली के मोहरों ने चारों तरफ से घेर लिया और उसके बचने का कहीं कोई चांस न रहा।

"लो।" सलमान आफरीदी ने गहरी सांस छोड़ी—"हमारी [illegible] तो हो गयी—हमारा बादशाह तो पिट गया।"

"तुममें बस एक ही कमी है आफरीदी।" अपनी जीत होते देख फतेह अली मुस्कुराता हुआ बोला—"तुम चाल चलने में हमेशा जल्दबाजी दिखाते हो—खूब सोच-समझकर अपना मोहरा आगे नहीं बढ़ाते।"

"चलो—अब दूसरी बाजी लगाओ।"

"ठहरो।" पूजा कोठारी ने फौरन सलमान आफरीदी को टोका—"इतनी जल्दी हथियार नहीं डालने चाहियें सर। अभी [illegible] एक चाल ऐसी है—जिसे चलकर आप न सिर्फ अपना बादशाह [illegible] हैं बल्कि फौरन ही फतेह अली साहब का बादशाह पीट भी सकते [illegible]

पूजा कोठारी के उन शब्दों में न सिर्फ सलमान आफरीदी को बल्कि फतेह अली को भी बुरी तरह चौंकाया।

"ऐसी कौन सी चाल है ?" फतेह अली ने भी बेहद [illegible] शतरंज की बिसात को घूरते हुए देखा।

"यह देखो।" पूजा कोठारी ने शतरंज के करीब आकर एक घोड़े

की तरफ इशारा किया—"इस घोड़े के द्वारा आपके उस वजीर को बड़ी आसानी के साथ पीटा जा सकता है फतेह अली साहब—जो आफरीदी साहब के बादशाह को शै दे रहा है। इतना ही नहीं—आपके वजीर को पीटने के बाद जब यह घोड़ा एक और ढाई चाल चलेगा—तो फौरन ही आपका बादशाह भी पिट जायेगा। यह देखिये आप कमाल।" पूजा कोठारी ने फौरन सलमान आफरीदी का घोड़ा उठा लिया था और फिर उस घोड़े से सबसे पहले फतेह अली का वजीर पीटा तथा फिर एक और ढाई चाल चलते हुए उसी घोड़े से फतेह अली का बादशाह भी पीट डाला।

पूजा कोठारी की उस चाल पर दोनों धुरंधर हक्के-बक्के रह गये।

"खेल खत्म।" जबकि पूजा कोठारी, फतेह अली का बादशाह एक तरफ उछालती हुई मुस्कुरायी—"आज की यह बाजी आफरीदी साहब जीत गये।"

दोनों अभी भी भौचक्के से कभी पूजा कोठारी को तो कभी उसके द्वारा चली गयी हैरान कर देने वाली चाल को देखे जा रहे थे।

"व...वाकई।" फतेह अली ने बेहद प्रभावित अंदाज में कहा—"पहली ही मुलाकात में हम तुम्हारे दिमाग के कायल हो गये हैं सिल्विया। अपनी पूरी जिंदगी में हम इतनी जबरदस्त चाल नहीं सोच पाये—जो चाल तुमने एक ही सैकिण्ड के अंदर चल दी।"

पूजा कोठारी मुस्कुराई—फिर मुस्कुराते हुए ही कहा उसने—"अभी आपने मेरे दिमाग के कारनामें देखे ही कहां है फतेह अली साहब—अगर आप मेरे दिमाग के कारनामें देखेंगे, तो वाकई उसका लोहा मान जायेंगे।"

उसके बाद सलमान आफरीदी तथा फतेह अली के बीच शतरंज की तीन-चार बाजियां और खेली गयीं—परन्तु उन सभी बाजियों के दौरान वह दोनों पूजा कोठारी की उसी अद्भुत चालाकी चर्चा करते रहे।

रात के उस समय ग्यारह बज रहे थे—जब फतेह अली शतरंज खेलकर वहां से गया।

●●●

उसी रात से पूजा कोठारी अपने षड्यन्त्र की भी शुरूआत कर दी।

हालांकि उस तीसरे फोर स्कवायर के साथ समय गुजारना पूजा कोठारी को काफी भारी पड़ रहा था—वह जब भी उसे देखती तो फौरन उसके मानस-पटल पर आज से आठ साल पहले ट्रेन में घटित हुई वही भयानक विभीषिका ताजा हो जाती—वही बलात्कार का खौफनाक मंजर—चीख-पुकार की आवाजें—और खून में लिथड़े परिजनों के शव

सब कुछ।

वह सब कुछ एक ही साथ पूजा कोठारी की नजरों के सामने घूम जाता।

और तब—वह अपने ऊपर गुस्से का दौरा पड़ने से बड़ी मुश्किल के साथ रोक पाती।

पूजा कोठारी वहां जज्बातों के भयानक बवंडरो में फंसी जिन्दगी बसर कर रही थी।

●●●

उस रात पूजा कोठारी ने सबसे पहले हमेशा की तरह अपने शिकार नम्बर 3 को टेलीफोन पर धमकी दी।

रात के दो बजे थे।

पूजा कोठारी ने बड़ी खामोशी के साथ देखा—हसीना तब भी सलमान आफरीदी के कमरे में ही थी।

बंगले में कई फोन थे।

पूजा कोठारी ने उन्हीं में-से एक फोन पर उस टेलीफोन का नम्बर डायल किया—जो सलमान आफरीदी के बैडरूम में रखा था।

"हैलो।" शीघ्र ही पूजा कोठारी की आवाज टेलीफोन पर उभरी।

"हैलो फोर स्कवायर।" एकाएक पूजा कोठारी ने अपनी आवाज बेहद भर्राई हुई बना ली।

"फ···फोर स्कवायर।" उछल पड़ा सलमान आफरीदी—उसके मुंह से तेज सिसकारी छूटी—"क···कौन हो तुम—अ···और फोर स्कवायर किसे कह रही हो ?"

"क्यों—इतनी जल्दी अपनी हकीकत भूल गये सलमान आफरीदी।" पूजा कोठारी की आवाज हद दर्जे तक खतरनाक हो उठी—"अभी सिर्फ आठ साल गुजरे हैं—आठ साल। यह माना कि तुम आज दुनिया के बहुत बड़े चित्रकार बन चुके हो—बहुत इज्जत है आज तुम्हारी—तुम्हारे ऑटोग्राफ लेने के लिये और तुमसे हाथ मिलाने के लिये सड़कों पर भीड़ उमड़ पड़ती है। लेकिन तुम अपने इस चमकदार वर्तमान से उस काले अतीत की स्याही नहीं धो सकते—जब तुम चार दोस्तों ने शौक-शौक में बंगलौर के अंदर आतंक बरपा करके रख दिया था। अपनी हवस मिटाने के लिये कई लड़कियों के साथ बलात्कार किया और उन्हें मार डाला।"

"त···तुम कौन हो ?" कांप उठी सलमान आफरीदी की आवाज—"क···कौन हो तुम ?" वह लगभग चिल्लाया।

"मेरी असलियत जानकर तुम्हारे छक्के छूट जायेंगे आफरीदी।" पूजा कोठारी गुर्राकर बोली—"याद करो आज से आठ साल पहले की 13 मार्च—वो 13 मार्च, जब तुम्हारे तीन दोस्तों ने बंगलौर के सेशन जज अरविन्द कोठारी की बड़ी बेटी सविता कोठारी के साथ बलात्कार किया और फिर उन सबकी चलती ट्रेन में ही हत्या कर डाली। मैं जानती हूं—अभी तुम उस वाकये को भूले नहीं होओगे आफरीदी।" पूजा कोठारी का लहजा जहरीली नागिन जैसा हो गया—"जिस तरह वो वाकया मेरी आंखों में जिन्दा है—उसी तरह तुम्हारी आंखों में भी जिन्दा होगा।"

"त···तुम यह सब कैसे जानती हो ?" सलमान आफरीदी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया—"त···तुम्हारा अरविन्द कोठारी के परिवार से क्या सम्बन्ध है ?"

"मैं उसी अरविन्द कोठारी की छोटी बेटी हूं।" पूजा कोठारी ने एक-एक शब्द चबाते हुए बेहद हिंसक लहजे में जवाब दिया।

और उस जवाब को सुनकर सलमान आफरीदी के दिमाग में विस्फोट होने लगे—भयंकर विस्फोट।

"13 मार्च की रात जब ट्रेन के अंदर वो भयानक विभीषिका घटित हुई।" पूजा कोठारी गुर्राकर बोली—"तो उस रात मैं भी ट्रेन के अंदर ही थी और तुम चारों की सारी बर्बरता मैंने खुद अपनी नंगी आंखों से देखी थी। और उस बर्बरता को देखकर ही मैं अब नागिन बन चुकी हूं—जहरीली नागिन।"

"त···तुम चाहती क्या हो ?" कांपी सलमान आफरीदी की आवाज—"त···तुमने मुझे अब फोन क्यों किया है ?"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि तुम्हारे दो दोस्त अब इस दुनिया से कूच कर चुके हैं।"

"क···किनकी बात कर रही हो तुम ? म···मेरे कौन से दो दोस्त दुनिया से कूच कर चुके हैं ?"

"विजू आनन्द और कमल कपूर।"

"न···नहीं।" चीखा सलमान आफरीदी—"नहीं—तुम झूठ बोल रहे हो। ऐसा नहीं हो सकता—उनकी हत्या करना आसान नहीं है।"

"परन्तु उनकी हत्या हो चुकी है आफरीदी।" पूजा कोठारी भयानक अंदाज में खिलखिलाकर हंसते हुए बोली—"मैंने खुद मारा है उन्हें मैंने खुद। और अब तुम्हारी बारी है—अब तुम मरोगे फोर स्कवायर नम्बर तीन। लेकिन हां—तुम्हें मैं अपने हाथों से नहीं मारूंगी।"

"फ''' फिर कैसे मारोगी ?" थर्राया सलमान आफरीदी।

"तुम आत्महत्या करोगे।" पूजा कोठारी भयंकर विस्फोट सा करती हुई बोली—"तुम अपनी जान खुद लोगे। क्योंकि तुम्हारे जैसे नपुंसक और नामर्द व्यक्ति को अपने हाथों से मारना भी मैं अपनी तौहीन समझती हूं।"

"न''' नपुंसक।"

"हां—नपुंसक।" पूजा कोठारी हिकारत भरे लहजे में बोली—"अब मुझसे यह मत पूछ लेना कि मैं तुम्हारे नपुंसक होने का रहस्य कैसे जानती हूं—आज से आठ साल पहले ट्रेन में मैंने खुद तुम्हारे विशेष अंग को अपनी आंखों से देखा था—जिसमें तुम अपने हाथों से गर्मी पैदा करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन वो तब भी निष्प्राण था—निर्जीव था।"

"ल''' लेकिन मैं भला अपनी जान खुद क्यों लूंगा ?"

"तुम्हें अपनी जान लेनी होगी।" पूजा कोठारी दृढ़तापूर्वक बोली—"मेरा दावा है कि मैं तुम्हारे सामने ऐसे हालात पैदा कर दूंगी कि तुम अपनी जान लेने पर मजबूर हो जाओगे। अब तुम मेरा खेल देखते जाओ—तुम्हारी मौत का सफर शुरू हो चुका है।"

और—उसके बाद पूजा कोठारी ने लाइन काट दी।

●●●

उस टेलीफोन कॉल को सुनते ही सलमान आफरीदी बुरी तरह बैचेन हो उठा—उसके पूरे शरीर से दहशत के कारण पसीने की धारायें छूटने लगीं।

हसीना तब भी उसके बिस्तर पर निर्वस्त्र हालत में थी।

"क्या बात है ?" हसीना ने चौंककर उसकी तरफ देखा—"तुम एकाएक इतने परेशान क्यों हो गये सलमान ?"

"तुम यहां से जाओ।" सलमान आफरीदी आंदोलित लहजे में बोला—"मुझे कुछ जरूरी काम है।"

"ल''' लेकिन क्या हो गया सलमान ?"

"तुमने सुना नहीं।" सलमान आफरीदी अकस्मात् पागलों की तरह गला फाड़कर चिल्ला उठा—"दफा होओ यहां से।"

उसने हसीना के कपड़े उठाकर धड़ाधड़ उसके ऊपर फैंके तथा फिर उसे लगभग धक्के देते हुए निर्वस्त्र हालत में ही अपने बैडरूम से बाहर निकाल दिया।

इतना ही नहीं—उसने अपने बैडरूम का दरवाजा भी भड़ाक् से बंद कर लिया।

हक्की-बक्की रह गयी हसीना।

उसने जीवन में पहले कभी सलमान आफरीदी को इतना आतंकित नहीं देखा था।

●●●

दरवाजा बंद करने के पश्चात् सलमान आफरीदी तेजी से तौलिये की तरफ झपटा—उसने आनन-फानन अपने पसीने साफ किये।

लेकिन फिर भी उसके शरीर से पसीने की धारायें बहती रहीं।

उसके बाद वो टेलीफोन की तरफ झपटा।

उसने सबसे पहले थाइलैण्ड फोन घुमाया और अपने संगीतकार दोस्त विजू आनन्द के बारे में पता किया।

तुरन्त उसे सूचना मिल गयी—वो मर चुका था।

सलमान आफरीदी ने फिर कंपकंपाते हाथों से अमरीका फोन डायल किया और कमल कपूर के बारे में पूछताछ की।

शीघ्र ही उसे कमल कपूर के बारे में भी सूचना मिल गयी—वो भी मर चुका था।

सलमान आफरीदी के शरीर से दोबारा पसीने की धारायें छूटने लगीं—उसके हाथ-पैर फूल गये—और वो धम्म् से वहीं रखी एक कुर्सी पर गिर पड़ा।

इ···इसका मतलब वह लड़की सच बोल रही थी।

वह सचमुच उसके दो दोस्तों को मार चुकी थी।

सलमान आफरीदी कितनी ही देर कुर्सी पर पड़ा हांफता रहा—इस समय उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था और पूरे जिस्म में कंपकंपी-सी छूट रही थी।

काफी देर तक सलमान आफरीदी उसी अवस्था में कुर्सी पर बैठा हांफता रहा।

लेकिन फिर उस दिन उसने वो काम किया—जो उससे पहले उसके बाकि दो साथियों ने नहीं किया था।

उसने चौथे तथा आखिरी 'फोर स्कवायर' को फोन घुमाया और उसे बताया कि उन लोगों की जान कितने बड़े संकट में फंसी हुई है।

उस खबर को सुनकर चौथा फोर स्कवायर भी घबरा उठा।

●●●

सुबह का वक्त—पिछले दिन की भांति सलमान आफरीदी ने उस दिन भी पूजा कोठारी के साथ ही नाश्ता किया। मगर वो उस क्षण भी इस कदर आतंकित था कि नाश्ता करने में उसका मन नहीं लग रहा था।

"क्या बात है।" पूजा कोठारा संजीदगी के साथ उसका चेहरा देखते हुए बोली—"आज आप कुछ ले क्यों नहीं रहे हैं ?"

"नहीं।" सलमान आफरीदी थोड़ा हड़बड़ाकर बोला—"आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।"

"तबीयत ठीक नहीं है।" उन्हें नाश्ता सर्व करती हसीना चौंकी—"अगर आप कहें—तो मैं डॉक्टर को बुला दूं ?"

"नहीं—डॉक्टर की जरूरत नहीं।"

फिर सलमान आफरीदी वहां से उठकर चला गया।

उस दिन वो पेण्टिंग बनाने के लिये हॉल में भी न गया—बस सारा दिन अपने बैडरूम में ही बंद रहा।

●●●

दोपहर के समय पूजा कोठारी ने उसे बंगले के अंदर से ही फिर फोन किया।

"तुम आत्महत्या करोगे आफरीदी।" पूजा कोठारी उसे और ज्यादा आतंकित करने के उद्देश्य से बोली—"तुम अपने आपको खुद गोली मारोगे।"

"नहीं।" सलमान आफरीदी गुस्से में गला फाड़कर चिल्लाया—"नहीं दुनिया की कोई ताकत मुझे इस काम के लिये विवश नहीं कर सकती कि मैं अपने आपको गोली मार लूं।"

"तुम ऐसा करोगे आफरीदी।" पूजा कोठारी ने उत्तेजित होकर कहा—"तुम्हें ऐसा करना होगा।"

"न...नहीं—मैं ऐसा किसी हालत में नहीं करूंगा।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी चेतावनीपूर्ण लहजे में बोली—"तुम मेरा खेल देखते जाओ। तुम्हारे ऊपर आफत आने वाली है। अपनी जान बचाने के लिये तुम कानून की मदद ले सकते हो—अपने दोस्त फतेह अली की मदद ले सकते हो। परन्तु एक बात का ख्याल रहे—जो करना है जल्दी करो—क्योंकि तुम्हारे पास सांसें बहुत कम बची हैं।"

उसके बाद पूजा कोठारी ने हमेशा की तरह टेलीफोन लाइन काट दी।

●●●

सलमान आफरीदी अब पहले से भी ज्यादा आतंकित हो उठा था—उसके जिस्म से पुनः पसीने की धारायें छूटने लगीं और उसका रंग सफेद झक्क पड़ गया।

उसने मदद के बारे में सोचा।

क्या उसे सचमुच फतेह अली की मदद लेनी चाहिये ?

"न''नहीं।" सलमान आफरीदी का स्वर कंपकंपा उठा—"नहीं—वो फतेह अली की मदद नहीं ले सकता।"

"वो क्या बतायेगा फतेह अली को अपने अतीत के बारे में ?"

"अपने फोर स्कवायर जीवन के बारे में ?"

सलमान आफरीदी पुनः धम्म् से कुर्सी पर बैठ गया और गहरी-गहरी सांसे लेने लगा।

वो एक बहुत बड़े 'चक्रव्यूह' में फंस चुका था।

ऐसे 'चक्रव्यूह' में—जिसमें से निकलने का भी उसे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था।

●●●

शाम को रोजाना की तरह फतेह अली फिर शतरंज खेलने आया।

सलमान आफरीदी ने उसके सामने अपने आपको नॉर्मल जाहिर करने की भरपूर कोशिश की। शायद इसीलिये वो बेहद परेशान होते हुए भी उसके साथ शतरंज खेलने बैठ गया।

यह बात अलग है कि उसने तीन बाजियां खेलीं और वह तीनों बाजियां वो मुश्किल से दस मिनट में ही हार गया।

"क्या बात है आफरीदी।" अब फतेह अली ने गौर से सलमान आफरीदी का चेहरा देखा—"आज तुम कुछ परेशान लग रहे हो खेलने में भी तुम्हारा दिल नहीं है।"

"न''नहीं।" सलमान आफरीदी ने खुद को संभाला—"ऐसी कोई बात नहीं।"

"कोई बात तो जरूर है आफरीदी।"

"सचमुच कोई बात नहीं।" सलमान आफरीदी अपनी आवाज में यकीन पैदा करता हुआ बोला—"अगर कोई बात होती—तो मैं भला तुमसे क्यों छिपाता।"

फतेह अली अब गौर से सलमान आफरीदी का चेहरा देखने लगा।

"इ''इस तरह क्या देख रहे हो ?" सलमान आफरीदी की आवाज कंपकंपायी।

"तुम जानते हो कि मैं एक जासूस हूं आफरीदी।" फतेह अली उसे चुभती नजरों से देखता हुआ बोला—"मेरी आंखों से कभी कुछ छिपा नहीं रहता। तुम मुझे भले कुछ न बताओ—परन्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि कोई बात जरूर है—जो तुम्हें अंदर-ही-अंदर परेशान कर रही है।"

●●●

वह वार्तालाप कोई नया मोड़ लेता—तभी वहां नीलोफर के भी कदम पड़े।

हमेशा की तरह वो बहुत उत्साहित और खुश नज़र आ रही थी।

"मैं इस वक्त बहुत जल्दी में हूं।" नीलोफर आते ही बोली—

"मैं तुम्हें सिर्फ एक सूचना देने आयी थी आफरीदी।"

"कैसी सूचना ?" सलमान आफरीदी थोड़ा चौकन्ना हुआ।

"जानते हो—परसों 13 अप्रैल है।"

"बिल्कुल जानता हूं।" सलमान आफरीदी ने फौरन कहा—"आज जब 11 अप्रैल है—तो परसों को 13 ही होगी।"

"लेकिन एक बात शायद तुम भूल रहे हो चित्रकार साहब—परसों तेरह तारीख को तुम्हारा जन्म दिन भी है।"

"माई गॉड।" सलमान आफरीदी चिहुंका—"वाकई मैं तो भूल ही गया था कि परसों मेरा जन्म दिन है।"

"बहरहाल अब काम की बात सुनो।" नीलोफर जल्दी-जल्दी बोली—"मैंने फैसला किया है कि इस बार तुम्हारे जन्म दिन की पार्टी मैं दूंगी—तुम्हारे बंगले पर ही दूंगी और सारा इंतजाम भी मेरे ही अण्डर में होगा। तुम्हें मेरे इस फैसले के प्रति काई ऐतराज तो नहीं ?"

"मुझे भला क्या ऐतराज हो सकता है।" सलमान आफरीदी एकाएक हंसकर बोला—"यह तो अच्छा ही है कि मेरा पार्टी का खर्च बचेगा—कोई और सूचना हो, तो वह भी बता दो ?" सलमान आफरीदी थोड़े मजाकिया लहज़े में बोला।

"नहीं—बाकि कोई सूचना नहीं है। अब मैं चलती हूं।"

"बैठो तो सही।"

"नहीं—मुझे जल्दी घर पहुंचना है।" नीलोफर मशीनी अंदाज में ही बोली—"डैडी इंतजार कर रहे होंगे।"

फिर नीलोफर जिस आनन-फानन वहां आयी थी—उसी तरह आनन-फानन वहां से चली गयी।

फतेह अली भी मंत्रमुग्ध-सा नीलोफर को जाते देखता रहा।

"मैंने इस जैसी लड़की अपनी पूरी जिंदगी में नहीं देखो।" नीलोफर के जाते ही फतेह अली बोला—"जिसके दो रूप हैं। पहला रूप—जो एक बहुत प्यारे दोस्त का रूप है—ऐसा दोस्त, जो दोस्ती के लिये कुछ भी कर सकता है। जबकि इस लड़की का दूसरा रूप एक ऐसी वकील का रूप है—जिसके नाम से भी अपराधी कांप उठते हैं।"

"इसमें कोई शक नहीं।" सलमान आफरीदी ने भी स्वीकार किया—"वाकई इस लड़की के दो बहुत अलग-अलग रूप हैं—जिनकी आपस में कोई समानता नहीं।"

थोड़ी ही देर बाद फतेह अली भी वहां से चला गया।

जबकि वहीं बैठी पूजा कोठारी के दिमाग में 13 तारीख का नाम सुनकर सर्प रेंगने लगे थे—जहरीले सर्प—जो हिस्स्-हिस्स् करते हुए उसके दिमाग में दौड़ रहे थे।

●●●

आधी रात का समय—पूजा कोठारी एक बार फिर यह देखने के लिये उठी कि सलमान आफरीदी क्या कर रहा है।

वह दबे पांव उसके बैडरूम के सामने पहुंची—अंदर जीरो वाट का बल्ब जल रहा था—उसने अपनी आंख दरवाजे की झिर्री से सटा दी और अगले ही क्षण उसके शरीर में सनसनी दौड़ गयी।

हसीना तब भी उसकी बांहों में थी और बिल्कुल निर्वस्त्र हालत में थी।

पूजा कोठारी ने उस रात उन दोनों के बीच सैक्स का बड़ा अजीबोगरीब खेल देखा।

सलमान आफरीदी ने हसीना को कसकर अपनी बांहों के दायरे में जकड़ रखा था—उसके ऊपर वासना का नशा बुरी तरह हावी था और वह उत्तेजनापूर्वक हसीना को अपनी सीने से लगाये उसे बेतहाशा चूम रहा था।

कभी माथा, कभी गाल, कभी होठ और कभी गर्दन पर चुम्बन अंकित करते हुए सलमान आफरीदी के होठ हसीना के वक्षों तक पहुंच गये और वह उन्हें बुरी तरह मसलने लगा।

उसके हाथ बड़ी तेजी से हसीना की पीठ को सहला रहे थे।

फिर वो पीठ सहलाते-सहलाते हसीना के नितम्बों तक पहुंच गये और उनकी कठोरता का जायजा लेने लगे।

उन दोनों की सांसें इस तरह तेज-तेज चल रही थीं—जैसे बिस्तर पर पड़े दो नाग फुंफकार भर रहे थे।

सैक्स का वो खेल धीरे-धीरे गति पकड़ रहा था।

और तभी वो हुआ—जिसकी पूजा कोठारी ने कल्पना भी नहीं की थी।

अभी तक सलमान आफरीदी ने ही हसीना को कसकर जकड़ रखा था—परन्तु एकाएक हसीना ने भी सलमान आफरीदी को कसकर जकड़ लिया।

फिर वो अकस्मात् झटके से उसके ऊपर सवार हो गयी।

अब सलमान आफरीदी नीचे था।

हसीना ऊपर।

वह हद से ज्यादा 'गरम' हो चुकी थी।

सलमान आफरीदी के ऊपर सवार होते ही हसीना उसके साथ होमोसेक्सुअल वाली क्रीड़ा करने लगी।

वह बीच-बीच में उत्तेजित होकर उसके निष्प्राण अंग को भी बुरी तरह झंझोड़ डालती थी।

और तब—सलमान आफरीदी के कण्ठ से तेज सिसकारी छूट जाती।

वह छटपटा उठता।

पूजा कोठारी उस दिन वहां ज्यादा देर न खड़ी रही—वह जैसे ही जाने के लिये मुड़ी—तभी एक घटना घटी—सलमान आफरीदी ने दरवाजे की नीचे वाली झिर्री में-से उसके पैर देख लिये।

"कौन है ?" वह फौरन गला फाड़कर चिल्ला उठा—"कौन है ?"

पूजा कोठारी के कुछ क्षण के लिये होश गुम हो गये।

वह तत्काल वहां से बगुले की तरह भागी और ऊपर अपने बैडरूम में जाकर बंद हो गयी।

"क ''कुछ होने वाला है—कुछ होने वाला है।"

फौरन वह शब्द पूजा कोठारी के दिमाग में हथौड़े की तरह बजने लगे।

●●●

मुश्किल से दो मिनट बाद ही दरवाजा खटखटाया गया।

पूजा कोठारी ने दरवाजा खोला—सामने सलमान आफरीदी खड़ा था—दरवाजा खुलते ही वह एकदम अंदर आ गया।

"मैं जानता हूं कि तुम मेरी हकीकत से वाकिफ हो गयी हो।" सलमान आफरीदी भभके स्वर में बोला—"तुम जान गयी हो कि मैं नामर्द हूं।"

"लेकिन ''।"

"मेरी बात सुनो—सिर्फ मेरी बात।" सलमान आफरीदी शुष्क लहजे में बोला—"आज तक मैंने हर किसी से ये बात छिपाकर रखी थी कि मैं नामर्द हूं—सिर्फ हसीना मेरी असलियत जानती थी। लेकिन आज तुम भी मेरी हकीकत जान गयी हो।"

"मैं कुछ नहीं जानती—मैंने कुछ नहीं देखा।"

"तुम झूठ बोल रही हो।" सलमान आफरीदी चिल्लाया और उसने आगे बढ़कर पूजा कोठारी के दोनों कंधे अपनी मुट्ठियों में जकड़ लिये—"मैं नामर्द जरूर हूं—लेकिन मैं हर लड़की को संतुष्ट कर सकता

हूं।" वह पूजा कोठारी की आंखों में झांकता हुआ बोला—"मैं तुम्हें भी संतुष्ट कर सकता हूं—यह देखो।"

और उसने झटके के साथ अपनी जेब से 'सेक्स बेल्ट' निकाल ली।

"नहीं।" पूजा कोठारी सकपकाई—"नहीं—छोड़ो मुझे।"

परन्तु सलमान आफरीदी के शरीर में अब असीम शक्ति आ चुकी थी—वो यह साबित करने को मचल उठा था कि नामर्द होने के बावजूद वो किसी भी लड़की को संतुष्ट कर सकता है।

पूजा कोठारी ने उसके शिकंजे से निकलना चाहा।

लेकिन सलमान आफरीदी ने उसे और ज्यादा कसकर जकड़ लिया।

एक ही झटके में उसकी पोलो शर्ट उतार डाली।

"चिन्ता मत करो।" सलमान आफरीदी के हाथ उसके पेट पर रेंगने लगे—"मैं तुम्हें पूरा सुख दूंगा—पूरा सुख।"

"मुझे नहीं चाहिये ऐसा सुख।" पूजा कोठारी चिल्लाई—"जो आर्टीफिशल अंग से दिया जाये।"

"तुम्हें पता भी नहीं चलेगा—यह आर्टीफिशल अंग है।"

सलमान आफरीदी के हाथ अब उसके पेट तथा कमर पर रेंगते हुए उसकी स्कर्ट के अंदर घुस गये थे और उसके नितम्बों को टटोलने लगे थे।

फिर उसने पूजा कोठारी की स्कर्ट भी उतार डाली।

पूजा कोठारी ने काफी देर विरोध स्वरूप अपने हाथ-पैर पीटे परन्तु सलमान आफरीदी अपने आपको मर्द साबित करने के लिये इस कदर व्याकुल था कि पूजा कोठारी का विरोध ज्यादा देर तक उसके सामने न चला।

जल्द ही पूजा कोठारी को उसके सामने हथियार डालने के लिए विवश होना पड़ा।

तब तक सलमान आफरीदी अपनी कमर पर 'सैक्स बेल्ट' बांध चुका था।

उसके बाद वहीं मौजूद बिस्तर पर तूफान आ गया—सैक्स का तूफान।

पूजा कोठारी कराह उठी—उसके दोनों हाथों की मुट्ठियां भिंच गयीं।

जबकि सलमान आफरीदी की कमर अब उसके ऊपर बड़े लयबद्ध अंदाज में थिरक रही थी और उसके नथुनों से फुंफकार सी खारिज होने लगी थी।

मुश्किल से सात मिनट सैक्स का वो खेल चला।

पूजा कोठारी के अन्तर से फुहारें छूट पड़ी और उन फुहारों के छूटते ही सैक्स का वो आर्टीफिशल खेल खत्म हो गया।

●●●

सलमान आफरीदी जा चुका था—लेकिन उस घटना के कारण पूजा कोठारी के ऊपर गुस्से का वही दौरा पड़ गया, जिसे वो पिछले कई दिन से रोके हुए थी।

वह नागिन बन गयी—जहरीली नागिन।

सलमान आफरीदी के जाते ही वह बाथरूम में बंद हो गयी—उसने शावर फुल रफ्तार से खोल दिया सभी नल खोल दिये—और फिर वो जोर-जोर से अपने घूंसे बाथरूम की दीवारों पर बरसाने लगी।

उसके हाथ लहू-लुहान हो गये।

आंखें सुलगने लगीं।

बाल बिखर गये।

अगर कोई उस समय पूजा कोठारी का वह रौद्र रूप देखता—तो गला फाड़कर चिल्ला उठता।

आज तक ढेरों लोगों ने पूजा कोठारी के साथ सहवास किया था—मगर जो घृणा उसे उस फोर स्कवायर के साथ सहवास करते समय हुई—वो पहले कभी नहीं हुई।

उसका अंग-अंग धधक उठा।

13 मार्च की वही घटना एक बार फिर उसकी आंखों के सामने ताजा हो गयी।

पूजा कोठारी ने अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया—वह दीवार के सहारे नीचे फर्श पर बैठती चली गयी और फिर हिड़कियों से रोने लगी।

●●●

दिन निकलने तक भी पूजा कोठारी नॉर्मल न हुई।

उसके अंदर धधकता प्रतिशोध का ज्वालामुखी और अधिक आग पकड़ चुका था।

पूजा कोठारी को लगने लगा—अगर वो कुछ देर और उस बंगले में रही, तो तीसरे फोर स्कवायर को वह अपने ही हाथों से मार डालेगी।

सलमान आफरीदी और हसीना गहरी नींद से जागते—उससे पहले ही पूजा कोठारी ने चुपचाप बड़ी खामोशी के साथ वह बंगला छोड़ दिया।

●●●

घटनाओं में अब काफी तेजी आ चुकी थी।

पूजा कोठारी के इस तरह अकस्मात् चले जाने से सलमान

आफरीदी और हसीना दोनों चौंके—मगर रात जिस तरह की घटना घटी थी, उसके मद्देनज़र पूजा कोठारी का इस प्रकार चले जाना कोई विचित्र बात भी न थी।

दोपहर का समय—सलमान आफरीदी अपने विशेष हॉल कमरे में बैठा पेण्टिंग बना रहा था तभी हसीना कॉर्डलैस फोन लेकर वहां आयी।

"तुम्हारा फोन है सलमान।" हसीना बोली—"कोई लड़की तुमसे बात करना चाहती है।"

"ल""लड़की।" सलमान आफरीदी चौंका—"कैनवास पर चलता उसका ब्रुश ठिठक गया।"

"हां—कहती है कि तुमसे कुछ जरूरी काम है।"

सलमान आफरीदी ने थोड़ी सस्पैंसफुल अवस्था में हसीना के हाथ से कॉर्डलैस फोन ले लिया।

"हैलो।"

"हैलो फोर स्कवायर नम्बर तीन।" तुरन्त एक बड़ा खनकदार स्वर सलमान आफरीदी के कानों में पड़ा।

"त""तुम।" बम-सा फट गया सलमान आफरीदी के दिमाग में—"तुम।"

"चौंको मत फोर स्कवायर—चौंको मत।" पूजा कोठारी घायल शेरनी की तरह गुर्राती चली गयी—"मैंने तुम्हें और महत्वपूर्ण सूचना देने के लिये इस वक्त फोन किया है।"

"कैसी जरूरी सूचना ?"

"मुझे अभी-अभी पता चला है कि कल यानि 13 अप्रैल को तुम्हारा जन्म दिन है—13 अप्रैल।" और ज्यादा जोर से खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी—"यह 13 का अंक भी कितना विचित्र है सलमान आफरीदी—उस दिन भी तेरह ही तारीख थी, जिस दिन तुमने अपने दोस्तों के साथ मिलकर ट्रेन में उस भयानक विभीषिका को जन्म दिया और कल भी तेरह ही तारीख है—तुम्हारे जन्म दिन की तारीख।"

सलमान आफरीदी का चेहरा सफेद झक्क पड़ गया—"त""तुम कहना क्या चाहती हो ?"

"मैं तुम्हें सिर्फ यह बताना चाहती हूं मेरे शिकार नम्बर 3।" पूजा कोठारी एक-एक शब्द चबाते हुए बोली—"कि कल रात ही तुम्हारे साथ वो भयानक विभीषिका घटित होगी—जिसके बाद तुम आत्महत्या करने को मजबूर हो जाओगे।"

"मैं आत्महत्या किसी हालत में नहीं करूंगा।" सलमान आफरीदी गला फाड़कर चिल्ला उठा।

"तुम्हें आत्महत्या करनी होगी।" पूजा कोठारी नागिन की तरह फुंफकारी—"मैं तुम्हारे सामने ऐसे हालात पैदा कर दूंगी कि तुम न चाहते हुए भी आत्महत्या करोगे—अब बस तुम अपने बाकि दो दोस्तों के पास ऊपर जाने के लिये तैयार हो जाओ।"

सलमान आफरीदी ने गुस्से में फोन बंद कर दिया।

वह कुर्सी पर लुढ़ककर जोर-जोर से हांफने लगा—उसका चेहरा एक बार फिर रूई की तरह सफेद झक्क् पड़ गया और उसकी आंखों में मौत नाचने लगी।

"आत्महत्या।" जबकि 'आत्महत्या' शब्द सुनकर हसीना के दिमाग में भयंकर विस्फोट हुआ—"य''''यह आत्महत्या का क्या चक्कर है सलमान—कौन तुमसे आत्महत्या करने के लिये कह रहा है ?"

"मुझे अकेला छोड़ दो।"

"लेकिन बात क्या है सलमान ?"

"प्लीज—चली जाओ यहां से।" सलमान आफरीदी पुनः चिल्ला उठा—"वरना मैं पागल हो जाऊंगा—पागल हो जाऊंगा।"

हसीना सख्त अचम्भे से सलमान आफरीदी को देखती हुई चुपचाप वहां से चली गयी।

मगर उसके दिमाग में धमाके अभी भी हो रहे थे—तेज़ धमाके।

वह समझ नहीं पा रही थी सलमान आफरीदी जैसे महान चित्रकार को कौन लड़की आत्महत्या करने के लिये कह रही है।

●●●

उस दिन रात को फतेह अली फिर शतरंज खेलने के लिये आया।

परन्तु उस समय तक सलमान आफरीदी इतना परेशान था कि वो दिखाने के लिये भी फतेह अली के साथ शतरंज खेलने न बैठ सका।

"कोई सीरियस बात जरूर है आफरीदी।" फतेह अली उसके सामने बैठता हुआ बोला—"तुम जरूर मुझसे कुछ छिपा रहे हो—वरना मैंने पहले कभी तुम्हें इतना परेशान नहीं देखा।"

"कोई बात नहीं है।"

"नहीं।" फतेह अली गुर्राया—"कोई बात जरूर है। जो भी परेशानी है—मुझे बे-हिचक बताओ आफरीदी—मैं तुम्हारी मदद करूंगा। एक जासूस होने के नाते न सही कम-से-कम एक दोस्त होने के नाते ही मुझे सब कुछ बताओ।"

सलमान आफरीदी के चेहरे पर अब कश-म-कश के भाव नज़र आने लगे।

वह समझ नहीं पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिये।

"ज्यादा सोचो मत।" फतेह अली एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला—"अगर कोई प्राइवेट बात भी है—तब भी वह मेरे से बाहर नहीं जायेगी।"

"ठीक है—मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या परेशानी है।" सलमान आफरीदी ने गहरी सांस ली और फिर वह उसे पूरी घटना विस्तारपूर्वक बताता चला गया।

परन्तु यह बात सलमान आफरीदी ने फिर भी गुप्त रखी कि उन चार दोस्तों ने 'फोर स्कवायर' बनकर कभी बंगलौर शहर में कितना बड़ा हंगामा मचाया था।

●●●

"बड़ी अजीब बात बता रहे हो।" उस घटना को सुनकर फतेह अली की आवाज में भी आश्चर्य के भाव तैरे—"यानि कोई लड़की पिछले कई दिन से तुम्हें लगातार फोन कर रही है और तुमसे कह रही है कि वह तुम्हारे सामने ऐसे हालात पैदा कर देगी कि तुम आत्महत्या के लिये मजबूर हो जाओगे।"

"बिल्कुल यही बात है।"

"और उस लड़की का फोन आज सुबह भी आया था ?" फतेह अली ने बड़ी गहरी नज़रों से सलमान आफरीदी की तरफ देखा।

"हां।" सलमान आफरीदी बोला—"इतना ही नहीं—उसने सुबह मुझसे यह भी कहा कि कल रात ही मेरे साथ वो घटना घटेगी, जिसके बाद मैं आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जाऊंगा।"

"और तुम कहते हो।" फतेह अली बोला—"तुम्हारी इस लड़की के साथ दुश्मनी भी कोई नहीं ?"

"न''नहीं।" अब सलमान आफरीदी थोड़ा हिचकिचाया—

"म''मेरी उससे दुश्मनी भी कोई नहीं। सच्चाई तो ये है—मैंने उसकी आज तक शक्ल भी नहीं देखी।"

"कमाल है।"

फतेह अली कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और बड़ी अचरज पूर्ण स्थिति में इधर-से-उधर टहलने लगा।

"मैंने अपनी पूरी जासूसी जिंदगी में ऐसा सनसनीखेज केस पहले कभी नहीं सुना।" फतेह अली ने अपनी जेब से सिगरेट का पैकिट

निकाला और फिर उसमें से एक सिगरेट निकालकर सुलगाई—"कितनी अजीब बात है—तुम्हारी उस लड़की से दुश्मनी कुछ नहीं—तुमने उसकी आज तक शक्ल भी नहीं देखी—परन्तु फिर भी वह लड़की तुम्हारे सामने ऐसे हालात पैदा कर देना चाहती है कि तुम आत्महत्या करने के लिये विवश हो जाओ। वाकई जबरदस्त मायाजाल है।"

"लेकिन यही मायाजाल तो मेरे प्राण सुखा रहा है फतेह अली।" सलमान आफरीदी ने बड़ी बेचैनी के आलम में जेब से रूमाल निकालकर अपने चेहरे के पसीने साफ किये—

"हर पल मेरे दिमाग में यही एक बात हथौड़े की तरह बजती रहती है—अब क्या होगा—अब क्या होगा। हर सैकिण्ड मौत मुझे अपनी आंखों के सामने खड़ी नज़र आती है।"

"लगता है कि अभी तुमने एक संभावना पर विचार नहीं किया आफरीदी।"

"किस संभावना पर ?"

"मुमकिन है कि वह तुम्हें सिर्फ डरा रही हो।" फतेह अली टहलता-टहलता ठिठका और उसने सिगरेट का एक लम्बा कश लगाया—"वास्तव में वो ऐसा कुछ करना ही न चाहती हो—जैसा वो बयान कर रही है।"

"न···नहीं" सलमान आफरीदी सूखे पत्ते की तरह कांपता हुआ कुर्सी से खड़ा हो गया—"व···वो मुझे सिर्फ डरा नहीं रही—व···वो मुझे खाली धमकी नहीं दे रही बल्कि वो वही करेगी—जैसा उसने कहा है। व···वह जरूर मेरे आसपास ऐसे हालात पैदा कर देगी—जो मैं आत्महत्या करने के लिये विवश हो जाऊं फतेह अली।" सलमान आफरीदी ने बेपनाह आतंकित अवस्था में फतेह अली का कंधा पकड़ लिया और वह लगभग गिड़गिड़ा उठा—"प···प्लीज—मुझे बचा लो फतेह अली। मुझे उस लड़की के कोप से बचा लो—वरना वो मुझे मार डालेगी।"

"धीरज रखो।" फतेह अली ने उसे झंझोड़ा—"धीरज रखो आफरीदी।"

"लेकिन···।"

"ज़रा बुद्धि से सोचो आफरीदी।" फतेह अली ने उसकी बात काटते हुए सिगरेट का एक लम्बा कश लगाया—"कोई भी लड़की किसी ऐसे व्यक्ति को आत्महत्या करने के लिये कैसे मजबूर कर सकती है—जो अभी मरना ही न चाहता हो ?"

"वह जरूर कुछ करेगी।"

"मगर सवाल ये है।" फतेह अली थोड़े आंदोलित लहजे में बोला—"कि वो ऐसा क्या करेगी—जो कोई आत्महत्या करने के लिये विवश हो जाये। किसी को भी आत्महत्या के लिये मजबूर कर देना आसान बात नहीं है—खासतौर पर एक ऐसे आदमी को, जिसे अपनी जिंदगी से प्यार है—जो अभी मरना भी नहीं चाहता। हां—अगर वह तुम्हारी हत्या करने के लिये कहती, तब बात समझ आती। क्योंकि किसी की हत्या कर देना आसान है—अपेक्षाकृत इस बात के कि, उसे जबरदस्ती आत्महत्या के लिये उकसाया जाये।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" सलमान आफरीदी के नेत्र सिकुड़े।

"मैं अभी सबसे पहले तो यही नहीं समझ पा रहा हूं।" फतेह अली ने सिगरेट की राख एश-ट्रे में झाड़ी—"कि वह लड़की तुम्हें मारना क्यों चाहती है ? फिर यह बात भी बड़ी पेचीदा है कि वह लड़की तुम्हें आत्महत्या के लिये मजबूर कर देगी।" बोलते-बोलते फतेह अली एकाएक ठिठका।

उसे मानों अकस्मात् कुछ याद आया।

"क्या हुआ ?" उसकी हरकत पर चौंका सलमान आफरीदी भी था।

"आज वह रूसी लड़की कहीं नजर नहीं आ रही—जो तुम्हारी फैन थी। क्या नाम बता रहे थे तुम उसका ?"

"सिल्विया।"

"हां—सिल्विया। वह कहां गयी ?"

"वो सुबह ही बंगले से चली गयी।"

"क···क्यों ?" फतेह अली के दिमाग में एकाएक धमाका-सा हुआ—"वह क्यों चली गयी ? वह तो कई दिन तुम्हारे साथ रहने वाली थी।"

"पता नहीं क्यों चली गयी।" सलमान आफरीदी शुष्क स्वर में बोला—"सुबह जब हसीना की और मेरी आंख खुली—तब तक वो बंगले से जा चुकी थी।"

"ओह।"

फतेह अली का एकाएक जासूसी दिमाग सक्रिय हो उठा।

उसके दिमाग में शक के अनार छूटने लगे।

फतेह अली ने अपनी सिगरेट का टोटा बड़ी तेज़ी से एश-ट्रे में रगड़कर बुझाया और फिर सलमान आफरीदी से बोला—

—"मुझे अकस्मात् बहुत जरूरी काम याद आ गया है—मैं जा रहा हूं—तुमसे फिर मुलाकात होगी।"

"ल··· लेकिन कहां जा रहे हो ?"

"यह बात लौटकर बताऊंगा।"

उसके बाद फतेह अली बंदूक से छूटी गोली की तरह बंगले से बाहर निकल गया।

●●●

फतेह अली रात को ही रियाध में बनी रूस की एम्बेसी पर पहुंचा और वहां जाकर यह मालूम किया कि पिछले सात-आठ दिनों में क्या कोई 'सिल्विया' नाम की लड़की रूस से रियाध घूमने आयी थी।

फौरन एम्बेसी के आदमी ने वीजा-रिकॉर्ड चैक किया—जिसे चैक करने में उसे मुश्किल से दस मिनट लगे।

"नहीं।" फिर उसकी गर्दन इंकार में हिली थी—"सिल्विया नाम की एक लड़की पिछले सात-आठ दिनों में तो क्या, पिछले एक महीने के दौरान भी रूस से नहीं आयी।"

"तुमने रिकार्ड अच्छी तरह चैक किया है ?"

"बिल्कुल अच्छी तरह चैक किया है।"

फतेह अली के दिमाग में अब और ज्यादा सस्पैंस के बम फटने लगे।

यानि वह बिल्कुल सही दिशा में सोच रहा था।

उसका शक सही था।

फतेह अली ने फौरन अपने दिमाग को सभी घटनाओं पर केन्द्रित करके बड़ी तेजी के साथ घुमाया—कुछ ही सैकिण्ड में उसने सिल्विया से सम्बन्धित तमाम घटनाओं का अवलोकन कर लिया था।

"मेरे एक सवाल का जवाब और दो।" फतेह अली ने अपने गाल के जख्म पर उंगली फेरते हुए एम्बेसी के आदमी से कहा।

"पूछो।"

"पिछले सात-आठ दिन में ऐसी कितनी रूसी लड़कियां रियाध आयी होंगी—जिनकी उम्र बीस से तीस वर्ष के बीच है ?"

एम्बेसी के आदमी ने दोबारा वीजा-रिकार्ड चैक किया।

फिर वह बोला—"पिछले दस दिन में ऐसी सिर्फ दो रूसी लड़कियां रियाध आयी हैं।"

"मुझे उन दोनों के नाम और रियाध के वह एड्रेस दो—जहां वो ठहरी हुई हैं।"

एम्बेसी के आदमी ने फौरन उन दोनों के नाम-पते फतेह अली को दे दिये।

●●●

13 अप्रैल का दिन काफी हंगामाखेज दिन था।

सूर्योदय होते ही फतेह अली बारी-बारी से उन दोनों एड्रेस पर पहुंचा—जहां वो लड़कियां ठहरी हुई थीं और वह उन दोनों रूसी लड़कियों से मिला।

मगर उन दोनों में-से कोई भी सिल्विया न थी।

फतेह अली का दिमाग अब और ज्यादा फिरकनी की तरेह घूमने लगा।

सस्पैंस का 'चक्रव्यूह' हर पल तेज होता जा रहा था।

पहले से तेज।

और तेज।

●●●

उधर—सलमान आफरीदी के बंगले पर उसके जन्म-दिन के भव्य समारोह की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं।

नीलोफर इधर-से-उधर भागती हुई तमाम तैयारियों में जुटी थी—इसके अलावा सऊदी अरब के लगभग सभी समाचार-पत्रों में उस दिन सलमान आफरीदी के जन्म-दिन की खबर कवर पेज पर ही बाकायदा चित्र के साथ छपी थी और उसे शुभकामनायें दी गयी थीं।

लेकिन सलमान आफरीदी की बुरी हालत थी—यह बात ही उसे आतंकित किये दे रही थी कि आज 13 तारीख है—वहीं 13 तारीख, जिस दिन उसके साथ कोई भयानक विभीषिका घटित होने वाली थी।

वह अपने बैडरूम में सिकुड़ा-सिमटा सा बैठा था और वहां उसने घुप्प अंधेरा कर रखा था।

तभी फतेह अली दरवाजा खोलकर उसके बैडरूम में दाखिल हुआ और उसने लाइट जलायी।

"क्या बात है।" फतेह अली बोला—"तुम अंधेरे में कैसे बैठे हो आफरीदी ?"

"मेरे संकट का समय शुरू हो चुका है।" फतेह अली को देखते ही सलमान आफरीदी उसकी तरफ झपटा—"आज 13 तारीख है—लगता है कि आज का मेरा यह जन्मदिन, मेरा मरण दिन बन जायेगा। उस लड़की का कुछ पता चला—जो मेरी जान की दुश्मन बनी हुई है ?"

"हां।" फतेह अली सिगरेट का कश लगाते हुए एक कदम और आगे बढ़ा—"उस लड़की का पता चल चुका है।"

"क···कौन है ?" सलमान आफरीदी की आवाज कंपकंपायी—"क···कौन है वो लड़की ?"

"तुम्हें उस लड़की का नाम सुनकर काफी हैरानी होगी आफरीदी।" फतेह अली वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया और उसने टांगें फैला दीं—"वो तुम्हारी सिल्विया नाम की वही प्रशंसिका है—जो तुम्हारे साथ बंगले में रही थी।"

"य···यह क्या कह रहे हो तुम।" सलमान आफरीदी के मुंह से वाकई तेज सिसकारी छूट गयी—"स···सिल्विया—नहीं—नहीं—वह रूसी लड़की भला मेरी हत्या क्यों करना चाहेगी ?"

"वह रूसी लड़की नहीं थी।" फतेह अली गुर्राया—"वह रूसी लड़की बनकर धोखा दे रही थी तुम्हें—तुम्हारी आंखों में धूल झोंक रही थी। इतना ही नहीं—उस लड़की का नाम सिल्विया भी नहीं था। तुम्हें सुनकर हैरानी होगी आफरीदी—पिछले एक महीने के दौरान सिल्विया नाम की कोई लड़की रूस से रियाध घूमने के लिये नहीं आयी। इसके अलावा पिछले दस दिन में सिर्फ दो रूसी लड़कियां रियाध आयी हैं और मैं इस वक्त उन दोनों से मिलकर यहां आया हूं—लेकिन उनमें सिल्विया कोई नहीं है।"

उस खबर को सुनकर सलमान आफरीदी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

उसके शरीर में आतंक की लहर दौड़ गयी।

इ···इसका मतलब वो अरविन्द कोठारी की बेटी थी।

वो वही लड़की थी—जिसने विजू आनन्द और कमल कपूर की हत्या की तथा अब वो उसे मारने के लिये रियाध आयी थी।

सलमान आफरीदी के जिस्म का पुर्जा-पुर्जा कांप उठा।

यह सोचकर उसके और अधिक होश उड़ गये कि वो उस लड़की के साथ जबरदस्ती सहवास भी कर चुका है।

अब तो वह नागिन बन चुकी होगी—पूरी तरह जहरीली नागिन।

"क्या सोच रहे हो आफरीदी ?" फतेह अली ने सिगरेट का एक और कश लगाया।

"व···वह लड़की मुझे नहीं छोड़ेगी फतेह अली।" सलमान आफरीदी थर-थर कांपते स्वर में बोला—"त···तुम देख लेना—व···वो मुझे मार डालेगी। वह जरूर मेरे सामने ऐसे हालात पैदा करेगी कि मैं आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जाऊंगा।"

"चिन्ता मत करो आफरीदी।" फतेह अली झटके से कुर्सी

छोड़कर उठा—"वह लड़की तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगी—वह कुछ नहीं करेगी।"

"कैसे कुछ नहीं करेगी ?" सलमान आफरीदी झुंझलाहट में डकरा उठा।

"क्योंकि मेरे दोस्त—मैं अब हर पल, हर लम्हां तुम्हारे साथ रहूंगा।" फतेह अली ने स्नेह से उसके कंधे पर हाथ रखा और अपने शोल्डर हालेस्टर से रिवॉल्वर निकाली—"मैं देखता हूं कि वो कैसे तुम्हारे आसपास भी फटकती है।" फतेह अली का चेहरा भभकने लगा—"अगर वो बंगले के इर्द-गिर्द भी कहीं दिखाई दी—तो फौरन मेरे रिवॉल्वर से निकली गोली उसके दिमाग को तरबूज की तरह फाड़ डालेगी।"

परन्तु फिर भी सलमान आफरीदी के चेहरे पर संतुष्टि के भाव न उभरे।

उसे हर पल लग रहा था कि कुछ होगा।

कुछ जरूर होगा।

●●●

सलमान आफरीदी की जन्मदिन पार्टी का आयोजन शाम के समय किया गया था।

इसलिये शाम होते ही पूरा बंगला दुल्हन की तरह जगमगाने लगा। सऊदी अरब के शाह से लेकर अन्य बड़ी-बड़ी हस्तियों को भी उस आयोजन में बुलाया गया था।

बंगले के बाहर प्रेस फोटोग्राफर और रिपोर्टरों का हुज्जूम उमड़ा हुआ था और वह सब उस बेहद अद्भुत तथा विशाल जन्मदिन पार्टी की कवरेज के लिये काफी लालायित थे।

रियाध के आम नागरिकों के बीच भी उस जन्म दिन पार्टी की काफी चर्चा थी और यह कहा जा रहा था कि सऊदी अरब के इतिहास में इतना शानदार जन्म दिन पहले कभी किसी का नहीं मनाया गया।

रात के आठ बजे से पार्टी शुरू हुई।

क्योंकि उस पार्टी में सऊदी अरब के बड़े-बड़े वी० आई० पी० लोग आने थे—इसलिये शाम के छः बजे से ही सलमान आफरीदी के बंगले को ब्लैक केट कमाण्डोज ने चारों तरफ से घेर लिया और उस पूरे इलाके को साधारण नागरिकों के लिये लगभग सील कर दिया गया।

रात के नौ बजे सऊदी अरब के शाह ने वहां कदम रखा।

बड़े-बड़े मिनिस्टर, गर्वनर, मेयर और अधिकारी वहां सलमान आफरीदी को उसके जन्मदिन की शुभकामनायें देने आये।

सचमुच वह शानदार आयोजन था—सलमान आफरीदी की जिन्दगी का सबसे बड़ा आयोजन। नीलोफर ने सारे इंतजाम गजब किये थे।

सलमान आफरीदी इस समय मेहमानों के बीच ही था और नकली मुस्कान बिखेरते हुए उनका स्वागत कर रहा था।

फतेह अली कदम-कदम पर उसके साथ था।

इतना ही नहीं—उसकी चौकन्नी आंखें चारों तरफ घूम रही थीं।

लेकिन फिर भी सलमान आफरीदी अंदर-ही-अंदर दहला हुआ था।

उसे बराबर लग रहा था कि आज जरूर उसके साथ कोई भयानक विभीषिका घटित होगी।

वह लड़की जरूर कुछ करके रहेगी।

●●●

रात के ग्यारह बजे तक जन्म दिन की वह पार्टी बड़े जोर-शोर के साथ चलती रही—सऊदी अरब की बड़ी-बड़ी हस्तियों के उस समारोह में मौजूद होने के कारण शराब पर तो वहां प्रतिबन्ध था—लेकिन अन्य कई किस्म के पदार्थ वहां पानी की तरह बह रहे थे।

ग्यारह बजे के बाद मेहमान वहां से धीरे-धीरे जाने लगे।

रात के बारह बजे तक वह पूरा बंगला मेहमानों से बिल्कुल खाली हो चुका था—और फिर वहां सिर्फ चार व्यक्ति रह गये—सलमान आफरीदी, फतेह अली, नीलोफर, और हसीना।

"अब मैं भी इजाजत चाहूंगी।" तमाम मेहमानों के जाते ही हसीना, सलमान आफरीदी से बोली—"मुझे भी फौरन कहीं जाना है।"

"तुम्हें कहां जाना है ?" सलमान आफरीदी चौंका।

"दरअसल जब पार्टी चल रही थी।" हसीना ने बताया—"तभी मेरे पास फोन आया था कि मेरी एक बहुत प्यारी सहेली रुख्सार को हार्ट अटैक का दौरा पड़ गया है और वो 'हयात हॉस्पिटल' में भर्ती है। मैं तब तो मेहमानों की वजह से न जा सकी—परन्तु मैं समझती हूं कि अब मुझे फौरन 'हयात हॉस्पिटल' जाकर उसकी खैर-खबर लेनी चाहिये।"

"ठीक है।" हार्ट अटैक की खबर सुनकर सलमान आफरीदी भी थोड़ा घबरा उठा—"अगर यह बात है—तो तुम फौरन अपनी सहेली को देखने हॉस्पिटल जाओ। लेकिन सुबह को जरूर वापस आ जाना।"

"हां—मैं सुबह आ जाऊंगी।"

उसके बाद हसीना बेहद परेशान आलम में ही तेज-तेज कदम रखती हुई बंगले से बाहर निकल गयी।

●●●

हसीना के जाते ही बंगले के अंदर अब सिर्फ तीन व्यक्ति ही रह गये।

सारा दिन की भागा-दौड़ी के कारण नीलोफर पहले ही काफी थकी हुई थी—इसलिये हसीना के जाते ही नीलोफर भी कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी।

"मुझे भी अब चलना चाहिये।" नीलोफर नींद की उबासी-सी लेते हुए बोली।

"तुम कहां जा रही हो।" सलमान आफरीदी बोला—"रात भी बहुत हो चुकी है और तुम काफी थकी हुई भी हो—इसलिये क्यों न आज रात यहीं आराम कर लो।"

"मिस्टर आफरीदी ठीक कह रहे हैं।" फतेह अली भी बोला—"आज रात तुम यहीं सो जाओ—सुबह चली जाना।"

"ठीक है—मैं सुबह चली जाऊंगी।" नीलोफर बोली—"ऊपर जिस कमरे में सिल्विया ठहरी थी—वो कमरा तो खुला हुआ है ?"

"हां—वह कमरा खुला है।"

"ओ० के०—मैं उसी कमरे में जाकर आराम करती हूं।"

नीलोफर थके-थके कदमों से चलती हुई ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ गयी।

●●●

बंगले के ड्राइंग हॉल में अब सिर्फ सलमान आफरीदी और फतेह अली ही बचे थे।

नीलोफर के जाते ही फतेह अली कुर्सी पर थोड़ा पसरकर बैठ गया और उसने सिगरेट सुलगा ली।

"साढ़े बारह बज चुके हैं।" फतेह अली ने सिगरेट का कश लगाते हुए अपनी रिस्टवॉच देखी—"अगर उस लड़की ने कोई हंगामा करना होता—तो वह कर चुकी होती। मैं पहले ही कहता था—वह तुम्हें सिर्फ डरा रही है।"

"व""वह डरा नहीं रही।" सलमान आफरीदी कंपकंपाये स्वर में बोला—"म""मुझे अभी भी लगता है—वह जरूर कुछ करेगी। जरूर कुछ होगा।"

"यह सिर्फ तुम्हारे मन का वहम है।" फतेह अली एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला—"सच्चाई तो ये है कि कुछ नहीं होने वाला। आज सारा दिन तुम्हारा इसी दहशत के आलम में गुजर गया है कि अब

कुछ होगा—अब कुछ होगा। मगर हुआ अभी तक कुछ नहीं—फिर भी मैं थोड़ी-बहुत देर और इंतजार करके देख लेता हूं कि शायद तुम्हारी बात सच हो जाये।"

फतेह अली सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगाते हुए कुर्सी पर कुछ और पसरकर बैठ गया।

समय बेहद सस्पैंस के आलम में धीरे-धीरे गुजरता रहा।

सलमान आफरीदी अभी भी बेहद डरा हुआ था।

जरा-सी आहट सुनते ही वह उछल पड़ता।

बार-बार वह रूमाल से अपने चेहरे के पसीने साफ करता।

इसी तरह रात के दो बज गये—परन्तु बंगले के अंदर कैसी भी कोई घटना न घटी।

"मैं समझता हूं कि तुम्हें अब बेफिक्र होकर आराम करना चाहिये आफरीदी।" फतेह अली गहरी सांस लेकर बोला—"वैसे भी तुम सारा दिन के थके हुए हो।"

"लेकिन वो लड़की·····।"

"उस लड़की का ख्याल भी अब अपने दिमाग से निकाल दो—मुझे भी अब चलना चाहिये।"

फिर फतेह अली कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

रात के चूंकि दो बज चुके थे—इसलिये सलमान आफरीदी को भी उसे रोकने की कोई तुक नज़र नही आयी।

वैसे उसे खुद भी अब यही लगने लगा था कि कोई घटना नहीं घटेगी।

इस प्रकार फतेह अली भी वहां से चला गया।

बंगले के इर्द-गिर्द जो ब्लैक केट कमाण्डोज़ थे—वह सब बारह बजे ही वहां से जा चुके थे।

●●●

घटना घटी—और ऐसी घटना घटी, जो हर किसी के लिये अकल्पनीय थी।

रात के तीन बजने वाले थे—खूब थके होने की वजह से सलमान आफरीदी को लेटते ही नींद आ गयी। नीलोफर पहले ही ऊपर वाले कमरे में सोई पड़ी थी।

कुल मिलाकर उस समय पूरा बंगला सन्नाटे में डूबा हुआ था—सिर्फ लोहे के मेन गेट के पास खड़ा एक वाचमैन पहरा दे रहा था।

तभी सनसनी की शुरूआत हुई।

सबसे पहले एक काला साया बंगले की पिछली बाउण्ड्री वाल के करीब प्रकट हुआ—वह पूजा कोठारी थी।

कुछ देर पूजा कोठारी बेहद चौकन्नी आंखों से आसपास के माहौल का जायजा लेती रही।

फिर उसके हाथ में प्लास्टिक की एक लम्बी रस्सी प्रकट हुई—जिसके अगले सिरे पर ऐन्कर लगा हुआ था।

रस्सी हाथ में आते ही पूजा कोठारी ने उसे फिरकनी की तरह जोर-जोर से हवा में घुमाया तथा फिर उसे बाउण्ड्री वाल के ऊपर की तरफ उछाल दिया।

तत्काल रस्सी लोहे के कंटीले तारों में जाकर उलझ गयी।

पूजा कोठारी ने रस्सी खींचकर देखी।

वह अच्छी तरह कंटीले तारों में जाकर फंस चुकी थी।

पूरी तरह यह विश्वास होते ही कि रस्सी अब उसे धोखा नहीं देगी—पूजा कोठारी ने रस्सी कसकर पकड़ी और फिर वह 'छिपकली' की तरह बड़ी तेजी के साथ उस पर चढ़ती चली गयी।

मुश्किल से दो मिनट बाद ही पूजा कोठारी ने धम्म् से बंगले के लॉन में छलांग लगा दी।

●●●

बंगले के अंदर पहुंचते ही पूजा कोठारी के शरीर में और ज्यादा फुर्ती समा गयी।

वह दबे पांव दौड़ती हुई सबसे पहले सलमान आफरीदी के बैडरूम में पहुंची थी।

उसने देखा—उसका तीसरा शिकार बेसुध सोया पड़ा है।

मुस्कुरायी पूजा कोठारी !

किसी नागिन से भी ज्यादा जहरीली मुस्कान थी वो।

फिर अगले ही क्षण बिना कोई सैकिण्ड गंवाये वो बड़ी फुर्ती के साथ उस बैडरूम में कुछ तलाशने लगी।

तलाशी वो बहुत सावधानीपूर्वक ले रही थी।

उसका एक-एक कदम योजनाबद्ध था।

लगभग दस मिनट तक वो बड़ी बारीकी से सलमान आफरीदी के बैडरूम में कुछ तलाश करती रही।

और अगले ही पल उसकी आंखें हजार-हजार वाट के बल्ब की तरह जगमगा उठीं।

उसके हाथ में अब 'सेक्स बेल्ट' थी।

सैक्स बेल्ट !

जिससे उसने अपने तीसरे शिकार की जिंदगी पर मौत के दस्तखत करने थे।

●●●

सैक्स बेल्ट हाथ में आते ही पूजा कोठारी उर्फ गरम छुरी झटके के साथ सलमान आफरीदी के बैडरूम से बाहर निकली।

वह पिछले कई घण्टे से बंगले पर नजर रखे हुए थी—इसलिये जानती थी कि नीलोफर अभी अंदर ही है।

सैक्स बेल्ट हाथ में लिये-लिये पूजा कोठारी ने उस कमरे की तलाश शुरू की—जिसमें नीलोफर सोई थी।

पांच मिनट तक वह कमरा तलाश करती रही।

शीघ्र ही उसे वो कमरा भी मिल गया।

पूजा कोठारी ने उस कमरे का दरवाजा धकेलकर देखा—वह अंदर से बंद था।

पूजा कोठारी फौरन लपककर खिड़की के नजदीक पहुंची। खिड़की खुली थी।

पलक झपकते ही पूजा कोठारी उस खिड़की के रास्ते कमरे के अंदर घुस गयी।

●●●

नीलोफर भी बिस्तर पर बेसुध सोई पड़ी थी।

कमरे में जीरो वाट का एक बल्ब जल रहा था—जिसका लाल प्रकाश नीलोफर के पूरे शरीर पर फैला था।

पूजा कोठारी ने आगे बढ़कर स्विच बोर्ड पर लगी एक सिटकनी दबा दी—फौरन वह जीरो वाट का बल्ब भी बुझ गया।

अब कमरे में अंधेरा था।

एकदम घुप्प—काजली अंधेरा। ऐसा अंधेरा—जो हाथ को हाथ भी न सुझाई दे।

कोई नहीं जानता था कि पूजा कोठारी अब क्या करने जा रही है। हां, इतना निश्चित था कि उसके दिमाग में तीसरे फोर स्कवायर को मारने के लिये कोई जबरदस्त प्लान था—जिसे अब वो कार्यान्वित करने वाली थी।

अपने उस प्लान का श्री गणेश उसने 'हिप्नोटिज्म' से किया।

हिप्नोटिज्म—जिसमें उसे महारथ हासिल थी—अलबत्ता अपनी उस आर्ट को इस्तेमाल करने का मौका उसे जिंदगी में पहली बार मिला।

ज़ीरो वाट का बल्ब बुझाते ही पूजा कोठारी ने अपनी जेब में 'रेडियम' की एक छोटी-सी गेंद निकाल ली जिसका आकार मुश्किल से पेपरवेट जितना था।

रेडियम की उस गेंद में आधा मीटर लम्बी चैन फिक्स थी।

पूजा कोठारी ने वह चैन अपने हाथ में पकड़ ली—तो उसके नीचे लटकी गेंद हवा में झूलने लगी।

गेंद 'रेडियम' की होने के कारण उस काजली अंधेरे में बिल्कुल अलग चमक रही थी और वह हवा में घूमते हुए ऐसी लग रही थी—जैसे कोई बेहद चमकदार हीरा हवा में इधर-से-उधर घूम रहा हो।

पूजा कोठारी रेडियम की उस गेंद को गहरी नींद सोती निलोफर की आंखों के सामने घुमाने लगी।

रेडियम की चमकती परछाई अब नीलोफर के चेहरे पर आ जा रही थी।

फिर पूजा कोठारी ने उसके माथे की एक विशेष नस पर उंगली रखी और उसे हलके से दबाया।

"क''''कौन है ?" गहरी नींद सोती नीलोफर की चेतना एकदम से जाग्रत हुई—"कौन है ?"

"मैं—सलमान आफरीदी !" पूजा कोठारी एकाएक अपनी आवाज़ बदलकर बेहद भर्राये स्वर में बोली—"तुम्हारा दोस्त सलमान आफरीदी !"

"स''''सलमान !" नीलोफर की आवाज में एकाएक चौंकने के भाव उभरे।

वह 'ट्रांस' की पोजीशन में आ चुकी थी।

उसकी आंखों के सामने रेडियम की गेंद अभी भी इधर-से-उधर आ जा रही थी।

"हां—सलमान आफरीदी !" पूजा कोठारी अब बिस्तर पर चढ़ गयी और उसके गुप्तांगों को टटोलने लगी—"मैं सलमान आफरीदी हूं।"

"ले''''लेकिन यह क्या कर रहे हो तुम ?" नीलोफर का शरीर छटपटाया—"य''''यह तुमने अपना हाथ कहां रख दिया है।"

"क्यों ?" मर्दाने अंदाज में ही खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी—"मजा नहीं आया।"

"लेकिन''''।"

"रिलैक्स डार्लिंग--रिलैक्स !" पूजा कोठारी हंसते हुए ही बोली—"मैं आज तुम्हें शारीरिक सुख दूंगा। मैं तुम्हारे साथ बलात्कार

करूंगा।" फिर और जोर से खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी—"कैसी अद्भुत बात है—जो लड़की बलात्कार के अपराध में आज तक अनेक मर्दों को फांसी की सजा करा चुकी है—आज उसी के साथ बलात्कार होगा। परन्तु तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाओगी—कुछ नहीं। क्योंकि मैं तुम्हारा दोस्त हूं—मैं जानता हूं कि तुम मुझे माफ कर दोगी।"

"न···नहीं।" नीलोफर 'ट्रांस' की अवस्था में ही छटपटाई—"नहीं—छोड़ो मुझे—छोड़ो।"

रेडियम की गेंद अब उसकी आंखों के गिर्द और ज्यादा जोर-जोर से घूमने लगी।

पूजा कोठारी ने नीलोफर को अपनी बांहों के दायरे में और अधिक कसकर जकड़ लिया।

अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिये।

अपनी नाक की नसिकाओं से उसके चेहरे पर गरम भभकारे छोड़ने लगी।

"छ···छोड़ो।" नीलोफर पुनः छटपटाई—"छोड़ो।"

उसी पल पूजा कोठारी ने उसकी स्कर्ट पकड़कर नीचे खींच दी थी—फिर उसकी टॉप भी ऊपर सरकाई।

अब पूजा कोठारी के हाथ नीलोफर के वक्षों की कठोरता का जायजा लेने लगे।

"स···सलमान!" नीलोफर 'ट्रांस' की पोजीशन में ही बिस्तर पर अपना शरीर पटकने लगी—"छोड़ो मुझे।"

"तुम सो जाओ—सो जाओ नीलोफर!"

"लेकिन···।"

"घबराओ मत—मैं तुम्हें आज भरपूर सुख दूंगा—मैं तुम्हें पाना चाहता हूं नीलोफर!"

पूजा कोठारी ने अपने भी कमर से नीचे के सारे वस्त्र उतार डाले और फिर कमर पर सैक्स बेल्ट बांध ली।

फिर उसने सैक्स बेल्ट का 'विशेष अंग' नीलोफर की दोनों जांघों के बीच में रख दिया।

नीलोफर के कण्ठ से सिसकारी छूट गयी।

वह अपने हाथ-पैर बिस्तर पर और ज्यादा तेजी से पटकने लगी।

तभी उसके कण्ठ से एक और तीव्र चीख निकली।

यही वो पल था—जब सैक्स बेल्ट का 'विशेष अंग' धीरे-धीरे नीलोफर की दोनों जांघों के बीच में उतरता चला गया।

उसी के साथ नीलोफर की छटपटाहट कम होती गयी।

उसका शरीर पसीनों में नहा गया और वह बिस्तर पर पड़ी हांफने लगी।

मुश्किल से पांच मिनट में ही पूजा कोठारी अपना काम करके चुपचाप उस कमरे से बाहर निकल गयी।

नीलोफर बिस्तर पर पड़ी पुनः गहरी नींद सो रही थी—'हिप्नोटिज्म' का प्रभाव अभी भी उसके ऊपर था।

उसके बाद पूजा कोठारी ने सैक्स बेल्ट वापस सलमान आफरीदी के बैडरूम में रखी और जिस तरह बाउण्ड्री वाल लांघकर उस बंगले में दाखिल हुई थी—उसी तरह खामोशी के साथ वहां से बाहर निकल गयी।

●●●

दिन निकलते ही बंगले में हंगामा मच गया।

नीलोफर धड़धड़ाती हुई सलमान आफरीदी के बैडरूम में घुसी और उसने उसे इतनी जोर से झंझोड़कर जगाया—जैसे कोई भूकम्प आ गया हो।

इस समय नीलोफर रणचण्डी नजर आ रही थी—साक्षात् रणचण्डी—उसका चेहरा दहकता हुआ अग्निकुण्ड बना था।

"क'''क्या बात है ?" सलमान आफरीदी हड़बड़ाता हुआ उठा—"क'''क्या हो गया ?"

"तुमने मेरे साथ बलात्कार किया है।" नीलोफर गला फाड़कर चिल्ला उठी—"तुम मेरी इज्जत के लुटेरे हो।"

"य'''यह क्या कह रही हो तुम ?" सलमान आफरीदी के होश गुम हो गये।

वह हक्का-बक्का रह गया।

"न'''नहीं।" सलमान आफरीदी दहशतजदा स्वर में बोला—"नहीं—तुम्हें जरूर कोई गलतफहमी हुई है नीलोफर !"

"बनो मत।" नीलोफर गुस्से में डकरा उठी—"रात तुम खिड़की के रास्ते चुपचाप मेरे कमरे में घुस आये थे और फिर मेरे भरसक विरोध के बावजूद तुमने मेरे साथ बलात्कार किया। यह देखो !" नीलोफर ने झटके से अपनी स्कर्ट पर लगा खून का धब्बा उसे दिखाया—"यह है मेरे साथ हुए बलात्कार की निशानी। इसके अलावा और ढेर सारा खून डबल-बैड की चादर पर पड़ा है।"

उस पुख्ता सबूत को देखकर सलमान आफरीदी के थोड़े-बहुत जो होश बचे थे—वह भी गुम हो गये।

नींद तो उसकी पहले ही उड़ चुकी थी।

"तुमने मेरा कौमार्य भंग किया है आफरीदी !" नीलोफर हिस्टीरियाई ढंग से चिंघाड़ती हुई बोली—"मैं नहीं जानती थी कि रात तुमने मुझे इसीलिये यहां जबरदस्ती रोका—ताकि मेरी इज्जत के साथ खेल सको। तुमने यह सोच भी कैसे लिया कि मैं तुम्हें माफ कर दूंगी।" नीलोफर नफरत का जहर उगलते हुए डकरायी—"अब तुम्हारा भी वही हश्र होगा—जो बलात्कार करने वाले दूसरे मर्दों का सऊदी अरब में होता है। तुम्हें भी फांसी होगी।"

सलमान आफरीदी का पूरा शरीर जूडी के मरीज की भांति थर-थर कांपने लगा।

उसके शरीर से पसीने की धारायें छूटने लगीं।

हिम्मत करके कहा उसने—"ल" लेकिन मैं तुम्हारे साथ बलात्कार कैसे कर सकता हूं।"

"क्यों ?" नीलोफर ने फौरन बंदूक से छूटी गोली की तरह सवाल दागा—"तुम बलात्कार क्यों नहीं कर सकते ?"

पसीनों में लथपथ हो गया आफरीदी !

वह समझ न सका कि नीलोफर के उस सवाल का क्या जवाब दे।

"मैं तुम्हें एक घण्टे का समय देती हूं।" नीलोफर ने भाले की तरह अपनी उंगली सलमान आफरीदी की तरफ तानी और उसे गरजकर चेतावनी दी—"सिर्फ एक घण्टे का समय। एक घण्टे के अंदर-अंदर या तो तुम खुद अपने आपको कानून के हवाले कर दो या फिर मैं तुम्हारी रिपोर्ट करने के लिये पुलिस स्टेशन चली जाऊंगी। फिलहाल एक घण्टे तक मैं और इस बंगले में हूं—इस बीच तुम्हें जो फैसला करना है, कर लो।"

उसके बाद नीलोफर वहां एक सैकिण्ड के लिये भी न रुकी।

जिस प्रकार वह दनदनाती हुई बैडरूम में घुसी थी—उसी प्रकार बैडरूम से बाहर निकल गयी।

नीलोफर के जाते ही सलमान आफरीदी ने कुछ सोचा—अगले ही पल वो बड़ी तेजी के साथ उस वार्डरोब की तरफ झपटा, जिसमें सैक्स बेल्ट रखी हुई थी।

उसने वार्डरोब खोला।

वार्डरोब खोलते ही उसकी निगाह सैक्स बेल्ट पर पड़ी और तत्काल उसके दिमाग में प्रचण्ड विस्फोट हो गया।

सैक्स बेल्ट के विशेष अंग पर खून लगा हुआ था।

काफी सारा ताजा खून।

"इ···इसका मतलब उसने वाकई नीलोफर के साथ बलात्कार किया है।" सलमान आफरीदी के अंदर से कोई चिल्लाया।

"व···वो वाकई बलात्कारी है।"

"मगर उसे कुछ याद क्यों नहीं ?"

"कुछ पता क्यों नहीं ?"

●●●

सलमान आफरीदी धम्म् से कुर्सी पर बैठ गया।

उसके शरीर से और ज्यादा पसीने की धारायें बहने लगीं।

वह बेपनाह आतंकित हो उठा—वह समझ नहीं पा रहा था कि रात उसने क्या कर दिया है।

अभी सलमान आफरीदी कुर्सी पर बैठा दहशत से थर-थर ही कांप रहा था कि तभी उसके बैडरूम का दरवाजा आहिस्ता से खुला और पूजा कोठारी मुस्कुराती हुई अंदर आ गयी।

"त···तुम !" पूजा कोठारी को देखते ही एकदम इतनी बुरी तरह उछला सलमान आफरीदी, जैसे एक साथ उस पर हजारों बिच्छुओं ने हमला किया हो—"त···तुम यहां !"

"हां, मैं सिल्विया !" पूजा कोठारी चूड़ियों की तरह खनकते स्वर में बोली—"तुम्हारी फैन सिल्विया !"

"न···नहीं।" सलमान आफरीदी आंदोलित लहजे में बोला—"त···तुम सिल्विया नहीं हो—तुम रूसी भी नहीं हो। तुम वही हो—वही—ज···जिसने मुझे फोन पर धमकियां दीं। जिसने विजू आनन्द और कमल कपूर को मारा—बंगलौर के सेशन जज अरविन्द कोठारी की बेटी।"

"ठीक पहचाना तुमने।" पूजा कोठारी और ज्यादा खनकदार ढंग से हंसी—"मैं सचमुच अरविन्द कोठारी की बेटी हूं—पूजा कोठारी नाम है मेरा। लेकिन बंगलौर के बाजारों में मुझे 'गरम छुरी' के नाम से ज्यादा जाना जाता है। गरम छुरी—जो मर्द के दिल में नश्तर बनकर उतर जाये।"

"लेकिन अब तुम यहां क्यों आयी हो ?"

"इतनी जल्दी सब कुछ भूल गये आफरीदी !" पूजा कोठारी एकाएक नागिन की तरह फुंफकार उठी—"मालूम नहीं—मैंने तुमसे कल सुबह क्या कहा था। मैंने कहा था कि तेरह तारीख की रात को तुम्हारे साथ एक ऐसी भयानक विभीषिका घटित होगी—जिसके बाद तुम आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जाओगे। और देखो—तुम्हारे साथ विभीषिका घटित हो चुकी है। सऊदी अरब की नीलोफर जैसी सबसे धुरंधर वकील ने तुम्हारे ऊपर बलात्कार का इल्जाम लगाया है।"

अब सलमान आफरीदी के दिमाग में और जबरदस्त धमाके हुए।

"इ... इसका मतलब !" सलमान आफरीदी के कण्ठ से तेज सिसकारी छूटी—"यह सारा षड़यन्त्र तुम्हारा है ?"

"हां।" पूजा कोठारी ने दांत किटकिटाये—"यह सब मेरी साजिश है।"

सलमान आफरीदी बेहद हतप्रभ् नजरों से पूजा कोठारी को देखने लगा।

"कितनी हैरतअंगेज बात है।" पूजा कोठारी भभके लहजे में उसका मखौल उड़ाते हुए बोली—"एक व्यक्ति—जो नपुंसक है—जो मर्द कहलाने योग्य नहीं। जो इस योग्य भी नहीं कि किसी औरत के भड़कते हुए जज्बातों को शान्त कर सके—नीलोफर ने उसी पर बलात्कार का इल्जाम लगाया है। उसी पर यह इल्जाम लगाया है कि उसने उसका कोमार्य भंग किया है। स्त्री का कोमार्य—जो वाकई कोई मर्द ही भंग कर सकता है।"

बोलते-बोलते पूजा कोठारी एकाएक जोर-जोर से हंसने लगी—पागलों की तरह हंसने लगी।

जबकि सलमान आफरीदी के चेहरे का सारा खून अब निचुड़ गया था।

हंसते हुए ही पूजा कोठारी वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गयी—बड़े मर्दाना अंदाज में उसने टांग-पर-टांग रख ली।

"बैठ जाओ आफरीदी—बैठ जाओ।"

लेकिन सलमान आफरीदी भौंचक्की-सी मुद्रा में खड़ा रहा।

"जरा सोचो।" पूजा कोठारी नागिन की तरह फुंफकारती हुई बोली—"तमाम हालातों पर गौर करो—तो तुम्हें मालूम होगा कि तुम कितने जबरदस्त चक्रव्यूह में फंस चुके हो। अगर तुम अपनी यह कमजोरी सऊदी अरब के कानून के सामने बयान करते हो, नीलोफर के सामने बयान करते हो कि तुम नपुंसक हो—तुम वास्तव में इस योग्य ही नहीं, जो तुम किसी औरत के साथ बलात्कार कर सको। तो पूरा सऊदी अरब तुम्हारे नाम पर थूकेगा—सऊदी अरब की वही जनता, जो आज एक महान चित्रकार के रूप में तुम्हारी पूजा करती है—तुम्हे देखने के लिये सड़कों पर भीड़ उमड़ पड़ती है और लड़कियां पागलों की तरह तुमसे ऑटोग्राफ मांगती हैं—तुम्हें छूना चाहती हैं—तुम्हें स्पर्श करना चाहती हैं—वही सब तुमसे नफरत करने लगेंगी। तुम्हारी तमाम प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी। और अगर तुम अपनी यह कमजोरी सऊदी अरब के कानून के सामने जाहिर नहीं करोगे—तो तुम्हें बलात्कार के इल्जाम में फांसी पर लटका दिया जायेगा। कैसी विचित्र

बात है।" पूजा कोठारी के होठों पर मुस्कान गहरी हो गयी—"तुम्हारे लिये अब दोनों तरफ मौत है—न तो तुम उस नफरत के बीच ही जिन्दा रह सकते हो—जो तुम्हारी कमजोरी पता चलने के बाद सऊदी अरब की जनता तुमसे गी और न तुम उस कमजोरी को छिपाकर ही जिन्दा रह सकते हो। तुमने मरना-ही-मरना है और तुम्हारी मौत ही मेरा प्रतिशोध होगी।"

सलमान आफरीदी के नेत्र फैल गये।

वाकई वो 'चक्रव्यूह' में फंस चुका था।

जबरदस्त 'चक्रव्यूह' में—जिसमें से निकलने का भी कोई रास्ता न था।

●●●

एक घण्टा पूरा होते ही नीलोफर पुनः सलमान आफरीदी के डरूम में आयी।

वो वहां पूजा कोठारी को देखकर बुरी तरह चौंकी—परन्तु जब पूजा कोठारी ने उसे यह बताया कि वो पूरी घटना से वाकिफ हो चुकी है—तो वह नॉर्मल हो गयी।

"हां।" नीलोफर गंभीरतापूर्वक बोली—"तो तुमने क्या फैसला किया है—मुझे बताओ। मैं अब और ज्यादा देर तुम्हारे इस बंगले के अंदर नहीं रहना चाहती।"

सलमान आफरीदी हतबुद्ध-सा खड़ा रहा।

उसने कोई फैसला किया होता—तो बताता भी।

"नीलोफर !" पूजा कोठारी ने फौरन अपनी योजना की अगली चाल चली—"मैं समझती हूं कि तुम आराम से बैठ जाओ—क्योंकि अभी हमें थोड़ा विचार-विमर्श करने की जरूरत है।"

"विचार-विमर्श !" नीलोफर भड़क उठी—"कैसा विचार-विमर्श ? मैं कोई विचार-विमर्श नहीं करना चाहती।"

"रिलैक्स नीलोफर !" पूजा कोठारी बोली—"मैं जानती हूं कि तुम्हारे साथ बलात्कार हुआ है। लेकिन फिर भी हमें किसी बीच के रास्ते पर, बात करके देखनी चाहिये।"

"कैसा बीच का रास्ता ?"

"बैठ जाओ—फिर मैं तुम्हें सब कुछ बताती हूं।"

नीलोफर गुस्से में भुनभुनाती हुई वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गयी।

"मिस्टर आफरीदी !" पूजा कोठारी ने मुस्कुराते हुए सलमान आफरीदी की तरफ देखा—"तुम भी बैठ जाओ।"

सलमान आफरीदी भी बैठ गया।

बन्दाग आफरीदी—वह सब कुछ जानता था कि सारा खेल उसके सामने बैठी वही चालाक लड़की खेल रही है।

लेकिन फिर भी वो कुछ नहीं कर सकता था।

बेबस था।

और इसी को 'दिमाग' कहते हैं।

जब सारी चालें दुश्मन के सामने चली जायें तथा वो फिर भी कुछ न कर सके।

●●●

बहरहाल तीनों अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गये।

फिर पूजा कोठारी ने अगला पत्ता फेंका—"नीलोफर—क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम मिस्टर आफरीदी को माफ कर दो ?"

"नहीं।" नीलोफर गुर्रा उठी—"किसी हालत में नहीं। मुझे बलात्कारियों से सख्त नफरत है और आज तो बलात्कार खुद मेरे साथ हुआ है।"

"लेकिन जरा सोचो नीलोफर !" पूजा कोठारी अपनी 'व्यूह रचना' करते हुए बोली—"मिस्टर आफरीदी का सऊदी अरब में कितना नाम है—कितनी इज्जत है—यहां की जनता पूजा करती है इनकी। उसी जनता को जब यह पता लगेगा कि इन्होंने बलात्कार जैसा जघन्य अपराध किया है—तो इनकी वर्षों की सारी प्रतिष्ठा एक ही पल के अंदर धूल में मिल जायेगी।"

"यह सारी बात इन्हें मेरे साथ बलात्कार करने से पहले सोचनी चाहिये थीं।" नीलोफर भभके लहजे में बोली—"मत भूलो सिल्विया—मैं एक आदर्शवादी वकील हूं और मैं यह बात किसी हालत में बर्दाश्त नहीं कर सकती कि जिस व्यक्ति ने मेरे साथ बलात्कार किया है—वह जीवित रहे।"

"यानि तुम मिस्टर आफरीदी की मौत हर हाल में चाहती हो।"

"बिल्कुल।"

"ठीक है।" पूजा कोठारी बोली—"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो जाये और मिस्टर आफरीदी की बदनामी भी न हो—इनकी तमाम उम्र की प्रतिष्ठा पर पानी भी न फिरे।"

"ऐसा क्या रास्ता हो सकता है ?" नीलोफर हतप्रभ लहजे में बोली—"जो दोनों ही काम हो जायें ?"

"है एक रास्ता ऐसा भी।" पूजा कोठारी बोली—"मान लो अगर मिस्टर आफरीदी अपने कुकृत्य से शर्मिंदा होकर अभी आत्महत्या

कर लें, तो क्या तुम इस बात को गुप्त रखोगी कि इन्होंने तुम्हारे साथ बलात्कार किया था ?"

"अ····आत्महत्या !" एकाएक बम-सा फटा सलमान आफरीदी के दिमाग में।

नीलोफर भी उस अद्भुत प्रस्ताव पर हक्की-बक्की रह गयी।

"मत भूलो नीलोफर !" पूजा कोठारी अपने दिमाग के हथौड़े से उन दोनों पर धड़ाधड़ योजना के हमले करते हुए बोली—"तुम मिस्टर आफरीदी की मौत चाहती हो—सिर्फ मौत ! तुम्हारा मकसद बलात्कारी को खत्म करना है—इसके लिये जरूरी नहीं कि अदालत ही उसे फाँसी की सजा सुनाये—वह खुद भी अपने कुकृत्य से शर्मिन्दा होकर आत्महत्या का रास्ता चुन सकता है। मिस्टर आफरीदी के आत्महत्या करते ही तुम्हारा मकसद हल हो जायेगा—जबकि आत्महत्या करने से मिस्टर आफरीदी को यह बेनिफिट होगा कि इनके नाम पर बलात्कार का कलंक लगने से बच जायेगा—उन्होंने अपनी आर्ट के दम पर सऊदी अरब की जनता के बीच जो पोजीशन बनायी है, वह कायम रहेगी और लोग युगों-युगों तक इन्हें इसी प्रकार एक महान चित्रकार के रूप में याद रखेंगे।"

नीलोफर के चेहरे पर एकाएक उलझनपूर्ण भाव नजर आने लगे।

जबकि सलमान आफरीदी, पूजा कोठारी के उस प्रस्ताव से और ज्यादा बौखला चुका था—वह नहीं समझ पा रहा था कि वो क्या करे।

"जल्दी फैसला करो नीलोफर !" पूजा कोठारी उन्हें ज्यादा सोचने-समझने की मोहलत दिये बिना बोली—"तुम्हें मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार है या नहीं ?"

नीलोफर सोचती रही।

"मत भूलो।" पूजा कोठारी ने शब्दों के प्रचण्ड हमले जारी रखे—"मिस्टर आफरीदी तुम्हारे दोस्त भी रहे हैं—इन्होंने तुम्हारे डैडी से आर्ट भी सीखी है। यह सच है कि इनसे एक भयानक गुनाह हो चुका है—लेकिन गुनाह इनके जिस्म से हुआ है—उस गुनाह में इनकी उस कला का कोई दोष नहीं, जो इनके ऊपर बलात्कार का कलंक लगने के बाद ख्वामखाह शर्मिंदा होगी। मिस्टर आफरीदी के अंदर जो चित्रकार है—उसे बदनाम करके तुम्हें क्या मिलेगा ? तुम सऊदी अरब के कानून के मुताबिक एक बलात्कारी को खत्म करना चाहती हो—वह खत्म हो जायेगा। लेकिन एक महान चित्रकार जिन्दा रहेगा—एक महान चित्रकार की प्रसिद्धि जिन्दा रहेगी।"

"ठीक है।" नीलोफर ने एकाएक अपना ऐतिहासिक फैसला

सुना दिया था—"मुझे तुम्हारा प्रस्ताव कबूल है सिल्विया—अगर मिस्टर आफरीदी आत्महत्या कर लें, तो मैं इस राज को हमेशा राज रखूंगी कि इन्होंने कभी मेरे साथ बलात्कार भी किया था।"

●●●

और—पूजा कोठारी को मानो मुंह मांगी मुराद मिल गयी थी—वह एकदम प्रफ्फुलित अवस्था में सलमान आफरीदी की तरफ घूमी।

"बोलो मिस्टर आफरीदी !" पूजा कोठारी ने फौरन ही सलमान आफरीदी पर भी शब्दों के हमले शुरू कर दिये।—"अब तुम्हारा क्या विचार है—क्या तुम आत्महत्या के लिये तैयार हो ?"

पसीनों में लथपथ हो गया सलमान आफरीदी !

मौत किसी के साथ इस तरह भी चूहा-बिल्ली का खेल, खेल सकती है—यह तो पहली बार देख रहा था।

"ल···लेकिन···।" सलमान आफरीदी ने कुछ कहना चाहा।

"कोई भी फैसला करने से पहले एक बात अच्छी तरह समझ लेना मिस्टर आफरीदी।" पूजा कोठारी ने उसकी बात बीच में ही काट दी—"अगर तुमने आत्महत्या नहीं की—तो तुम्हारे खिलाफ मुकद्मा चलेगा—पुलिस तुम्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल देगी—सऊदी अरब के तमाम अखबारों में तुम्हारे चित्र छपेंगे—यह छपेगा कि तुमने बलात्कार जैसा जघन्य अपराध किया। हर तरफ तुम्हारी थू-थू होगी। और मौत तुम्हारी तब भी निश्चित है—तुम्हें फांसी की सजा होगी। तुम जानते ही हो कि सऊदी अरब के इतिहास में आज तक कभी कोई बलात्कारी जीवित नहीं बचा। हां।" पूजा कोठारी एकाएक अपनी बात को मोड़ देती हुई बोली—"तुम बच सकते हो—लेकिन तब तुम्हें अपनी कमजोरी कानून के सामने शो करनी पड़ेगी—मगर मैं समझती हूं कि तुम उस कमजोरी को शो नहीं कर पाओगे। क्योंकि उसे शो करने के बाद तुम्हारे लिये जो नफरत का ज्वार पब्लिक के दिल में फूटेगा—उसे बर्दाश्त करना तुम्हारे लिये मुमकिन नहीं होगा। इसलिये बेहतर यही है कि तुम आत्महत्या कर लो और एक महान चित्रकार के रूप में अपनी यशगाथा को सदा के लिये जिन्दा छोड़ जाओ।"

●●●

सलमान आफरीदी का दिमाग एकाएक हेलिकॉप्टर की पंखुड़ियों की भांति बड़ी तेजी से घूमने लगा।

वह हाल से बेहाल हो गया।

बेहद परेशान।

उसने रूमाल निकालकर अपने चेहरे के पसीने जल्दी-जल्दी साफ किये।

वह जानता था कि पूजा कोठारी ने उसे अपनी चेतावनी के मुताबिक 'चक्रव्यूह' में फंसा दिया है।

सलमान आफरीदी के दिमाग में एक विचार यह भी कौंधा कि वह क्यों न चीख-चीखकर नीलोफर को यह बता दे कि वह सारी साजिश उस लड़की की है—पूजा कोठारी की।

परन्तु फिर वो सहम गया।

वो जानता था कि नीलोफर इस समय उस पर किसी हालत में विश्वास नहीं करेगी।

वो एक वकील है।

वो पूछेगी कि अगर यह सारी साजिश इस लड़की की है—तो मेरे साथ बलात्कार किसने किया ?

फिर उसे सैक्स बेल्ट का रहस्योद्‌घाटन करना पड़ेगा।

फिर यह राज भी छिपा नहीं रहेगा कि वो नपुंसक है।

उसके बाद संभव है कि पूजा कोठारी 'फोर स्कवायर' दल का रहस्य भी नीलोफर के सामने खोल दे।

यानि उस एक अपराध से बचने के चक्कर में उसके कई कारनामों की कलई खुल जायेगी।

सलमान आफरीदी के चेहरे पर मौत ताण्डव नृत्य करने लगी।

उसे तमाम रास्ते बंद नजर आ रहे थे।

सलमान आफरीदी ने रूमाल से फिर अपने चेहरे के पसीने साफ किये और गहरी सांस ली।

"ठीक है।" सलमान आफरीदी अपने कलेजे पर पत्थर रखकर बोला—"मैं आत्महत्या के लिये तैयार हूं—लेकिन आत्महत्या की कोई वजह भी तो होनी चाहिये। मेरा मतलब है कि कल जब सऊदी अरब के तमाम अखबारों में यह खबर छपेगी कि सलमान आफरीदी ने आत्महत्या कर ली तो पब्लिक को यह भी तो मालूम होना चाहिये कि मैंने आत्महत्या क्यों की ?"

"अच्छा सवाल है।" पूजा कोठारी बोली—"वाकई हमें आत्महत्या की कोई सॉलिड वजह तलाश करनी होगी।"

●●●

तभी एकाएक टेलीफोन की जोर-जोर से घण्टी बजने लगी।

अकस्मात् बजी टेलीफोन की उस घण्टी ने उन तीनों को बुरी तरह चौंकाया—वह इस तरह उछले, मानों गिद्धों ने उस कमरे में हमला बोल दिया हो।

काफी देर तक टेलीफोन की जोर-जोर से घण्टी बजती रही।

"मिस्टर आफरीदी !" पूजा कोठारी ने उस सन्नाटे को भंग किया—"रिसीवर उठाकर देखिये—किसका फोन है।"

सलमान आफरीदी ने कंपकंपाते हाथों से रिसीवर उठाया।

"हैलो !" फिर वो धीमी आवाज में बोला।

उसके 'हैलो' कहते ही दूसरी तरफ से एक ऐसी खबर सुनायी गयी—जिसे सुनकर सलमान आफरीदी के और होश उड़ गये—उसने अपने चेहरे के पसीने जल्दी-जल्दी साफ किये और बड़े मरियल हाथों से रिसीवर वापस क्रेडिल पर रखा।

"क्या हुआ ?" पूजा कोठारी ने पूछा—"किसका फोन था ?"

"ए···एक बड़ी बुरी खबर है।" सलमान आफरीदी कंपकंपाये स्वर में बोला—"रात जब मिस्टर फतेह अली मेरे पास से गये थे—तभी कुछ खतरनाक किस्म के गुण्डों ने रास्ते में उन पर हमला कर दिया और उन्हें मार डाला। पुलिस हैडक्वार्टर से फोन था—मुझे मिस्टर फतेह अली की मौत की खबर दी गयी है।"

"ओह—वैरी सैड !" नीलोफर के मुंह से दुःखदायी सिसकारी निकली।

जबकि उस खबर को सुनकर पूजा कोठारी उत्साहित हो उठी।

"यह सैड खबर ही तुम्हारे लिये 'गुड' साबित हो सकती है। मिस्टर आफरीदी !" पूजा कोठारी ने चमकती आंखों से सलमान आफरीदी की तरफ देखा—"तुम अभी आत्महत्या की किसी वजह के बारे में पूछ रहे थे न—मैं समझती हूं कि तुम्हें एक बहुत सॉलिड वजह मिल गयी है। तुम्हारे दोस्त फतेह अली की कुछ गुण्डों ने हत्या कर डाली है—तुम फौरन रिवॉल्वर उठाकर पुलिस हैडक्वार्टर जाओ और वहां पुलिस प्रशासन की नाकामी के खिलाफ पागलों की तरह चीखते-चिल्लाते हुए गनमैनों पर गोलियां चलानी शुरू कर दो—जाहिर-सी बात है कि वह गनमैन अपनी जान बचाने के लिये तुम पर भी गोलियां चलायेंगे और तुम मर जाओगे। लेकिन तुम्हारी वो मौत एक शहीद की मौत होगी। कल के अखबारों में तुम्हारा नाम मोटी-मोटी सुर्खियों में छपा होगा कि 'विश्व के महानतम् चित्रकार सलमान आफरीदी ने अपने दोस्त की मृत्यु से दुःखी होकर अपने

भी प्राण गंवा दिये'। आम जनता के दिल में तुम्हारा रूतबा और ऊंचा हो जायेगा—मरने के बाद तुम और ज्यादा बड़े हीरो बन जाओगे।"

सलमान आफरीदी के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे।

"ज्यादा सोचो मत।" पूजा कोठारी आंदोलित लहजे में बोली—"जो करना है—जल्दी कर डालो मिस्टर आफरीदी ! कहीं ऐसा न हो कि कोई यहां आकर तुम्हारा सारा प्रोग्राम मिट्टी में मिला दे। तुम्हारे लिये यह एक शानदार अवसर है—तुम्हें एक शहीद की मौत हासिल होने वाली है।"

सलमान आफरीदी ने और ज्यादा बैचेन होकर अपने चेहरे के पसीने साफ किये।

"तुम्हारा रिवॉल्वर कहां है ?"

"क···कपबोर्ड में !"

पूजा कोठारी कपबोर्ड की तरफ झपटी—उसने उसमें से ढूंढकर रिवॉल्वर निकाला और उसे चैक किया—उसके सभी छः खानों में गोलियां भरी थीं।

"यह लो मिस्टर आफरीदी !" पूजा कोठारी ने जबरदस्ती उसके हाथ में रिवॉल्वर पकड़ा दिया—"जाओ और जाकर अपना नाम शहीदों में लिखवा डालो—तुम्हें एक महान मौत नसीब होने जा रही है—तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो।"

सलमान आफरीदी कंपकंपाती टांगों से खड़ा हुआ।

उसके दिमाग में सांय-सांय आंधी चल रही थी।

उसका चेहरा विचार शून्य था।

उस पल उसे खुद मालूम नहीं था कि वो क्या करने जा रहा है।

कुछ ऐसा ही हाल नीलोफर का था—वह भी अपनी जगह भौंचक्की-सी मुद्रा में बैठी थी और उस पूरे ड्रामें को देख रही थी।

सऊदी अरब की इतनी धुरंधर वकील होने के बावजूद उसे मालूम नहीं था कि कितनी जबरदस्त चाल उसके सामने ही खेली जा रही है।

"जल्दी जाओ मिस्टर आफरीदी—जल्दी जाओ।"

एक क्षण के लिये कुछ सोचा सलमान आफरीदी ने—फिर वह सचमुच पागलों की तरह बाहर की तरफ दौड़ पड़ा।

अपनी कामयाबी पर मुस्कुरा उठी पूजा कोठारी—उसकी आंखें नागिन की तरह चमकने लगीं।

●●●

नीलोफर अभी भी सलमान आफरीदी के बंगले में ही थी और

निढाल-सी एक कुर्सी पर पड़ी थी—उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एकाएक वह सब क्या हो गया है।

सलमान आफरीदी के पीछे-पीछे ही पूजा कोठारी भी वहाँ से चली गयी थी कि और इस समय वह पूरे बंगले में अकेली ...

तभी घटना ने एक और नया रोमांचकारी मोड़ लिया।

नीलोफर अभी पूजा कोठारी के 'चक्रव्यूह' में ही उलझी ... थी कि उसी पल वहां फतेह अली के कदम पड़े।

फतेह अली को देखते ही नीलोफर इतनी बुरी तरह उछली जैसे उसे चार सौ चालीस वोल्ट का करेण्ट लग गया हो।

तभी हसीना भी वहां आ गयी।

"त...तुम !" नीलोफर ने फतेह अली को देखकर भौंचक्के स्वर में पूछा—"त...तुम जिन्दा हो ?"

"क्यों ?" हंसा फतेह अली—"मुझे भला क्या होने वाला है ?"

"लेकिन अभी-अभी पुलिस हैडक्वार्टर से फोन आया था।" नीलोफर हतप्रभ् लहजे में बोली—"कि रात जब तुम यहां से जा रहे थे—तो रास्ते में कुछ गुण्डों ने तुम्हें पकड़कर मार डाला।"

अब फतेह अली के दिमाग में भी धमाके हुए—उसकी हंसी भक्क् से उड़ गयी।

"सलमान आफरीदी कहां है ?" उसके जासूसी दिमाग ने एकदम से अलर्ट होकर पूछा।

"दरअसल मिस्टर आफरीदी ने रात मेरे साथ बलात्कार किया था।" नीलोफर थोड़े कठिन स्वर में बोली—"इसलिये वो सोसायटी में अपनी पोजीशन खराब होने से बचाने के लिये आत्महत्या करने गये हैं। थोड़ी ही देर पहले सिल्विया भी आयी थी—उसी ने मिस्टर आफरीदी को यह बीच का रास्ता सुझाया कि बलात्कार के अपराध में फांसी पर चढ़ने से बेहतर ये है कि वो खुद ही आत्महत्या कर ले।"

"थैंक गॉड !" फतेह अली के नेत्र दहशत से फटे—"सिल्विया यहां आयी थी ?"

"हां।" नीलोफर बोली—"लेकिन बात क्या है मिस्टर फतेह अली—तुम सिल्विया के नाम पर इतना चौंक क्यों रहे हो ?"

"क्योंकि वह सिल्विया नहीं है।" फतेह अली गुर्राकर बोला—"वह रूसी लड़की भी नहीं है। वह वास्तव में सलमान आफरीदी की दुश्मन है और उसने आफरीदी को धमकी दे रखी थी कि तेरह तारीख की रात को उसके साथ कोई ऐसी बहुत

भयानक विभीषिका घटित होगी—जिसके बाद वो आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जायेगा।"

"एक बात मेरे भी समझ नहीं आयी।" हसीना ने भी एकाएक उलझनपूर्ण स्वर में कहा।

"क्या बात ?"

"मिस्टर आफरीदी आपके साथ बलात्कार कैसे कर सकते हैं—वह तो नपुंसक हैं—वह तो इस योग्य ही नहीं कि किसी औरत के साथ सहवास कर सकें।"

"क''' क्या कह रही हो तुम ?" नीलोफर के साथ-साथ फतेह अली के मुंह से भी तेज सिसकारी छूटी।

"मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूं।" हसीना एक-एक शब्द चबाते हुए बोली—"मत भूलो—मैं मिस्टर आफरीदी के साथ रात-दिन इसी बंगले में रहती हूं और मैं उन्हें इतना जानती हूं—जितना कोई भी नहीं जानता।"

"लेकिन फिर मेरे साथ बलात्कार किसने किया ?" नीलोफर के शरीर में झुरझुरी दौड़ी।

"इसके पीछे भी जरूर उसी लड़की की कोई चाल होगी।" फतेह अली कर्कश लहजे में बोला—"जरूर उसी ने कोई षड़यन्त्र रचा होगा—मिस्टर आफरीदी अब आत्महत्या करने के लिये कहां गये हैं ?"

"व''' वो पुलिस हैडक्वार्टर गये हैं।" नीलोफर सशंकित स्वर में बोली—"उनका प्लान है कि वो वहां जाकर गनमैनों के ऊपर गोलियां चलायेंगे और जवाब में गनमैन उन्हें शूट कर देंगे। इस तरह उनकी मृत्यु हो जायेगी।"

फतेह अली एकाएक बुरी तरह बौखलाया-सा दरवाजे की तरफ लपका।

उसके पीछे-पीछे नीलोफर और हसीना भी दौड़ी।

●●●

वह तीनों बदहवासों की तरह कार में सवार होकर आनन-फानन पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचे थे।

लेकिन वहां पहुंचते ही उन तीनों के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी—पुलिस हैडक्वार्टर के प्रांगण में ही सलमान आफरीदी का गोलियों से छलनी शव पड़ा था और उसे चारों तरफ से पुलिस अधिकारियों ने घेर रखा था।

फतेह अली को देखकर कई पुलिस अधिकारी दौड़कर उसके नजदीक आये।

"सॉरी सर !" फौरन उनमें से एक अधिकारी बोला—"हमने मिस्टर आफरीदी को बचाने का बहुत प्रयास किया—लेकिन वो शायद पागल हो चुके थे—वह बार-बार यह चिल्लाते हुए हमारे पुलिसकर्मियों पर गोलियां चला रहे थे कि गुण्डों ने फतेह अली को मार डाला—गुण्डों ने मेरे दोस्त को मार डाला। उनकी फायरिंग में हमारे दो जवान घायल भी हो गये, जिन्हें अभी-अभी हॉस्पिटल भेजा गया है। अगर हम उन्हें थोड़ी देर और शूट न करते—तो शायद वह हमारे कई जवानों को भून डालते।"

फतेह अली की आंखों में आंसू छलछला उठे।

जिन्दगी में पहली बार कोई अपराधी उसे चकमा दे गया था—जबरदस्त चकमा !

नीलोफर और हसीना भी भौंचक्की-सी मुद्रा में लाश के पास खड़ी थीं।

●●●

पूजा कोठारी खिलखिलाकर हंस रही थी—जोर-जोर से खिलखिलाकर पागलों की तरह।

इस समय भी वो बाथरूम में ही बंद थी—शावर और नल सब खुले हुए थे—ताकि उसके खिलखिलाकर हंसने की आवाज होटल में बाहर तक न जा सके।

वह तीसरे 'फोर स्कवायर' की मौत का जश्न मना रही थी—शानदार जश्न !

उसने होटल के ही एक बैयरे को पटाकर 'फतेह अली' की मौत का झूठा समाचार सलमान आफरीदी तक पहुंचाया था।

"मैंने तीन दरिन्दों को मार डाला।" पूजा कोठारी खिलखिलाकर हंसते हुए ही बोली—"तीन दरिन्दों को। अब एक बचा है—सिर्फ एक।"

हंसते-हंसते पूजा कोठारी की आंखों के गिर्द एक बार फिर 13 मार्च की वही विभीषिका घूमने लगी।

मम्मी-डैडी और उसकी बड़ी बहन सविता की तस्वीरें पूजा कोठारी की आंखों के सामने घूम गयीं।

और—उसके बाद हमेशा की तरह जज्बाती हो गयी थी पूजा कोठारी।

उसने अपना चेहरा दोनों हथेलियों में छिपा लिया—फिर वो फूट-फूटकर रोने लगी—जोर-जोर से फूट-फूटकर।

●●●

पूजा कोठारी को सारी रात नींद न आयीं।

नींद आती भी कैसे—अभी उसका एक शिकार जिंदा था—फोर स्कवायर नम्बर चार।

पूजा कोठारी ने अब उसी चौथे फोर स्कवायर का पता लगाना था कि वो दुनिया के किस कोने में है।

बिस्तर पर बेचेनीपूर्वक करवटें बदलते-बदलते पूजा कोठारी की आंखों के गिर्द अपने चौथे शिकार का चेहरा घूम गया। चौथा शिकार—जो बेहद लम्बे-चौड़े शरीर वाला था। उसने उसकी बहन के साथ सबसे अंत में बलात्कार किया था।

पूजा कोठारी को याद आया—आज से आठ साल पहले ट्रेन में जब वो विभीषिका घटित हुई थी, तो वो विभीषिका अपने पीछे कुछ निशान छोड़ गयी थी और उसमें एक निशान बड़ा अजीब था।

दरअसल जब वह चौथा फोर स्कवायर उसकी बहन के साथ बलात्कार कर रहा था—तो वह जोर-जोर से स्पेनिश भाषा में एक शब्द बड़बड़ा रहा था—"मेटाडोर—मेटाडोर—मेटाडोर।"

पूजा कोठारी को आज से आठ साल पहले 'मेटाडोर' शब्द का अर्थ नहीं पता था—मगर आज वो उस अर्थ को जानती थी। दरअसल मेटाडोर उन खतरनाक पेशेवर फाइटरों को कहते हैं—जो तलवार हाथ में लेकर खूनी सांडों के साथ लड़ते हैं। और ऐसे फाइटर सिर्फ एक ही देश में रहते हैं—स्पेन में ! वहां बुलफाईटिंग एक राष्ट्रीय खेल है—दरअसल वहां मेटाडोरों को राष्ट्रीय स्तर पर लड़ने के लिये बाकायदा अपनी ग्रेडिंग करानी पड़ती है। फाइटरों के अलग-अलग 'ग्रेड' होते हैं—अलग-अलग 'ग्रुप' होते हैं। और ग्रेडिंग के बाद ही कोई मेटाडोर पेशेवर तौर पर लड़ सकता है।

पूजा कोठारी वह सब सोचते-सोचते एकाएक झटके से बिस्तर उट बैठी।

उसके चेहरे पर जलजले जैसे भाव थे।

पूजा कोठारी को लगा—उसका चौथा शिकार जरूर स्पेन में है।

हो सकता है कि वह 'मेटाडोर' जगत का कोई प्रशंसक हो या फिर ये भी संभव है कि उसने 'मेटाडोर' का प्रमाण-पत्र लेकर खुद ही खूनी सांडों के साथ लड़ना शुरू कर दिया हो।

यह बिल्कुल ऐसा था—जैसे भूसे के ढेर में सूई तलाश करना।

परन्तु जहां चाह—वहां राह।

मेड्रिड पहुंचने के बाद भी पूजा कोठारी चैन से नहीं बैठी।

वहां पहुंचते ही उसने मेटाडोर जगत में घूमना शुरू कर दिया।

जल्द ही उसे चौथे 'फोर स्क्वायर' का भी पता चल गया था।

वहां उसने मेटाडोरों की एक किताब देखी—जिसमें उसे अपने शिकार नम्बर चार की तस्वीर छपी मिल गयी।

पूजा कोठारी के अनुमान के अनुसार उसने सचमुच मेटाडोर शिप का प्रमाण-पत्र लेकर खूनी सांडों के साथ लड़ना शुरू कर दिया था और वो आज की तारीख में स्पेन का एक खतरनाक बुल फाइटर बन चुका था।

इतना ही नहीं—उसका 'ग्रेड' भी काफी ऊंचा था और वो पूरे मेटाडोर जगत का एक तरह से चैम्पियन था।

उस चौथे फोर स्क्वायर का नाम 'अबरोल' था।

अबरोल की तस्वीर के नीचे ही उसकी सेक्रेटरी का नाम-पता भी लिखा था—ताकि अगर कोई अबरोल को सांड के साथ फाइटिंग के लिए बुक करना चाहे, तो उसकी सेक्रेटरी से सम्पर्क स्थापित कर सके।

अबरोल की सेक्रेटरी का नाम था—ऐलिस!

●●●

बहरहाल पूजा कोठरी ने चौथे फोर स्क्वायर की हत्या करने के लिए फौरन ही षड्यंत्र का जाल फैलाना शुरू कर दिया।

उसने सबसे पहले ऐलिस के बराबर वाला फ्लैट किराये पर लिया और उसमें जाकर रहने लगी।

फिर अगले दिन सुबह-ही-सुबह वो ऐलिस से भी जाकर मिली।

ऐलिस लगभग सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की एक जवान लड़की थी—उसका रंग थोड़ा सांवला था—परन्तु उसके यौवन कलश काफी भारी-भारी थे और उसके नैन-नक्श में ऐसा चुम्बकीय आकर्षण था कि उसे देखते ही कोई भी पुरुष उसके साथ सहवास की कल्पना करने लगे।

"हैलो ऐलिस!" पूजा कोठारी ने बड़े दोस्ताना अंदाज में उससे कसकर हाथ मिलाया और मुस्कुरायी।

"हैलो!" ऐलिस भी उससे उतनी ही गरमजोशी के साथ मिली।

"मेरा नाम पूजा है।" पूजा कोठारी ने उसे बताया—"मैं मूलरूप से भारत की रहने वाली हूं और यहां खासतौर पर मेटाडोरों की सांडों के साथ कुश्तियां देखने आयी हूं।"

"वैरी गुड!" ऐलिस चहकी—"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि भारत जैसे देश में भी मेटाडोरों के प्रति क्रेज है।"

"दरअसल बुल फाइटिंग की यह कला आजकल पूरी दुनिया में बड़ी तेजी के साथ फैल रही है।" पूजा कोठारी मुस्कुराकर बोली—"फिर भला भारत भी उससे अछूता कैसे रह सकता है।"

"सही कहा तुमने—वाकई आज बुल फाइटिंग की कला पूरी दुनिया में तेजी से फैल रही है। मुझे लगता है कि बुल फाइटिंग भी बहुत जल्द पूरी दुनिया में बॉक्सिंग जैसा ही सम्मान प्राप्त कर लेगी और एक दिन मेटाडोरों का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर होगा।"

"बहरहाल मेरे लिये तो यह बहुत बड़े सम्मान की बात है।" पूजा कोठारी फख्र के साथ बोली—"कि मैं तुम्हारे फ्लैट के बराबर में आकर रह रही हूं। आज सुबह जब मुझे काम करने वाली बाई ने यह बताया कि तुम अबरोल जैसे महान मेटाडोर की पर्सनल सेक्रेटरी हो—तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा—मैं फौरन तुमसे मिलने के लिये भागी-भागी यहां आयी। तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो ऐलिस—जो तुम्हें हर समय अबरोल जैसे महान मेटाडोर के साथ रहने का सौभाग्य मिलता है।"

"इसमें भाग्य जैसा कुछ नहीं।" ऐलिस ने मुस्कुराकर ही जवाब दिया।

"तुम इस बात को नहीं समझोगी ऐलिस !" पूजा कोठारी दीवानों की तरह बोली—"दरअसल तुम्हें यह सब कुछ बहुत आसानी से मिल गया है—लेकिन मैं जानती हूं कि किसी मेटाडोर की पर्सनल सेक्रेटरी होना कितने गौरव की बात है।"

ऐलिस मुस्कुराती रही।

"क्या तुम मुझे अपने साथ ले जाकर मिस्टर अबरोल की कोई फाइट दिखाओगी ?"

"हां—हां, क्यों नहीं।" ऐलिस फौरन बोली—"आज शाम को ही नेशनल डी मारा स्टेडियम में एक फाइट है—तुम मेरे साथ वहां चलना।"

"थैंक्यू—थैंक्यू वैरी मच !" पूजा कोठारी ने दोबारा उत्साहित होकर उससे हाथ मिलाया।

थोड़ी देर में ही पूजा कोठारी और ऐलिस के बीच घनिष्ट दोस्ती हो गयी थी।

उस छोटी-सी मुलाकात में ही पूजा कोठारी ने ऐलिस के बारे में जो अंदाजा लगाया—वो ये था कि ऐलिस एक रंगीन मिजाज लड़की थी—दौलत और सैक्स की भूखी थी—इसके अलावा वो बहुत बोलने वाली थी।

उसका ज्यादा बोलना पूजा कोठारी के लिये कभी भी फायदेमंद साबित हो सकता था—क्योंकि जो लोग ज्यादा बोलते हैं, उनके दिल में कभी कोई राज नहीं छिपा रहता।

बहरहाल पूजा कोठारी शिकार नम्बर चार को अपने शिंकजे में कसने के लिये चाल चल चुकी थी।

●●●

उसी दिन शाम को ऐलिस उसे अबरोल की फाइट दिखाने के लिये नेशनल डी मारा स्टेडियम भी लेकर गयी।

पूरा स्टेडियम उस समय दर्शकों से खचाखच भरा था।

स्टेडियम के बीच में ही वो रिंग था—जिसमें अबरोल और खूनी सांड के बीच जबरदस्त मुठभेड़ होने वाली थी।

इस समय वह दोनों प्रतिद्वन्द्वी रिंग में आमने-सामने डटे थे—अबरोल के हाथ में तलवार थी और वो सांड को चीर डालने के लिये आतुर था—कुछ ऐसी ही स्थिति सांड की थी, वह अपनी लाल-लाल धधकती आंखों से अबरोल को इस प्रकार घूर रहा था।—मानों आज उसकी खैर न हो!

"अबरोल !"

"अबरोल !!"

"अबरोल !!!"

पूरा स्टेडियम 'अबरोल' के नाम की जय-जयकार से गूंज रहा था।

वह सबका प्रिय था।

पूजा कोठारी ने देखा—अबरोल के गले में इस समय भी दिल के आकार का वही लॉकिट झूल रहा था—जिसमें हीरे जड़े थे और जो कभी 'फोर स्कवायर' दल का पहचान चिन्ह था।

तभी पूरे स्टेडियम में सबकी सांसें रुक गयीं—फाइट शुरू हो चुकी थी।

रैफरी ने उन दो खूंखार प्रतिद्वन्द्वियों के बीच में खड़े होकर लाल रूमाल हवा में लहराया तथा फिर दौड़कर एक तरफ हो गया।

लाल रूमाल देखते ही सांड खूनी हो उठा था—वह एकदम अपने सींग नीचे करके अबरोल के ऊपर झपटा।

लेकिन अबरोल भी सावधान था—वह फौरन उछलकर एक तरफ हो गया।

सांड अपनी ही झोंक में रिंग के मजबूत पाइप से जाकर टकराया तथा लहराकर नीचे गिरा।

पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था।

मगर यह क्या—सांड जितनी तेजी से नीचे गिरा, उतनी ही तेजी से उठा और पुनः अबरोल के ऊपर झपटा।

अबरोल ने एक बार फिर उछलकर अपनी जान बचायी।

काफी देर तक उनके बीच आंख-मिचौली का खेल चलता रहा।

फिर एक क्षण वह भी आया—जब सांड अबरोल के सामने 'उरेकान' की मुद्रा में खड़ा हो गया।

उरेकान एक स्टाइल होती है—जिसे सांड उस समय प्रयोग करता है, जब उसे इस बात का पूरा यकीन हो कि उसका दुश्मन उसे दांये या बांये से नहीं घेर सकता।

सांड के खतरनाक इरादे भांपते ही अबरोल भी सतर्क हो गया—उसने तलवार अपने दांये हाथ से उछालकर बांये हाथ में ले ली और इससे पहले कि सांड उसके ऊपर झपटता—वह अपने मुंह से रण हुंकार भरता हुआ जूडो के एक दांव 'ओ ब्रूनी' के स्टाइल में फर्श पर कलाबाजी खाता हुआ सांड की टांगों के अंदर घुस गया।

जोर से उछला सांड !

उसी पल अबरोल के हाथ में मौजूद तलवार बड़ी तेजी से चली और सांड का पेट फाड़ती चली गयी।

उसके पेट से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

लेकिन सांड भी बहुत खूंखार था—पेट फटने के बावजूद वह पलटा और उसने पुनः अबरोल के ऊपर हमला किया। अबरोल इस बार चिकनी मछली की तरह सांड की टांगों के बीच में-से फिसलकर निकल गया।

इतना ही नहीं—बाहर निकलते ही उसने फिर तलवार से सांड के पेट पर हमला किया।

खून का एक और तेज फव्वारा छूटा।

इस बार सांड लहराकर फर्श पर गिरा—तो दोबारा न उठ सका।

"अबरोल—अबरोल—अबरोल—।"

एक बार फिर पूरा नेशनल डी मारा स्टेडियम 'अबरोल' के नाम की जय-जयकार से गूंज उठा था।

अबरोल के प्रशंसक फौरन दौड़कर रिंग में पहुंच गये—उसे चारों तरफ से घेर लिया और उससे ऑटोग्राफ लेने लगे।

पूजा कोठारी बेहद गौर से अबरोल की एक-एक हरकत देख रही थी।

इसमें कोई शक नहीं—उसका चौथा और अंतिम शिकार बेहद शक्तिशाली था।

तभी पूजा कोठारी ने अबरोल की एक और आदत नोट की।

ऑटोग्राफ देते समय अबरोल बार-बार अपने मुंह के थूक से ऑटोग्राफ के पन्ने पलटता था।

हालांकि वो हरकत बेहद मामूली थी—लेकिन अबरोल की उस हरकत को देखकर पूजा कोठारी की आंखें चमक उठीं।

●●●

थोड़ी ही दर बाद अबरोल अपनी सेक्रेटरी एलिस तथा अपने दो अटेण्डरों के साथ रिंग में-से निकलकर स्टेडियम में ही बने एक प्राइवेट केबिन के अंदर चला गया।

वहां पहुंचते ही अबरोल किसी मरियल सांड की तरह एक कुर्सी पर गिर पड़ा—फौरन दोनों अटेण्डर तौलिये से उसके जिस्म का पसीना साफ करने लगे—जबकि अबरोल ने आगे झुककर स्कॉच की बोतल उठा ली और उसे मुंह से लगाकर गटागट पीने लगा।

कुछ ही देर में वो आधी बोतल खाली कर गया।

"क्या बात है सर ?" एक अटेण्डर तौलिये से उसके जिस्म का पसीना साफ करता हुआ बोला—"आप आज सुबह से ही बहुत शराब पी रहे हैं—पहले तो कभी हमने आपको इस कदर शराब पीते नहीं देखा—क्या कोई घटना घट गयी ?"

"नहीं।" अबरोल ने बड़ी संजीदगी के साथ स्कॉच के तीन-चार घूंट और भरे—"कोई घटना नहीं घटी।"

"कोई बात तो जरूर है सर !" दूसरा अटेण्डर भी बोला—"आज आप बहुत उदास भी हैं।"

"कहा न—कुछ नहीं हुआ मुझे। बस आज मेरा मन कुछ परेशान है।"

"मन परेशान होने के पीछे भी तो कोई वजह होगी सर ?" ऐलिस बोली।

"तुम लोग चले जाओ यहां से।" अबरोल एकाएक गुस्से में चिल्लाता हुआ कुर्सी से उठा—"कुछ देर के लिये मुझे इस कमरे में बिल्कुल अकेला छोड़ दो—मैं यहां आराम करना चाहता हूं।"

उन तीनों ने हैरान होकर अबरोल की तरफ देखा।

पहले कभी अबरोल को इतना गुस्सा नहीं आया था—जितना वो आज गुस्से में था।

वह तीनों चुपचाप उस प्राइवेट केबिन से बाहर निकल गये।

●●●

उनके जाते ही अबरोल दोबारा धम्म से कुर्सी पर गिर पड़ा—वह फिर उदास हो गया था और उसके माथे पर परेशानी की लकीरें खिंच गयीं।

उसने स्कॉच के तीन-चार घूंट और भरे।

आज सुबह ही उसे सलमान आफरीदी की मौत का समाचार मिला था—जिसने उसकी आत्मा तक को झंझोड़ डाला।

तीन 'फोर स्कवायर' मारे जा चुके थे।

क्या अब उसकी बारी थी ?

क्या अब वो लड़की उसकी भी हत्या करने के लिये स्पेन आयेगी ?

कांप उठा अबरोल !

उसने गटागट स्कॉच के कुछ घूंट और भरे।

अबरोल ने जिंदगी में डरना नहीं सीखा था। परन्तु न जाने क्यों उस लड़की की कल्पना मात्र से ही उसके शरीर में खौफ की लहर दौड़ जाती थी—जो उसके तीन बहुत प्यारे दोस्तों को मार चुकी थी।

उसके वह तीन दोस्त—जो सभी अपने-अपने जगत की हस्तियां थे।

●●●

पूजा कोठारी और ऐलिस—उन दोनों के बीच अब काफी गहरी दोस्ती हो चुकी थी।

उस रात का खाना भी उन दोनों ने एक साथ ही खाया—फिर टी० वी० पर साथ-साथ ही माइकल जैक्सन का प्रोग्राम देखा और उसके बाद शराब के भी दो-दो पैग पीये।

तब तक रात के ग्यारह बज चुके थे।

फिर पूजा कोठारी वहां से जाने के लिये उठी।

"कहां जा रही हो।" ऐलिस ने फौरन पूजा कोठारी का हाथ पकड़ लिया—"यहीं सो जाओ।"

"ओ० के०" पूजा कोठारी मुस्कुरायी—"अगर तुम कहती हो—तो मैं यहीं सो जाती हूं। आखिर मुझे अपने फ्लैट में भी तो जाकर अकेले ही सोना है।"

पूजा कोठारी, ऐलिस की निकटता हासिल करने का कोई भी क्षण गंवाना नहीं चाहती थी।

वो वहीं ऐलिस के पास ही डबल-बैड पर लेट गयी।

मुश्किल से एक घण्टे बाद ही पूजा कोठारी ने ऐलिस का हाथ अपनी कमर पर सर्प की भांति रेंगता महसूस किया।

चौकन्नी हो उठी पूजा कोठारी—सैक्स की अभिलाषा वो हजारों मील दूर से सूंघ लेती थी—आखिर वो बंगलौर की 'गरम छुरी' थी।

ऐलिस इस समय समलैंगिक क्रिया के लिये व्याकुल हो रही थी।

एक क्षण के लिये कुछ सोचा पूजा कोठारी ने—फिर उसके होठों

पर बड़ी कातिलाना मुस्कान दौड़ गयी और उसने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया।

उसी पल ऐलिस ने उसे अपनी दोनों बाहों में कसकर जकड़ लिया था और फिर एक झटके में उसके ऊपर आ चढ़ी।

पूजा कोठारी उसे देखकर मुस्कुरायी—फिर उसने भी ऐलिस को अपनी दोनों बाहों में कसकर जकड़ लिया और उसके चेहरे पर ढेर सारे गरमा-गरम चुम्बन जड़ डाले।

ऐलिस का दिल खुश हो गया।

उसने आनन-फानन अपने सारे कपड़े उतार डाले और फिर पूजा कोठारी को भी निर्वस्त्र कर दिया।

अब वह दोनों नग्न थीं।

उसके बाद वह एक-दूसरे से पुनः कसकर लिपट गयीं।

वह रात ऐलिस के लिये एक यादगार रात साबित हुई—क्योंकि पूजा कोठारी ने सैक्स के लगभग तमाम दांव-पेंच उसके ऊपर इस्तेमाल कर डाले थे।

तकरीबन आधा घण्टे तक बिस्तर पर सैक्स का तूफान आता रहा।

वह तूफान तब रुका—जब उन दोनों के अन्तर से फुहारें छूट पड़ीं।

वह दोनों अब एक-दूसरे से लिपटी हुई बुरी तरह हांफ रही थीं। और उनके शरीर मदन लहरी के कारण कंपकंपा रहे थे।

"तुम वाकई बहुत गजब की लड़की हो।" ऐलिस ने खुश होकर पूजा कोठारी के वक्ष का गरमजोशी के साथ चुम्बन लिया—"मैंने आज तक ऐसा सैक्स सुख नहीं भोगा—जैसा आज तुमने मुझे दिया।"

पूजा कोठारी आहिस्ता से मुस्कुरा दी।

●●●

उसी पल पूजा कोठारी की दृष्टि ऐलिस की दोनों जांघों के बीच वाले अंग पर पड़ी—जो बहुत अधिक फैला हुआ था।

ऐलिस के शरीर पर भी जगह-जगह खरोंचों के निशान थे—जैसे किसी दरिंदे ने उसके बदन को रौंदा हो।

"य'''यह सब कैसे हुआ ?" पूजा कोठारी ने थोड़ा चौंककर ऐलिस से पूछा।

"अबरोल के कारण हुआ।" उस सवाल का जवाब देते हुए ऐलिस के चेहरे पर दुःख की काली छाया मंडराने लगी थी—"दरअसल अबरोल मेरे साथ अक्सर सहवास करता है—मुझे सहवास से कोई ऐतराज नहीं—परन्तु उसके विशेष अंग का आकार

इतना बड़ा है कि वह किसी भी स्त्री के अंग को क्षतिग्रस्त कर डाले—मेरा अंग इसीलिये इतना फैल गया है।"

"ओह !" पूजा कोठारी शुष्क स्वर में बोली—"यह तो सचमुच बड़ी खतरनाक स्थिति है—इससे तो तुम्हारी पूरी सैक्स लाइफ बर्बाद हो जायेगी।"

"ठीक कहा तुमने।" ऐलिस बोली—"अगर अबरोल मेरे साथ इसी प्रकार सहवास करता रहा—तो सचमुच मेरी सैक्स लाइफ बर्बाद हो जायेगी। क्योंकि फिर मेरा अंग इस योग्य रहेगा ही नहीं—जो कोई पुरुष इसे देखकर आकर्षित हो सके। फिर तो पुरुषों को इससे घृणा होगी।"

"और तुम्हारे शरीर पर यह खरोंचों के निशान कैसे हैं ?"

"यह भी अबरोल ने ही दिये हैं।" ऐलिस ने बताया—"दरअसल अबरोल बिस्तर पर एकदम जंगली जानवर बन जाता है और वहशियों की तरह बर्ताव करने लगता है। मेरे शरीर को झंझोड़ डालता है और कभी-कभी बिस्तर पर बोरी की तरह पटक देता है।"

"माई गॉड !" पूजा कोठारी ने हैरत से मुंह फैलाया—"वह तो सचमुच कोई दरिन्दा है।"

"ठीक कहा तुमने।" ऐलिस कुछ और उदास हो गयी—"वह दरिन्दा ही है।"

"अगर उसके साथ रहने में तुम्हें इतने कष्ट भोगने पड़ते हैं।" पूजा कोठारी बोली—"तो तुम उसका साथ क्यों नहीं छोड़ देतीं ?"

"नहीं।" ऐलिस की गर्दन इंकार में हिली—"मैं उसका साथ नहीं छोड़ सकती।"

"क्यों ?"

"इसके पीछे एक राज है।" अब ऐलिस का व्यक्तित्व एकाएक बेहद रहस्यमयी हो उठा था।

"र''राज !" पूजा कोठारी की समस्त इन्द्रियां सजग हो उठीं—"क''कैसा राज ?"

"मैं वो राज किसी को नहीं बता सकती।"

"क्यों—क्या तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं ?"

ऐलिस हिचकिचाई—"य''यह बात नहीं।"

"फिर ?"

ऐलिस अब बिस्तर पर उठकर बैठ गयी और कुछ सोचने लगी—उसके चेहरे पर कश-म-कश के चिन्ह उभर आये थे।

"बताओ।" पूजा कोठारी ने जिद की—"आखिर बात क्या है

ऐलिस—क्यों तुम इतने कष्ट झेलने के बाद भी अबरोल का साथ नहीं छोड़ सकतीं ?"

●●●

ऐलिस कुछ क्षण बिस्तर पर बैठी सोचती रही।

"ठीक है।" फिर वो निर्णायक लहजे में बोली—"आज मैं जिंदगी में पहली बार किसी को वह राज बताती हूं। परन्तु उससे पहले तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो—तुम स्पेन से वापस भारत कब जा रही हो ?"

"यूं तो मैं यहां एक महीने के वास्ते रहने आयी थी।" पूजा कोठारी ने फौरन चाल चली—"लेकिन आज तुम्हारे साथ नेशनल डी मारा स्टेडियम जाने से पहले मैंने भारत अपने घर फोन किया—तो मुझे पता चला कि मेरी मम्मी की तबीयत बहुत खराब है—इसलिये लगता है कि दो-तीन दिन में ही मुझे वापस अपने देश लौटना पड़ेगा।"

"अगर तुम जल्द ही भारत लौट जाओगी—तो फिर ठीक है।"

●●●

ऐलिस ने राहत की सांस ली—"फिर मैं तुम्हें वो राज बताती हूं—लेकिन वो राज अपने तक ही सीमित रखना।"

"बेफिक्र रहो।" पूजा कोठारी यकीन से भरे लहजे में बोली—"वह राज मेरे तक ही सीमित रहेगा।"

"तो फिर सुनो।" ऐलिस की आवाज़ और रहस्यमयी हो उठी—"दरअसल एबरोल ने स्पेन की एक बहुत बड़ी बीमा कम्पनी के अन्दर अपना दो करोड़ डॉलर का एक भारी-भरकम बीमा करा रखा है—इसके लिये वह बीमा कम्पनी को हर वर्ष एक बड़ी मोटी किश्त भी अदा करता है। इतना ही नहीं—उस बीमे के नियम भी बड़े अजीबोगरीब हैं।"

"क्या नियम हैं ?" पूजा कोठारी को अपने दिल पर हथौड़े से बजते महसूस होने लगे।

"जैसे आज से दस वर्ष बाद उस बीमें का अनुबन्ध पूरा हो जायेगा और तब बीमा कम्पनी अबरोल को दो करोड़ डॉलर की धनराशि दे देगी।"

"लेकिन अगर उस वर्ष पूरे होने से पहले ही अबरोल की मृत्यु हो गयी।" पूजा कोठारी बोली—"तब क्या होगा ?"

"गुड क्वेश्चन। अगर अबरोल की दस से पहले मृत्यु हो जाती है।" ऐलिस बोली—"तो अबरोल ने जितनी भी किश्तें बीमा कम्पनी में भरी होंगी—सब की सब बीमा कम्पनी की हो जायेंगी।"

"ऐसा क्यों ?" पूजा कोठारी के दिमाग पर वज्रपात हुआ—"ऐसा तो दुनिया में कहीं नहीं होता।"

"मैंने कहा न—उस बीमें के बड़े अजीबोगरीब नियम है।" ऐलिस बोली—"वैसे इसमें अजीब भी कुछ नहीं। आखिर बीमा कम्पनी ने अबरोल का दो करोड़ डॉलर का बीमा करके भी तो बहुत भारी रिस्क लिया है—फिर बीमा कम्पनी को दस वर्ष बाद ही उसे वो धनराशि देनी पड़ेगी। ऐसी परिस्थिति में बीमा कम्पनी का भी तो यह हक बन जाता है कि वो रिस्क के साथ-साथ उस बीमें से कुछ ऐसी शर्तें भी जोड़े—जिससे अकस्मात् घटी किसी घटना में उसका फायदा होने का चांस रहे। फिर अबरोल को मरने के बाद दौलत में वैसे भी कुछ इन्ट्रेस्ट नहीं है—क्योंकि उसके आगे-पीछे कोई है नहीं, जो उसके बाद उसकी दौलत का इस्तेमाल कर सके। इसलिए उसके पश्चात् उसकी दौलत को बीमा कम्पनी हड़पे या कोई और हड़पे—उस पर क्या फर्क पड़ता है।"

ऐलिस काफी हद तक ठीक कह रही थी।

"अब उस बीमें से सम्बन्धित एक और बड़ी दिलचस्प बात सुनो।" ऐलिस यकायक अपनी आंखों में चमक भरकर बोली—"उस बीमें के नियमों में एक बड़ा मजेदार क्लू है।"

"कैसा क्लू ?"

"जैसा कि मैं पहले बता चुकी हूं—अगर अबरोल की मृत्यु साधारण परिस्थितियों में होती है, तो उसकी सारी किश्तें बीमा कम्पनी की हो जायेंगी। लेकिन अगर किसी वजह से अबरोल की मृत्यु जहर से होती है—तो दो करोड़ डॉलर की वो भारी-भरकम धनराशि उसके नॉमिनी को मिल जायेगी।"

पूजा कोठारी के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाती हुई गिरी।

"बड़ी अजीब बात बता रही हो।" पूजा कोठारी सनसनीखेज लहजे में बोली—"यानि अगर अबरोल जहर से मरता है—तो बीमा कम्पनी उसके नॉमिनी को दो करोड़ डॉलर देने के लिये बाध्य होगी।"

"बिल्कुल ।"

"यह क्लू किसलिये जोड़ा गया है ?"

"दरअसल बीमा कम्पनी ने यह क्लू अबरोल को सिर्फ ये दिखाने के वास्ते जोड़ा है कि उस बीमें को करने में उसके लिये फायदा-ही-फायदा नहीं है बल्कि नुकसान होने के चांस भी काफी ज्यादा हैं। जबकि बीमा कम्पनी वाले काफी चालाक हैं—जहर वाला यह प्वॉइण्ट उन्होंने अबरोल की मौत के साथ जोड़ा ही इसलिये है, क्योंकि वो जानते हैं कि अबरोल एक मैटाडोर है और उसकी कभी भी मृत्यु सिर्फ सांड से लड़ते हुए ही

होगी—उसके जहर से मरने का तो प्रश्न ही कुछ नहीं है, इसलिये उन्हें उसके नॉमिनी को दो करोड़ डॉलर का भुगतान भी नहीं करना पड़ेगा।"

"वैरी गुड।" पूजा कोठारी मुस्कुराई—"वाकई बीमा कम्पनी ने सभी क्लू काफी समझदारी के साथ जोड़े हैं—परन्तु अबरोल के बीमें का नॉमिनी (उत्तराधिकारी) कौन है ?" पूजा कोठारी ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"नॉमिनी का नाम सुनकर तुम उछल पड़ोगी।"

"क···क्यों ?"

"दरअसल बीमे के नॉमिनी का नाम अबरोल ने शुरू से ही काफी गुप्त रखा था।" ऐलिस बोली—"परन्तु एक दिन अचानक अबरोल के दफ्तर की साफ-सफाई करते समय मेरे हाथ बीमा कम्पनी की वो फाइल लग गयी—मैंने उसमें नॉमिनी का नाम देखा, तो मेरी आंखें फट पड़ीं—क्योंकि उसमें नॉमिनी के नाम की जगह मेरा नाम लिखा था।"

"ओह।" उस खबर को सुनकर पूजा कोठारी के दिमाग में तेज धमाका हुआ।

"बहरहाल उसी दिन से मेरे दिमाग में षड़यन्त्र की नींव पड़ गयी। अब यह हण्ड्रेड परसेण्ट फाइनल है।" ऐलिस एक-एक शब्द चबाते हुए बोली—"कि दस वर्ष पूरे होने से पहले ही किसी भी दिन अबरोल की 'कुर्री' जहर से मृत्यु हो जायेगी। 'कुर्री' पोटेशियम साइनाइट से भी ज्यादा घातक होता है और वो दक्षिण अफ्रीका के घने जंगलों में पाया जाता है। अबरोल के जहर से मरते ही बीमा कम्पनी द्वारा मुझे दो करोड़ डॉलर मिल जायेंगे।"

फिर ऐलिस ने वहीं अलमारी में रखा 'कुर्री' जहर भी निकालकर पूजा कोठारी को दिखाया।

वह एक सफेद शीशी में बंद था और उसका रंग हलका पीला था।

"ल···लेकिन अबरोल की जहर से हत्या कौन करेगा ?" पूजा कोठारी ने कंपकंपाते स्वर में पूछा।

मुस्कुराई ऐलिस—उसके चेहरे पर हद से ज्यादा खतरनाक मुस्कान सरगोशी कर गयी।

"क्या अब सारी बातें मुझे अपनी जबान से ही कहनी होंगी।" वह बोली—"कुछ खुद भी अंदाजा लगा लो कि कौन यह हत्या करेगा।"

पूजा कोठारी का दिल धड़क उठा—ऐलिस उससे पहले ही अबरोल की हत्या का प्लान बनाये पड़ी थी।

जो काम करने के लिये वो सऊदी अरब से स्पेन की राजधानी मेड्रिड आयी थी—ऐलिस वह काम उससे पहले ही कर देना चाहती थी।

●●●

पूजा कोठारी बेचैन हो उठी।

अगर अबरोल की ऐलिस के हाथों हत्या हुई—तो यह उसकी पराजय होगी—बहुत बड़ी पराजय।

वह चौथा शिकार भी उसके ही हाथों मरना चाहिये था।

पूजा कोठारी बड़ी तेजी से अपने दिमाग में योजना के पत्ते फैलाने लगी।

उसे जो करना था—जल्दी करना था।

बहुत जल्दी।

●●●

अगले दिन सुबह-ही-सुबह पूजा कोठारी ने अबरोल को फोन घुमाया।

"हैलो—अबरोल स्पीकिंग।" तुरन्त दूसरी तरफ से एक भारी-भरकम आवाज आयी।

"अबरोल !" एकाएक पूजा कोठारी दांत किटकिटाते हुए गुर्रायी—"मैं पूजा कोठारी बोल रही हूं।"

"प''' पूजा कोठारी।" थर्रा उठा अबरोल—उसके कण्ठ से लगभग चीख निकल गयी—"ब''' बंगलौर के सेशन जज अरविन्द कोठारी की बेटी ?"

"बिल्कुल ठीक पहचाना तूने दुष्ट—बिल्कुल ठीक पहचाना। पूजा कोठारी एकाएक नागिन की तरह फुंफकारती हुई हंसी—"लगता है कि तुझे मेरे कारनामों की खबर एडवांस में ही मिल गयी है—तुझे पता चल गया है कि मैं तेरे तीन दोस्तों को जहन्नुम पहुंचा चुकी हूं।"

"ह''' हां—म''' मुझे पता चल गया है।" अबरोल दहशतनाक स्वर में बोला—"म''' मुझे सब पता चल गया है।"

"अच्छी बात है।" पूजा कोठारी हिंसक हो उठी—"जो तेरे को सब पता चल गया है जंगली सांड—तीन फोर स्कवायर की मैं बलि ले चुकी हूं और अब तेरी बारी है—तेरे मरते ही मेरा प्रतिशोध पूरा हो जायेगा।"

"लेकिन मेरी हत्या करना आसान नहीं है पागल लड़की।" अबरोल ने एकाएक भैंसे की तरह रणहुंकार भरी—"मैं मेटाडोर जगत का चैम्पियन हूं—चैम्पियन ! आज तक बेशुमार सांडों को फाड़ चुका हूं उसी तरह मैं तुझे भी फाड़ डालूंगा।"

हंसी—जोर से खिलखिलाकर हंसी पूजा कोठारी।

"त···तुम हंस क्यों रही हो ?" बौखला उठा अबरोल।

"क्योंकि सांड आदमी।" पूजा कोठारी हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्लाकर बोली—"तेरे बाकि तीन दोस्तों को भी अपनी ताकत पर इतना ही घमण्ड था। नाज़ था उन्हें अपने उस साम्राज्य पर—जिसे उन्होंने दौलत के बल पर खड़ा किया था। लेकिन देख, वह तीनों मारे गये—तीनों। पहला फोर स्कवायर उर्मी स्नान करते हुए गीजर में करण्ट प्रवाहित होने से मरा—दूसरे के शरीर में गलत ब्लड ग्रुप चढ़ गया और तीसरे ने आत्महत्या कर ली। अब तुझे मरना है सांड—तुझे।" पूजा कोठारी गुर्राती चली गयी—"और तुझे मरने से दुनिया की कोई ताकत बचा नहीं पायेगी।"

"ल···लेकिन तुम मेरी हत्या किस तरह करोगी ?" अबरोल ने थोड़ा चौकन्ना होकर पूछा।

"अच्छा सवाल है—मगर तेरे इस सवाल का जवाब भी मैं तुझे दूंगी।" पूजा कोठारी ने हिकारत भरे लहजे में कहा—

"तेरी हत्या जहर से होगी पापी—जहर से। इतना ही नहीं—अब तेरी जिंदगी के दिन भी काफी कम रह गये हैं—किसी भी पल मौत बस तेरे ऊपर चील की तरह झपटने वाली है। फिलहाल, अलविदा।"

पूजा कोठारी ने रिसीवर रख दिया।

उसके दिमाग में सांय-सांय आंधी चल रही थी—वह अपने शिकार नम्बर चार को खत्म करने की योजना बना चुकी थी।

●●●

उधर—रिसीवर को क्रेडिल पर रखते समय अबरोल के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया था।

ज···जहर।

कांप गया अबरोल।

उसे फौरन बीमें की याद आयी।

अबरोल ने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वो जहर से मरेगा।

अबरोल धम्म् से कुर्सी पर बैठ गया—उसके हाथ-पैर जूड़ी के मरीज की तरह कंपकंपाने लगे।

चेहरा सफेद झक्क् पड़ गया और आंखें खौफ से पीली हो गयीं।

तो आखिरकार वो लड़की स्पेन आ ही गयी थी।

अबरोल ने कुर्सी पर बैठे-बैठे शराब की बोतल खोली तथा फिर गटागट शराब पीने लगा—उस दिन अबरोल ने इस कदर शराब पी कि वह कुर्सी पर बैठा-बैठा लुढ़क गया।

●●●

"राबिन पौल—यह स्पेन की बीमा कम्पनी के उस जासूस का नाम था, जो अपनी कम्पनी के सभी बड़े-बड़े बीमों पर पैनी नज़र रखता था और क्लेम वगैरा चैक करता था कि कहीं कोई चालाक अपराधी उसकी बीमा कम्पनी को चूना न लगा जाये।

रॉबिन पौल जितना चालाक था—उतने ही खूबसूरत व्यक्तित्व का मालिक भी था। लगभग पैंतीस वर्ष का गोरा-चिट्टा और लम्बे कद का नौजवान—जो चेहरे पर बुल्गारियन कट दाढ़ी रखता था और अपनी लोमड़ी जैसी चालाक आंखों को सदा काले चश्में के अन्दर छिपाये रखता।

दोपहर का समय था—जब रॉबिन पौल ने अबरोल के ऑफिस में कदम रखा और वह मुस्कुराता हुआ सीधा ऐलिस के पास पहुंचा।

"हैलो ऐलिस।"

"हैलो।" ऐलिस भी उसे देखकर मुस्कुराई।

रॉबिन पौल वहां चूंकि अक्सर आता रहता था—इसलिये उन दोनों के बीच अच्छी जान-पहचान हो गयी थी।

"क्या बात है हैण्डसम।" ऐलिस थोड़ा चहककर बोली—

"आज तो काफी स्मार्ट लग रहे हो—लगता है कि यह बिजली आज जरूर कहीं गिरेगी।"

"तुम भी तो आज कुछ कम नहीं लग रहीं।" रॉबिन पौल मुस्कुराया।

"तुम हमेशा मुझे बेवकूफ बनाते रहते हो।"

"यह बात नहीं।"

"खैर छोड़ो।" ऐलिस बोली—"यह बताओ—कैसे आना हुआ ?"

"अपना क्या है।" रॉबिन पौल गहरी सांस लेकर बोला—"वही पुराना काम है—बीमें के पेपर चैक करने हैं और रसीद देनी है। अबरोल साहब तो अंदर होंगे ?"

"वह हैं तो अंदर।" ऐलिस ने बताया—"लेकिन उनकी आज तबीयत कुछ ठीक नहीं है—इसलिये बेहतर होगा कि तुम फिर किसी दिन आकर बीमें के पेपर चैक कर लो और उन्हें रसीद दे दो।"

"ओ० के०।" रॉबिन पौल बिना किसी ऐतराज के बोला—

"मैं फिर किसी दिन आ जाऊंगा।"

"बैठो—मैं तुम्हारे लिये कॉफी मंगाती हूं।"

रॉबिन पौल बैठ गया।

●●●

जल्द ही कॉफी के दो कप आ गये थे और वह धीरे-धीरे कॉफी सिप करने लगे।

"कुछ भी कहो रॉबिन।" ऐलिस ने कॉफी सिप करते हुए कहा—"तुम्हारा काम है भारी मुसीबत वाला। बीमों पर नजर रखो—क्लेम चैक करो—गारण्टी चैक करो—हर कदम पर झंझट-ही-झंझट।"

रॉबिन पौल हंसने लगा।

"जिंदगी में झंझट कहां नहीं है बेबी।" रॉबिन पौल अपनी बुल्गारियन कट दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए चश्मे के अंदर से ऐलिस की तरफ देखा—"हर जगह झंझट है और हम उन झंझटों से दूर भाग भी तो नहीं सकते। इसलिये मेरी जिंदगी का तो एक ही मकसद है—हर काम आनन्द के साथ करो। जरा सोचो—जिस काम में तुम्हें झंझट महसूस हो रहा है, उसी काम में मुझे इसलिये थ्रिल का अनुभव होता है—क्योंकि स्पेन के सबसे बड़े बीमें को चैक करने का दायित्व कम्पनी ने मुझे सौंपा है—इसलिये यही मेरे लिये गर्व की बात है और इसी कारण मुझे इस काम को करने में आनन्द आता है।"

"तुमसे बातों में कभी कोई नहीं जीत सकता रॉबिन।" ऐलिस ने मुस्कुराते हुए कॉफी का एक घूंट और भरा।

"ऐसी कोई बात नहीं—लड़कियों से तो मैं अक्सर हार जाता हूं।" यह बात कहने के बाद रॉबिन पौल जोर से खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"अच्छा एक काम बताओ।" ऐलिस बोली—"कभी-कभी तुम्हारी कम्पनी को झूठे क्लेम भी तो देने पड़ जाते होंगे ?"

"आज तक तो कभी ऐसा नहीं हुआ और मैं समझता हूं कि मेरे कम्पनी में मौजूद रहते ऐसा कभी हो भी नहीं सकता। यह बात अलग है कि कई बार झूठे क्लेम के दावे दायर किये गये—परन्तु हर बार मैंने अपराधियों को पकड़ लिया और उनकी सारी कलई खोल दी। आखिर मुझे बीमा कम्पनी ने जासूस की पोस्ट पर नियुक्त ही क्यों किया है—इसीलिये किया है, ताकि मैं चालाक अपराधियों पर नज़र रख सकूं।"

"लेकिन अगर मान लो।" ऐलिस बोली—"तुमसे जिंदगी में कोई ऐसा अपराधी टकरा जाये—जो जबरदस्ती तुम्हारी कम्पनी से क्लेम हड़पकर दिखा दे—तब तुम क्या करोगे ?"

रॉबिन पौल का दिमाग एकाएक शिकारी कुत्ते की तरह चौकन्ना हो उठा।

उसने कॉफी का कप खाली करके टेबिल पर रखा और गौर से ऐलिस का चेहरा देखा।

उसके दिमाग में जरूर कोई 'खिचड़ी' पक रही थी।

वह लड़की जरूर कुछ करना चाहती थी।

"बोलो रॉबिन।" ऐलिस ने पुनः अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा—"अगर कोई ऐसा चालाक अपराधी तुमसे टकरा जाये—तब तुम क्या करोगे ?"

"परन्तु तुम यह सब क्यों पूछ रही हो ?"

"ऐसे ही—मैं जानना चाहती हूं कि तुम्हारे जैसा धुरंधर जासूस ऐसी परिस्थिति में क्या कर सकता है।"

"पहली बात तो यही है कि मुझे धोखा देकर किसी भी अपराधी के लिये क्लेम हासिल कर लेना बिल्कुल नामुमकिन काम है।" रॉबिन पौल थोड़े कठोर लहजे में बोला—"तुम शायद जानती नहीं—बीमा कम्पनी के अधिकारियों को मेरे ऊपर इतना विश्वास है कि उन्होंने एक लाख डॉलर मूल्य की सोने की एक ट्राफी इसीलिये इनाम में रख रखी है कि अगर कोई चालाक अपराधी मुझे धोखा देकर बीमा कम्पनी से जबरदस्ती क्लेम वसूल करने में कामयाब हो जाये तो उसी दिन कम्पनी द्वारा सोने की वो ट्राफी अपराधी को इनाम में दे दी जायेगी।"

"वैरी गुड।" ऐलिस की आंखों में चमक कौंधी—"क्या आज तक उस ट्राफी का कोई दावेदार पैदा नहीं हुआ ?"

"अभी तक तो नहीं हुआ।"

ऐलिस मुस्कुराई—"हो सकता है कि आने वाले दिनों में कोई दावेदार पैदा हो जाये।"

"तब की तब देखूंगा—परन्तु मुझे इस बात की उम्मीद कम ही है।"

उसके बाद वो कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

उस दिन रॉबिन पौल जब अबरोल के ऑफिस से बाहर निकला—तो उसके दिमाग में खतरे की घण्टियां बज रहीं थीं।

उसे लग रहा था—कुछ होने वाला है।

कुछ ऐसा होने वाला है—जो उसके दिमाग को झंझोड़ डालेगा।

●●●

ऐलिस जहां रातों-रात करोड़पति बनने का प्लान बनाये पड़ी थी—वहीं वो अपनी सेहत का भी काफी ख्याल रखती थी—ताकि दौलत के आने के बाद वो उस दौलत का भरपूर आनन्द लूट सके।

इसीलिये वो रोजना हैल्थ क्लब जाती—वहीं स्विमिंग पूल में भी वो सुबह-ही-सुबह लगभग आधा घण्टा तैरती, जिससे उसके शरीर के सभी जोड़ खुल जाते थे और उसकी काया कुंदन की तरह चमकने लगती थी।

ऐलिस उस दिन भी स्विमिंग पूल में तैरकर बाहर निकली—उसने स्विमिंग कास्ट्यूम पहन रखी थी—पूल से बाहर निकलते ही क्लब की एक अटेण्डर लड़की ने दौड़कर उसे तौलिया पकड़ा दिया, जिससे वो अपने सिर के बाल रगड़कर साफ करने लगी।

"हैलो बेबी।" तभी एक बड़ी खनकदार आवाज उसके कानों में पड़ी।

ऐलिस अपने सिर के बाल रगड़ती हुई पलटी और अगले ही पल बुरी तरह चौंकी—सामने से बड़ी मस्त चाल चलता हुआ बीमा कम्पनी का जासूस रॉबिन पौल आ रहा था।

"त...तुम—यहां।" ऐलिस ने चौंककर कहा—"पहले तो मैंने कभी तुम्हें इस क्लब में नहीं देखा।"

"इंसान हर जगह कभी-न-कभी तो शुरूआत करता है।" रॉबिन पौल मुस्कुराकर बोला—"तुम यूं समझो—मैंने हैल्थ क्लब आने की आज से ही शुरूआत की है।"

"ओह।" ऐलिस भी मुस्कुरायी—"यानि जनाब अपनी सेहत के प्रति काफी फिक्रमंद हो गये हैं।"

"तुम कुछ भी कह सकती हो—लेकिन मैं नहीं जानता था कि मुझे यहां इतना खूबसूरत दोस्त मिल जायेगा—वरना यकिन मानो मैं यहां बहुत पहले से आने लगता। आओ—कहीं बैठकर कुछ देर गपशप करते हैं।"

वह दोनों स्विमिंग पूल के किनारे ही लगी लाल रंग की एक गार्डन अम्ब्रेला के नीचे पहुंच गये और वहीं पड़ी बांस की दो कुर्सियों पर बैठ गये।

●●●

रॉबिन पौल जिंदगी में कभी कोई काम बेवजह नहीं करता था।

वो अगर आज हैल्थ क्लब आया था—तो उसके पीछे भी वजह थी। दरअसल कल से ही रॉबिन पौल के दिमाग में यह बात नगाड़े की तरह बज रही थी कि जरूर ऐलिस के दिमाग में कोई 'खिचड़ी' पक रही है।

जरूर उसके दिमाग में कोई 'योजना' है।

इस समय रॉबिन पौल ऐलिस से उसी योजना को उगलवाने आया था।

"मैं हर समय तुम्हारे बॉस के बारे में सोचता रहता हूं।" रॉबिन पौल इत्मीनान से कुर्सी पर बैठने के बाद बोला—

"दो करोड़ डॉलर का बीमा—वाकई यह एक स्वप्नलोक जैसी बात है। पूरे स्पेन में इससे बड़ा बीमा किसी दूसरे आदमी का नहीं है। कभी-कभी सोचता हूं कि हमारी कम्पनी को इतना बड़ा बीमा नहीं करना चाहिये था।"

"क्यों ?"

"क्योंकि इसमें खतरा-ही-खतरा है।" रॉबिन पौल बोला—

"जरा सोचो—अगर कोई तुम्हारे बॉस की जहर से हत्या कर दे, तब तो हमारी कम्पनी को दो करोड़ डॉलर बीमें के नॉमिनी को देने पड़ जायेंगे। दो करोड़ डॉलर—बाप रे।" रॉबिन पौल के शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ी—"इतनी बड़ी रकम तो किसी भी कम्पनी को बर्बाद करने के लिये काफी है।"

यह बात रॉबिन पौल ने कुछ ऐसे हास्यास्पद अंदाज में कही कि ऐलिस की भी हंसी छूट गयी।

वैसे—फिर मैं कभी-कभी एक दूसरी बात भी सोचता हूं। राबिन पौल ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

"क्या ?" वह बातें चूंकि ऐलिस की पसंदीदा थी—इसलिये वो फौरन ही उसकी बातों में दिलचस्पी लेने लगी।

"मैं सोचता हूं कि तुम्हारे बॉस की भला जहर से मृत्यु कैसे हो सकती है। वह तो मेटाडोर है—पहले तो मैं यही कहूंगा कि ईश्वर न करे उनकी कभी मृत्यु हो—लेकिन अगर अकस्मात् उनकी कभी मृत्यु भी हुई—तो सांड से लड़ते हुए ही हो सकती है। जहर से उनकी मृत्यु का तो सवाल ही नहीं है।"

"यह तुम्हारी गलतफहमी है रॉबिन।" ऐलिस उसके सामने अपने आपको बुद्धिमान दर्शाती हुई बोली—"अगर हत्यारा चाहेगा—तो अबरोल साहब की जहर से भी हत्या कर देगा।"

"क''''कैसे ?" रॉबिन पौल मूर्खों की तरह पलकें झपकाता हुआ उसकी तरफ झुका—"कैसे—व''''वो जहर से हत्या कैसे कर देगा ?"

"मान लो अगर उसने अबरोल साहब की तलवार के दस्ते पर ही जहर लगा दिया—तो वह उनके शरीर के बहते पसीने के साथ-साथ ही जिस्म में पेबश्त हो जायेगा और जहर के जिस्म में पेबश्त होते ही खेल खत्म।"

रॉबिन पौल के चेहरे पर एकाएक आतंक की छाया दौड़ गयी।

"यह बात तो है।" रॉबिन पौल पुनः मूर्खों की तरह बोला—"यह तो मैंने सोचा भी नहीं था कि कोई इस तरह भी हत्या कर सकता है।"

"इसके अलावा हत्या करने का एक तरीका और भी है।"

"व···वो क्या—जल्दी बताओ।"

"अगर कोई सांड के सींगों पर ही जहर लगा दे—तो सांड जब अबरोल के टक्कर मारेगा, तो तब भी जहर उनके शरीर में पेवश्त हो जायेगा—और उसी पल अबरोल साहब का खेल खत्म।"

"व···वाकई।" रॉबिन पौल सख्त हैरानी से बोला—"कह दूं तुम ठीक रही हो।"

"एक बात और बताऊं।"

"क···क्या ?"

"अगर कोई अबरोल साहब की जहर से हत्या करेगा तो इन से कोई भी तरकीब काम नहीं आयेगी। बल्कि वो किसी ऐसी तरकीब से हत्या करेगा कि तुम भी चक्कर खा जाओ।"

रॉबिन पौल सन्न-सा कुर्सी पर बैठा रहा।

अब उसका यह विचार और ज्यादा पक्का हो गया था कि जरूर ऐलिस कुछ करने वाली थी।

जरूर ऐलिस को यह पता चल गया था कि बीमें के कागजातों में नॉमिनी की जगह उसका नाम लिखा है।

●●●

पूजा कोठारी भी अबरोल को मार डालने की लगभग सारी तैयारियां पूर्ण कर चुकी थी।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है—पूजा कोठारी ने योजना बना ली थी और अब तो वह निकिल-पालिश करके उस योजना को लगभग फाइनल टच भी दे चुकी थी।

उस दिन सुबह से ही पूजा कोठारी अपने फ्लैट में बंद हो गयी।

दो बाजार से भी कई वीडियो-कैसिटें भी खरीदकर ले आयी थी—जिनमें अबरोल को सांडों के साथ लड़ते दिखाया गया था।

फ्लैट में बंद होते ही पूजा कोठारी ने एक वीडियो कैसेट वी० सी० आर० पर लगा दी तथा फिर अबरोल की फाइट का एक-एक एक्शन बेहद गौर से देखने लगी।

पहली कैसेट देखने के बाद उसने दूसरी कैसेट देखी।

फिर तीसरी।

फिर चौथी।

एक के बाद एक पूजा कोठारी ने सारी वीडियो कैसेट देख डालीं।

उन तमाम वीडियो कैसेटों को देखने के बाद पूजा कोठारी, अबरोल की बुल फाइटिंग का तो लोहा मान गयी, क्योंकि उन वीडियो

कैसिटों में अबरोल को बड़े-बड़े खतरनाक सांडों के साथ कुश्तियां लड़ते दिखाया गया था—परन्तु उन सभी कुश्तियों का एक ही परिणाम निकला—सांड की मौत।

अबरोल सांड के ऊपर आंधी की तरह झपटता था और थोड़ी देर बाद ही तलवार से उसका पेट फाड़ डालता।

इसके अलावा पूजा कोठारी ने उन सभी वीडियो कैसेट के अंदर एक खास बात और देखी।

फ़ाइट जीतने के बाद अबरोल के प्रशंसकों की भीड़ उसे घेर लेती थी—वह उन्हें ऑटोग्राफ देता और ऑटोग्राफ बुक का पन्ना पलटने से पहले वह अक्सर अपनी उंगली मुंह के थूक से जरूर गीली करता था।

यह अबरोल की आदत थी।

विशेष आदत।

उस दिन नेशनल डी मारा स्टेडियम में भी पूजा कोठारी ने अबरोल की वह आदत नोट की थी।

●●●

बहरहाल पूजा कोठारी, ऐलिस और बीमा कम्पनी का जासूस रॉबिन पौल—वह तीनों अपने-अपने ढंग से उस केस पर काम कर रहे थे।

रॉबिन पौल—जो किसी खतरनाक हादसे को लेकर बहुत चिन्तित था—वह उस दिन दोपहर के समय अबरोल से मिला।

उसने सबसे पहले बीमें के कागजात चैक किये और किश्त की रसीद अबरोल को दी।

"मैं आज आपसे कुछ जरूरी बात करना चाहता हूं अबरोल साहब।" फिर राबिन पौल ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"हां—हां, क्यों नहीं।" अबरौल बोला—"कहो—क्या कहना चाहते हो।"

"मैं आजकल आपके बीमें को लेकर बहुत फिक्रमंद हूं अबरौल साहब।"

"क्यों ?"

"न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है।" रॉबिन पौल बोला—"कि आपको जहर वाला यह क्लू अपने बीमें से हटा देना चाहिये—क्योंकि इसी में आपका हित है।"

"ज'''जहर वाला क्लू।" कांप उठी अबरोल की आवाज।

तुरन्त पूजा कोठारी के धमकी भरे शब्द उसके दिमाग में गोली की तरह टकराये—तुम्हारी हत्या जहर से होगी फोर स्कवायर—जहर से।

पसीनों में नहा गया अबरोल।

जल्दी से उसने खुद को संभालकर पूछा—"लेकिन तुम यह 'जहर वाला क्लू' बीमें से हटाने की सलाह क्यों दे रहे हो ?"

"क्योंकि इससे ख्वामखाह आपकी जान को खतरा पैदा हो सकता है अबरोल साहब—मुझे ऐसे अपशब्द अपनी जबान से तो नहीं निकालने चाहियें—लेकिन यह सच है कि अगर आपने ये क्लू बीमें के अंदर से न हटाया, तो कोई भी जहर से आपकी हत्या करने की कोशिश कर सकता है।"

परेशान हो उठा अबरोल।

वह कुर्सी से खड़ा होकर बेचैनीपूर्वक इधर-से-उधर टहलने लगा।

'जहर' वाली बात उसे पहले ही काफी परेशान कर रही थी।

"तुम शायद ठीक कह रहे हो रॉबिन पौल !" अबरोल ने अपने चिन्ताग्रस्त माथे पर उंगलियां फेरते हुए कहा—"मैं भी कल से इस बारे में सोच रहा था—मुझे वाकई कोई रिस्क नहीं लेना चाहिये। लेकिन सवाल ये है कि अगर 'जहर वाला क्लू' बीमें से हटाया जाता है—तो कौन-सा नया क्लू उसमें जोड़ा जाये ?"

"नया क्लू जोड़ने की जरूरत ही क्या है अबरोल साहब।" रॉबिन पौल फौरन बोला—"बल्कि मैं तो कहता हूं आप बीमें के अंदर से नॉमिनी का नाम भी कटवा दें। जरा सोचिये—जब आप ही न रहेंगे, तो वह विशाल दौलत आपके किस काम की। आपके बीवी-बच्चे या कोई रिश्तेदार तो स्पेन के अंदर है नहीं—जो आपके बाद उस दौलत का इस्तेमाल कर सकें।" रॉबिन पौल बड़े ढंग से अबरोल को समझाता हुआ बोला—"या फिर आप एक बिल्कुल ही दूसरा काम कीजिये अबरोल साहब।"

"क"'"क्या ?"

"आप अपने बीमें का नॉमिनी अपने 'मेटाडोर क्लब' को ही बनवा दीजिये।" रॉबिन पौल ने सचमुच एक अनूठा रास्ता सुझाया—"अगर ईश्वर न करे आपको कुछ हो गया—तो दो करोड़ डॉलर की वो धनराशि आपके क्लब को मिल जायेगी—जो फिर नये मेटाडोरों को प्रशिक्षण देने में खर्च होगी और इससे आपका नाम भी मेटाडोर जगत में हमेशा-हमेशा के लिये अमर हो जायेगा।"

रॉबिन पौल की बात सुनकर अबरोल की आंखें कई हजार वाट के बल्ब की मानिन्द जगमगा उठीं।

"वाकई तुमने एक शानदार आइडिया सुझाया है रॉबिन पौल।" अबरोल ने एकाएक बेहद उत्साहित होकर कहा—"यही ठीक रहेगा।

तुम एक काम करो—बीमें के नये कागजात तैयार करा दो—मैं उन पर हस्ताक्षर कर दूंगा।"

"ठीक है।" रॉबिन पौल ने भी प्रसन्नचित्त मुद्रा में कहा—"मैं दो-तीन दिन में ही बीमें के नये कागजात तैयार कराकर आपसे मिलता हूं।"

"दो-तीन दिन नहीं।" अबरोल बदहवासों की तरह बोला—"यह काम जल्द-से-जल्द होना चाहिये।"

"ठीक है—मैं कल ही आपसे मिलता हूं।"

●●●

लेकिन अबरोल की जिंदगी में वो समय नहीं आया—जब वह बीमें के नये कागजों पर हस्ताक्षर कर पाता।

उसी दिन शाम का समय—आज डूबते हुए सूरज की लाल-लाल किरणें स्पेन के आकाश पर इस तरह फैली थी—जैसे किसी मरते हुए सांड का गाढ़ा-गाढ़ा लहू।

मेटाडोरों की इस खून सनी धरती पर झूमने वाले सनोवर के सुंदर-सुंदर वृक्ष भी आज स्तब्ध थे—लगता था कि कि जैसे आज कोई बेहद खतरनाक घटना घटने वाली है।

स्पेन का प्रसिद्ध नेशनल डी मारा स्टेडियम—मेटाडोरों और उनके प्रशंसकों का स्वर्ग।

आज उसी नेशनल डी मारा स्टेडियम में फिर एक फाइट होने वाली है—अबरोल की जिंदगी की सबसे खतरनाक फाइट।

अबरोल का मुकाबला आज 'आस्तेक' नामक एक सांड से है।

आस्तेक—जिसका इटेलियन भाषा में अर्थ होता है—शैतान।

वह आस्तेक सांड आज तक चार-पांच सौ मेटाडोरों की बलियां ले चुका था और आज उसका मुकाबला मेटाडोर जगत के चैम्पियन अबरोल से था।

पूरा स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा था।

अबरोल के हजारों प्रशंसक आज दम साधे बैठे थे।

कोई नहीं जानता था—कौन जीतेगा।

पूजा कोठारी भी स्टेडियम में थी—परन्तु उसने इतना जबरदस्त मेकअप कर रखा था कि वह ऐलिस के सामने से तीन बार गुजरी—लेकिन ऐलिस भी उसे न पहचान सकी।

इस समय वो काली नीग्रो लड़की के रूप में थी।

उसने अपने बाल कसकर पीछे को बांधे हुए थे—हाथ पैरों पर काली स्याही पोत रखी थी—अपनी नीली-नीली आंखों में भूरे कॉण्टेक्ट

लैंस लगा रखे थे और कपड़े भी हिप्पियों की तरह काफी अजीबोगरीब से पहने हुए थे।

इस समय अगर पूजा कोठारी को कोई भी देखता—तो उसी के लिये उसको पहचानना मुश्किल होता।

●●●

बहरहाल लाल रूमाल लहराये गये और वो खून को बर्फ की तरह जमा देने वाली फाइट शुरू हुई।

एक खतरनाक और जानलेवा फाइट।

वह फाइट—जो दो चैम्पियनों के बीच थी।

लाल रूमाल लहराये जाते ही आस्तेक सांड एकदम से अबरोल के ऊपर झपटा।

बड़ी मुश्किल से बचा अबरोल।

लेकिन बचते ही आस्तेक सांड ने उसके ऊपर फिर हमला कर दिया और इस बार उसे सींगों से खदेड़ डाला।

चीख पड़ा अबरोल—आस्तेक सांड के साथ हुई वो मुठभेड़ वाकई उसके लिये बहुत खतरनाक साबित हुई।

सांड ने उसे कई बार अपने सींगों से खदेड़ा और माथे की टक्कर से उठाकर फैंका—वह उरेकान की मुद्रा बनाकर बार-बार उस पर झपटता था।

अबरोल का प्रसिद्ध 'ओ ब्रूनी' दाव भी आज उस सांड पर नहीं चल रहा था।

हांफने लगा अबरोल—वह पसीनों में बुरी तरह लथपथ हो गया। उसने तलवार अपने दायें हाथ से उछालकर बांये हाथ में ले ली।

अबरोल को लगने लगा कि अगर आज उसने शीघ्र ही कुछ न किया—तो वह सांड उसे मार डालेगा।

तनकर खड़ा हो गया अबरोल।

उसके जिस्म की मांस-पेशियां फूल गयीं।

आस्तेक सांड फिर उसके सामने था।

सांड की आंखें दहक रही थीं और वह अपने जांबाज प्रतिद्वन्द्वी को देखकर गुस्से से पागल हो रहा था। तभी सांड उरेकान की मुद्रा में फिर उस पर झपटा।

अबरोल ने भी अपना चिर-परिचित जूडे का 'ओ ब्रूनी' दांव इस्तेमाल किया। परन्तु इस बार एक चाल खेल गया अबरोल—वो 'ओ ब्रूनी' के एक्शन में आते ही सांड की टांगों के बीच में घुसते

की बजाय उसके पीछे पहुंच गया और पीछे पहुंचते उसके हाथ में मौजूद एक मीटर लम्बी नंगी तलवार हवा में सफेद बिजली की तरह कड़कड़ाई तथा फिर उसके पेट को चीरती चली गयी।

दहाड़ उठा आस्तेक सांड—उसके पेट से खून का फव्वारा छूटा।

वह चिंघाड़ता हुआ पुनः वहशी जानवर की तरह अबरोल के ऊपर झपटा था।

लेकिन चौकन्ना था अबरोल—पूरी तरह चौकन्ना—उसकी नंगी तलवार पुनः बिजली की तरह कड़कड़ाती हुई हवा में उठी तथा फिर सांय-सांय करती हुई आस्तेक सांड के मुंह में दाखिल हो गयी और उसके हलक तक को फाड़ती चली गयी।

पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

चारों तरफ हर्षध्वनि होने लगी और अभी तक जो दर्शक स्टेडियम में दम साधे बैठे थे—वह एकाएक अपनी-अपनी कुर्सियों से उछलकर अबरोल के नाम की जय-जयकार करने लगे।

पूरे स्टेडियम में तूफान-सा आ गया था—सचमुच वह अबरोल की बहुत बड़ी विजय थी—बहुत ज्यादा बड़ी विजय।

●●●

फौरन अबरोल के प्रशंसकों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया—असंख्य ऑटोग्राफ बुक उसके इर्द-गिर्द लहराने लगीं।

और तभी पूजा कोठारी भी अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी थी—षड़यन्त्र से उसकी आंखें चमक रही थीं—साफ लग रहा था कि वो कुछ करने वाली है—कुछ ऐसा, जिससे हंगामा मच जाये।

जल्द ही पूजा कोठारी भी अबरोल के उन प्रशंसकों की भीड़ में शामिल हो गयी—जो उससे ऑटोग्राफ ले रहे थे।

पूजा कोठारी ने भी अपनी जिन्स पेण्ट की जेब से एक ऑटोग्राफ बुक निकाल ली।

"अबरोल साहब—अबरोल साहब।"

अगले ही पल वो भी अबरोल के ढेरों प्रशंसकों की तरह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगी और इस बात के प्रयास में लग गयी कि अबरोल उसकी ऑटोग्राफ बुक पकड़ ले।

पूजा कोठारी ने बड़ी सफाई के साथ एक चाल चली थी—उसने 'कुर्री जहर' से ऑटोग्राफ बुक का एक पन्ना चिपका दिया था—इतना ही नहीं, पहले पन्ने के ऊपर भी 'कुर्री जहर' की हल्की-सी परत चढ़ा दी—जो दिखाई नहीं दे रही थी। 'कुर्री जहर' उसने ऐलिस की आलमारी से चुराया था।

तभी उस भयानक शोर-शराबे और हर्षोल्लास के बीच अबरोल ने उसकी ऑटोग्राफ बुक पकड़ी।

पहले पन्ने को छूते ही 'कुर्री जहर' उसकी उंगलियों पर लग गया।

उसने ऑटोग्राफ बुक का पन्ना पलटना चाहा—तो वह चिपका हुआ था।

आदतन उसकी उंगली ज़बान पर पहुंची—उसने थूक लगाया और फिर ऑटोग्राफ बुक के पन्ने को एक-दूसरे से अलग किया।

परन्तु इतनी देर में 'कुर्री जहर' अपना कमाल दिखा गया था।

अबरोल के फौरन हाथ-पैर अकड़ने लगे—आंखों के गिर्द अंधेरे घिरने लगा और उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई उसका गला पकड़कर भींच रहा हो।

ऑटोग्राफ बुक का पन्ना पलटते ही अबरोल को अपनी धुंधली-धुंधली आंखों से वहां कुछ शब्द लिखे नज़र आये।

"हैलो फोर स्कवायर नम्बर चार—तुम्हारी सबसे बड़ी दुश्मन तुम्हारे सामने खड़ी है। हां—मैं पूजा कोठारी हूं—बंगलौर के सेशन जज अरविन्द कोठारी की छोटी बेटी। मैंने आज अपने चौथे और आखिरी शिकार को भी मार डाला। तुम मर रहे हो फोर स्कवायर—कुछ ही देर बाद तुम मर जाओगे—इसी के साथ मेरा प्रतिशोध भी पूरा होगा। अलविदा मेरे दुश्मन—अलविदा।"

उन शब्दों को पढ़ते ही अबरोल के नेत्र दहशत से फट पड़े—उसने झटके से गर्दन उठाकर पूजा कोठारी को देखना चाहा—परन्तु उसकी गर्दन न उठी बल्कि वो और नीचे जा गिरी।

ऑटोग्राफ बुक उसके हाथ से छूट गयी—फिर वो खुद भी लड़खड़ाकर नीचे गिरा और गिरते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

अबरोल के प्रशंसकों पर एकाएक भीषण बिजली-सी गड़गड़ाती हुई गिरी—पूरे नेशनल डी मारा स्टेडियम में उस हादसे की वज़ह से तहलका मच गया।

जिसने भी अबरोल की मौत की खबर सुनी—वही चौंका—वही हैरान हुआ।

भला यह कैसे हो सकता था कि जिस व्यक्ति ने अभी-अभी 'आस्तेक' जैसे बलशाली सांड को फाड़ा था—अब खुद वही मारा गया।

असंभव—नामुमकिन।

लेकिन सच्चाई को झुठलाया भी तो नहीं जा सकता और सच्चाई यही

थी कि अबरोल मर चुका था। उसकी आत्मा अपने बाकी तीन दोस्तों से मुलाकात करने के लिये यमलोक की तरफ प्रस्थान कर चुकी थी।

स्टेडियम में मची उसी अफरा-तफरी के बीच पूजा कोठारी ने अपनी ऑटोग्राफ बुक उठाई और चुपचाप वहां से नौ दो ग्यारह हो गयी।

●●●

अगले दिन स्पेन के तमाम समाचार-पत्र अबरोल की मौत की खबर से भरे पड़े थे।

अबरोल की मौत को बारह घण्टे गुजर चुके थे—पूरे बारह घण्टे।

ऐलिस सन्न थी—बेहद चौंकी हुई और हैरान।

जो योजना उसने सोची थी, उस पर कोई दूसरा पहले ही काम कर गया था।

अखबारों में एक और बड़ी खास खबर छपी थी।

उनमें लिखा था—अबरोल की लाश को बड़े सुरक्षित ढंग से 'बीच हार्डी' हॉस्पिटल में रखा गया है—क्योंकि बीमा कम्पनी के चीफ डिटेक्टिव रॉबिन पौल को इस बात का पूरा-पूरा शक है कि अबरोल की हत्या की गयी है। इसलिये अबरोल की मौत की जांच करने के लिये दुनिया के कई देशों से जासूस स्पेन आ रहे हैं—जिनमें थाईलैंण्ड के स्पार्को, अमरीका के जैक और सऊदी अरब के फतेह अली प्रमुख हैं।

तमाम अखबारों में आगे यह भी लिखा था कि थाइलैण्ड, अमरीका, सऊदी अरब में भी पिछले दिनों हिन्दुस्तानी मूल के काफी बड़े-बड़े तीन लोगों की हत्यायें हुई हैं—वहां के जासूसों को शक है कि जिस लड़की ने उन तीनों की हत्यायें कीं—जरूर उसी ने अबरोल को भी मारा है।

●●●

ल'''लड़की—अखबार में छपी उस खबर को पढ़कर कांप उठी ऐलिस—त''' तो क्या अबरोल की हत्या किसी लड़की ने की है ?

ऐलिस एकाएक अद्वितीय फुर्ती से अलमारी की तरफ झपटी—उसने झटके से अलमारी के दोनों पट खोले और अंदर रखी 'कुर्री जहर' की शीशी देखी।

और—अगले पल ऐलिस के दिल-दिमाग पर भीषण बम गड़गड़ाते हुए गिरे।

अलमारी में-से जहर की शीशी गायब थी।

फौरन ऐलिस यह जानने के लिये व्याकुल हो उठी कि कहीं अबरोल की हत्या 'कुर्री जहर' से तो नहीं की गयी ?

ऐलिस ने आनन-फानन 'बीच हार्डी' हॉस्पिटल जाने के लिये कपड़े पहने।

अगर किसी व्यक्ति की 'कुर्री जहर' से हत्या की जाती है—तो उसकी सबसे बड़ी पहचान ये है कि हत्या होने के सिर्फ चार घण्टे पश्चात मृतक के दांत बिल्कुल पीले पायें जायेंगे।

●●●

ऐलिस बेहद तूफानी गति से हॉस्पिटल पहुंची।

वहां उसका सामना सबसे पहले शवग्रह के डॉक्टर से हुआ।

"डॉक्टर !" ऐलिस बेचैनीपूर्वक बोली—"मैं एक बार मिस्टर अबरोल की लाश देखना चाहती हूं।"

"लेकिन क्यों ?" चौंककर पूछा डॉक्टर ने—"क्या काम है ?"

"काम मैं आपको नहीं बता सकती।" ऐलिस ने जल्द-से-जल्द अबरोल की लाश के पास पहुंच जाना चाहती थी—"आप बस इतना समझ लीजिये—हत्या से सम्बन्धित ही कोई मामला है। मैं सिर्फ एक नजर ही मिस्टर अबरोल की लाश देखूंगी।"

"प""परन्तु""।"

"प्लीज डॉक्टर—प्लीज।" ऐलिस ने विनती की—"आप शायद मुझे जानते नहीं—मैं मिस्टर अबरोल की पर्सनल सेक्रेटरी हूं।"

"मैं आपको जानता हूं मैडम। ठीक है।" फिर डॉक्टर कुछ सोचकर बोला—"मैं आपको शवग्रह के अंदर लिये चलता हूं—परन्तु मैं भी हर क्षण आपके साथ ही रहूंगा।"

"मुझे कोई चिन्ता नहीं।"

"ठीक है—तो फिर आइये।"

●●●

ऐलिस ने डॉक्टर के साथ शवग्रह के अंदर कदम रखा।

वहां एक काफी बड़े ताबूत में अबरोल की लाश मौजूद थी।

चूंकि अबरोल को मरे अब बारह घण्टे से भी ऊपर हो चुके थे—इसलिये उसके शव में-से बदबू उठ रही थी और उसके हाथ-पैर भी अकड़ चुके थे।

ऐलिस हिम्मत करके लाश के ऊपर झुकी।

फिर उसने डरते-डरते उसका मुंह खोलकर देखा।

और !

सन्न रह गयी ऐलिस।

बिल्कुल सन्न।

उसके ऊपर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी।

अबरोल के दांत पीले थे—एकदम पीले जर्द।

●●●

ऐलिस हड़बड़ाती हुई शवग्रह से बाहर निकली।

बाहर निकलते ही ऐलिस एक ऐसे व्यक्ति से टकरायी जिसे देखकर उसके और ज्यादा होश उड़ गये।

उसके सामने बुल्गारियन कट दाढ़ी और काले चश्में में सजा-धजा बीमा कम्पनी का चीफ डिटेक्टिव रॉबिन पौल खड़ा था।

"त...तुम।" उसे देखते ही ऐलिस के शरीर से पसीने छूट पड़े।

"हैलो बेबी।" जबकि रॉबिन पौल, ऐलिस को देखकर कड़वे लहजे में बोला—"तो आखिरकार तुम अपनी चाल चल ही गयीं।"

"नहीं—नहीं।" ऐलिस हड़बड़ाती हुई एक कदम पीछे हटी।

"म...मैंने कुछ नहीं किया—मैं निर्दोष हूं—म...मैंने अबरोल साहब की हत्या नहीं की।"

रॉबिन पौल कुछ कहता—उससे पहले ही सामने से ठिगने कद वाला थाईलैण्ड की स्पेशल क्राइम ब्रांच का जासूस स्पार्को चलता हुआ आया। स्पार्को—जो अपने डिपार्टमेण्ट की लोमड़ी कहा जाता था और 'राष्ट्रपति पदक' से भी दो बार विभूषित हो चुका था।

"मिस्टर रॉबिन पौल।" स्पार्को उन दोनों के नजदीक आकर बोला—"तुमने अभी तक मुझे इस लड़की के बारे में जो कुछ बताया है—उससे एक बात तो मैं गारण्टी के साथ कह सकता हूं कि अबरोल की हत्या में वाकई इसका कोई हाथ नहीं है।"

"यह अबरोल की हत्या कर भी कैसे सकती है मिस्टर स्पार्को।" वह एक नई आवाज थी और उसी के साथ छियालीस वर्ष का अधेड़ अमेरिकन जासूस जैक भी चलता हुआ वहां आ गया—"यह तो बिल्कुल मूर्ख और पागल लड़की है। जो लड़की मिस्टर रॉबिन पौल के सामने अपनी सारी योजना बक सकती है—जिसे इतना पता नहीं कि किसके सामने क्या बात कहनी चाहिये और क्या नहीं—वो भला हत्या जैसा जघन्य अपराध क्या करेगी।"

"मुझे तो लगता है—यह किसी और का ही काम है।" वह एक और नई आवाज थी—सब ने आवाज की दिशा में देखा—सामने से अब सऊदी अरब का जासूस फतेह अली सिगरेट के कश लगाता हुआ चला आ रहा था—उसके गाल पर बने चाकू के दो गहरे निशान अलग चमक रहे थे—"मैं समझता हूं कि इस बेवकूफ लड़की ने जरूर

उसके ऊपर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी।

अबरोल के दांत पीले थे—एकदम पीले जर्द।

●●●

ऐलिस हड़बड़ाती हुई शवग्रह से बाहर निकली।

बाहर निकलते ही ऐलिस एक ऐसे व्यक्ति से टकरायी जिसे देखकर उसके और ज्यादा होश उड़ गये।

उसके सामने बुल्गारियन कट दाढ़ी और काले चश्में में सजा-धजा बीमा कम्पनी का चीफ डिटेक्टिव रॉबिन पौल खड़ा था।

"त···तुम।" उसे देखते ही ऐलिस के शरीर से पसीने छूट पड़े।

"हैलो बेबी।" जबकि रॉबन पौल, ऐलिस को देखकर कड़वे लहजे में बोला—"तो आखिरकार तुम अपनी चाल चल ही गयीं।"

"नहीं—नहीं।" ऐलिस हड़बड़ाती हुई एक कदम पीछे हटी।

"म···मैंने कुछ नहीं किया—मैं निर्दोष हूं—म···मैंने अबरोल साहब की हत्या नहीं की।"

रॉबिन पौल कुछ कहता—उससे पहले ही सामने से ठिगने कद वाला थाइलैण्ड की स्पेशल क्राइम ब्रांच का जासूस स्पार्को चलता हुआ आया। स्पार्को—जो अपने डिपार्टमेण्ट की लोमड़ी कहा जाता था और 'राष्ट्रपति पदक' से भी दो बार विभूषित हो चुका था।

"मिस्टर रॉबिन पौल।" स्पार्को उन दोनों के नजदीक आकर बोला—"तुमने अभी तक मुझे इस लड़की के बारे में जो कुछ बताया है—उससे एक बात तो मैं गारण्टी के साथ कह सकता हूं कि अबरोल की हत्या में वाकई इसका कोई हाथ नहीं है।"

"यह अबरोल की हत्या कर भी कैसे सकती है मिस्टर स्पार्को।" वह एक नई आवाज थी और उसी के साथ छियालीस वर्ष का अधेड़ अमेरिकन जासूस जैक भी चलता हुआ वहां आ गया—"यह तो बिल्कुल मूर्ख और पागल लड़की है। जो लड़की मिस्टर रॉबिन पौल के सामने अपनी सारी योजना बक सकती है—जिसे इतना पता नहीं कि किसके सामने क्या बात कहनी चाहिये और क्या नहीं—वो भला हत्या जैसा जघन्य अपराध क्या करेगी।"

"मुझे तो लगता है—यह किसी और का ही काम है।" वह एक और नई आवाज थी—सब ने आवाज की दिशा में देखा—सामने से अब सऊदी अरब का जासूस फतेह अली सिगरेट के कश लगाता हुआ चला आ रहा था—उसके गाल पर बने चाकू के दो गहरे निशान अलग चमक रहे थे—"मैं समझता हूं कि इस बेवकूफ लड़की ने जरूर

किसी और के सामने भी अपनी योजना बकी होगी तथा बस वही अपनी कलाकारी दिखा गया।"

"जरूर यही हुआ है।" रॉबिन पौल एकाएक गुर्रा उठा—

"जल्दी बता दुष्ट लड़की।" रॉबिन पौल दहाड़ा—

"तूने और किस-किसके सामने अपनी कहानी बकी है।"

उसकी दहाड़ सुनकर कांप उठी ऐलिस।

उसके सामने चार-चार महारथी खड़े थे।

"यह ऐसे कुछ नहीं बतायेगी।" तभी अमरीकन जासूस जैक उसे अपनी लाल-लाल आंखों से घूरता हुआ बोला—"इससे सब कुछ कबूलवाने का तरीका अब मेरे पास है—इसे गैस चैम्बर में ठूंस दो। फिर देखना—पांच सैकिण्ड में ही इसके सारे होश ठिकाने आ जायेंगे।"

"गैस चैम्बर की मौत तो फिर भी आसान है।" फतेह अली ने भी उसे डराया—"हमारे सऊदी अरब में तो ऐसे खतरनाक अपराधियों को गिलोटिन से मारा जाता है।"

"अरे छोड़ो इन सब मामूली तरीकों को।" तभी स्पार्को भी अपनी लाल-लाल आंखों से ऐलिस को घूरता हुआ बोला—"हम थाइलैण्ड वासियों के पास ऐसे अपराधियों की जबान खुलवाने के बड़े-बड़े नायाब तरीके हैं--हम छोड़ेंगे इसे जहरीले कोबरा और मॉम्बा सांपों के बीच में। फिर देखना—कितनी जल्दी यह सब कुछ बकती है।"

"नहीं—नहीं, मुझे छोड़ दो—मुझे छोड़ दो।" ऐलिस गिड़गिड़ा उठी—"मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगी।"

"तो फिर जल्दी बता।" छियालीस वर्ष का जैक गुर्राया—"कहीं ऐसा न हो कि हमारा शिकार स्पेन की धरती छोड़कर भी कहीं और भाग निकले।"

ऐलिस अब सोच में डूब गयी।

"तुझे चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।" उसे कश-म-कश में फंसे देख चालाक रॉबिन पौल ने उसके सामने चारा डाला—

"हम तुझे सरकारी गवाह बना लेंगे—तुझे कुछ नहीं होगा। बल्कि कानून की मदद करने के ऐवज में तुझे सम्मानित किया जायेगा।"

रॉबिन पौल की बात सुनकर ऐलिस ने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया—एकाएक उसके मानस पटल पर पिछले हफ्ते का सारा दृश्य घूम गया था।

"म''मैंने अपना यह राज़ एक लड़की के ऊपर जाहिर किया था।"

ऐलिस कंपकंपाये स्वर में बोली—"वह लड़की हिन्दुस्तान से आयी थी और देखने में बहुत सुन्दर थी—लेकिन साथ-साथ डरपोक भी थी।"

"वह डरपोक नहीं थी मूर्ख।" फतेह अली ने कर्कश लहजे में कहा—

"बल्कि वह तुझे बेवकूफ बना रही थी। उसका नाम क्या था—जल्दी से हमें उसका नाम बता।"

"प'''पूजा कोठारी।" ऐलिस बोली—"ह'''हां, यही नाम बताया था उसने अपना—पूजा कोठारी।"

●●●

पूजा कोठारी।

उस नाम को सुनकर स्पार्को और जैक के दिमाग में बम फट पड़े।

"माई गॉड।" स्पार्को चीखकर बोला—"यह तो सचमुच वही लड़की है—जिसने थाइलेण्ड में महान संगीतकार विजू आनन्द साहब की हत्या की।"

"अ'''और इसी ने अमरीका में कमल कपूर को भी मारा।" जैक के मुंह से भी हैरानी भरी चीख निकली।

"आप लोगों की बात सुनकर मेरा भी शक पक्का हो रहा है।" फतेह अली ने सनसनाये लहजे में कहा—"जरूर इसी ने सलमान आफरीदी की भी हत्या की है। यानि शुरू से अन्त तक सारे फसाद की जड़ यही एक लड़की है—एक अकेली लड़की। हमें फौरन पूजा कोठारी को गिरफ्तार करने के लिये कुछ करना चाहिये—जल्दी कुछ करना चाहिये।"

और !

उसके बाद पूरे मेड्रिड शहर में तो क्या पूरे स्पेन में भूकम्प सा आ गया था।

फौरन मैसेज़ फ्लेश कर दिये गये कि बिना राष्ट्रपति की आज्ञा के एक भी प्लेन स्पेन की धरती नहीं छोड़ेगा।

एक क्षण के अंदर आनन-फानन असंख्य पुलिस पेट्रोलिंग कारें स्पेन की राजधानी मेड्रिड में इधर-से-उधर दौड़ने लगीं—पुलिस के सायरनों से पूरा शहर गूंज उठा।

स्पेन के कोने-कोने में पुलिस चैक पोस्टों पर यह संदेश पहुंच गये कि अगर कोई हिन्दुस्तानी लड़की चैक पोस्ट क्रास करती नजर आये—तो वह उसे एकदम अरेस्ट कर लें।

स्पेन के समस्त एअरपोर्ट और सी-पोर्ट (बंदरगाह) पर निगरानी बढ़ा दी गयी।

कुल मिलाकर राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक अभियान शुरू हो गया था—और उस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे वह चार सुपर मस्तिष्क—जो अपने-अपने देश के धुरन्धर जासूस थे।

●●●

पूजा कोठारी घिर चुकी थी—चारों तरफ से घिर चुकी थी।

जैसे वीर अभिमन्यु 'चक्रव्यूह' में घिर गया हो—फर्क सिर्फ इतना था कि अभिमन्यु के सामने सात महारथी थे और पूजा कोठारी के सामने चार महारथी—लेकिन वह चार महारथी भी कम न थे।

उस समय पूजा कोठारी एक होटल की पन्द्रहवीं मंजिल के टैरेस पर बैठी थी—ऐलिस के सामने वाला फ्लैट वो छोड़ चुकी थी और इस समय वो दूर-दूर तक लहराते समुद्र को देख रही थी—जिसकी लहरें कभी ऊपर जाती थीं, कभी नीचे गिरती थीं।

"कैसी प्यारी जिंदगी है।" पूजा कोठारी ने एक गहरी सांस लेकर कहा।

दूर—बहुत दूर कुछ बच्चे रेत में खिलखिलाकर हंसते हुए भागे फिर रहे थे। तीन बच्चे रेत के अंदर ही घरौंदे बनाने में लगे थे—सब खुश थे—बहुत खुश।

किसी को इस बात की चिन्ता न थी कि अगले क्षण क्या होने वाला है।

"मैंने भी यही सब कुछ चाहा था।" पूजा कोठारी की आंखों से आंसुओं की धारायें बहने लगीं—"लेकिन चार दरिन्दों ने सब कुछ खत्म कर दिया—सब कुछ। मैं आज जीतकर भी हार चुकी हूं—अब मेरा कोई मकसद नहीं है—कोई लक्ष्य नहीं है।"

पूजा कोठारी जज्बाती हो उठी।

उसकी आंखों से और ज्यादा तेजी के साथ आंसुओं की धारायें बहने लगीं।

वह काफी देर तक अपनी भीगी-भीगी आंखों से समुद्र का खूबसूरत नजारा देखती रही।

"लेकिन कोई बात नहीं।" पूजा कोठारी ने दृढ़ता के साथ अपने सारे आंसू पोंछ डाले—"यह जिन्दगी तो एक जुआ है—सिर्फ जुआ। यहां हर इंसान को सब कुछ तो नहीं मिला करता। अब मुझे भी वापस अपने देश लौटना चाहिये—वापस अपने बंगलौर।"

उस दृढ़ निश्चय के साथ पूजा कोठारी झटके से कुर्सी छोड़कर उठी।

फिर उसने आनन-फानन अपने सारे कपड़े अटैची में पैक किये

भारत वापस जाने के लिये वो एम्बेसी से वीजा पहले ही ले चुकी थी—वह टैक्सी पकड़कर सीधी एअरपोर्ट पहुंची।

भारत जाने वाली पहली ही फ्लाइट के टिकिट लिये और अद्वितीय फुर्ती से हवाई जहाज में जाकर बैठ गयी।

●●●

परन्तु अभी एक गेम और बाकी था—आखिरी गेम।

उसके हवाई जहाज में बैठते ही एअरपोर्ट पर एनाउंसमेंट होने लगा।

"सभी यात्री ध्यान से सुनें।" एअरपोर्ट पर लगे तमाम लाउड स्पीकर एक साथ बिल्कुल एक समान स्वर में चिल्ला उठे—

"यात्रियों के लिये एक विशेष सूचना दी जा रही है—स्पेन से बाहर जाने वाली सभी फ्लाइटें 24 घण्टे के लिये कैंसिल हो चुकी हैं—इसलिये सभी यात्रियों से प्रार्थना की जाती है कि वह कृपया अपने-अपने आरक्षित टिकिट काउण्टर पर जाकर जमा करा दें और लॉन में जमा हो जायें—वहां जासूसों का एक दल उनकी कुछ जांच-पड़ताल करेगा।"

पूजा कोठारी के पूरे शरीर से पसीना बह निकला।

थर-थर कांप गया उसका शरीर।

"ज ... जीत के इतना नजदीक पहुंचने के बाद जाकर हार जाना। नहीं-नहीं।" पूजा कोठारी बड़बड़ाई—"उसने हारना नहीं है—वह हारेगी नहीं। उसने जीतना है—हर हालत में जीतना है।"

उन खतरनाक परिस्थितियों में भी मुस्कुरा उठी पूजा कोठारी—"उसे अभी उन लोगों को एक चमत्कार और दिखाना होगा—आखिरी चमत्कार।"

पूजा कोठारी का चेहरा अब लाल-भभूका हो उठा था और फिर वह दृढ़ कदमों के साथ हवाई जहाज से नीचे उतर गयी।

●●●

पूजा कोठारी लॉन में उस तरफ बढ़ी—जहां वह चारों धुरन्धर जासूस यात्रियों की जांच पड़ताल कर रहे थे—उनके सामने यात्रियों की एक लम्बी कतार लगी थी।

इतना ही नहीं—स्पेन की पुलिस ने भी पूरे एअरपोर्ट को चारों तरफ से घेर रखा था।

पूजा कोठारी समझ गयी कि अब वो खेल ज्यादा लम्बा नहीं खेला जा सकता—तुरुप का पत्ता फैंके जाने का समय आ गया था।

पूजा कोठारी बे-धड़क उन चारों के सामने जाकर खड़ी हो गयी—वह उसे देखकर यूं चिहुंके, जैसे लॉन में ज्वालामुखी फट गया हो।

"इन सब निर्दोष लोगों को जाने दो।" जबकि पूजा कोठारी उन चारों को आदेश-सा देती हुई सर्द लहजे में बोली—

"तमाम फ्लाइटों को उड़ान भरने दो—तुम्हारा शिकार तुम्हारे सामने खड़ा है।"

अपने चालाक शिकार को सामने देखकर हवाइयां उड़ने लगीं उन चारों के चेहरे पर—उन्होंने फौरन बिजली जैसी फुर्ती के साथ उसे चारों तरफ से घेर लिया।

"इसे फौरन गिरफ्तार कर लो।" स्पार्को चिल्लाया—"यह बहुत दुष्ट है।"

स्पार्को की बात सुनकर हंसने लगी पूजा कोठारी।

"त...तुम हंस क्यों रही हो ?" कांपी स्पार्को की आवाज।

"क्योंकि तुम मूर्ख हो स्पार्को।" पूजा कोठारी आक्रोश में बोली—

"तुम मुझे आज भी गिरफ्तार नहीं कर सकते। बताओ—किस चार्ज में गिरफ्तार करोगे तुम मुझे ? क्या किसी ने मुझे अबरोल की हत्या करते देखा है ? मैं जानती हूं—नहीं देखा।" पूजा कोठारी घन गरज करती हुई बोली—"मूर्ख व्यक्ति—याद रखना, मैं आज भी वही पूजा कोठारी हूं—जो तुम्हारे ऊपर मान-हानि का दावा दायर कर सकती है। अभी तुम उस रात को भूले तो नहीं होओगे थाइलैण्ड के महान जासूस।" पूजा कोठारी उसका मखौल उड़ाते हुए बोली—"जब तुम मुझे किसी इल्जाम में गिरफ्तार करने के चक्कर में सारी रात होटल के बाहर बैठे ठण्ड में ठिठुरते रहे थे—लेकिन फिर भी तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सके।"

जैक सकपकाकर पीछे हो गया।

"और तुम।" पूजा कोठारी ने छियालीस वर्षीय जैक पर शब्दों का हमला किया—"तुम तो वही जैक हो न—जो अपने आपको बड़ा तीसमारखां जासूस समझते हो कि अगर मौका मिले, तो तुम न जाने कौन-सा पहाड़ तोड़ डालोगे। याद है—तुम मेरी फिराक में रात भर अपने दो सहयोगियों के साथ 'स्वामी विवेकानन्द कॉलोनी' के अन्दर चक्कर लगाते रहे थे—लेकिन फिर भी मैं अपना काम कर गयी। कमल कपूर के कितनी मदद मांगने के बावजूद तुम उसकी जान नहीं बचा सके। मुझे तो हैरानी है कि अमरीका सरकार ने अभी तक तुम्हें अपने जासूसी डिपार्टमेण्ट में क्यों रखा हुआ है।"

अधेड़ जैक के चेहरे पर भी फटकार बरसने लगी।

"और तुम—फतह अली।" पूजा कोठारी ने पुनः व्यंग्यपूर्वक कहा—

"सलमान आफरीदी बड़ी तारीफ कर रहा था तुम्हारी। तुम्हारी शान

में लम्बे-लम्बे कसीदे पढ़ रहा था बेचारा—लेकिन तुम वास्तव में क्या हो, यह मैं उसी दिन समझ गयी थी—जब मेरी दो ही चालों ने तुम्हारे बादशाह और वजीर को पीट डाला तथा तुम हक्के-बक्के से मुझे देखते रह गये।"

फतेह अली के चेहरे का भी सारा खून निचुड़ गया तथा वह सकपकाकर दायें-बायें देखने लगा।

"और तुम।" सबसे अन्त में पूजा कोठारी, रॉबिन पौल की तरफ घूमीं—"तुमसे मेरी पहले तो कभी मुलाकात नहीं हुई मिस्टर रॉबिन पौल—लेकिन तुम्हारी काबलियत का अंदाजा भी इसी एक बात से लगता है कि ऐलिस महीनों से अबरोल की हत्या का प्लान बना रही थी—तुम उससे अक्सर मिलते थे—मगर फिर भी तुम उसके दिमाग में पक रही 'खिचड़ी' का अंदाजा नहीं लगा सके। वाकई बहुत माइण्डिड हो तुम भी—तुम्हें तो स्पेन के सबसे ज्यादा बुद्धिमान व्यक्ति का खिताब दिया जाना चाहिये।"

रॉबिन पौल का भी एकाएक सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया।

वह चारों बंगलौर की उस 'गरम छुरी' के सामने अपने आपको मूर्ख-सा अनुभव करने लगे।

"और इस समय भी तुम चारों मिलकर मेरा क्या बिगाड़ सकते हो।" पूजा कोठारी ने बड़े चैलेन्जिंग अन्दाज में उन चारों को देखा—"कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम्हारे पास मुझे गिरफ्तार करने के लिये कोई सबूत नहीं है—अरेस्ट वारण्ट तक नहीं है। तुम मेरी तलाशी भी नहीं ले सकते—क्योंकि उसके लिये भी सर्च वारण्ट चाहिये। हां—तुम लोग एक काम जरूर कर सकते हो—मुझे शक के आधार पर गिरफ्तार करने की पावर है तुम्हारे पास। परन्तु उससे भी क्या होगा—कुछ नहीं—आज तुम मुझे गिरफ्तार करोगे और कल ही मैं छूट जाऊंगी।"

कानून के वह चारों दिग्गज़ हैरत से एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे।

वाकई वह लड़की उन्हें भारी पड़ रही थी—बहुत ज्यादा भारी।

अपनी पूरी जिन्दगी में उन्होंने ऐसा अपराधी नहीं देखा था।

"परन्तु चिन्ता मत करो।" पूजा कोठारी बड़े नाटकीय ढंग से एक-एक चाल चलती हुई बोली—"मैं अब तुम्हें और ज्यादा नहीं भगाऊंगी। यह बताओ—मेड्रिड का सबसे शानदार होटल कौन-सा है ?"

"ह''होटल।" रॉबिन पौल चिहुंका।

"हां—होटल।"

"ल''लेकिन होटल का नाम क्यों पूछ रही हो तुम ?"

"मैं दरअसल होटल में ले जाकर तुम चारों को एक और तमाशा

दिखाना चाहती हूं—एक ऐसा तमाशा, जो तुम्हारी सारी मुश्किलें आसान कर देगा। बेफिक्र रहो—इसमें तुम्हारा ही फायदा है—इसलिये बे-हिचक मुझे मेड्रिड के सबसे शानदार होटल में लेकर चलो।"

उन चारों ने पुनः एक-दूसरे का चेहरा देखा।

वह नहीं समझ पा रहे थे कि वो लड़की अब और कौन-सा गुल खिलाने जा रही है।

तभी फतेह अली हिम्मत करके आगे आया और उसने रॉबिन पौल से पूछा—"यहां का सबसे शानदार होटल कौन-सा है ?"

"सान्ता डी मेरिया।" रॉबिन पौल ने बताया।

"ठीक है—हम लोग इसे लेकर सान्ता डी मेरिया होटल चलते हैं।" फतेह अली बोला—"देखते हैं—वहां भी यह कौन-सा नया तमाशा दिखाती है।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" स्पार्को ने भी गुर्राकर कहा—"आखिर हम चार हैं—चार ! यह हम चारों का बिगाड़ भी क्या सकती है।"

फिर अधेड़ जैक ने सबसे पहले पूजा कोठारी की तलाशी ली कि उसके पास कोई हथियार वगैरा तो नहीं है—लेकिन उसके पास से कुछ न मिला—फिर वह चारों पूजा कोठारी को लेकर एक पुलिस पैट्रोलिंग कार में सवार हुए और अगले ही पल वो पेट्रोलिंग कार 'सान्ता डी मेरिया' होटल की तरफ दौड़ पड़ी।

●●●

सान्ता डी मेरिया।

सचमुच वह मेड्रिड का सबसे खूबसूरत और बहुमंजिला होटल था।

यह भी इत्तेफाक ही रहा कि उस दिन सान्ता डी मेरिया होटल की पच्चीसवीं वर्षगांठ थी। सारा सान्ता डी मेरिया होटल दुल्हन की तरह सजा हुआ था—बड़ी सुन्दर-सुन्दर रंगीन बल्बों की झालरें दूर से ही अपनी आभा बिखेर रही थीं—डासिंग हॉल में नौजवान लड़के-लड़कियां डांस कर रहे थे।

कुल मिलाकर उस दिन वहां उत्सव जैसा माहौल था।

वह चारों जासूस पूजा कोठारी के साथ वहां आ जरूर गये थे—परन्तु उनका मस्तिष्क अभी भी 'चक्करघिन्नी' बना हुआ था।

उनका आज तक बड़े-बड़े दुर्दान्त अपराधियों से वास्ता पड़ा था—ऐसे-ऐसे अपराधियों से, जो गोलियों की बौछार के सामने भी डट जाते थे—मगर पूजा कोठारी जैसी चालाक अपराधी से वह पहली बार ही टकराये थे।

उस दिन सोन्ता डी मेरिया में कई विशेष प्रबन्ध थे।

जैसे लड़कियों के लिये होटल की वर्षगांठ पर एक खास मेकअप रूम बनाया गया था—जिसमें लड़कियां मेकअप कर सकती थीं—इतना ही नहीं, उस मेकअप रूप में कई सारी ड्रेसें भी थीं—अगर कोई लड़की ड्रेस बदलना चाहे, तो वह ड्रेस बदलने के लिये भी स्वतन्त्र थी।

होटल के अंदर पहुंचते ही पूजा कोठारी मेकअप रूम में चली गयी।

थोड़ी ही देर बाद जब वो मेकअप रूप से बाहर निकली—तो उन चारों जासूसों के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी।

उसने भरपूर मेकअप किया हुआ था।

इतना ही नहीं—उसने तेज सुर्ख रंग की एक ड्रेस भी पहन रखी थी।

हॉल में मौजूद जिस व्यक्ति की भी नजर पूजा कोठारी पर पड़ी—उसकी नजर वहीं ठहर गयी।

वह सचमुच आज इतनी खूबसूरत नजर आ रही थी—जैसे स्वर्ग की कोई अप्सरा धरती पर उतर आयी हो। वह वाकई उस क्षण बंगलौर की 'गरम छुरी' लग रही थी—बेहद हसीन जैसे कोई नई नवेली दुल्हन।

सब भौंचक्की नजरों से उसे ही देखने लगे।

●●●

फिर पूजा कोठारी बड़े मदमाते ढंग से चलती हुई आर्केस्ट्रा वाले उस मंच पर चढ़ गयी—जहां एक गायक माइक हाथ में लिये कोई अंग्रेजी गीत गा रहा था।

परन्तु पूजा कोठारी की अनिंद्य सुन्दरता देखकर वह गायक भी अब गीत गाना भूल चुका था और अपलक उसके ही रूप को निहार रहा था।

"क्या आप मुझे कुछ देर के लिये अपना माइक देंगे।" पूजा कोठारी ने खनकते स्वर में कहा।

"क''' क्यों नहीं।" गायक हड़बड़ा उठा—"ज''' जरूर—जरूर।"

पलक झपकते ही माइक पूजा कोठारी के हाथ में आ गया और अब वो महफिल की रौनक बनी हुई मंच पर खड़ी थी।

फौरन चारों शातिर जासूस मंच के इर्द-गिर्द फैल गये—वह पूजा कोठारी को भाग निकलने का कोई मौका नहीं देना चाहते थे।

"लेडीस एण्ड जेन्टलमैन।" तभी पूजा कोठारी का खनकता स्वर हॉल में गूंजा—"आज की इस बेहद रंगीन शाम में मैं पूजा कोठारी आपका अभिवादन करती हूं—इस समय जब होटल के बाहर डूबता हुआ सूरज बेहद सुंदर नज़ारा प्रस्तुत कर रहा है—तो मैं आपके सामने एक ऐसा शानदार प्रोग्राम पेश करूंगी—जो आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।"

हॉल में मौजूद नौजवान लड़के-लड़कियों के बीच एकाएक हलचल-सी मच गयी और सब उसकी तरफ उत्सुकता से देखने लगे।

"सबसे पहले मेरी तरफ से आपको एक-एक शैम्पेन की बोतल दी जायेगी और उस सारी शैम्पेन का बिल मैं अदा करूंगी।"

तमाम नौजवान लड़के-लड़कियां खुशी से चिल्ला उठे।

वहां शोर-सा मच गया।

चारों जासूस भी चौंके—वह नहीं समझ पा रहे थे कि पूजा कोठारी क्या करने वाली है।

हां—इतना वह जानते थे कि वह जो कुछ करेगी—वह बहुत धमाकाखेज होगा।

फौरन ही होटल के वेटरों ने शैम्पेन की बोतलें नौजवान लड़के-लड़कियों के बीच सर्व कर दीं।

पूरे हॉल में एक साथ असंख्य शैम्पेन बोतलें खुलीं और पुनः तेज़ हर्षध्वनि हुई।

पूजा कोठारी ने अभी अपनी शैम्पेन की बोतल नहीं खोली थी—जबकि जासूसों ने शैम्पेन लेने से इंकार कर दिया था।

"अब मैं प्रोग्राम का अगला भाग पेश करती हूं।" पूजा कोठारी चहकते स्वर में ही माइक पर बोली—"लेडीस एण्ड जेन्टलमेन—मैंने चार हत्यायें की हैं और इस समय मंच के आसपास जो चार व्यक्ति तुम खड़े देख रहे हो—वह दुनिया के चार अलग-अलग देशों के बेहद धुरन्धर जासूस हैं। परन्तु मैं जानती हूं कि यह जासूस सात जन्म तक भी मुझे उन चार हत्याओं का दोषी साबित नहीं कर सकते। इसलिये इस खूबसूरत शाम में, मैं इनकी एक बहुत बड़ी मुश्किल आसान करती हूं—मैं आप तमाम गवाहों के सामने कबूल करती हूं कि वह चारों हत्यायें मैंने की हैं।"

सब सन्न् रह गये।

सन्न्।

उस जैसी मासूम और खूबसूरत लड़की को देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वो 'हत्यारी' हो सकती है।

"मैं जानती हूं कि इस समय आप क्या सोच रहे हैं।" पूजा कोठारी की आवाज़ थोड़ी जज्बाती हो उठी—"आप यही सोच रहे हैं कि मैं हत्या कैसे कर सकती हूं—लेकिन इंसान का चेहरा अक्सर झूठ बोलता है दोस्तों। मैं आज एक ऐसा राज आप सब लोगों को बताऊंगी—जिसे यह जासूस भी नहीं जानते। मैंने जिन चार व्यक्तियों की हत्यायें कीं—उनमें एक बहुत बड़ा संगीतकार था—एब बहुत बड़ा आर्किटेक्ट इंजीनियर था—एक बहुत

बड़ा चित्रकार था—और अबरोल, जिसे आप सब लोग जानते हैं—एक बहुत बड़ा मेटाडोर था। लेकिन इन सब बड़े-बड़े आदमियों का एक अतीत भी था—एक काला अतीत। जब यह चारों चार जिस्म एक जान हुआ करते थे—जब यह चारों हिन्दुस्तान के बंगलौर शहर में रहते थे। ज्यादा समय नहीं गुजरा दोस्तों—सिर्फ आठ साल पहले की बात है—आठ साल पहले बंगलौर में 'फोर स्कवायर'" नामक चार अपराधियों का एकदल हुआ करता था—जो ट्रेन में सफर कर रही लड़कियों की इज्जत लूट लेते थे और उन्हें मार डालते थे। 'फोर स्कवायर' नामक दल के वह चार मैम्बर वही व्यक्ति थे—वही !" पूजा कोठारी चिंघाड़ती चली गयी—"जिन्हें मैंने मार डाला—जो अब विश्व की हस्तियां बन चुके थे।"

धमाका-सा हो गया पूजा कोठारी की बात सुनकर —धमाका।

जासूस भी चौंक पड़े।

"उन चारों दरिंदों ने मेरे पूरे परिवार को आज से आठ साल पहले मार डाला था।" पूजा कोठारी की आवाज भभक उठी—"इतना ही नहीं—मेरी बड़ी बहन का उन चारों ने मेरी ही आंखों के सामने बलात्कार किया—मेरी नंगी आंखों के सामने। उन्हीं के कारण मैं वेश्या बनी और रईसजादों के बिस्तर पर पहुंचकर 'गरम छुरी'" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सब स्तब्ध थे—स्तब्ध।

हर कोई शैम्पेन पीना भूल चुका था।

"बहरहाल।" पूजा कोठारी ने जल्दी से खुद को सामान्य किया—"मैं अपना प्रतिशोध ले चुकी हूं—मैंने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया है और अब वायदे के मुताबिक मुझे आप लोगों का एक ऐसा शानदार प्रोग्राम दिखाना है—जो आपने पहले कभी नहीं देखा होगा। अब ध्यान से सुनो—रात के आठ बजने में पांच मिनट बाकी है—पांच मिनट बाद यानि ठीक आठ बजे होटल सान्ता डी मेरिया के इस हॉल में, मैं एक और हत्या करने वाली हूं—हत्या तुम सब लोगों की आंखों के सामने होगी—इतने सारे लोग मुझे हत्या करते देखेंगे—परन्तु फिर भी मेरा दावा है कि कानून मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा—यह जासूस मुझे तब भी नहीं पकड़ पायेंगे।"

पूजा कोठारी के उन शब्दों को सुनकर वहां बम-सा फट गया।

हॉल में हलचल मच गयी।

चारों जासूसों के हाथ में पलक झपकते ही रिवॉल्वर आ चुकी थीं। वह बौखला उठे—उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि पूजा कोठारी ऐसी घोषणा करेगी।

फिर पूजा कोठारी जासूसों की तरफ देखकर हंसी—"हत्या इन चारों में-से भी किसी की हो सकती है।" उसने एक-एक करके जासूसों की तरफ उंगली उठाई।

पसीनों में लथपथ हो गये जासूस।

जबकि पूजा कोठोरी ने विजय गर्व के साथ हॉल में इधर-उधर देखा—आखिर वो समय आ ही गया, जब उसे अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी चाल चलनी थी।

घड़ी की सुईं धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

सबकी सांसें रुक गयी—जासूस नहीं समझ पा रहे थे कि वह चालाक लड़की बिना किसी हथियार के कैसे हत्या करेगी और किसकी हत्या करेगी।

पांच मिनट पूरे होने में अब सिर्फ कुछ सैकिण्ड बाकी थे—तभी पूजा कोठारी ने बड़े उल्लास के साथ अपनी शैम्पेन की बोतल खोली—कार्क हवा में उछाला—कार्क के खुलते ही शैम्पेन के रूप में उछल कर बाहर निकली।

चारों जासूस अब और ज्यादा अलर्ट हो गये थे—उन्होंने अपनी-अपनी पोजीशन संभाल ली और रिवॉल्वर पूजा कोठारी की तरफ तान दिये।

लड़के-लड़कियां घबराकर हॉल की दीवारों से चिपक गये।

जबकि पूजा कोठारी ने बड़ी शान के साथ पूरी शैम्पेन पी—अपने हाथ विजय की मुद्रा में लहराये—उसी पल होटल सान्ता डी मेरिया के वाल क्लाक में रात के आठ बजने का ऐलान किया और तभी पूजा कोठारी मंच पर पीछे लुढ़क गयी।

उसके मुंह सें झाग निकलने लगे।

वह अपनी अंगूठी में मौजूद पोटेशियम साइनाइड का कैप्सूल निगल गयी थी।

●●●

हतप्रभ् रह गये सब—बुरी तरह हतप्रभ्।

फौरन चारों जासूस पूजा कोठारी की तरफ झपटे।

उन्होंने उसे पकड़ कर बुरी तरह हिलाया—लेकिन वह मर चुकी थी।

अलबत्ता जासूसों के हिलाने से उसकी स्कर्ट की जेब से एक कार्ड ज़रूर बाहर निकलकर गिरा।

जिस पर लिखा था :

"मैंने कहा था न विश्व के महान जासूसों—ठीक पांच मिनट

बाद एक और हत्या होगी—मैंने हत्या कर दा है। हत्यारा तुम्हारे सामने है—अगर हिम्मत है—तो कर लो मुझे गिरफ्तार।"

सबकी आंखें आंसुओं से डबडबा उठीं।

उन पत्थर दिल जासूसों की आंखों से भी जिंदगी में पहली बार आंसू निकले।

उन्होंने अपने-अपने हेट उतारकर हाथ में ले लिये—गर्दन झुका ली।

रॉबिन पौल बड़े जज्बाती अंदाज में शव के पास नीचे बैठ गया था।

"मेरे शातिर दुश्मन।" वह अपने आंसू साफ करता हुआ बोला—"मैं पहली बार किसी अपराधी को सलाम करता हूं तुम्हारे दिमाग ने मुझे हरा दिया। रॉबिन पौल अगर आज तक किसी से हारा—तो सिर्फ तुमसे हारा।"

उसके पीछे खड़े तीनों जासूसों ने भी अपने-अपने देश के राष्ट्रीय सेल्यूट बड़ी गरम जोशी के साथ पूजा कोठारी को दिये।

"हम पहली बार देख रहे हैं एक खलनायिका को नायिका की मौत मरते हुए।" फिर वह तीनों एक साथ बोले—"हम पुलिस में चाहे कहीं भी रहे—लेकिन हमारे दिल में हमेशा एक आवाज आयेगी कि हमें जिन्दगी में एक ऐसा दुश्मन भी मिला था जिसने हमें हर जंग में पछाड़ा—हर कदम पर मात दी। अलविदा पूजा कोठारी—अलविदा।"

इस तरह प्रतिशोध की एक धधकती महागाथा का अन्त हुआ।

उस पूजा कोठारी का अन्त हुआ—जो कभी सेशन जज अरविन्द कोठारी के परिवार में शबनम की एक बूंद बनकर खिली थी—फिर एक भयानक विभीषिका के झंझावात में फंसकर वो बंगलौर की 'गरम छुरी' बनी तथा फिर प्रतिशोध के अग्निकुण्ड में झुलसकर महायात्रा के लिये चल दी।

□□□

हिन्दी उपन्यासों की दुनिया के बेस्ट से
अमित खा
दिमाग के जादूगर
केशव पण्डित
का 149 वाँ नया उपन्यास
में होगी
रामलीला
धीरज पॉकेट बुक्स में प्रकाशित
12500-4454
A.H.W. DHE
धीरज पॉकेट बुक